

चन्द्रकान्ता सन्तति

बाईसवां हिस्सा

पहिला बयान

भूतनाथ की अवस्था ने सभों का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया। कुछ देर तक सन्नाटा रहा और इसके बाद इन्द्रदेव ने पुनः महाराज की तरफ देख कर कहा—

"महाराज! ध्यान देने और विचार करने पर सभों को मालूम होगा कि आज कल आपका दर्बार 'नाट्यशाला' (थियेटर का घर) हो रहा है। नाटक खेल कर जो जो बातें दिखाई जा सकती हैं और जिनके देखने से लोगों को नसीहत मिल सकती है तथा मालूम हो सकता है कि दुनिया में किस दर्जे तक के नेक

और बद, दुखिया और सुखिया, गम्भीर और छिछोरे इत्यादि पाये जाते हैं, वे सब इस समय (आज कल) आपके यहां प्रत्यक्ष हो रहे हैं। ग्रहदशा के फेर में जिन्होंने दुःख भोगा वे भी मौजूद हैं और जिन्होंने अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारी वे भी दिखाई दे रहे हैं, जिन्होंने अपने किये का फल ईश्वरेच्छा से पा लिया है वे भी आये हुए हैं और जिन्हें अब सजा दी जायगी वे भी गिरफ्तार किये गये हैं। बुद्धिमानों का यह कथन कि 'जो बुरी राह चलेगा उसे बुरा फल अवश्य मिलेगा' ठीक है, परन्तु कभी कभी ऐसा भी होता है कि अच्छी राह चलने वाले तथा नेक लोग भी दुःख के चहले में फंस जाते हैं और दुर्जन तथा दुष्ट लोग आनन्द के साथ दिन काटते दिखाई देते हैं। इसे लोग ग्रहदशा का कारण कहते हैं मगर नहीं इसके सिवाय कोई और बात भी जरूर है। परमात्मा की दी हुई बुद्धि और विचारशक्ति का अनादर करने वाले ही प्रायः संकट में पड़ कर तरह तरह के दुःख भोगते हैं। मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि इस समय अथवा आज कल आपके यहां सब तरह के जीव दिखाई देते हैं, दृष्टांत देने के बदले केवल इशारा करने से काम निकलता है। हां मैं यह कहना तो भूल ही गया कि इन्हीं में ऐसे भी जीव आए हुए हैं जो अपने किये का नहीं बल्कि अपने सम्बन्धियों के किये हुए पापों का फल भोग रहे हैं और इसी से नाते (रिश्ते) और सम्बन्ध का गूढ़ अर्थ भी निकलता है। बेचारी लक्ष्मीदेवी की तरफ देखिये जिसने किसी का कुछ भी नहीं बिगाड़ा और फिर भी हद दर्जे की तकलीफ उठा कर ताज्जुब है कि जीती बच गई। ऐसा क्यों हुआ? इसके जवाब में मैं तो यही कहूंगा कि राजा गोपालसिंह की बदौलत, जो बेईमान दारोगा के हाथ की कठपुतली हो रहे थे और इस बात की कुछ भी खबर नहीं रखते थे कि उनके घर

में क्या हो रहा है और उनके कर्मचारियों ने उन्हें कैसे जाल में फंसा रक्खा है। जिस राजा को अपने घर की खबर न होगी, वह प्रजा का क्या उपकार कर सकता है और ऐसा राजा अगर संकट में पड़ जाय तो आश्चर्य ही क्या है! केवल इतना ही नहीं, इनके दुःख भोगने का सबब और भी है। बड़ों ने कहा है कि 'स्त्री' के आगे भेद की बात प्रगट करना बुद्धिमानों का काम नहीं है, परन्तु राजा गोपालसिंह ने इस बात पर कुछ भी ध्यान न दिया और दुष्टा मायारानी की मुहब्बत में फंस कर तथा अपने भेदों को बता कर बर्बाद हो गये। सज्जन और सरल स्वभाव होने से ही दुनिया का काम नहीं चलता, कुछ नीति का भी अवलम्बन करना ही पड़ता है। इसी तरह महाराज शिवदत्त को देखिये जिसे खुशामदियों ने मिल जुल कर बर्बाद कर दिया। जो लोग खुशामद में पड़ कर अपने को सब से बड़ा समझ बैठते हैं और दुश्मन को कोई चीज नहीं समझते हैं, उनकी वैसी ही गति होती है जैसी शिवदत्त की हुई। दुष्टों और दुर्जनों की बात जाने दीजिये, उनको तो उनके बुरे कर्मों का फल मिलना ही चाहिये मिला ही है और मिलेगाही, उनका जिक्र तो मैं पीछे करूंगा, अभी तो मैं उन लोगों की तरफ इशारा करता हूं जो वास्तव में बुरे नहीं थे मगर नीति पर न चलने तथा बुरी सोहबत में पड़े रहने के कारण संकट में पड़ गये। मैं दावे के साथ कहता हूं कि भूतनाथ ऐसा नेक दयावान और चतुर ऐयार बहुत कम दिखाई देगा, मगर लालच और ऐयाशी के फेर में पड़ कर यह ऐसा बर्बाद हुआ कि दुनिया भर में मुंह छिपाने और अपने को मुर्दा मशहूर करने पर भी इसे सुख की नींद नसीब न हुई। अगर यह मेहनत करके ईमानदारी के साथ दौलत पैदा किया चाहता तो आज इसकी दौलत का अन्दाजा करना कठिन होता और अगर

ऐयाशी के फेर में न पड़ा होता तो आज नाती पोतों से इसका घर दूसरों के लिये नजीर गिना जाता। इसने सोचा कि मैं मालदार हूं, होशियार हूं, चालाक हूं, और ऐयार हूं, कुलटा स्त्रियों और रंडियों की सोहबत का मजा लेकर सफाई के साथ अलग हो जाऊंगा, मगर इसे अब मालूम हुआ होगा कि रंडियें ऐयारों के भी कान काटती हैं। नागर वगैरह के वर्ताव को जब यह याद करता होगा तब इसके कलेजे में चोट सी लगती होगी। मैं इस समय इसकी शिकायत करने पर उतारू नहीं हुआ हूं बल्कि इसके दिल पर से पहाड़ सा बोझ हटा कर उसे हलका किया चाहता हूं क्योंकि इसे मैं अपना दोस्त ही समझता था और समझता हूं, हां इधर कई वर्षों से इसका विश्वास अवश्य उठ गया था और मैं इसकी सोहबत पसन्द नहीं करता था, मगर इसमें मेरा कोई कसूर नहीं, किसी की चालचलन जब खराब हो जाती है तब बुद्धिमान लोग उसका विश्वास नहीं करते और शास्त्र की भी ऐसी ही आज्ञा है, अतएव मुझे भी वैसा ही करना पड़ा। यद्यपि मैंने इसे किसी तरह की तकलीफ नहीं पहुँचाई परन्तु इसकी दोस्ती को एक दम भूल गया, मुलाकात होने पर उसी तरह वर्ताव करता था जैसा लोग नये मुलाकाती के साथ किया करते हैं। हां अब जब कि यह अपनी भूलों को सोच समझ कर पछता चुका है, एक अच्छे ढंग से नेकी के साथ नामवरी पैदा करता हुआ दुनिया में फिर दिखाई देने लगा है, और महाराज भी इसकी योग्यता से प्रसन्न होकर इसके अपराधों को (दुनिया के लिये) क्षमा कर चुके हैं, तब मैंने भी इसके अपराध को दिल ही दिल में क्षमा कर इसे अपना मित्र समझ लिया है और फिर उसी निगाह से देखने लगा हूं जिस निगाह से पहिले देखता था। परन्तु इतना मैं जरूर कहूंगा कि भूतनाथ ही एक ऐसा आदमी

है जो दुनियां में नेकचलनी के नतीजे को दिखाने के लिये नमूना बन रहा है। आज यह अपने भेदों को प्रगट होते देख डरता है और चाहता है कि हमारे भेद छिपे रह जायं, मगर यह इसकी भूल है क्योंकि किसी के ऐब छिपे नहीं रहते। सब नहीं तो बहुत कुछ दोनों कुमारों को मालूम हो चुके हैं और महाराज भी जान गये हैं, ऐसी अवस्था में इसे अपना किस्सा पूरा पूरा बयान करके दुनिया में एक नजीर छोड़ देना चाहिये और साथ ही इसके (भूतनाथ की तरफ देखते हुए) अपने दिल के बोझ को भी हलका कर देना चाहिये। भूतनाथ! तुम्हारे दो चार भेद ऐसे हैं जिन्हें सुन कर लोगों की आंखें खुल जायंगी और लोग समझेंगे कि आदमी ऐसे ऐसे काम भी कर गुजरते हैं और उनका नतीजा ऐसा होता है, मगर यह तो कुछ तुम्हारे ही ऐसे बुद्धिमान और अनूठे ऐयार का काम है कि इतना करने पर भी आज तुम भले चंगे ही नहीं दिखाई देते हो बल्कि नेकनामी के साथ महाराज के ऐयार कहलाने की इज्जत पा चुके हो। मैं फिर कहता हूं कि किसी बुरी नीयत से इन बातों का जिक्र मैं नहीं करता बल्कि तुम्हारे दिल का खुटका दूर करने के साथ ही साथ जिनके नाम से तुम डरते हो उन्हें तुम्हारा दोस्त बनाया चाहता हूं, अस्तु तुम्हें बेखौफ अपना हाल बयान कर देना चाहिये।"

भूत०। ठीक है, मगर मैं क्या करूं, मेरी जुबान नहीं खुलती, मैंने ऐसे ऐसे बुरे काम किये हैं कि जिन्हें याद करके आज मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं और आत्महत्या करने की इच्छा होती है मगर नहीं, मैं बदनामी के साथ दुनिया से उठ जाना पसन्द नहीं करता अतएव जहां तक हो सकेगा एक दफे नेकनामी अवश्य पैदा करूंगा।

इन्द्र०। नेकनामी पैदा करने का ध्यान जहां तक बना रहे

अच्छा ही है परन्तु मैं समझता हूं कि तुम नेकनामी उसी दिन पैदा कर चुके जिस दिन हमारे महाराज ने तुम्हें अपना ऐयार बनाया, इस लिये कि तुमने इधर बहुत ही अच्छे अच्छे काम किये हैं और वे सब काम ऐसे थे जिन्हें अच्छे से अच्छा ऐयार भी कदाचित् नहीं कर सकता था। चाहे तुमने पहिले कैसी ही बुराई और कैसे ही खोटे काम क्यों न किये हों मगर आज हम लोग तुम्हारे देनदार हो रहे हैं, तुम्हारे एहसान के बोझ से दबे हुए हैं और समझते हैं कि तुम अपने दुष्कर्मों का प्रायश्चित कर चुके हो

भूत०। आप जो कुछ कहते हैं वह आपका बड़प्पन है परन्तु मैंने जो कुछ कुकर्म किये हैं, मैं समझता हूं कि उनका प्रायश्चित ही नहीं है, तथापि अब तो मैं महाराज की शरण में आ ही चुका हूं और महाराज ने भी मेरी बुराइयों पर ध्यान न देकर मुझे अपना दासानुदास स्वीकार कर ही लिया है इससे मेरी आत्मा संतुष्ट है और मैं अपने को दुनिया में मुंह दिखाने योग्य समझने लगा हूं। मैं यह भी समझता हूं कि आप जो कुछ आज्ञा कर रहे हैं यह वास्तव में महाराज की आज्ञा है जिसे मैं कदापि उल्लंघन नहीं कर सकता अस्तु मैं अपनी अद्भुत जीवनी सुनाने के लिये तैयार हूं, परन्तु.....

इतना कह कर भूतनाथ ने एक लम्बी सांस ली और महाराज सुरेन्द्रसिंह की तरफ देखा।

सुरेन्द्र०। भूतनाथ! यद्यपि हमलोग तुम्हारा कुछ कुछ हाल जान चुके हैं मगर फिर भी तुम्हारा पूरा पूरा हाल तुम्हारे ही मुंह से सुनने की इच्छा रखते हैं। तुम बयान करने में किसी तरह का संकोच न करो। इससे तुम्हारा दिल भी हलका हो जायगा और दिन रात जो तुम्हें खुटका बना रहता है वह भी जाता रहेगा।

भूत० । जो आज्ञा ।

इतना कह कर भूतनाथ ने सलाम किया और अपनी जीवनी इस तरह बयान करने लगा —

भूतनाथ की जीवनी

भूत० । सब के पहिले मैं वही बात कहूंगा जिसे आप लाग नहीं जानते, अर्थात् मैं नौगढ़ के रहने वाले और देवीसिंह के सगे चचा जीवनसिंह का लड़का हूं । मेरी सौतेली मां मुझे देखना पसन्द नहीं करती थी और मैं उसकी आंखों में कांटे की तरह गड़ा करता था । मेरे ही सबब से मेरी मां की इज्जत और कदर थी और उस बांझ को कोई पूछता भी न था अतएव वह मुझे दुनिया ही से उठा देने की फिक्र में लगी और यह बात मेरे पिता को भी मालूम हो गई इसलिये जब कि मैं आठ वर्ष का था मेरे पिता ने मुझे अपने मित्र देवदत्त ब्रह्मचारी के सपुर्द कर दिया जो तेजसिंहजी के * गुरु थे और महात्माओं की तरह नौगढ़ की उसी तिलिस्मी खोह में रहा करते थे जिसे राजा वीरेन्द्रसिंहजी ने फतह किया है । मैं नहीं जानता कि मेरे पिता ने मेरे विषय में उन्हें क्या समझाया और क्या कहा परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि ब्रह्मचारीजी मुझे अपने लड़के की तरह मानते पढ़ाते लिखाते और साथ ही साथ ऐयारी भी सिखाते थे, परन्तु जड़ी बूटियों के प्रभाव से उन्होंने मेरी सूरत में बहुत बड़ा फर्क डाल दिया था जिसमें कोई मुझे पहिचान न ले । मेरे पिता मुझे देखने के लिये बराबर इनके पास आया करते थे ।

इतना कह कर भूतनाथ कुछ देर के लिये चुप हो गया और

* चन्द्रकान्ता पहिला हिस्सा छठे बयान में तेजसिंह ने अपने गुरू के बारे में बीरेन्द्रसिंह से कुछ कहा था ।

सभों के मुंह की तरफ देखने लगा।

सुरेन्द्र०। (ताज्जुब के साथ) ओफ ओह !! क्या तुम जीवनसिंह के वही लड़के हो जिसके बारे में उन्होंने मशहूर कर दिया था कि उसे जंगल में शेर उठा ले गया !!

भूतनाथ०। (हाथ जोड़ कर) जी हां।

तेज०। और आप वही हैं जिसे गुरुजी 'फिरकी' कह के पुकारा करते थे क्योंकि आप एक जगह ज्यादे देर तक बैठते न थे !

भूतनाथ०। जी हां।

देवी०। यद्यपि मैं वहुत दिनों से आपको भाई की तरह मानने लग गया हूं परन्तु आज यह जान कर मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा कि आप वास्तव में मेरे भाई हैं, मगर यह तो बताइये कि ऐसी अवस्था में शेरसिंह आपके भाई क्यों कर हुए ? वह कौन हैं ?

भूतनाथ०। वास्तव में शेरसिंह मेरा भाई नहीं है बल्कि गुरुभाई और उन्हीं ब्रह्मचारीजी का लड़का है, मगर हां लड़कपन ही से एक साथ रहने के कारण हम दोनों में भाई की सी मुहब्बत हो गई थी।

तेज०। आज कल शेरसिंह कहां हैं ?

भूतनाथ०। मुझे उनकी कुछ भी खबर नहीं है मगर मेरा दिल गवाही देता है कि अब वे हम लोगों को दिखाई न देंगे।

वीरेन्द्रसिंह०। सो क्यों ?

भूतनाथ०। इसीलिये कि वे भी अपने को छिपाये और हम लोगों में मिले जुले रहते थे और साथ ही इसके ऐबों से खाली न थे।

सुरेन्द्रसिंह०। खैर कोई चिन्ता नहीं, अच्छा तब ?

भूत० । अस्तु मैं उन्हीं ब्रह्मचारीजी के पास रहने लगा। कई वर्ष बीत गये। पिताजी मुझसे मिलने के लिये कभी कभी आया करते थे और जब मैं बड़ा हुआ तो उन्होंने मुझे अपने से जुदा करने का सबब भी बयान किया और वे यह जान कर बहुत प्रसन्न हुए कि मैं ऐयारी के फन में बहुत तेज और होशियार हो गया हूं। उस समय उन्होंने ब्रह्मचारीजी से कहा कि इसे किसी रियासत में नौकर रखा देना चाहिये तब इसकी ऐयारी खुलेगी। मुख्तसर यह कि ब्रह्मचारीजी ही की बदौलत मैं गदाधरसिंह के नाम से रणधीरसिंहजी के यहां और शेरसिंह महाराज दिग्विजयसिंह के यहां नौकर हो गये और यह जाहिर किया गया कि शेरसिंह और गदाधरसिंह दोनों भाई हैं, और हम दोनों आपुस में प्रेम भी ऐसा ही रखते थे।

उन दिनों रणधीरसिंह की जमींदारी में तरह तरह के उत्पात मचे हुए थे और बहुत से आदमी उनके जानी दुश्मन हो रहे थे। उनके आपुस वालों को तो इस बात का विश्वास हो गया था कि अब रणधीरसिंहजी की जान किसी तरह नहीं बच सकती क्योंकि उन्हीं दिनों उनका ऐयार श्रीसिंह दुश्मनों के हाथों से मारा जा चुका था और खूनी का कुछ पता नहीं लगता था। कोई दूसरा ऐयार भी उनके पास न था इसलिये वे बड़े ही तरद्दुद में पड़े हुए थे। यद्यपि उन दिनों उनके यहां नौकरी करना अपनी जान खतरे में डालना था मगर मुझे इन बातों की कुछ भी परवाह न हुई। रणधीरसिंहजी भी मुझे नौकर रख कर बहुत प्रसन्न हुए और वे मेरी खातिरदारी में कभी किसी तरह की कमी नहीं करते थे। इसका दो सबब था, एक तो उन दिनों उन्हें ऐयार की सख्त जरूरत थी, दूसरे मेरे पिता से और उनसे कुछ मित्रता भी थी जो कुछ दिन के बाद मालूम हुआ।

रणधीरसिंहजी ने मेरा ब्याह भी शीघ्र ही करा दिया। संभव है कि इसे भी मैं उनकी कृपा और स्नेह का कारण समझूं, पर यह भी हो सकता है कि मेरे पैर में गृहस्ती की बेड़ी डालने और कहीं भाग जाने लायक न रखने के लिये उन्होंने ऐसा किया हो क्योंकि अकेला और बेफिक्रा आदमी कहीं पर जन्म भर रहे और काम करे इसका विश्वास लोगों को कम रहता है। खैर जो कुछ हो, मतलब यह है कि उन्होंने मुझे बड़ी इज्जत और प्यार के साथ अपने यहां रक्खा और मैंने भी थोड़े ही दिनों में ऐसे ऐसे अनूठे काम कर दिखाए कि उन्हें ताज्जुब होता था। सच तो यों है कि उनके दुश्मनों की हिम्मत टूट गई और वे दुश्मनी की आग में आप ही जलने लगे।

कायदे की बात है कि जब आदमी के हाथ से दो चार काम अच्छे निकल जाते हैं और चारो तरफ उसकी तारीफ होने लगती है तब वह अपने काम की तरफ से बेफिक्र हो जाता है। वही हाल मेरा भी हुआ।

आप जानते ही होंगे कि रणधीरसिंहजी का दयाराम नामी एक भतीजा था जिसे वे बहुत प्यार करते थे और वही उनका वारिस होने वाला था। उसके मां बाप लड़कपन ही में मर चुके थे मगर चचा की मुहब्बत के सबब उसे मां बाप के मरने का दुःख कुछ मालूम न हुआ। वह (दयाराम) उम्र में मुझसे कुछ छोटा था मगर मेरे और उसके बीच में हद दर्जे की दोस्ती और मुहब्बत हो गई थी। जब हम दोनों आदमी घर पर मौजूद रहते तो बिना मिले जी नहीं मानता था। दयाराम का उठना बैठना मेरे यहां ज्यादे होता था, अक्सर रात को वह मेरे ही यहां खा पी कर सो जाता था और उसके घर वाले भी इसमें किसी तरह का रंज नहीं मानते थे।

जो मकान मुझे रहने के लिये मिला था वह निहायत उम्दा और शानदार था। उसके पीछे की तरफ एक छोटा सा नजरबाग था जो दयाराम के शौक की बदौलत हर दम हरा भरा गुंजान और सुहावना बना रहता था। प्रायः संध्या के समय हम दोनों दोस्त उसी बाग में बैठ कर भांग बूटी छानते और संध्योपासन से निवृत्त हो बहुत रात गये तक गप्प शप्प किया करते।

जेठ का महीना था और गर्मी हद दर्जे को पड़ रही थी। पहर रात बीत जाने पर हम दोनों दोस्त उसी नजरबाग में दो चारपाई के ऊपर लेटे हुए आपुस में धीरे धीरे बातें कर रहे थे। मेरा खूबसूरत और प्यारा कुत्ता मेरे पायताने की तरफ एक पत्थर की चौकी पर बैठा हुआ था। बात करते करते हम दोनों को नींद आ गई।

आधी रात से कुछ ज्यादे बीती होगी जब मेरी आंख कुत्ते के भौंकने की आवाज से खुल गई। मैंने उस पर कुछ विशेष ध्यान न दिया और करवट बदल कर फिर आंखें बन्द कर लीं क्योंकि वह कुत्ता मुझसे बहुत दूर और नजरबाग के पिछले हिस्से की तरफ था, मगर कुछ ही देर बाद वह मेरी चारपाई के पास आकर भौंकने लगा और पुनः मेरी आंख खुल गई। मैंने कुत्ते को अपने सामने बेचैनी की हालत में देखा, उस समय वह जुबान निकाले हुए जोर जोर से हांफ रहा और दोनों अगले पैरों से जमीन खोद रहा था।

मैं अपने कुत्ते की आदतों को खूब जानता और समझता था, अस्तु उसकी ऐसी अवस्था देख कर मेरे दिल में खुटका हुआ और मैं घबड़ा कर उठ बैठा। अपने मित्र को भी उठा कर होशियार कर देने की नीयत से मैंने उसकी चारपाई की तरफ देखा मगर चारपाई खाली पाकर मैं बेचैनी के साथ चारो तरफ देखने

लगा और उठ कर चारपाई के नीचे खड़े होने के साथ ही मैंने अपने सिर्हाने के नीचे से खंजर निकाल लिया। उस समय मेरा नमकहलाल कुत्ता मेरी धोती पकड़ कर बार बार खैंचने और बाग के पिछले हिस्से की तरफ चलने का इशारा करने लगा और जब मैं उसके इशारे के मुताबिक चला तो वह धोती छोड़ कर आगे आगे दौड़ने लगा। कदम बढ़ाता हुआ मैं उसके पीछे पीछे चला। उस समय मालूम हुआ कि मेरा कुत्ता जख्मी है, उसके पिछले पैर में चोट आई थी और इसलिये वह पैर उठा कर दौड़ता था। अस्तु कुत्ते के पीछे पीछे चल कर मैं पिछली दीवार के पास जा पहुँचा जहां मालती और मोमियाने की लताओं के सबब घना कुंज और पूरा अन्धकार हो रहा था। कुत्ता उस झुरमुट के पास जाकर रुक गया और मेरी तरफ देख कर दुम हिलाने लगा। उसी समय मैंने झाड़ी में से तीन आदमियों को निकलते हुए देखा जो बाग की दीवार के पास चले गये और फुर्ती से दीवार लांघ कर पार हो गये। उन तीनों में से एक आदमी के हाथ में एक छोटी सी गठड़ी थी जो दीवार लांघते समय उसके हाथ से छूट कर बाग के भीतर ही गिर पड़ी। निःसन्देह वह गठरी लेने के लिये भीतर लौटता मगर उसने मुझे और मेरे कुत्ते को देख लिया था इस लिये उसकी हिम्मत न पड़ी।

गठड़ी गिरने के साथ ही मैंने जफील बुलाई और खंजर हाथ में लिए हुए उस आदमी का पीछा करना चाहा अर्थात दीवार की तरफ बढ़ा, मगर कुत्ते ने मेरी धोती पकड़ ली और झाड़ी की तरफ हट कर खैंचने लगा जिससे मैं समझ गया कि इस झाड़ी में कोई और भी छिपा हुआ है जिसकी तरफ कुत्ता इशारा कर रहा है। मैं सम्हल कर खड़ा हो गया और गौर के साथ उस झाड़ी की तरफ देखने लगा। उसी समय पत्तों की खड़खड़ाहट

ने विश्वास दिला दिया कि इसमें कोई और भी है। मैं इस खयाल से कि जिस तरह पहिले तीन आदमी दीवार लांघ कर भाग गये हैं उसी तरह इसको भी भाग जाने न दूंगा, घूम कर दीवार की तरफ चला गया। उस समय मैंने देखा कि एक चार डण्डे की सीढ़ी दीवार के साथ लगी हुई है जिसके सहारे से वे तीनों निकल गये थे। मैंने वह सीढ़ी उठा कर उस गठड़ी के ऊपर फेंक दी जो उनके हाथ से छूट कर गिर पड़ी थी क्योंकि मैं उस गठड़ी की हिफाजत का भी ख्याल कर रहा था।

सीढ़ी हटाने के साथ ही दो आदमी उस झाड़ी में से निकले और उन्होंने बड़ी बहादुरी के साथ मेरा मुकाबला किया और मैं भी जी तोड़ कर उनके साथ लड़ने लगा। अन्दाज से मालूम हो गया कि गठड़ी उठा लेने की तरफ ही उन दोनों का ध्यान विशेष है। आप सुन चुके हैं कि मेरे हाथ में केवल खंजर था, मगर उन दोनों के हाथ में लम्बे लम्बे लट्ठ थे और मुकाबला करने में भी वे दोनों कमजोर न थे अस्तु मुझे भी अपने बचाव का ज्यादे खयाल था और मैं तब तक लड़ाई खतम करना नहीं चाहता था जब तक मेरे आदमी न आ जायं जिन्हें जफील देकर मैंने बुलाया था।

आधी घड़ी से ज्यादे देर तक मेरा उनका मुकाबला रहा। उसी समय मुझे रोशनी दिखाई दी और मालूम हुआ कि मेरे आदमी चले आ रहे हैं। उनकी तरफ देख कर मेरा ध्यान कुछ बटा ही था कि एक आदमी के हाथ का लट्ठ मेरे सिर पर बैठा और मैं चक्कर खा कर जमीन पर गिर पड़ा।

दूसरा बयान

जब मेरी आंख खुली मैंने अपने को अपने आदमियों से

गिरा हुआ पाया। मशालों की रोशनी बखूबी हो रही थी। जांच करने पर मालूम हुआ कि मैं आधी घड़ी से ज्यादे देर तक बेहोश नहीं रहा। जब मैंने दुश्मन के बारे में दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि वे दोनों भी भाग गये मगर मेरे आदमियों के पहुँच जाने के सबब उस गठड़ी को न ले जा सके। मैंने अपनी हिम्मत और ताकत पर खयाल किया तो मालूम हुआ कि मैं इस समय उनका पीछा करने लायक नहीं हूं। आखिर लाचार होकर और पहरे का इन्तजाम करके मैं गठड़ी लिये हुए अपने कमरे में चला आया मगर अपने मित्र की तरफ से मेरा दिल बड़ा ही बेचैन रहा और तरह तरह के शक पैदा होते रहे।

मेरे कमरे में रोशनी बखूबी हो रही थी। दरवाजा बन्द करके मैंने गठड़ी खोली और उसके अन्दर की चीजों को बड़े गौर से देखने लगा।

गठड़ी में दो जोड़ तो कपड़े निकले जिन्हें मैं पहिचानता न था मगर वे कपड़े पहिरे हुए और मैले थे। कागजों का एक मुट्ठा निकला जिसे देखते ही मैं पहिचान गया कि यह रणधीरसिंह के खास सन्दूक के कागज हैं। मोम का एक सांचा कई कपड़ों की तह में लपेटा हुआ निकला, देखते ही मैं पहिचान गया कि खास रण-धीरसिंहजी की मोहर पर से यह सांचा उठाया गया है। इन चीजों के अतिरिक्त मोतियों की एक माला एक कण्ठा और तीन जड़ाऊ अंगूठियां निकलीं। ये चीजें मेरे मित्र दयारामसिंह की थीं। इन सब चीजों को पहिरे हुए ही आज वे मेरे यहां से गायब हुए थे।

इन सब चीजों को देख कर मैं बड़ी देर तक सोच विचार में पड़ा रहा। उसी समय कमरे का वह दर्वाजा खुला जो जनाने मकान में जाने के लिये था और मेरी स्त्री (कमला की मां)

आती हुई दिखाई पड़ी। उस समय वह एक बच्चे की मां हो चुकी थी और अपने बच्चे को भी गोद में लिये हुए थी। इसमें कोई शक नहीं कि मेरी स्त्री बुद्धिमान थी और छोटे मोटे कामों में मैं उसकी राय भी लिया करता था।

उसकी सूरत देखते ही मैं पहिचान गया कि तरद्दुद और घबराहट ने उसे अपना शिकार बना लिया है, अस्तु मैंने उसे बुला कर अपने पास बैठाया और सब हाल कह सुनाया, साथ ही इसके यह भी कहा कि मैं इसी समय अपने दोस्त का पता लगाने के लिये जाया चाहता हूं। मगर उसने इस आखिरी बात को कबूल नहीं किया और कहा, "मेरी राय में पहिले रणधीर-सिंहजी से मिल लेना चाहिये।"

कई बातों को सोच विचार कर मैंने उसकी राय कबूल की और उस गठड़ी को ले कर रणधीरसिंहजी से मिलने के लिये रवाना हुआ। मुझे इस बात का भी धोखा लगा हुआ था कि रास्ते में कहीं दुश्मनों से मुलाकात न हो जाय जो जरूर इस गठड़ी को छीन लेने की धुन में लगे हुए होंगे, इसलिये मैंने अपने दो शागिर्दों को भी साथ में ले लिया।

रणधीरसिंहजी बेफिक्र और आराम की नींद सो रहे थे जब मैंने पहुँच कर उन्हें उठाया। जागने के साथ ही वे मुझे देख कर चौंके और बोले, "क्यों क्या मामला है जो इस समय ऐसे ढंग से यहां आए हो? दयाराम कुशल से तो है?"

मेरी सूरत देखते ही उन्होंने दयाराम का कुशल पूछा इससे मुझे बड़ा ही ताज्जुब हुआ। खैर मैं उनके पास बैठ गया और जो कुछ मामला हुआ था साफ साफ कह सुनाया।

मैं इस किस्से को मुख्तसर ही में बयान करूंगा। रणधीर-सिंहजी इस हाल को सुन कर बहुत ही दुःखी और उदास हुए।

बहुत कुछ बातचीत करने के बाद अन्त में बोले, "दयाराम मेरा एक ही एक वारिस और तुम्हारा दिली दोस्त है, ऐसी अवस्था में उसके लिये क्या करना चाहिये सो तुम ही सोच लो मैं क्या कहूं! मैं तो समझ चुका था कि दुश्मनों की तरफ से अब निश्चिन्त हुआ, मगर नहीं......"

इतना कह कर वे कपड़े से अपना मुंह ढांप रोने लगे। मैं उन्हें बहुत समझा बुझा कर बिदा हुआ और अपने घर चला आया। अपनी स्त्री से मिल कर सब हाल कहने और बहुत कुछ समझाने बुझाने के बाद मैं अपने दो शागिर्दों को साथ ले कर घर से बाहर निकला। बस यहीं से मेरी बदकिस्मती का जमाना शुरू हुआ।

इतना कह कर भूतनाथ अटक गया और सिर नीचा कर के कुछ सोचने लगा। सब कोई बेचैनी के साथ उसकी तरफ देख रहे थे और भूतनाथ की अवस्था से मालूम होता था कि वह इस बात को सोच रहा है कि मैं अपना किस्सा आगे बयान करूं या नहीं। उसी समय दो आदमी और भी कमरे के अन्दर चले आये और महाराज को सलाम कर के खड़े हो गये। इनकी सूरत देखते ही भूतनाथ के चेहरे का रंग उड़ गया और वह डरे हुए ढंग से उन दोनों की तरफ देखने लगा।

ये दोनों आदमी जो अभी अभी कमरे में आये हैं वे ही हैं जिन्होंने भूतनाथ को अपना नाम 'दलीपशाह' बतलाया था। इन्द्रदेव की आज्ञा पा कर वे दोनों भूतनाथ के पास ही बैठ गये।

तीसरा बयान

प्रेमी पाठक भूले न होंगे कि दो आदमियों ने भूतनाथ से अपना नाम दलीप बतलाया था जिसमें से एक को पहिला

दलीप और दूसरे को दूसरा दलीप समझना चाहिये।

भूतनाथ तो पहिले ही इस सोच में पड़ गया था कि अपना हाल आगे बयान करे या नहीं, अब दोनों दलीपशाह को देख कर वह और भी घबड़ा गया। ऐयार लोग समझ रहे थे कि अब इसमें बात करने की भी ताकत नहीं रही। उसी समय इन्द्रदेव ने भूतनाथ से कहा, "क्यों भूतनाथ, चुप क्यों हो गये? कहो, हां तब आगे क्या हुआ?"

इसका जवाब भूतनाथ ने कुछ न दिया और सिर झुका कर जमीन की तरफ देखने लगा। उसी समय पहिले दलीपशाह ने हाथ जोड़ कर महाराज की तरफ देखा और कहा, "कृपानाथ! भूतनाथ को अपना हाल बयान करने में बड़ा कष्ट हो रहा है, और वास्तव में बात भी ऐसी ही है। कोई भला आदमी अपनी उन बातों को जिन्हें वह ऐब समझता है अपनी जुबान से अच्छी तरह बयान नहीं कर सकता। अस्तु यदि आज्ञा हो तो मैं इसका हाल पूरा पूरा बयान कर जाऊं क्योंकि मैं भी भूतनाथ का हाल उतना ही जानता हूं जितना स्वयं भूतनाथ, और भूतनाथ जहां तक बयान कर चुके हैं उसे मैं बाहर खड़ा खड़ा सुन भी चुका हूं। जब मैंने समझा कि अब भूतनाथ से अपना हाल नहीं कहा जाता तब मैं यह अर्ज करने के लिये हाजिर हुआ हूं। (भूतनाथ की तरफ देख के) मेरे इस कहने से आप यह न समझियेगा कि मैं आपके साथ दुश्मनी कर रहा हूं! नहीं, जो काम आपके सुपुर्द किया गया है उसे आपके बदले में मैं आसानी के साथ कर दिया चाहता हूं।"

इन दोनों आदमियों (दलीपशाह) को महाराज तथा और सभों ने भी ताज्जुब के साथ देखा था मगर यह समझ कर इन्द्रदेव से किसी ने कुछ भी न पूछा कि जो कुछ है थोड़ी देर में

मालूम हो ही जायगा, मगर जब दलीपशाह ऊपर लिखी बात बोल कर चुप हो गया तब महाराज ने भेद भरी निगाहों से इन्द्रजीतसिंह की तरफ देखा और कुमार ने झुक कर धीरे से कुछ कह दिया जिसे वीरेन्द्रसिंह तथा तेजसिंह ने भी सुना तथा इनके जरिये से हमारे और साथियों को भी मालूम हो गया कि कुमार ने क्या कहा।

दलीपशाह की बात सुन कर इन्द्रदेव ने महाराज की तरफ देखा और हाथ जोड़ कर कहा, "इन्होंने (दलीप ने) जो कुछ कहा वास्तव में ठीक है, मेरी समझ में अगर भूतनाथ का किस्सा इन्हीं की जुबानी सुन लिया जाय तो कोई हर्ज नहीं है।" इसके जवाब में महाराज ने मंजूरी के लिये सिर हिला दिया।

इन्द्रदेव०। (भूतनाथ की तरफ देख के) क्यों भूतनाथ! इसमें तुम्हें किसी तरह का उज्र है ?

भूतनाथ०। (महाराज की तरफ देख कर और हाथ जोड़ कर) जो महाराज की मर्जी, मुझमें 'नहीं' करने की सामर्थ्य नहीं है। मुझे क्या खबर थी कि कसूर माफ हो जाने पर भी यह दिन देखना नसीब होगा। यद्यपि यह मैं खूब जानता हूं कि मेरा भेद अब किसी से छिपा नहीं रहा परन्तु फिर भी अपनी भूल बार बार कहने या सुनने से लज्जा बढ़ती ही जाती है कम नहीं होती, खैर कोई चिन्ता नहीं, जैसे होगा वैसे अपने कलेजे को मजबूत करूंगा और दलीपशाह की कही हुई बातें सुनूंगा तथा देखूंगा कि ये महाशय कुछ झूठ का भी प्रयोग करते हैं या नहीं।

दलीप०। नहीं भूतनाथ! मैं झूठ कदापि न बोलूंगा इससे तुम बेफिक्र रहो! (इन्द्रदेव की तरफ देख के) अच्छा तो अब मैं प्रारम्भ करता हूं।

दलीपशाह ने इस तरह कहना शुरू किया :—

महाराज ! इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐयारी के फन में भूतनाथ पहले सिरे का ओस्ताद और तेज आदमी है। अगर यह ऐयाशी के दरिया में गोते लगा कर अपने को बरबाद न कर दिये होता तो इसके मुकाबिले का ऐयार आज दुनिया में दिखाई न देता। मेरी सूरत देख कर ये चौंकते और डरते हैं और इनका डरना वाजिब ही है मगर अब मैं इनके साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव नहीं कर सकता क्योंकि मैं ऐसा करने के लिये दोनों कुमारों से प्रतिज्ञा कर चुका हूं और इनकी आज्ञा मैं किसी तरह टाल नहीं सकता क्योंकि इन्हीं की बदौलत आज मैं दुनिया की हवा खा रहा हूं। (भूतनाथ की तरफ देख के) भूतनाथ ! मैं वास्तव में दलीपशाह हूं, उस दिन तुमने मुझे नहीं पहिचाना तो इसमें तुम्हारी आंखों का कोई कसूर नहीं है, कैद की सख्तियों के साथ साथ जमाने की चाल ने मेरी सूरत ही बदल दी है, तुम तो अपने हिसाब से मुझे मार ही चुके थे और तुम्हें मुझसे मिलने की कभी उम्मीद भी न थी मगर सुन लो और देख लो कि ईश्वर की कृपा से मैं अभी तक जीता जागता तुम्हारे सामने खड़ा हूं। यह कुंअर साहब के चरणों का प्रताप है। अगर मैं कैद न हो जाता तो तुमसे बदला लिये बिना कभी न रहता मगर तुम्हारी किस्मत अच्छी थी जो मैं कैद हो गया, और छुटा भी तो कुंअर साहब के हाथ से जो तुम्हारे पक्षपाती हैं। तुम्हें इन्द्रदेव से भी बुरा न मानना चाहिये और यह न सोचना चाहिये कि तुम्हें दुःख देने के लिये इन्द्रदेव तुम्हारा पुराना पचड़ा खुलवा रहे हैं। तुम्हारा किस्सा तो सब को मालूम हो चुका है, इस समय ज्यों का त्यों चुपचाप रह जाने पर तुम्हारे चित्त को शान्ति नहीं मिल सकती और तुम हम लोगों की सूरत देख देख कर दिन रात तरद्दुद में पड़े रहोगे अस्तु तुम्हारे पिछले ऐबों को खोल कर

इन्द्रदेव तुम्हारे चित्त को शान्ति दिया चाहते हैं और तुम्हारे दुश्मनों को जिनके साथ तुम ही ने बुराई की है, तुम्हारा दोस्त बना रहे हैं। ये यह भी चाहते हैं कि तुम्हारे साथ ही साथ हम लोगों का भेद भी खुल जाय और तुम जान जाओ कि हम लोगों ने तुम्हारा कसूर माफ कर दिया है क्योंकि अगर ऐसा न होगा तो जरूर तुम हम लोगों को मार डालने की फिक्र में पड़े रहोगे और हम लोग इस धोखे में रह जायंगे कि हमने इनका कसूर तो माफ ही कर दिया अब ये हमारे साथ बुराई न करेंगे। (जीतसिंह की तरफ देख कर) खैर अब मैं मतलब की तरफ झुकता हूं और भूतनाथ का किस्सा बयान करता हूं।

जिस जमाने का हाल भूतनाथ बयान कर रहा है अर्थात् जिन दिनों भूतनाथ के मकान से दयाराम गायब हो गये थे उन दिनों यही नागर काशी के बाजार में वेश्या बन कर बैठी हुई अमीरों के लड़कों को चौपट कर रही थी। इसकी बढ़ी चढ़ी खूबसूरती लोगों के लिये जहर हो रही थी और माल के साथ ही विशेष प्राप्ति के लिये यह लोगों की जान पर भी वार करती थी। यही दशा मनोरमा की भी थी परन्तु इसकी बनिस्बत वह बहुत ज्यादे रुपै वाली होने पर भी नागर की सी खूबसूरत न थी, हां चालाक जरूर ज्यादे थी। और लोगों की तरह भूतनाथ और दयाराम भी नागर के प्रेमी हो रहे थे। भूतनाथ को अपनी ऐयारी का घमंड था और नागर को अपनी चालाकी का। भूतनाथ नागर के दिल पर कब्जा किया चाहता था और नागर इसकी तथा दयाराम की दौलत अपने खजाने में मिलाना चाहती थी।

दयाराम की खोज में घर से शागिर्दों को साथ लिये हुए बाहर निकलते ही भूतनाथ ने काशी का रास्ता लिया और तेजी

के साथ सफर तय करता हुआ नागर के मकान पर पहुँचा। नागर ने भूतनाथ की बड़ी खातिरदारी और इज्जत की तथा कुशल मंगल पूछने के बाद यकायक यहां आने का सबब भी पूछा।

भूतनाथ ने अपने आने का ठीक ठीक सबब तो नहीं बताया मगर नागर समझ गई कि कुछ दाल में काला जरूर है। इसी तरह भूतनाथ को भी इस बात का शक पैदा हो गया कि दयाराम की चोरी से नागर का कुछ न कुछ लगाव जरूर है अथवा यह उन आदमियों को जरूर जानती है जिन्होंने दयाराम के साथ ऐसी दुश्मनी की है।

भूतनाथ का शक काशी ही वालों पर था इसलिये काशी ही में अड्डा बना कर इसने इधर उधर घूमना और दयाराम का पता लगाना आरम्भ किया। जैसे जैसे दिन बीतता था भूतनाथ का शक भी नागर के ऊपर बढ़ता जाता था। सुनते हैं कि उसी जमाने में भूतनाथ ने एक औरत के साथ काशीजी में ही शादी भी कर ली थी जिससे कि नानक पैदा हुआ है क्योंकि इस झमेले में भूतनाथ को बहुत दिनों तक काशी में रहना पड़ा था।

सच है कि कम्बख्त रंडियां रुपये के सिवा और किसी की नहीं होतीं। जो दयाराम कि नागर को चाहता मानता और दिल खोल कर रुपया देता था, नागर उसी के खून की प्यासी हो गई क्योंकि ऐसा करने से उसे विशेष प्राप्ति की आशा थी। भूतनाथ ने यद्यपि अपने दिल का हाल नागर से बयान नहीं किया मगर नागर को विश्वास हो गया कि भूतनाथ को उस पर शक है और वह दयाराम ही की खोज में काशी आया हुआ है, अस्तु नागर ने अपना उचित प्रबन्ध करके काशी छोड़ दी और गुप्त रीति से जमानिया में जा बसी। भूतनाथ भी मिट्टी सूंघता हुआ उसकी खोज में जमानिया जा पहुंचा और एक भाड़े का मकान लेकर

वहां रहने लगा।

इस खोज ढूंढ़ में वर्षों बीत गये मगर दयाराम का पता न लगा। भूतनाथ ने अपने मित्र इन्द्रदेव से भी मदद मांगी और इन्द्रदेव ने मदद भी दी मगर नतीजा कुछ भी न निकला। इन्द्रदेव ही के कहने से मैं उन दिनों भूतनाथ का मददगार बन गया था।

इस किस्से के सम्बन्ध में रणधीरसिंह के रिश्तेदारों की तथा जमानिया गयाजी और राजगृही इत्यादि की भी बहुत सी बातें कही जा सकती हैं परन्तु मैं उन सभों का बयान करना व्यर्थ समझता हूं और केवल भूतनाथ का ही किस्सा चुन चुन कर बयान करता हूं जिससे कि खास मतलब है।

मैं कह चुका हूं कि दयाराम का पता लगाने के काम में उन दिनों मैं भी भूतनाथ का मददगार था मगर अफसोस! भूतनाथ की किस्मत तो कुछ और ही कराया चाहती थी इसलिये हम लोगों की मेहनत का कोई अच्छा नतीजा न निकला, बल्कि एक दिन जब मिलने के लिये मैं भूतनाथ के डेरे पर गया तो मुलाकात होने के साथ ही भूतनाथ ने आंखें बदल कर मुझसे कहा, "देखो दलीपशाह! मैं तो तुम्हें बहुत अच्छा और नेक समझता था मगर तुम बहुत ही बुरे और दगाबाज निकले। मुझे ठीक ठीक पता लग चुका है कि दयाराम का भेद तुम्हारे दिल के अंदर है और तुम हमारे दुश्मनों के मददगार और भेदिये हो तथा खूब जानते हो कि इस समय दयाराम कहां है। तुम्हारे लिये यही अच्छा है कि सीधी तरह उसका (दयाराम का) पता बता दो नहीं तो मैं तुम्हारे साथ बुरी तरह पेश आऊंगा और तुम्हारी मिट्टी पलीद कर के छोड़ूंगा!"

महाराज! मैं नहीं कह सकता कि उस समय भूतनाथ की इन बेतुकी बातों को सुन कर मुझे कितना क्रोध चढ़ आया। मैं उसके

पास बैठा भी नहीं और न उसकी बात का कुछ जवाब दिया, बस चुपचाप पिछले पैर लौटा और मकान के बाहर निकल आया। मेरा घोड़ा बाहर खड़ा था. मैं उस पर सवार हो कर सीधे इन्द्रदेव की तरफ चला गया। (इन्द्रदेव की तरफ हाथ का इशारा कर के) दूसरे दिन इन्द्रदेव के पास पहुँचा और जो कुछ बीती थी इनसे कह सुनाया। इन्हें भी भूतनाथ की बातें बहुत बुरी मालूम हुई और एक लम्बी सांस ले कर ये मुझसे बोले, "मैं नहीं जानता कि इस दो चार दिन में भूतनाथ को कौन सी नई बात मालूम हो गई और किस बुनियाद पर उसने तुम्हारे साथ ऐसा सलूक किया। खैर कोई चिन्ता नहीं, भूतनाथ अपनी इस बेवकूफी पर अफसोस करेगा और पछतायेगा, तुम इस बात का खयाल न करो और भूतनाथ से मिलना जुलना छोड़ कर दया-राम की खोज में लगे रहो, तुम्हारा अहसान रणधीरसिंह पर और मेरे ऊपर होगा।"

इन्द्रदेव ने बहुत कुछ कह सुन कर मेरा क्रोध शान्त किया और दो दिन तक मुझे अपने यहां मेहमान रक्खा। तीसरे दिन मैं इन्द्रदेव से बिदा होने वाला ही था कि इनके एक शागिर्द ने आ कर एक विचित्र खबर सुनाई। उसने कहा कि आज रात को बारह बजे के समय मिर्जापुर के एक जमींदार 'राजसिंह' के यहां दयाराम के होने का पता मुझे लगा है। खुद मेरे भाई ने यह खबर दी है। उसने यह भी कहा है कि आज कल नागर भी उन्हीं के यहां है।

इन्द्रदेव०। (शागिर्द से) वह खुद मेरे पास क्यों नहीं आया?

शागिर्द०। वह आप ही के पास आ रहा था, मुझसे रास्ते में मुलाकात हुई और उसके पूछने पर मैंने कहा कि दयारामजी का पता लगाने के लिये मैं तैनात किया गया हूं। उसने तब

दिया कि अब तुम्हारे जाने की कोई जरूरत न रही। मुझे उनका पता लग गया और यही खुशखबरी सुनाने के लिये मैं सरकार के पास जा रहा हूं, मगर अब तुम मिल गये हो तो मेरे जाने की कोई जरूरत नहीं, जो कुछ मैं कहता हूं तुम जा कर सुना दो और मदद ले कर बहुत जल्द मेरे पास आओ, मैं फिर उसी जगह जाता हूं, कहीं ऐसा न हो कि दयारामजी वहां से भी निकाल कर दूसरी जगह पहुँचा दिये जायं और हम लोगों को पता न लगे, मैं जा कर इस बात का ध्यान रक्खूंगा। इसके बाद उसने सब कैफियत बयान की और अपने मिलने का पता बताया।

इन्द्रदेव०। ठीक है, उसने जो कुछ किया बहुत अच्छा किया, अब उसे मदद पहुँचाने का बन्दोबस्त करना चाहिये।

शागिर्द०। यदि आज्ञा हो तो भूतनाथ को भी इस बात की इत्तला दे दी जाय?

इन्द्रदेव०। कोई जरूरत नहीं, अब तुम जा कर कुछ आराम करो, तीन घण्टे बाद फिर तुम्हें सफर करना होगा।

इसके बाद इन्द्रदेव का शागिर्द जब अपने डेरे पर चला गया तब मुझसे और इन्द्रदेव से बातचीत होने लगी। इन्द्रदेव ने मुझसे मदद मांगी और मुझे मिरजापुर जाने के लिये कहा, मगर मैंने इन्कार किया और कहा कि अब मैं न तो भूतनाथ का मुंह देखूंगा और न उसके किसी काम में शरीक होऊंगा। इस के जवाब में इन्द्रदेव ने मुझे पुनः समझाया और कहा कि यह काम भूतनाथ का नहीं है, मैं कह चुका हूं कि इसका अहसान मुझ पर और रणधीरसिंह पर होगा।

इसी तरह की बहुत सी बातें हुईं। लाचार मुझे इन्द्रदेव की बात माननी पड़ी और कई घण्टे के बाद इन्द्रदेव के उसी शागिर्द

'शंभू' को साथ लिये हुए मैं मिरजापुर की तरफ रवाना हुआ। दूसरे दिन हम लोग मिरजापुर जा पहुंचे और बताये हुए ठिकाने पर पहुँच कर शम्भू के भाई से मुलाकात की। दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि दयाराम अभी तक मिर्जापुर की सरहद के बाहर नहीं गये हैं, अस्तु जो कुछ हम लोगों को करना था आपुस में तै करने के बाद सूरत बदल कर बाहर निकले।

दयाराम को ढूंढ निकालने के लिये हमने कैसी कैसी मेहनतें कीं और हम लोगों को किस किस तरह की तकलीफें उठानी पड़ीं, इसका बयान करना किस्से को व्यर्थ तूल देना और अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना है। महाराज के (आपके) नामी ऐयारों ने जैसे जैसे अनूठे काम किये हैं उनके सामने हमारी ऐयारी कुछ भी नहीं है अतएव केवल इतना ही कहना काफी है कि हम लोगों ने अपनी हिम्मत से बढ़ कर काम किया और हद दर्जे की तकलीफ उठा कर दयारामजी को ढूंढ निकला। केवल दयाराम ही को नहीं बल्कि उनके साथ ही साथ 'राजसिंह' को भी गिरफ्तार कर के हमलोग अपने ठिकाने पर ले आये, मगर अफसोस! हम लोगों की सब मेहनत पर भूतनाथ ने पानी ही नहीं फेर दिया बल्कि जन्म भर के लिये अपने माथे पर कलंक का टीका लगाया।

कैद की सख्ती उठाने के कारण दयारामजी बहुत कमजोर और बीमार हो रहे थे, उनमें बात करने की भी ताकत न थी, इसलिये हम लोगों ने उसी समय उन्हें उठा कर इन्द्रदेव के पास ले जाना मुनासिब न जाना और दो तीन दिन तक आराम देने की नीयत से अपने गुप्त स्थान पर जहां हम लोग टिके हुए थे ले गये। जहां तक हो सका नरम बिछावन का इन्तजाम करके उस पर उन्हें लिटा दिया और उनके शरीर में ताकत लाने का बन्दो-

बस्त करने लगे। इस बात का भी निश्चय कर लिया कि जब तक इनकी तबीयत ठीक न हो जायगी इनसे कैद किये जाने का सबब तक न पूछेंगे।

दयारामजी के आराम का इन्तजाम करने के बाद हम लोगों ने अपने अपने हर्बे खोल कर उनकी चारपाई के नीचे रख दिये, कपड़े उतारे, और बातचीत करने तथा दुश्मनी का सबब जानने के लिये राजसिंह को होश में लाये और उसकी मुश्कें खोल कर बातचीत करने लगे क्योंकि उस समय इस बात का डर हम लोगों को कुछ भी न था कि वह हम पर हमला करेगा या हम-हमलोगों का कुछ बिगाड़ सकेगा।

जिस मकान में हम लोग टिके हुए थे वह बहुत ही एकान्त और उजाड़ महल्ले में था। रात का समय था और मकान की तीसरी मंजिल पर हम लोग बैठे हुए थे। एक मद्धिम चिराग आले पर जल रहा था। दयारामजी का पलंग हम लोगों के पीछे की तरफ था और राजसिंह सामने बैठे हुए ताज्जुब के साथ हम लोगों का मुंह देख रहे थे। उसी समय यकायक कई दफे धम्मा-के की आवाज आई और उसके कुछ ही देर बाद भूतनाथ तथा उसके दो साथियों को हम लोगों ने अपने सामने खड़े देखा। सामना होने के साथ ही भूतनाथ ने मुझसे कहा, "क्यों बे शैतान के बच्चे! आखिर मेरी बात ठीक निकली न! तू ही ने राज-सिंह के साथ मेल करके हमारे साथ दुश्मनी पैदा की, खैर ले अपने किये का फल चख!!"

इतना कह कर भूतनाथ ने मेरे ऊपर खंजर का वार किया जिसे बड़ी खूबी के साथ मेरे साथी ने रोका। मैं भी उठ कर खड़ा हो गया और भूतनाथ के साथ लड़ाई होने लगी। भूतनाथ ने एक ही हाथ में राजसिंह का काम तमाम कर दिया और थोड़ी ही

देर में मुझे भी खूब जख्मी किया, यहां तक कि मैं जमीन पर गिर पड़ा और मेरे दोनों साथी भी बेकार हो गये। उस समय दयारामजी को जो पड़े पड़े सब तमाशा देख रहे थे जोश चढ़ आया और वे चारपाई पर से उठ कर खाली हाथ भूतनाथ के सामने आ खड़े हुए, मगर कुछ बोला ही चाहते थे कि भूतनाथ के हाथ का खंजर उनके कलेजे के पार हो गया। और वे बेदम होकर जमीन पर गिर पड़े !!

चौथा बयान

मैं नहीं कह सकता कि भूतनाथ ने ऐसा क्यों किया। भूतनाथ का कौल तो यही है कि मैंने उनको पहिचाना नहीं, और मुझे धोखा हुआ। खैर जो हो, दयाराम के गिरते ही मेरे मुंह से 'हाय' की आवाज निकली और मैंने भूतनाथ से कहा, "ऐ कम्बख्त ! तैंने बेचारे दयारामजी को क्यों मार डाला जिन्हें बड़ी मुश्किल से हम लोगों ने खोज निकाला था !"

मेरी बात सुनते ही भूतनाथ सन्नाटे में आ गया। इसके तीनों साथी तो न मालूम क्या सोच कर एक दम भाग खड़े हुए, मगर भूतनाथ बड़ी बेचैनी से दयारामजी के पास बैठ कर उनका मुंह देखने लगा। उस समय भूतनाथ के देखते ही देखते उन्होंने आखिरी हिचकी ली और दम तोड़ दिया। भूतनाथ उनकी लाश के साथ चिमट कर रोने लगा और बड़ी देर तक रोता रहा। तब तक हम तीनों आदमी भी पुनः मुकाबिला करने लायक हो गये और इस बात से हम लोगों का साहस और भी बढ़ गया कि भूतनाथ के दोनों साथी उसे अकेला छोड़ कर भाग गये थे। मैंने मुश्किल से भूतनाथ को उनसे अलग किया और कहा, "अब रोने और नखरा करने से फायदा ही क्या होगा, उनके

साथ ऐसी ही मुहब्बत थी तो उन पर वार न करना था, अब उन्हें मार कर औरतों की तरह नखरा करने बैठे हो ?"

इतना सुन कर भूतनाथ ने अपनी आंखें पोंछीं और मेरी तरफ देख के कहा, "क्या मैंने जान बूझ कर इन्हें मार डाला है ?"

मैं० । बेशक ! क्या यहां आने के साथ ही तुमने इन्हें चारपाई पर पड़े हुए नहीं देखा था ?

भूतनाथ० । देखा था, मगर मैं नहीं जानता था कि ये दयाराम हैं । इतने मोटे ताजे आदमी को यकायक ऐसा दुबला पतला देख कर मैं कैसे पहिचान सकता था ?

मैं० । क्या खूब, ऐसे ही तो तुम अन्धे थे ! खैर इसका इन्साफ तो रणधीरसिंह के सामने हो रहेगा । इस समय तुम हमसे फैसला कर लो क्योंकि अभी तक तुम्हारे दिल में लड़ाई का हौसला जरूर बना होगा ।

भूत० । (अपने को सम्भाल कर और मुंह पोंछ कर) नहीं नहीं, मुझे अब लड़ने का हौसला नहीं है, जिसके वास्ते मैं लड़ता था जब वही नहीं रहा तो अब क्या ? मुझे ठीक पता लग चुका था कि दयाराम तुम्हारे फेर में पड़े हुए हैं, और सो अपनी आंखों से देख भी लिया, मगर अफसोस है कि मैंने पहिचाना नहीं और वे इस तरह धोखे में मारे गये, लेकिन इसका कसूर भी तुम्हारे ही सिर लग सकता है ।

मैं० । खैर अगर तुम्हारे किये हो सके तो तुम बिल्कुल कसूर मेरे ही सिर थोप देना, मैं अपनी सफाई आप कर लूंगा, मगर इतना समझ रक्खो कि लाख कोशिश करने पर भी तुम अपने को बचा नहीं सकते क्योंकि मैंने इन्हें खोज निकालने में जो कुछ मेहनत की थी वह इन्द्रदेवजी के कहने से की थी, न तो मैं अपनी प्रशंसा कराना चाहता था और न मैं इनाम ही लेना

चाहता था, जरूरत पड़ने पर मैं इन्द्रदेव की गवाही दिला सकता हूं और तुम अपने को बेकसूर साबित करने के लिए नागर को पेश कर देना, जिसके कहने और सिखाने से तुमने मेरे साथ दुश्मनी पैदा कर ली।

इतना सुन कर भूतनाथ सन्नाटे में आ गया। सिर झुका कर देर तक कुछ सोचता रहा और इसके बाद लम्बी सांस लेकर उसने मेरी तरफ देखा और कहा, "बेशक मुझे नागर कम्बख्त ने धोखा दिया! अब तो मुझे भी इन्हीं के साथ मर मिटना चाहिये!" इतना कह कर भूतनाथ ने खञ्जर हाथ में ले लिया मगर कुछ कर न सका अर्थात् अपनी जान न दे सका।

महाराज! जवांमर्दों का यह कहना बहुत ठीक है कि बहादुरों को अपनी जान प्यारी नहीं होती। वास्तव में जिसे अपनी जान प्यारी होती है वह कोई हौसले का काम नहीं कर सकता और जो अपनी जान हथेली पर लिये रहता है और समझता है कि दुनिया में मरना एक ही बार है कोई बार बार नहीं मरता, वही सब कुछ कर सकता है। भूतनाथ के बहादुर होने में सन्देह नहीं परन्तु इसे अपनी जान प्यारी जरूर थी, और इस उलटी बात का सबब यही था कि यह ऐयाशी के नशे में चूर था। जो आदमी ऐयाश होता है उसमें ऐयाशी के सबब कई तरह की बुराइयां आ जाती हैं और उन बुराइयों की बुनियाद जम जाने के कारण ही उसे अपनी जान प्यारी हो जाती है तथा वह कोई काम कर नहीं सकता। यही सबब था कि उस समय भूतनाथ अपनी जान दे न सका; बल्कि उसकी हिफाजत करने का ढंग जमाने लगा, नहीं तो उस समय मौका ऐसा ही था, इससे जैसी भूल हो गई थी उसका बदला तभी पूरा होता जब यह भी उसी जगह अपनी जान दे देता और उस मकान से तीनों लाशें एक

साथ ही निकाली जातीं।

भूतनाथ ने कुछ देर तक सोचने के बाद मुझसे कहा—"मुझे इस समय अपनी जान भारी हो रही है और मैं मर जाने के लिये तैयार हूं मगर मैं देखता हूं कि ऐसा करने से भी किसी को फायदा नहीं पहुँचेगा। मैं जिसका नमक खा चुका हूं और खाता हूं उसका और भी नुक्सान होगा क्योंकि इस समय वह दुश्मनों से घिरा हुआ है। अगर मैं जीता रहूंगा तो उनके दुश्मनों का नामोनिशान मिटा कर उन्हें बेफिक्र कर सकूंगा, अतएव मैं माफी मांगता हूं और चाहता हूं कि तुम मेहरबानी कर मुझे सिर्फ दो साल के लिए जीता छोड़ दो।"

मैं०। दो वर्ष के लिए क्या मैं जिन्दगी भर के लिए तुम्हें छोड़ देता हूं, जब तुम मुझसे लड़ना नहीं चाहते तो मैं क्यों तुम्हें मारने लगा? बाकी रही यह बात कि तुमने खामखाह मुझसे दुश्मनी पैदा कर ली है, सो इसका नतीजा तुम्हें आप से आप मिल जायगा जब लोगों को यह मालूम होगा कि भूतनाथ के हाथ से बेचारा दयाराम मारा गया।

भूतनाथ०। नहीं नहीं, मेरा मतलब तुम्हारी पहिली बात से नहीं है बल्कि दूसरी बात से है, अर्थात् अगर तुम चाहोगे तो लोगों को इस बात का पता ही नहीं लगेगा कि दयाराम भूतनाथ के हाथ से मारा गया।

मैं०। यह क्यों कर छिप सकता है?

भूतनाथ०। अगर तुम छिपाओ तो सब कुछ छिप जायगा।

मुख्तसर यह कि धीरे धीरे बातों को बढ़ाता हुआ भूतनाथ मेरे पैरों पर गिर पड़ा और बड़ी खुशामद के साथ कहने लगा कि तुम इस मामले को छिपा कर मेरा जान बचा लो। केवल इतना ही नहीं, उसने मुझे हर तरह के सब्ज बाग दिखाये और

कसमें दे देकर मेरी नाकों में दम कर दिया। लालच में तो मैं नहीं पड़ा मगर पिछली मुरौवत के फेर में जरूर पड़ गया और भेद को छिपाये रखने की कसम खाकर अपने साथियों को साथ लिये हुए मैं उस घर से बाहर निकल गया। भूतनाथ तथा दोनों लाशों को उसी तरह छोड़ दिया, फिर मुझे नहीं मालूम कि भूतनाथ ने उन लाशों के साथ क्या बर्ताव किया।

यहां तक भूतनाथ का हाल कह कर कुछ देर के लिये दलीपशाह चुप हो गया और उसने इस नीयत से भूतनाथ की तरफ देखा कि देखें यह कुछ बोलता है या नहीं। इस समय भूतनाथ की आंखों से आंसू की नदी बह रही थी और वह हिचकियां ले ले कर रो रहा था। बड़ी मुश्किल से भूतनाथ ने अपने दिल को सम्हाला और दुपट्टे से मुंह पोछ कर कहा, "ठीक है, ठीक है, जो कुछ दलीपशाह ने कहा सब सच है, मगर यह बात मैं कसम खाकर कह सकता हूं कि मैंने जान बूझ कर दयाराम को नहीं मारा। वहां राजसिंह को खुले हुए देख कर मेरा शक यकीन के साथ बदल गया और चारपाई पर पड़े हुए देख कर भी मैंने दयाराम को नहीं पहिचाना। मैंने समझा कि यह भी कोई दलीपशाह का साथी होगा। बेशक दलीपशाह पर मेरा शक मजबूत हो गया था और मैं समझ बैठा था कि जिन लोगों ने दयाराम के साथ दुश्मनी की है दलीपशाह जरूर उनका साथी है। यह शक यहां तक मजबूत हो गया था कि दयाराम के मारे जाने पर भी दलीपशाह की तरफ से मेरा दिल साफ न हुआ बल्कि मैंने समझा कि इसी (दलीपशाह) ने दयाराम को वहां लाकर कैद किया था। जिस नागर पर मुझे शक हुआ था उसी कम्बख्त की जादू भरी बातों में मैं फंस गया और उसी ने मुझे विश्वास दिला दिया कि इसका कर्ता धर्ता दलीपशाह है। यही सबब है कि इतना

गी। आने पर भी मैं दलीपशाह का दुश्मन बना ही रहा। द दलीपशाह से एक बात नहीं कही, यह कह है कि इस भेद क छिपाये रखने की कसम खाकर भी दलीपशाह ने मुझे सूखा नहीं छोड़ा। इसने कहा कि तुम कागज पर लिख कर माफी मांग गा तो तुम्हें माफ करके यह भेद छिपाये रखने की कसम खा सकता हूं। लाचार होकर मुझे ऐसा करना पड़ा और मैं माफी के लिये चिट्ठी लिख हमेशा के लिये इसके हाथ में फंस गया।"

दलीप०। बेशक यही बात है, और अगर मैं ऐसा न करत तो थोड़े ही दिन बाद भूतनाथ मुझे दोषी ठहरा कर आप सच्च बन जाता। खैर अब मैं इसके आगे का हाल बयान करता जिसमें थोड़ा सा हाल तो ऐसा होगा जो मुझे खास भूतनाथ से मालूम हुआ था।

इतना कह कर दलीपशाह ने फिर बयान करना शुरू किया:—

दलीप०। जैसा कि भूतनाथ कह चुका है बहुत मिन्नत औ खुशामद से लाचार होकर मैंने कसूरवार होने और माफी मांगने की चिट्ठी लिखा कर इसे छोड़ दिया और इसका ऐब छिपा रखने का वादा करके अपने साथियों को साथ लिये हुए उस घर से बाहर निकल गया और भूतनाथ की इच्छानुसार दयाराम की लाश को और भूतनाथ को उसी मकान में छोड़ दिया। फि मुझे नहीं मालूम कि क्या हुआ और इसने दयाराम की लाश के साथ कैसा बर्ताव किया।

वहां से बाहर होकर मैं इन्द्रदेव की तरफ रवाना हुआ मगर रास्ते भर सोचता जाता था कि अब मुझे क्या करना चाहिये, दयाराम का सच्चा सच्चा हाल इन्द्रदेव से बयान करना चाहिये या नहीं। आखिर हम लोगों ने निश्चय कर लिया कि जब भूत नाथ से वादा कर ही चुके हैं तो इस भेद को इन्द्रदेव से भी

छिपा ही रखना चाहिये।

जब हम लोग इन्द्रदेव के मकान में पहुँचे, तो उन्होंने कुशल मंगल पूछने के बाद दयाराम का हाल दरियाफ्त किया जिसके जवाब में मैंने असल मामले को तो छिपा रक्खा और बात बना कर यों कह दिया कि जो कुछ मैंने या आपने सुना था वह ठीक ही निकला अर्थात् राजसिंह ही ने दयाराम के साथ वह सलूक किया था और दयाराम राजसिंह के घर में मौजूद भी थे मगर अफसोस, बेचारे दयाराम को हम लोग छुड़ा न सके और वे जान से मारे गये।

इन्द्रदेव०। (चौंक कर) हैं! जान से मारे गये!!

मैं०। जी हां और इस बात की खबर भूतनाथ को भी लग चुकी थी। मेरे पहिले ही भूतनाथ राजसिंह के उस मकान में जिसमें उसने दयाराम को कैद कर रक्खा था पहुँच गया और उसने अपने सामने दयाराम की लाश देखी जिसे कुछ ही देर पहिले राजसिंह ने मार डाला था अस्तु भूतनाथ ने उसी समय राजसिंह का सिर काट डाला, सिवाय इसके और कर ही क्या सकता था! इसके थोड़ी देर बाद हम लोग भी उस घर में जा पहुंचे और दयाराम तथा राजसिंह की लाश और भूतनाथ को वहां मौजूद पाया। दरियाफ्त करने पर भूतनाथ ने सब हाल बयान किया और अफसोस करते हुए हम लोग वहां से रवाना हुए।

इन्द्रदेव०। अफसोस! बहुत ही बुरा हुआ! खैर ईश्वर की मर्जी!!

मैंने भूतनाथ के ऐब को छिपा कर जो कुछ इन्द्रदेव से कहा भूतनाथ की इच्छानुसार ही कहा था। भूतनाथ ने भी यही बात मशहूर की और इस तरह अपने ऐब को छिपा रक्खा।

यहां तक भूतनाथ का किस्सा कह कर जब दलीपशाह कुछ

देर के लिये चुप हो गया। तब तेजसिंह ने उससे पूछा, "तुमने तो भला भूतनाथ की बात मान कर उस मामले को छिपा रक्खा मगर शम्भू वगैरह इन्द्रदेव के शागिर्दों ने अपने मालिक से इस भेद को क्यों छिपाया ?"

दलीप०। (एक लंबी सांस लेकर) खुशामद और रुपया बड़ी चीज है, बस इसी से समझ जाइये और मैं क्या कहूं !

तेज०। ठीक है, अच्छा तब क्या हुआ ? भूतनाथ की कथा इतनी ही है या और भी कुछ ?

दलीप०। जी अभी भूतनाथ की कथा समाप्त नहीं हुई, अभी मुझे बहुत कुछ कहना बाकी है। और बातों के सिवाय भूतनाथ से एक कसूर ऐसा हुआ है जिसका रंज भूतनाथ को इससे भी ज्यादा होगा।

तेज०। सो क्या ?

दलीप०। सो भी मैं अर्ज करता हूं।

इतना कह कर दलीपशाह ने फिर इस तरह कहना शुरू किया :—

"इस मामले को वर्षों बीत गये। मैं भूतनाथ की तरफ से कुछ दिनों तक तो बेफिक्र रहा मगर जब यह मालूम हुआ कि भूतनाथ मेरी तरफ से निश्चिन्त नहीं है बल्कि मुझे इस दुनिया ही से उठा कर बेफिक्र हुआ चाहता है, तो मैं भी होशियार हो गया और दिन रात अपने बचाव की फिक्र में डूबा रहने लगा। (भूतनाथ की तरफ देख कर) भूतनाथ ! अब मैं वह हाल बयान करूंगा जिसकी तरफ उस दिन मैंने इशारा किया था जब तुम हमें गिरफ्तार करके एक विचित्र पहाड़ी स्थान * में ले गये थे और जिसके विषय में तुमने कहा था कि—यद्यपि मैंने

* देखिये बीसवां हिस्सा, बारहवाँ बयान।

दलीपशाह की सूरत नहीं देखी है—इत्यादि। मगर क्या तुम इस समय भी .....

भूतनाथ०। (बात काट कर) भला मैं कैसे कह सकता हूं कि मैंने दलीपशाह की सूरत नहीं देखी है जिसके साथ ऐसे ऐसे मामले हो चुके हैं, मगर उस दिन मैंने तुम्हें धोखा देने के लिये वे शब्द कहे थे क्योंकि मैंने तुम्हें पहिचाना नहीं था। इस कहने से मेरा यही मतलब था कि अगर तुम दलीपशाह न होगे तो कुछ न कुछ जरूर बात बनाओगे। खैर जो कुछ हुआ सो हुआ मगर क्या तुम वास्तव में अब उस किस्से को बयान करने वाले हो ?

दलीप०। हां मैं उसे जरूर बयान करूंगा।

भूत०। मगर उसके सुनने से किसी को कुछ फायदा नहीं पहुँच सकता और न किसी तरह की नसीहत ही हो सकती है। यह तो महज मेरी नादानी और पागलपने की बात थी। जहां तक मैं समझता हूं उसे छोड़ देने से कोई हर्ज नहीं होगा।

दलीप०। नहीं, उसका बयान करना जरूरी जान पड़ता है, क्या तुम नहीं जानते या भूल गये कि उसी किस्से को सुनने के लिये कमला की मां अर्थात तुम्हारी स्त्री यहां आई हुई है ?

भूत०। ठीक है, मगर हाय ! मैं सच्चा बदनसीब हूं जो इतना होने पर भी उन्हीं बातों को......

इन्द्रदेव०। अच्छा अच्छा, जाने दो भूतनाथ ! अगर तुम्हें इस बात का शक है कि दलीपशाह बातें बना कर कहेगा या उसके कहने का ढंग लोगों पर बुरा असर डालेगा तो मैं दलीपशाह को वह हाल कहने से रोक दूंगा और तुम्हारे ही हाथ की लिखी हुई जीवनी पढ़ने के लिये किसी को दूंगा जो उस सन्दूकड़ी में बन्द है।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने वही सन्दूकड़ी निकाली जिसकी सूरत देखने ही से भूतनाथ का कलेजा कांपता था।

उस सन्दूकड़ी को देखते ही एक दफे तो भूतनाथ घबड़ाना सा हो कर कांपा मगर तुरत ही उसने अपने को सम्हाल लिया और इन्द्रदेव की तरफ देख के बोला, "हां हां, आप कृपा कर इस सन्दूकड़ी को मेरी तरफ बढ़ाइये क्योंकि यह मेरी चीज है और मैं इसे ले लेने का हक रखता हूं। यद्यपि कई ऐसे कारण हो गये हैं जिनसे आप कहेंगे कि यह सन्दूकड़ी तुम्हें नहीं दी जायगी मगर फिर भी मैं इसी समय इस पर कब्जा कर सकता हूं क्योंकि देवीसिंह जी मुझसे प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि यह सन्दूकड़ी वन्द की वन्द तुम्हें दिला दूंगा अस्तु देवीसिंहजी की प्रतिज्ञा झूठी नहीं हो सकती।" इतना कह कर भूतनाथ ने देवीसिंह की तरफ देखा।

देवी०। (महाराज से) निःसन्देह मैं ऐसी प्रतिज्ञा कर चुका हूं।

महा०। अगर ऐसा है तो तुम्हारी प्रतिज्ञा झूठी नहीं हो सकती, मैं आज्ञा देता हूं कि तुम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो।

इतना सुनते ही देवीसिंह उठ खड़े हुए। उन्होंने इन्द्रदेव के सामने से वह सन्दूकड़ी उठा ली और यह कहते हुए भूतनाथ के हाथ में दे दी, "लो मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता हूं, तुम महाराज को सलाम करो जिन्होंने मेरी और तुम्हारी इज्जत रख ली!"

भूत०। (महाराज को सलाम करके) महाराज की कृपा से अब मैं जी उठा!

तेज०। भूतनाथ! तुम निश्चय जानो कि यह सन्दूकड़ी अभी तक खोली नहीं गई है, अगर सहज में खुलने लायक होती तो शायद खुल गई होती।

भूत०। (सन्दूकड़ी को अच्छी तरह देख भाल कर) बेशक यह अभी तक नहीं खुली है ! मेरे सिवाय कोई दूसरा आदमी से बिना तोड़े खोल भी नहीं सकता। यह सन्दूकड़ी मेरी बुराइयों से भरी हुई है, या यों कहिये कि यह मेरे भेदों का खजाना है। यद्यपि इसमें के कई भेद खुल चुके हैं खुल रहे हैं और खुलते जायेंगे, तथापि इस समय इसे ज्यों का त्यों बन्द पा कर मैं बराबर महाराज को दुआ देता हुआ यही कहूंगा कि मैं जी उठा, जी उठा, जी उठा ! अब मैं खुशी से अपनी जीवनी कहने और सुनने के लिये तैयार हूं और साथ ही इसके यह भी कहे देता हूं कि अपनी जीवनी के सम्बन्ध में जो कुछ मैं कहूंगा सच कहूंगा।

इतना कह कर भूतनाथ ने वह सन्दूकड़ी अपने बटुए में रख ली और पुनः हाथ जोड़ के महाराज से बोला, "महाराज ! मैं वादा कर चुका हूं कि अपना हाल सच सच बयान करूंगा, परन्तु मेरा हाल बहुत बड़ा और शोक दुःख तथा भयंकर घटनाओं से भरा हुआ है। मेरे प्यारे मित्र इन्द्रदेव जी, जिन्होंने मेरे अपराधों को क्षमा कर दिया है, कहते हैं कि तेरी जीवनी से लोगों का उपकार होगा और वास्तव में बात भी ठीक ही है अतएव कई कठिनाइयों पर ध्यान दे कर मैं विनय पूर्वक महाराज से एक महीने की मोहलत मांगता हूं। इस बीच में मैं अपना पूरा पूरा हाल लिख कर पुस्तक के रूप में महाराज के सामने पेश करूंगा और सम्भव है कि महाराज उसे सुन सुना कर यादगार की तौर पर अपने खजाने में रखने की आज्ञा देंगे। इस एक महीने के बीच में मुझे भी सब बातें याद कर के लिख लेने का मौका मिलेगा और मैं अपनी निर्दोष स्त्री तथा उन लोगों से जिन्हें देखने की भी आशा नहीं थी परन्तु जो बहुत कुछ दुःख भोग कर भी दोनों कुमारों की बदौलत इस समय यहां आ गये हैं और

साथ दुश्मनी का ध्यान आने पर मैं अपने को दोषी समझूंगा।

इतना कह कर अर्जुनसिंह ने वह तस्वीर जो उसके हाथ में थी फाड़ डाली और टुकड़े टुकड़े करके भूतनाथ के आगे फेंक दी और पुनः महाराज की तरफ देख कर कहा, "यदि आज्ञा हो और वेअदवी न समझी जाय तो हम लोग इसी समय भूतनाथ से गले गले मिल कर अपने उदास दिल को प्रसन्न कर लें।"

महाराज०। यह तो हम स्वयम् कहने वाले थे।

इतना सुनते ही दोनों दलीप अर्जुन और भूतनाथ आपुस में गले गले मिले और इसके बाद महाराज का इशारा पा कर एक साथ बैठ गये।

भूतनाथ०। (दूसरे दलीप और अर्जुन की तरफ देख कर) अब कृपा कर के मेरे दिल का खुटका मिटाओ और साफ साफ बता दो कि तुम दोनों में से असल में अर्जुनसिंह कौन है? जब मैं दलीपशाह को बेहोश करके उस घाटी में ले गया था * तब तुम दोनों में से कौन महाशय वहां पहुँच कर दूसरे दलीपशाह बनने को तैयार हुए थे?

दूसरा दलीप०। (हंस कर) उस दिन मैं ही तुम्हारे पास पहुंचा था। इत्तफाक से उस दिन मैं अर्जुनसिंह की सूरत बन कर बाहर घूम रहा था और जब तुम दलीपशाह को धोखा देकर ले चले तब मैंने छिप कर पीछा किया था। आज केवल धोखा देने के लिये ही अर्जुनसिंह के रहते मैं अर्जुनसिंह बन कर दलीपशाह के साथ यहां आया हूं।

इतना कह कर दूसरे दलीप ने पास से गीला गमछा उठाया और अपने चेहरे का रंग पोछ डाला जो उसने थोड़ी देर के लिये बनावटी या लगाया था।

* देखिये बीसवां हिस्सा तेरहवां बयान।

चेहरा साफ होते ही उसकी सूरत ने राजा गोपालसिंह को चौंका दिया और वह यह कहते हुए उसके पास चले गए कि क्या भरतसिंह आप ही हैं जिनके विषय में इन्द्रजीतसिंह ने मैं नकाबपोश बन कर इत्तला दी थी ? * और इसके जवाब में "जी हां" सुन कर वे भरतसिंह के गले से चिपट गए। इसके बाद उनका हाथ थामे हुए गोपालसिंह अपनी जगह पर चले आये और भरतसिंह को अपने पास बैठा कर महाराज से बोले, "इनके मिलने की मुझे हद से ज्यादे खुशी हुई, बहुत देर से मैं चाहता था कि इनके विषय में कुमार से कुछ पूछूं।"

महाराज०। मालूम होता है कि इन्हें भी दारोगा ही ने अपना शिकार बनाया था ?

भरत०। जी हां, आज्ञा होने पर मैं अपना हाल बयान करूंगा।

इन्द्रजीत०। (महाराज से) तिलिस्म के अन्दर मुझे पांच कैदी मिले थे जिनमें से तीन तो यही अर्जुनसिंह भरतसिंह और दलीपशाह हैं, इनके अतिरिक्त दो और हैं जो यहां बुलाये नहीं गये। दारोगा मायारानी तथा उनके पक्षवालों के सम्बन्ध में इन पांचों ही का किस्सा सुनने योग्य है। जब कैदियों का मुकद्दमा होगा तब आप देखेंगे कि इन लोगों की सूरत देख कर कैदियों की क्या हालत होती है !

महाराज०। वे दोनों कहां हैं ?

इन्द्रजीत०। इस समय यहां मौजूद नहीं हैं, छुट्टी लेकर अपने घर की अवस्था देखने गये हैं, दो चार दिन में आ जायंगे।

भूत०। (इन्द्रदेव से) यदि आज्ञा हो तो मैं भी कुछ पूछूं ?

* देखिये बीसवें हिस्से के बयान आठवें में कुमार की चीठी।

इन्द्रदेव०। आप जो कुछ पूछेंगे उसे मैं खूब जानता हूं मगर खैर पूछिये।

भूत०। कमला की मां आप लोगों को कहां से और क्योंकर मिली?

इन्द्र०। यह तो उसी की जुबानी सुनने में ठीक होगा। जब वह अपना किस्सा बयान करेगी कोई बात छिपी न रह जायगी।

भूत०। और नानक की मां तथा देवीसिंहजी की स्त्री के विषय में कब मालूम होगा?

इन्द्र०। वह भी उसी समय मालूम हो जायगा। मगर भूतनाथ, (मुस्कुरा कर) तुमने और देवीसिंह ने नकाबपोशों का पीछा करके व्यर्थ यह खुटका और तरद्दुद खरीद लिया! यदि उनका पीछा न करते और पीछे से तुम दोनों को मालूम होता कि तुम्हारी स्त्रियें भी इस काम में शरीक हुई थीं तो तुम दोनों को एक प्रकार की प्रसन्नता होती। प्रसन्नता तो अब भी होगी मगर खुटके और तरद्दुद से कुछ खून सुखा लेने के बाद!!

इतना कह कर इन्द्रदेव हंस पड़े और इसके बाद सभों के चेहरों पर मुस्कुराहट दिखाई देने लगी।

तेज०। (मुस्कुराते हुए देवीसिंह से) अब तो आपको भी मालूम हो गया होगा कि आपका लड़का तारासिंह कई विचित्र भेदों को आपसे क्यों छिपाता था?

देवी०। जी हां, सब कुछ मालूम हो गया। जब अपने को प्रगट करने के पहिले ही दोनों कुमारों ने भैरो और तारा को अपना साथी बना लिया तो हम लोग जहां तक आश्चर्य में डाले जाते थोड़ा था!

देवीसिंह की बात सुन कर पुनः सभों ने मुस्कुरा दिया और अब दर्बार का रंग ढंग ही कुछ दूसरा हो गया अर्थात् तरद्दुद के

बदले सभों के चेहरे पर हंसी और मुस्कुराहट दिखाई देने लगी।

तेज०। (भूतनाथ से) भूतनाथ ! आज तुम्हारे लिये बड़ी खुशी का दिन है क्योंकि और बातों के अतिरिक्त तुम्हारी नेक और सती स्त्री भी तुम्हें मिल गई जिसे तुम मरी हुई समझते थे और हरनामसिंह तुम्हारा लड़का भी तुम्हारे पास बैठा हुआ दिखाई देता है जो बहुत दिनों से गायब था और जिसके लिये बेचारी कमला बहुत ही परेशान थी, जब वह हरनामसिंह का हाल सुनेगी तो बहुत ही प्रसन्न होगी।

भूत०। निःसन्देह ऐसा ही है, परन्तु मैं हरनामसिंह के सामने भी एक सन्दूकड़ी देख कर डर रहा हूं और सोचता हूं कि कहीं वह भी मेरे लिये कोई दुःखदाई मसाला लेकर न आया हो !!

इन्द्रदेव०। (हंस कर) भूतनाथ ! अब तुम अपने दिल को व्यर्थ के खुटकों में न डालो, जो कुछ होना था सो हो गया, अब तुम पूरे तौर पर महाराज के ऐयार हो गये, किसी की मजाल नहीं कि तुम्हें किसी तरह की तकलीफ दे सके और महाराज भी तुम्हारे बारे में अब किसी तरह की शिकायत नहीं सुना चाहते। हरनामसिंह तो तुम्हारा लड़का ही है, वह तुम्हारे साथ बुराई क्यों करने लगा !

इसी समय महाराज सुरेन्द्रसिंह ने जीतसिंह की तरफ देख कर कुछ इशारा किया और जीतसिंह ने इन्द्रदेव से कहा, "भूतनाथ का मामला तो अब तै हो गया, इनके बारे में महाराज अब किसी तरह की शिकायत सुना नहीं चाहते, इसके अतिरिक्त भूतनाथ ने वादा भी किया है कि अपनी जीवनी लिख कर महाराज के सामने पेश करेंगे। अस्तु अब रह गये दलीपशाह अर्जुनसिंह और भरतसिंह तथा कमला की मां। इन सभों पर जो कुछ

मुसीबतें गुजरी हैं उसे महाराज सुना चाहते हैं परन्तु इस समय नहीं, क्योंकि विलम्ब बहुत हो गया, अब महाराज आराम करेंगे, अस्तु अब दबार वर्खास्त करना चाहिये जिसमें और लोग भी आपुस में मिलजुल कर अपने अपने दिल की कुलफत निकाल लें क्योंकि अब यहां किसी को किसी से मिलने में अथवा आपुस का बर्ताव करने में परहेज न होना चाहिये।

इन्द्रदेव०। (हाथ जोड़ कर) जो आज्ञा।

दर्बार वर्खास्त हुआ। इन्द्रदेव की इच्छानुसार महाराज आराम करने के लिये जीतसिंह को साथ लिए एक दूसरे कमरे में चले गये। इसके बाद और सब कोई उठे और अपने अपने ठिकाने पर जैसा कि इन्द्रदेव ने इन्तजाम कर दिया था चले गये, मगर कई आदमी जो आराम नहीं किया चाहते थे बंगले के बाहर निकल कर बगीचे की तरफ रवाना हुए।

पांचवाँ बयान

एक सुन्दर सुनहरे पावों वाली मुसहरी पर महाराज सुरेन्द्रसिंह लेटे हुए पान चबा रहे हैं। ऐयारों के सिरताज जीतसिंह उसी मुसहरी के पास फर्श पर बैठे तथा दाहिने हाथ से मुसहरी पर ढासना लगाये धीरे धीरे बातें कर रहे हैं।

महाराज०। इन्द्रदेव का स्थान बहुत ही सुन्दर और रमणीक है, यहां से जाने को तो जी ही नहीं चाहता।

जीत०। ठीक है, इस स्थान की तरह इन्द्रदेव का बर्ताव भी चित्त प्रसन्न करता है, परन्तु मेरी राय यही है कि जहां तक जल्द हो यहां से लौट चलना चाहिये।

महाराज०। हम भी यही सोचते हैं। इन लोगों की जीवनी और आश्चर्य भरी कहानी तो वर्षों तक सुनते ही रहेंगे परन्तु

न्द्रजीत और आनन्द की शादी जहां तक जल्द हो सके कर दी
ना चाहिये जिसमें और किसी तरह के विघ्न पड़ने का फिर
डर न रहे।

जीत०। जरूर ऐसा होना चाहिये; इसीलिये मैं कहता हूं कि
हां से जल्द चलिये, भरतसिंह वगैरह की कहानी वहां ही सुन
लेंगे या शादी के बाद और लोगों को भी यहां ले आवेंगे जिसमें
वे लोग भी तिलिस्म और इस स्थान का आनन्द ले लें।

महाराज०। अच्छी बात है, खैर यह बताओ कि कमलिनी
और लाडिली के विषय में भी तुमने कुछ सोचा ?

जीत०। उन दोनों के लिए जो कुछ आप विचार रहे हैं वही
मेरी भी राय है, उनकी भी शादी दोनों कुमारों के साथ कर ही
देनी चाहिये।

महाराज०। है न यही राय ?

जीत०। जी हां, मगर किशोरी और कामिनी की शादी के
बाद क्योंकि किशोरी एक राजा की लड़की है इस लिये उसी की
औलाद को गद्दी का हकदार होना चाहिये, यदि कमलिनी के
साथ पहिले शादी हो जायगी तो उसी का लड़का गद्दी का मा-
लिक समझा जायगा, इसी से मैं चाहता हूं कि पटरानी किशोरी
ही बनाई जाय।

महाराज०। यह बात तो ठीक है, अस्तु ऐसा ही होगा और
साथ ही इसके कमला की शादी भैरोसिंह के साथ और इन्दिरा
की तारा के साथ कर दी जायगी।

जीत०। जो मर्जी।

महाराज०। अच्छा तो अब यही निश्चय रखना चाहिये कि
दलीपशाह और भरतसिंह की बीती यहां से चलने बाद घर ही
पर सुनना चाहिये।

जीत० । जी हां, मगर तो यों है कि ऐसा करना ही पड़ेगा क्योंकि इन लोगों की कहानी दारोगा और जयपाल इत्यादि कैदियों से घना सम्बन्ध रखती है बल्कि यों कहना चाहिये कि इन्हीं लोगों के इजहार पर उन लोगों के मुकद्दमे का दारोमदार (हेस नेस) है और यही लोग उन कैदियों को लाजवाब करेंगे।

महाराज० । निःसन्देह ऐसा ही है, इसके अतिरिक्त उन कैदियों ने हमलोगों तथा हम लोगों के सहायकों को बड़ा ही दुःख भी दिया है और दोनों कुमारों की शादी में भी बड़े बड़े विघ्न डाले हैं अतएव उन कम्बख्त कैदियों को कुमारों की शादी का जलसा भी दिखा देना चाहिये जिसमें वे लोग भी अपनी आंखों से देख लें कि जिन बातों को वे बिगाड़ा चाहते थे वे आज कैसी खूबी और खुशी के साथ हो रही हैं, इसके बाद उन लोगों को सजा देना चाहिये । मगर अफसोस तो यह है कि मायारानी और माधवी जमानिया ही में मार डाली गईं नहीं तो वे दोनों भी देख लेतीं कि......

जीत० । खैर उनकी किस्मत में यही बदा था ।

महा० । अच्छा तो एक बात का और खयाल रखना चाहिये।

जीत० । आज्ञा ?

महाराज० । भूतनाथ वगैरह को मौका देना चाहिये कि वे अपने सम्बन्धियों से बखूबी मिल जुल कर अपने दिल का खुटका निकाल लें, क्योंकि हम लोग तो उनका हाल वहां चल कर सुनेहींगे ।

जीत० । बहुत खूब ।

इतना कह कर जीतसिंह उठ खड़े हुए और कमरे से बाहर चले गये ।

छठवां बयान

इन्द्रदेव के इस स्वर्ग तुल्य स्थान में बंगले से कुछ दूर हट कर बागीचे के दक्खिन तरफ एक घना जामुन का पेड़ है जिसे सुन्दर लताओं ने घेर कर देखने योग्य बना रक्खा है और वहां एक कुंज की सी छटा दिखाई पड़ती है। उसी के नीचे साफ पानी का एक चश्मा भी बह रहा है। अपनी सुरीली बोली से लोगों के दिल लुभा लेने वाली चिड़ियायें संध्या का समय निकट जान अपने घोसलों के चारो तरफ फुदक फुदक कर अपने अपौरुष बच्चों को चैतन्य करती हुई कह रही हैं कि लो मैं बहुत दूर से तुम लोगों के लिये दाना पानी अपने पेट में भर लाई हूं जिससे तुम्हारी सन्तुष्टि की जायगी।

यह रमणीक स्थान ऐसा है कि यहां दो चार आदमी छिप कर इस तरह बैठ सकते हैं कि वे चारो तरफ के आदमियों को खूबी देख लें पर उन्हें कोई भी न देखे। इस स्थान पर हम इस समय भूतनाथ और उसकी पहिली स्त्री अर्थात् कमला की मां को पत्थर की चट्टानों पर बैठे बातें करते हुए देख रहे हैं। ये दोनों मुद्दत के बिछुड़े हुए हैं और दोनों के दिल में नहीं तो कमला की मां के दिल में तो जरूर शिकायतों का खजाना भरा हुआ है जिसे वह इस समय बेतरह उगलने के लिये तैयार है। प्यारे पाठक! आइये हम आप मिल कर जरा इन दोनों की बातें तो सुन लें।

भूत०। शान्ता *! आज तुमसे मिल कर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ।

शान्ता०। क्यों? जो चीज किसी कारणवश खो जाती है उसे

* शान्ता कमला की मां का नाम था।

यकायक पाने से प्रसन्नता हो सकती है, मगर जो चीज जान बू
कर फेंक दी जाती है उसके पाने की प्रसन्नता कैसी ?

भूत०। यदि किसी को कहीं से एक पत्थर का टुकड़ा मि
जाय और वह उसे बेकार या बदसूरत समझ कर फेंक दे, तथ
कुछ समय के बाद जब उसे यह मालूम हो कि वास्तव में व
हीरा था पत्थर नहीं, तो क्या उसके फेंक देने का उसको दुःख न
होगा ? या उसे पुनः पाकर प्रसन्नता न होगी ?

शान्ता०। अगर वह आदमी जिसने हीरे को पत्थर सम
कर फेंक दिया है, यह जान कर कि वह वास्तव में हीरा थ
उसकी खोज करे, या इस विचार से कि उसे मैंने फलानी जग
छोड़ा या फेंका है वहां जाने से जरूर मिल जायगा उसकी तर
दौड़ा जाय, तो बेशक समझा जायगा कि उसे उसके फेंक देने क
रञ्ज हुआ था और उसके मिल जाने से प्रसन्नता होगी, लेकि
यदि ऐसा नहीं है तो नहीं।

भूत०। ठीक है, मगर वह आदमी उस जगह जहां उसने ही
को पत्थर समझ कर फेंका था पुनः उसे पाने की आशा में तभ
जायगा जब अपना जाना सार्थक समझेगा। परन्तु जब उसे
यह निश्चय हो जायगा कि वहां जाने से उस हीरे के साथ तू
बर्बाद हो जायगा अर्थात् वह हीरा भी काम का न रहेगा और
भी जान जाती रहेगी तब वह उसकी खोज में क्यों कर जायग

शान्ता०। ऐसी अवस्था में वह अपने को इस योग्य बन
होगा नहीं कि वह उस हीरे की खोज में जाने लायक न रहे यदि
बात उसके हाथ में होगी और वह उस हीरे को वास्तव में ह
समझता होगा।

भूत०। बेशक मगर शिकायत की जगह तो ऐसी अवस्थ
हो सकती थी जब वह अपने बिगड़े हुए कंटीले रास्ते को जि

सबब से वह उस हीरे तक नहीं पहुंच सकता था पुनः सुधारने और साफ करने के लिये परले सिरे का उद्योग करता हुआ दिखाई न देता।

शान्ता०। ठीक है, लेकिन जब वह हीरा यह देख रहा है कि उसका अधिकारी या मालिक बिगड़ी हुई अवस्था में भी एक मानिक के टुकड़े को कलेजे से लगाये हुए घूम रहा है और यदि वह चाहता तो उस हीरे को भी उसी तरह रख सकता था मगर अफसोस उस हीरे की तरफ जो वास्तव में पत्थर ही समझा गया है कोई भी ध्यान नहीं देता जो बेहाथ पैर का हो कर भी उसी मालिक की खोज में जगह जगह की मिट्टी छानता फिर रहा है जिसने जान बूझ कर उसे पैर में गड़ने वाले कंकड़ की तरह अपने आगे से उठा कर फेंक दिया है और जानता है कि उस पत्थर के टुकड़े के साथ जिसे वह व्यर्थ ही हीरा कह रहा है वास्तव में छोटी छोटी दो कनियां भी चिपकी हुई हैं जो छोटी होने के कारण सहज ही मिट्टी में मिल जा सकती हैं, तब भी क्या शिकायत की जगह नहीं है !!

भूत०। परन्तु अदृष्ट भी कोई वस्तु है, प्रारब्ध भी कुछ कही जाती है, और होनहार भी किसी का नाम है ?

शान्ता०। यह दूसरी बात है, इन सभों का नाम लेना वास्तव में निरुत्तर (लाजवाब) होना और चलती बहस को जान बूझ कर बन्द कर देना ही नहीं है बल्कि उद्योग ऐसे अनमोल पदार्थ की तरफ से मुंह फेर लेना भी है। अस्तु जाने दीजिये, मेरी यह इच्छा भी नहीं है कि आपको परास्त करने की अभिलाषा से मैं विवाद करती ही जाऊं, यह तो बात ही बात में कुछ कहने का मौका मिल गया और छाती पर पत्थर रख कर जी का उबाल निकाल लिया, नहीं तो जरूरत ही क्या थी।

भूतनाथ० । मैं कसूरवार हूं और बेशक कसूरवार हूं मगर यह उम्मीद भी तो न थी कि ईश्वर की कृपा से तुम्हें इस तरह जीती जागती इस दुनिया में देखूंगा।

शान्ता० । अगर यही आशा या अभिलाषा होती तो अपने परलोकगामी होने की खबर मुझ अभागी के कानों तक पहुँचाने की कोशिश क्यों करते और.....

भूत० । बस बस बस, अब मुझ पर दया करो और इस ढंग की बातें छोड़ दो क्योंकि आज बड़े भागों से मेरे लिये यह खुशी का दिन नसीब हुआ है। इसे जली कटी बातें सुना कर पुनः कड़वा न करो और यह सुनाओ कि तुम इतने दिनों तक कहां छिपी हुई थीं और अपनी लड़की कमला को किस तरह धोखा दे कर चली गई कि आज तक वह तुमको मरी हुई ही समझती है ?

इस समय शान्ता का खूबसूरत चेहरा नकाब से ढका हुआ नहीं है। यद्यपि वह जमाने के हाथों सताई हुई तथा दुबली पतली और उदास है और उसका तमाम बदन पीला पड़ गया है मगर फिर भी आज की खुशी उसके सुन्दर बादामी चेहरे पर रौनक पैदा कर रही है और इस बात की इजाजत नहीं देती कि कोई उसे ज्यादे उम्र वाली कह कर खूबसूरतों की पंक्ति में बैठने से रोके। हजार गई गुजरी होने पर भी वह रामदेई (भूतनाथ की दूसरी स्त्री) से बहुत अच्छी मालूम पड़ती है और इस बात को भूतनाथ भी बड़े गौर से देख रहा है। भूतनाथ की आखिरी बात सुन कर शान्ता ने अपनी डबडबाई हुई बड़ी बड़ी आंखों को आंचल से साफ किया और एक लम्बी सांस ले कर कहा—

शान्ता० । मैं रणधीरसिंह के यहां से कभी न भागती अगर अपना मुंह किसी को दिखाने लायक समझती। मगर अफसोस

आपके भाई ने इस बात को अच्छी तरह मशहूर कर दिया कि आपके दुश्मन (अर्थात् आप) इस दुनिया से उठ गये ! यद्यपि इसके सबूत में उन्होंने बहुत सी बातें पेश कीं मगर मुझे विश्वास न हुआ तथापि इस गम में मैं बीमार हो गई और दिन दिन मेरी बीमारी बढ़ती ही गई। उसी जमाने में मेरी मौसेरी बहिन अर्थात दलीपशाह की स्त्री मुझे देखने के लिये मेरे घर आई। मैंने अपने दिल का हाल और बीमारी का सबब उससे बयान किया और यह भी कहा कि जिस तरह मेरे पति ने सही सलामत रह कर भी अपने को मरा हुआ मशहूर किया उसी तरह मुझे भी तुम कहीं छिपा कर मरा हुआ मशहूर कर दो। अगर ऐसा हो जायगा तो मैं अपने पति को ढूंढ निकालने का उद्योग करूंगी। उन्होंने मेरी बात पसन्द कर ली और लोगों को यह कह कर कि मेरे यहां की आबहवा अच्छी है वहां शान्ता को बहुत जल्द आराम हो जायगा, मुझे अपने यहां उठा ले जाने का बन्दोबस्त किया और रणधीरसिंहजी से इजाजत भी ले ली। मैं दो दिन तक अपनी लड़की कमला को नसीहत करती रही और इसके बाद उसे किशोरी के हवाले कर के और अपने छोटे दूध पीते बच्चे को गोद में ले कर दलीपशाह के घर चली आई और धीरे धीरे आराम होने लगी। थोड़े ही दिन बाद दलीपशाह के घर में उस भयानक आधी रात के समय आपका आना हुआ, मगर हाय ! उस समय आपकी अवस्था पागलों की सी हो रही थी और आपने धोखे में पड़ कर अपने प्यारे लड़के का जिसे मैं अपने साथ ले गई थी खून कर डाला * ।

इतना कहते कहते शान्ता का जी भर आया और वह हिच-

* दलीपशाह ने बीसवें हिस्से के तेरहवें बयान में इस घटना की तरफ भूतनाथ से इशारा किया था।

कियां ले ले रोने लगी। भूतनाथ की भी बुरी अवस्था हो रही थी और इससे ज्यादे वह इस घटना का हाल नहीं सुना चाहता था। वह यह कहता हुआ कि—"बस माफ करो माफ करो, अब इसका जिक्र न करो !" अपनी स्त्री शान्ता के पैरों पर गिरा ही चाहता था कि उसने पैर खैंच कर भूतनाथ का सिर थाम लिया और कहा— "हां हां ! यह क्या करते हो ? क्यों मेरे सिर पर पाप चढ़ाते हो ? मैं खूब जानती हूं कि आपने उसे नहीं पहिचाना मगर इतना जरूर समझते थे कि वह दलीपशाह का लड़का है, अस्तु फिर भी आपको ऐसा नहीं करना चाहता था, खैर अब मैं इस जिक्र को छोड़ देती हूं।"

इतना कह कर शान्ता ने अपने आंसू पोंछे और फिर इस तरह बयान कहना शुरू किया—

"शोक और दुःख से मैं पुनः बीमार पड़ गई मगर आशा लता ने धीरे धीरे कुछ दिन में अपनी तरह मुझे भी हरा (आराम) कर दिया। यह आशा केवल इसी बात की थी कि एक दफे आपसे जरूर मिलूंगी। मुश्किल तो यह थी कि उस घटना ने दलीपशाह को भी आपका दुश्मन बना दिया था, केवल घटना ने ही नहीं, इसके अतिरिक्त भी दलीपशाह को बर्बाद करने में आपने कुछ उठा न रक्खा था, यहां तक कि आखिर वह दारोगा के हाथ फंस ही गया।

भूत०। (बेचैनी के साथ लम्बी सांस लेकर) ओफ ! मैं कह चुका हूं कि इस बात को मत छेड़ो केवल अपना हाल बयान करो मगर तुम नहीं मानतीं !

शान्ता०। नहीं नहीं, मैं तो अपना ही हाल बयान कर रही हूं, खैर मुख्तसर ही में कहती हूं।

उस घटना के बाद ही मेरी इच्छानुसार दलीपशाह ने मेरा

और बच्चे का मर जाना मशहूर किया जिसे सुन कर हरनामसिंह और कमला भी मेरी तरफ से निश्चिन्त हो गए। जब खुद दलीपशाह भी दारोगा के हाथ में फंस गया तब मैं बहुत ही परेशान हुई और सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिये। उस समय दलीपशाह के घर में उसकी स्त्री, एक छोटा बच्चा, और मैं, केवल ये तीन ही आदमी रह गये थे। दलीपशाह की स्त्री को मैंने धीरज धराया और कहा कि अभी अपनी जान मत बर्बाद कर, मैं बराबर तेरा साथ दूंगी और दलीपशाह को खोज निकालने में उद्योग करूंगी, मगर अब हम लोगों को यह घर एक दम छोड़ देना चाहिये और ऐसी जगह छिप कर रहना चाहिये जहां दुश्मनों को हम लोगों का पता न लगे। आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात् हम लोगों की जो कुछ जमा पूंजी थी उसे ले कर हमने उस घर को एक दम छोड़ दिया और काशीजी में जा कर एक अन्धेरी गली के पुराने और गन्दे मकान में डेरा डाला मगर इस बात की टोह लेते रहे कि दलीपशाह कहां हैं अथवा छूटने के बाद अपने घर की तरफ जा कर हम लोगों को ढूंढ़ते हैं या नहीं। इसी फिक्र में मैं कई दफे सूरत बदल कर बाहर निकली और इधर उधर घूमती रही। इत्तफाक से दिल में यह बात पैदा हुई कि किसी तरह अपने लड़के हरनामसिंह से छिप कर मिलना और उसे अपना साथी बना लेना चाहिये। ईश्वर ने मेरी यह मुराद पूरी की। जब माधवी कुंअर इन्द्रजीतसिंह को फंसा ले गई और उसके बाद उसने किशोरी पर भी कब्जा कर लिया तब कमला और हरनामसिंह दोनों आदमी किशोरी की खोज में निकले और एक दूसरे से जुदा हो गये। किशोरी की खोज में हरनामसिंह काशी की गलियों में घूम रहा था जब उस पर मेरी निगाह पड़ी और मैंने उसे इशारे से अलग बुला कर अपना

परिचय दिया। उसको मुझसे मिल कर जितनी खुशी हुई उसे बयान नहीं कर सकती। मैं उसे अपने घर में ले आई और स हाल उसे सुना कर अपने दिल का इरादा जाहिर किया जि उसने खुशी से मन्जूर कर लिया। उस समय मैं चाहती तो कमल को भी अपने पास बुला लेती मगर नहीं, उसे किशोरी की मदद के लिये छोड़ दिया क्योंकि किशोरी के निमक को मैं किसी तरह भूल नहीं सकती थी मैंने अस्तु केवल हरनामसिंह को अपने पास रख लिया और खुद चुपचाप घर में बैठी रह कर आपके और दलीपशाह के पता लगाने का काम लड़के के सपुर्द किया। बहुत दिनों तक बेचारा लड़का चारो तरफ मारा मारा फिरा और तरह तरह की खबरें ला कर मुझे सुनाता रहा, जब आप प्रगट हो कर कमलिनी के साथी बन गये और उनके काम के लिये चारो तरफ घूमने लगे तब हरनामसिंह ने भी आपको देखा और पहिचान कर मुझे इत्तला दी। थोड़े दिन बाद यह भी उसी की जुबानी मालूम हुआ कि अब आप नेकनाम हो व दुनिया में अपने को प्रगट किया चाहते हैं। उस समय मैं बहु प्रसन्न हुई और मैंने हरनाम को राय दी कि तू किसी तरह राज वीरेन्द्रसिंह के किसी ऐयार की शागिर्दी कर ले। आखिर वह तार सिंह से मिला और उनके साथ रह कर थोड़े ही दिनों में उनक प्यारा शागिर्द बल्कि दोस्त बन गया। तब उसने अपना सच सच हाल तारासिंह को कह सुनाया और तारासिंह ने भी उसके साथ बहुत अच्छा बर्ताव कर के उसकी इच्छानुसार उसके भेदों को छिपाया। तब से हरनामसिंह सूरत बदले हुए तारासिंह का काम करता रहा और मुझे भी आपकी पूरी पूरी खबर मिलती रही। आपको शायद इस बात की खबर न हो कि तारासिंह की मां चम्पा से और मुझसे बहिन का रिश्ता है, वह मेरे मामा की

लड़की है, अस्तु जब चम्पा ने अपने लड़के की जुबानी हरनामसिंह का हाल सुना और यह मालूम हुआ कि वह रिश्ते में उसका भतीजा होता है तब उसने भी उस पर दया प्रगट की और तब से उसे बराबर अपने लड़के की तरह मानती रही।

जमानिया के तिलिस्म को खोलते और कैदियों को साथ लिए हुए जब दोनों कुमार उस खोह वाले तिलिस्मी बगले में पहुंचे तो उन्होंने भैरोसिंह और तारासिंह को अपने पास बुला लिया और तिलिस्म का पूरा पूरा हाल उनसे कह के उन दोनों को अपने पास रक्खा। दलीपशाह को यह हाल भी तारासिंह ही से मालूम हुआ कि उनके बाल बच्चे ईश्वर की कृपा से अभी तक राजी खुशी हैं, साथ ही इसके मेरा हाल भी दलीपशाह को मालूम हुआ। उस समय तारासिंह दोनों कुमारों से आज्ञा ले कर हरनामसिंह को उस बंगले में ले आये और दलीपशाह से उसकी मुलाकात कराई। हरनामसिंह को साथ ले कर दलीपशाह काशी गये और वहां से मुझको तथा अपनी स्त्री और लड़के को साथ ले कर कुमार के पास चले आये। जब तारासिंह की जुबानी चम्पा ने यह हाल सुना तो वह मुझसे मिलने के लिये तारासिंह के साथ वहां अर्थात् उस बंगले में आई।

भूत०। जब दोनों कुमार नकाबपोश बन कर भैरोसिंह और तारासिंह को यहां ले आये उसके पहिले तो तारासिंह यहां नहीं आये थे?

शान्ता०। जी उसके पहिले ही से वे दोनों यहां आते जाते रहे, उस दिन तो प्रगट रूप से यहां लाए गये थे। क्या इतना हो जाने पर भी आपको अन्दाज से मालूम न हुआ?

भूत०। ठीक है, इस बात का शक तो मुझे और देवीसिंह को भी होता रहा।

शान्ता का किस्सा भूतनाथ ने बड़े गौर के साथ ध्यान दे कर सुना और तब देर तक आरजू मिन्नत के साथ शान्ता से माफी मांगता रहा। इसके बाद पुनः दोनों में बातचीत होने लगी—

शान्ता०। अब तो आपको मालूम हुआ कि चम्पा यहां क्योंकर और किस लिये आई ?

भूत०। हां यह भेद तो खुल गया मगर इसका पता न लगा कि नानक और उसकी मां का यहां आना कैसे हुआ।

शान्ता०। सो मैं न कहूंगी, यह उसी से पूछ लेना।

भूत०। (ताज्जुब से) सो क्यों ?

शान्ता०। मैं उसके बारे में कुछ कहा ही नहीं चाहती !

भूतनाथ०। आखिर इसका कोई सबब भी है ?

शान्ता०। सबब यही है कि उसकी यहां कोई इज्जत नहीं है बल्कि वह बेकदरी की निगाह से देखी जाती है।

भूत०। वह है भी इसी योग्य ! पहिले तो मैं उसे प्यार करता था मगर जब से यह सुना कि उसी की बदौलत मैं जैपाल (नकली बलभद्र) का शिकार बन गया और एक भारी आफत में फंस गया, तब से मेरा भी तबीयत उससे खट्टी हो गई।

शान्ता०। सो क्यों ?

भूत०। इसी लिये कि वह बेगम की गुप्त सहेली नन्हों से गहरी मुहब्बत रखती है * और इसी सबब से वह कागज का मुट्ठा जो मैंने अपने फायदे के लिये तैयार किया था गायब हो के जयपाल के हाथ लग गया और उससे मुझे नुकसान पहुँचा। इस बात का सबूत भी मैंने अपनी आंखों से देख लिया।

शान्ता०। सो ठीक है, मैं भी दलीपशाह से यह बात सुन चुकी हूं।

* उन्नीसवाँ हिस्सा बारहवाँ बयान, देखिये नकाबपोश की बातचीत।

भूत० । इसी से अब मैं उसे अपनी स्त्री नहीं बल्कि दुश्मन समझता हूं। केवल नन्हों ही से नहीं बल्कि कम्बख्त गौहर से भी वह दोस्ती रखती थी और वह दोस्ती पाक न थी। (लम्बी सांस ले कर) अफसोस ! इसी से उस खोटी का लड़का नानक भी खोटा ही निकला।

शान्ता० । (मुस्कुरा कर) तब आप उसके लिये इतना परेशान क्यों थे ? क्योंकि यह बात सुनने के बाद ही तो आपने उसे नकाबपोशों के स्थान में देखा था !!

भूत० । वह परेशानी मेरी उसकी मुहब्बत के सबब से न थी बल्कि इस खयाल से थी कि कहीं वह मुझ पर कोई नई आफत लाने के लिये तो नकाबपोशों से नहीं आ मिली।

शान्ता० । ठीक है, यह खयाल भी हो सकता था।

भूत० । फिर इसी बीच में जब उसने मुझे जंगल में गाना सुना के धोखा दिया और गिरफ्तार करके अपने स्थान पर ले गई जिसका हाल शायद तुम्हें मालूम होगा, तब मेरा रञ्ज और भी बढ़ गया *।

शान्ता० । यह हाल मुझे मालूम है, मगर यह कार्रवाई उसकी न थी बल्कि इन्द्रदेव की थी। उन्हों ही ने आपके साथ यह ऐयारी की थी और उस दिन जंगल में घोड़े पर सवार जो औरत आप को मिली थी और जिसे आपने अपनी स्त्री समझा था, वह इन्द्रदेव का एक ऐयार ही था। यह बात मैं उन्हीं (इन्द्रदेव) की जुबानी सुन चुकी हूं शायद आपसे भी वे कहें। हां उन दिन बंगले में जिस औरत को आपने देखा था वह बेशक नानक की मां थी। वह तो खुद कैदियों की तरह यहां रक्खी गई है मैदान की हवा क्योंकर खा सकती है ! दोनों कुमार नहीं चाहते थे कि प्रगट

* देखिये बीसवें हिस्से का अन्त।

होने के पहिले ही। कोई उन लोगों का पता लगा ले, इसी लिये ये सब खेल खेले गये। (कुछ सोच कर) आखिर आपने धीरे धी नानक की मां का हाल पूछ ही लिया, मैं उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा चाहती थी, अस्तु अब इससे आगे और कुछ भी कहूंगी, आप उसके बारे में मुझसे कुछ न पूछें।

भूतनाथ०। नहीं नहीं, जब इतना बता चुकी हो तो कुछ औ भी बताओ क्योंकि मैं उससे मिल कर कुछ भी नहीं पूछा चाह बल्कि अब उसका मुंह देखना भी मुझे पसन्द नहीं है। अच्छ यह तो बताओ कि वह कम्बख्त यहां क्यों लाई गई ?

शान्ता०। लाई नहीं गई बल्कि उसी नन्हों के यहां गिरफ्ता की गई, उस समय नानक भी उसके साथ था।

भूतनाथ०। (आश्चर्य और क्रोध से) फिर भी उसी नन के यहां गई थी ?

शान्ता०। जी हां।

भूतनाथ०। (लम्बी सांस लेकर) लोग सच कहते हैं ऐयाशी का नतीजा बहुत बुरा निकलता है !!

शान्ता०। अस्तु अब उसके बारे में मुझसे कुछ न पूछि इन्द्रदेवजी आपको सब कुछ बता देंगे।

भूतनाथ०। हां ठीक है, खैर अब उसके बारे में कुछ चाहूंगा, जो कुछ पूछूंगा वह तुम्हारे और हरनाम ही के बारे मुझोगा। अच्छा एक बात और बताओ, आज के दर्बार में मैं हरनाम को हाथ में एक सन्दूकड़ी लिये हुए देखा था, वह सन् कड़ी कैसी थी और उसमें क्या था ?

शान्ता०। उसमें दारोगा के हाथ की लिखी हुई बहुत चिट्ठियां हैं जिनके देखने से आपको निश्चय हो जायगा कि आप दलीपशाह को व्यर्थ ही अपना दुश्मन समझ लिया था। पहि

जब दारोगा ने दलीपशाह को लालच दिखा कर लिखा था कि वह आपको गिरफ्तार करा दे, तब दो चार चिट्ठियों में तो दलीपशाह ने इस नीयत से कि दारोगा की शैतानियों का सबूत उससे मिल कर बटोर लें दारोगा के मतलब ही का जवाब दिया था जिससे खुश होकर उसने कई चीठियों में दलीपशाह को तरह तरह के सब्ज बाग दिखलाये, मगर जब दारोगा की कई चीठियां दलीपशाह ने बटोर लीं तब साफ जवाब दे दिया। उस समय दारोगा बहुत घबड़ाया और उसने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि दलीपशाह मुझसे दुश्मनी करके मेरा भेद खोल दे, अस्तु किसी तरह उसे गिरफ्तार कर लेना चाहिये। उस समय कम्बख्त दारोगा आपसे मिला और उसने दलीपशाह की पहली चीठियां आपको दिखा कर खुद आप ही को दलीपशाह का दुश्मन बना दिया, बल्कि आप ही के जरिये से दलीपशाह को गिरफ्तार भी करा लिया।

भूत०। ठीक है, इस विषय में मैंने बहुत बड़ा धोखा खाया।

शान्ता०। मगर दलीपशाह को गिरफ्तार कर लेने पर भी वे चीठियां दारोगा के हाथ न लगीं क्योंकि वे दलीपशाह की स्त्री के कब्जे में थीं, अब हमलोग उन्हें अपने साथ लाये हैं जिसमें दारोगा के मुकद्दमे में पेश करें।

भूत०। अस्तु अब मेरे दिल का खुटका निकल गया और मुझे निश्चय हो गया कि हरनाम की कोई कारवाई मेरे खिलाफ न होगी।

शान्ता०। भला वह कोई काम ऐसा क्यों करेगा जिससे आपको तकलीफ हो? ऐसा ख्याल भी आपको न रखना चाहिये।

इन दोनों में इस तरह की बातें हो ही रही थीं कि किसी के

होने के पहिले ही [illegible] उस कोठरी का पता लगा ले, इसी लिए
सब लिए लिये गये। (कुछ सोच कर) आखिर चाचाजी और
[illegible] मैं उसके बारे में कुछ
नहीं कहा। [illegible] थी, अस्तु अब इससे आगे और कुछ भी
कहूँगी, आप इसके बारे में मुझसे कुछ न पूछें।

भूतनाथ०। नहीं नहीं, अब इतना पता पूछो ही तो कुछ
[illegible] क्योंकि मैं उससे [illegible] कुछ भी नहीं पूछा
[illegible] अब उसका मुँह देखना भी मुझे पसन्द नहीं है। अ
यह तो बताओ कि वह कम्बख्त यहां क्यों लाई गई ?

शान्ता०। लाई नहीं गई बल्कि अपनी मर्जी से यहां [illegible]
की गई, अब शायद नानक भी उसके साथ था।

भूतनाथ०। (आश्चर्य और क्रोध से) क्या [illegible] भी अभी
के यहाँ गई थी ?

शान्ता०। जी हाँ।

भूतनाथ०। (लम्बी सांस लेकर) लोग सच कहते हैं
कमाई का नतीजा बहुत बुरा निकलता है!"

शान्ता०। अस्तु अब इसके बारे में मुझसे कुछ न पू
इन्द्रदेवजी आपको सब कुछ बता देंगे।

भूतनाथ०। हाँ ठीक है, मैं अब इसके बारे में कुछ
चाहूँगा, जो कुछ पूछूँगा वह तुम्हारे और इन्द्रदेव जी के
सुनूँगा। अच्छा एक बात और बताओ, आज के दरबार में
हरनाम को हाथ में एक सन्दूकड़ी लिये हुए देखा था, वह
कहाँ कैसी थी और उसमें क्या था ?

शान्ता०। उसमें दारोगा के हाथ की लिखी हुई बहु
चिट्ठियां हैं जिनके देखने से आपको निश्चय हो जायगा कि
दलीपशाह को व्यर्थ ही अपना दुश्मन समझ लिया था।

जब दारोगा ने दलीपशाह को लालच दिखा कर लिखा था कि वह आपको गिरफ्तार करा दे, तब दो चार चिट्ठियों में तो दलीपशाह ने इस नीयत से कि दारोगा की शैतानियों का सबूत उससे मिल कर बटोर लें दारोगा के मतलब ही का जवाब दिया था जिससे खुश होकर उसने कई चीठियों में दलीपशाह को तरह तरह के सब्ज बाग दिखलाये, मगर जब दारोगा की कई चीठियां दलीपशाह ने बटोर लीं तब साफ जवाब दे दिया। उस समय दारोगा बहुत घबड़ाया और उसने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि दलीपशाह मुझसे दुश्मनी करके मेरा भेद खोल दे, अस्तु किसी तरह उसे गिरफ्तार कर लेना चाहिये। इस समय कम्बख्त दारोगा आपसे मिला और उसने दलीपशाह की पहली चीठियां आपको दिखा कर खुद आप ही को दलीपशाह का दुश्मन बना दिया, बल्कि आप ही के जरिये से दलीपशाह को गिरफ्तार करा लिया।

भूत०। ठीक है, इस विषय में मैंने बहुत बड़ा धोखा खाया।

शान्ता०। मगर दलीपशाह को गिरफ्तार कर लेने पर भी चीठियां दारोगा के हाथ न लगीं क्योंकि वे दलीपशाह की स्त्री के कब्जे में थीं, अब हमलोग उन्हें अपने साथ लाये हैं जिसमें दारोगा के मुकद्दमे में पेश करें।

भूत०। अस्तु अब मेरे दिल का खुटका निकल गया और मुझे निश्चय हो गया कि हरनाम की कोई कारवाई मेरे खिलाफ न होगी।

शान्ता०। भला वह कोई काम ऐसा क्यों करेगा जिससे आपको तकलीफ हो? ऐसा खयाल भी आपको न रखना चाहिये।

इन दोनों में इस तरह की बातें हो ही रही थीं कि किसी के

आने की आहट मालूम हुई। भूतनाथ ने घूम कर देखा नानक पर निगाह पड़ी। जब वह पास आया तब भूतनाथ उसने पूछा, "कहो, क्या खबर लाये हो?"

नानक० । मेरी माँ आपसे मिलना चाहती है।

भूत० । तो यहाँ पर क्यों न चली आई? यहाँ कोई गैर आ जाओ।

नानक० । तो मैं बुला लाऊँ।

भूत० । अच्छा जाओ, उसे इसी जगह मेरे पास भेज दो।

नानक० । बहुत अच्छा।

इतना कह कर नानक चला गया और उसके बाद शान्ता ने भूतनाथ से कहा, "शायद मेरे सामने आपसे बातचीत करना मंजूर न हो, डरती हो या किसी तरह का और भी कुछ ख्याल हो, अस्तु आज्ञा दीजिये तो मैं चली जाऊँ, फिर

भूत० । नहीं, उसे जो कुछ कहना होगा तुम्हारे सामने ही कहेगी, तुम चुपचाप बैठी रहो।

शान्ता० । सम्भव है कि वह मेरे सामने यहाँ न आवे या उसे इस बात का ख्याल हो कि तुम मेरे सामने उसकी बेइज्जती करोगे।

भूत० । हो सकता है, मगर......(कुछ सोच के), अच्छा तुम जाओ।

इतना सुन कर शान्ता वहाँ से उठी और बंगले की तरफ रवाना हुई। इस समय सूर्य्य अस्त हो चुका था और चारों तरफ से अँधेरी झुकी आती थी।

सातवां बयान

इन्द्रदेव का यह स्थान बहुत बड़ा था। इस समय वहां

जितने आदमी आये हुए हैं उनमें से किसी को भी किसी तर
की तकलीफ नहीं हो सकती थी और इसके लिये प्रबन्ध भी बहुत
अच्छा कर रक्खा गया था। औरतों के लिये एक खास कमरा
मुकर्रर किया गया था मगर रामदेई (नानक की मां) की निग-
रानी की जाती थी और इस बात का भी बन्दोबस्त कर रक्खा
गया था कि कोई किसी के साथ दुश्मनी का बर्ताव न कर सके।
राजा सुरेन्द्रसिंह वीरेन्द्रसिंह और दोनों कुमारों के कमरे के
आगे पहरे का पूरा पूरा इन्तजाम था और हमारे ऐयार लोग
भी बराबर चौकन्ने रहा करते थे।

यद्यपि भूतनाथ एकान्त में बैठा हुआ अपनी स्त्री से बातें
कर रहा था मगर यह बात इन्द्रदेव और देवीसिंह से छिपी हुई
न थी जो इस समय बगीचे में टहलते हुए बातें कर रहे थे। इन
दोनों को देखते ही देखते नानक भूतनाथ की तरफ गया और
लौट आया, इसके बाद भूतनाथ की स्त्री अपने डेरे पर चली
गई और फिर रामदेई अर्थात् नानक की मां भूतनाथ की तरफ
जाती हुई दिखाई पड़ी। उस समय इन्द्रदेव ने देवीसिंह से कहा,
"सिंहजी! देखिये भूतनाथ अपनी पहिली स्त्री से बातचीत कर
चुका है, अब उसने नानक की मां को अपने पास बुलाया है।
शान्ता की जुबानी उसकी खुटाई का हाल तो उसे जरूर मालूम
हो ही गया होगा, इसलिये ताज्जुब नहीं कि वह गुस्से में आ कर
रामदेई के हाथ पैर तोड़ डाले!"

देवी०। ऐसा हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है, मगर
उस औरत ने भी तो सजा पाने ही लायक काम किया है।

इन्द्र०। ठीक है, मगर इस समय उसे बचाना चाहिये।

देवी०। तो जाइये वहां छिप कर तमाशा देखिये और मौका
पड़ने पर उसकी सहायता कीजियेगा। (मुस्कुरा कर) आप ही

आने की आहट मालूम हुई। भूतनाथ ने घूम कर देखा तो नानक पर निगाह पड़ी। जब वह पास आया तब भूतनाथ ने उससे पूछा, "क्यों, क्या चाहते हो?"

नानक०। मेरी मां आपसे मिला चाहती हैं।

भूत०। तो यहां पर क्यों न चली आई? यहां कोई गैर था नहीं।

नानक०। सो तो वह जानें।

भूत०। अच्छा जाओ, उसे इसी जगह मेरे पास भेज दो

नानक०। बहुत अच्छा।

इतना कह कर नानक चला गया और इसके बाद शान्ता ने भूतनाथ से कहा, "शायद मेरे सामने आपसे बातचीत करना मंजूर न हो, शर्म आती हो या किसी तरह का और भी कुछ खयाल हो, अस्तु आज्ञा दीजिये तो मैं चली जाऊं, फिर

भूत०। नहीं, उसे जो कुछ कहना होगा तुम्हारे सामने ही कहेगी, तुम चुपचाप बैठी रहो।

शान्ता०। सम्भव है कि वह मेरे रहते यहां न आवे या उसे इस बात का खयाल हो कि तुम मेरे सामने उसकी बेइज्जती करोगे।

भूत०। हो सकता है, मगर......(कुछ सोच के), अच्छा तुम जाओ।

इतना सुन कर शान्ता वहां से उठी और बंगले की तरफ रवाना हुई। इस समय सूर्य्य अस्त हो चुका था और चारो तरफ से अंधेरी झुकी आती थी।

सातवां बयान

इन्द्रदेव का यह स्थान बहुत बड़ा था। इस समय यहां

जितने आदमी आये हुए हैं उनमें से किसी को भी किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती थी और इसके लिये प्रबन्ध भी बहुत अच्छा कर रक्खा गया था। औरतों के लिये एक खास कमरा मुकर्रर किया गया था मगर रामदेई (नानक की मां) की निगरानी की जाती थी और इस बात का भी बन्दोबस्त कर रक्खा गया था कि कोई किसी के साथ दुश्मनी का बर्ताव न कर सके। राजा सुरेन्द्रसिंह वीरेन्द्रसिंह और दोनों कुमारों के कमरे के आगे पहरे का पूरा पूरा इन्तजाम था और हमारे ऐयार लोग भी बराबर चौकन्ने रहा करते थे।

यद्यपि भूतनाथ एकान्त में बैठा हुआ अपनी स्त्री से बातें कर रहा था मगर यह बात इन्द्रदेव और देवीसिंह से छिपी हुई न थी जो इस समय बगीचे में टहलते हुए बातें कर रहे थे। इन दोनों को देखते ही देखते नानक भूतनाथ की तरफ गया और लौट आया, इसके बाद भूतनाथ की स्त्री अपने डेरे पर चली गई और फिर रामदेई अर्थात् नानक की मां भूतनाथ की तरफ जाती हुई दिखाई पड़ी। उस समय इन्द्रदेव ने देवीसिंह से कहा, "सिंहजी! देखिये भूतनाथ अपनी पहिली स्त्री से बातचीत कर चुका है, अब उसने नानक की मां को अपने पास बुलाया है। शान्ता की जुबानी उसकी खुटाई का हाल तो उसे जरूर मालूम हो ही गया होगा, इसलिये ताज्जुब नहीं कि वह गुस्से में आ कर रामदेई के हाथ पैर तोड़ डाले!"

देवी०। ऐसा हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है, मगर उस औरत ने भी तो सजा पाने ही लायक काम किया है।

इन्द्र०। ठीक है, मगर इस समय उसे बचाना चाहिये।

देवी०। तो जाइये वहां छिप कर तमाशा देखिये और मौका पड़ने पर उसकी सहायता कीजियेगा। (मुस्कुरा कर) आप ही

आग लगाते हैं और आप ही बुझाने दौड़ते हैं !!

इन्द्र०। (हंस कर) आप तो दिल्लगी करते हैं !!

देवी०। दिल्लगी काहे की, क्या आपने उसे गिरफ्तार नहीं कराया है और गिरफ्तार कराया है तो क्या इनाम देने के लिये ?

इन्द्र०। (मुस्कुराते हुए) तो आपकी राय है कि इसी समय उसकी मरम्मत की जाय !!

देवी०। चाहिये तो ऐसा ही ! जी में आवे तो तमाशा देखने चलिये। कहिये तो मैं भी आपके साथ चलूं।

इन्द्र०। नहीं नहीं, ऐसा न होना चाहिये। भूतनाथ आपका दोस्त है और अब तो नातेदार भी है। आप ऐसे मौके पर उसके सामने जा सकते हैं। जाइये और उसे बचाइये, मेरा जाना मुनासिब न होगा।

देवी०। (हंस कर) तो आप चाहते हैं कि मैं भी भूतनाथ के हाथ से दो एक घूंसे खा लूं ? अच्छा साहब, जाता हूं, आपका हुक्म कैसे टालूं, आज आपने बड़ी बड़ी बातें मुझे सुनाई हैं इस लिये आपका अहसान भी तो मानना होगा !

इतना कहते हुए देवीसिंह पेड़ों की आड़ देते हुए भूतनाथ की तरफ रवाना हुए और जब ऐसी जगह पहुँचे जहां से उन दोनों की बातें बखूबी सुन सकते थे तब एक चट्टान पर बैठ गये और सुनने लगे कि वे दोनों क्या बातें करते हैं।

भूत०। खैर अच्छा ही हुआ जो तुम यहां तक आ गई, मुझसे मुलाकात भी हो गई और मैं 'लामाघाटी' तक जाने से बच गया। मगर यह तो बताओ कि अपनी सहेली 'नन्हों' को यहां तक क्यों न लेती आई, मैं भी जरा उससे मिल के अपना कलेजा ठण्ढा कर लेता ?

रामदेई०। नन्हों बेचारी पर क्यों आक्षेप करते हो, उसने

तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? और वह यहां आती ही काहे को ? क्या तुम्हारी लौंडी थी ? व्यर्थ ही एक आदमी को बदनाम और दिक करने के लिये लोग टूटे पड़ते हैं !!

भूत०। (उभड़ते हुए गुस्से को दबा कर) छीः छीः, वह बेचारी हमारी लौंडी क्यों होने लगी, लौंडी तो तुम उसकी थीं जो झख मारने के लिये उसके घर गई थीं !

रामदेई०। (आंचल से आंसू पोंछती हुई) अगर मैं उसके यहां गई तो क्या पाप किया ? मैं पहिले ही नानक से कहती थी के जाकर पूछ आओ तब मैं नन्हों के यहां जाऊं नहीं तो कहीं व्यर्थ ही बात का बतंगड़ न बन जाय, मगर लड़के ने न माना और आखिर वही नतीजा निकला। बदमाशों ने वहां पहुंच कर उसे भी बेइज्जत किया और मुझे भी बेइज्जत कर के यहां तक घसीट लाये, उसके सिर झूठे ही कलंक थोप दिया कि वह बेगम की सहेली है।

इतना कह कर रामदेई नखरे के साथ रोने लगी।

भूत०। तुमने पहिले भी कभी उसका जिक्र मुझसे किया था कि वह तुम्हारी नातेदार है, या मुझसे पूछ कर कभी उसके यहां गई थीं ?

रामदेई०। एक दफे गई सो तो यह गति हुई, और जाती तो न मालूम क्या होता !!

भूत०। जो लोग तुझे यहां ले आये हैं वे बदमाश थे ?

रामदेई०। बदमाश तो कहे ही जायंगे। जो व्यर्थ दूसरों को दुःख दें वही बदमाश होते हैं और क्या बदमाशों के सिर सींग होती है ? तुम्हारी अक्ल पर तो पत्थर पड़ गया है कि जो लोग तुम्हारी बेइज्जती पर बेइज्जती किये ही जाते हैं उन्हीं के लिये तुम जान दे रहे हो ! न मालूम तुम्हें ऐसी क्या गरज पड़ी हुई है !

भूत० । ठीक है ठीक है, यही राय लेने के लिये तो मैंने यहां एकान्त में बुलाया है। अगर तुम्हारी राय होगी तो मैं देखते देखते इन लोगों से बदला ले लूंगा, क्या मैं कमजोर या दब्बू हूं ?

रामदेई० । जरूर बदला लेना चाहिये, अगर तुम ऐसा न करोगे तो मैं समझूंगी कि तुमसे बढ़ कर कमीना कोई नहीं है!

इतना सुन कर भूतनाथ को बेहिसाब क्रोध चढ़ आया मगर फिर भी उसने अपने क्रोध को दबाया और कहा—

भूत० । अच्छा तो अब मैं ऐसा ही करूंगा, मगर यह तो बताओ कि शेर की लड़की 'नागर' से तुमसे क्या नाता है ?

रामदेई० । उस मुसलमानिन से मुझसे क्या नाता होगा मैंने तो कभी उसकी सूरत भी नहीं देखी ।

भूत० । लोग तो कहते हैं कि तुम उसके यहां भी जाती आती हो और मेरे बहुत से भेद तुमने उसे बता दिये हैं !!

रामदेई० । सब झूठ ! ये लोग बात लगाने वाले जैसे ही झूठे और पाजी हैं वैसे ही तुम सीधे और बेवकूफ हो !!

अब भूतनाथ अपने गुस्से को बर्दाश्त न कर सका और उसने एक चपत रामदेई के गाल पर ऐसी जमाई कि वह तिलमिला कर जमीन पर लेट गई मगर उसे चिल्लाने का साहस न हुआ। कुछ देर बाद वह उठ कर बैठी और भूतनाथ का मुंह देखने लगी ।

भूत० । कमीनी ! हरामजादी ! जिनके लिये मैं जान तक देने को तैयार हूं उन्हीं लोगों की शान में तू ऐसी बातें कहती है जो एक पराये को भी कहना उचित नहीं है और जिसे मैं एक सायत के लिये भी बर्दाश्त नहीं कर सकता ! ले समझ ले और कान खोल कर सुन ले कि तेरे हाथ की लिखी वह चीठी मुझे मिल

ई जो तूने चांद वाले दिन गौहर के यहां मिलने के लि न्हों के पास भेजी थी और जिसमें तूने अपना परिचय 'करौंद छैये छैये' दिया था! बस इसी से समझ ले कि तेरी सब लई खुल गई और तेरी सब बेईमानी लोगों को मालूम हो गई। ब तेरा नखरे के साथ रोना और बातें बना कर अपने को कसूर साबित करना व्यर्थ है। अब तेरी मुहब्बत एक रत्ती राबर मेरे दिल में नहीं रह गई और मैं तुझे उस जहरीली ागिन से भी हजार दर्जे बढ़ के समझने लग गया जिसे खूब- रत होने पर भी कोई हाथ से छूने तक का साहस नहीं कर कता। मुझे आज इस बात का सख्त रञ्ज है कि मैंने तुझे तने दिन तक प्यार किया और इस बात की तरफ कुछ भी यान न दिया कि उस मुहब्बत ऐयाशी और शौक का नतीजा क न एक दिन जरूर भयानक होता है जिसे छिपाने की जरू- त समझी जाती है और जिसका जाहिर होना शर्मिन्दगी और हयाई का सबब समझा जाता है। मुझे इस बात का अफसोस कि तुझसे अनुचित सम्बन्ध रख कर मैंने उस उचित सम्बन्ध ाली का साथ छोड़ दिया जिसकी जूतियों की बराबरी ी तू नहीं कर सकती या यों कहना चाहिये कि तेरे शरीर ा चमड़ा जिसकी जूतियों में भी देखना मैं पसन्द नहीं कर कता। मुझे इस बात का दुःख है कि नागर या मायारानी कब्जे से तुझे छुड़ाने के लिये मैंने तरह तरह के ढोंग रचे ौर इसका दम भर के लिये भी विचार न किया कि मैं उस चुड़ै ग को पुनः अपनी छाती से लगाने का प्रबन्ध कर रहा हूं जिसे हिली ही अवस्था में ईश्वर की कृपा ने मुझसे अलग कर दिया ा। ये बातें तू अपने ही लिये न समझ बल्कि अपने जाये ानक के लिये भी समझ कर मेरे सामने से उठ जा और उससे

भी कह दे कि आज से मेरे सामने आकर मेरी जूतियों का कार न वने। यदि मेरे पुराने विचार बदल न गये होते और दिनों की तरह आज भी मैं पाप को पाप न समझता होता आज तेरी खाल खिंचवा कर नमक और मिर्च का उपटन लग देता मगर खैर अब इतना ही कहता हूं कि मेरे सामने से जा और फिर कभी अपना काला मुंह मुझे मत दिखा। जि कुल को तू पहिले कलंक लगा चुकी है अब भी उसी कुल की नामी का सबब बन कर दुनिया की हवा खा।

रामदेई के पास भूतनाथ की बातों का कोई जवाब न वह अपनी पुरानी चीठी का सच्चा परिचय सुन कर बदहव हो गई और समझ गई कि अब उसके अच्छे नसीबे के प की धुरी टूट गई जिसे वह किसी तरह भी बना नहीं सकती। अपने धड़कते हुए कलेजे और कांपते हुये बदन के साथ भूत की बातें सुनती रही और अन्त में उठने का साहस करने पर अपनी जगह से न हिल सकी मगर भूतनाथ वहां से उठ हुआ और बंगले की तरफ चल पड़ा। थोड़ी दूर गया होगा देवीसिंह से मुलाकात हुई जिसने इसका हाथ पकड़ लिया कहा, "भूतनाथ! शाबाश शाबाश!! जो कुछ नेक और बहा आदमियों को करना चाहिये, इस समय तुमने वही किया छिप कर तुम्हारी सब बातें सुन रहा था। अगर तुम कोई काम करना चाहते तो मैं तुम्हें जरूर रोकता मगर ऐसा करने मौका न हुआ जिससे मैं बहुत ही खुश हूं। अच्छा जाओ अ कमरे में आराम करो, मैं इन्द्रदेव के पास जाता हूं।"

आठवाँ बयान

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है। एक सुन्दर सजे

ारे में राजा गोपालसिंह और इन्द्रदेव बैठे हैं और उनके सामने नक हाथ जोड़े बैठा दिखाई देता है।

गोपाल०। (नानक से) ठीक है, यद्यपि इन बातों में तुमने पनी तरफ से कुछ नमक मिर्च जरूर लगाई होगी मगर फिर मुझे कोई ऐसी बात नहीं जान पड़ती जिससे भूतनाथ को षी ठहराऊं। उसने जो कुछ तुम्हारी मां से कहा सच कहा और के साथ जैसा बर्ताव किया वह उचित ही था। इस विषय में भूतनाथ को कुछ भी नहीं कह सकता और न अब तुम्हारी तों पर भरोसा ही कर सकता हूं। बड़े अफसोस की बात है कि ी नसीहत ने तुम्हारे दिल पर कुछ भी असर न किया * और गर कुछ किया भी तो वह चार दिन बाद जाता रहा। अगर ा अपनी मां के साथ नन्हों के मकान में गिरफ्तार न हुए होते कदाचित् मैं तुम्हारे धोखे में आ जाता मगर अब मैं किसी ह भी तुम्हारा साथ नहीं दे सकता।

नानक०। मगर आप मेरा कसूर माफ कर चुके हैं और...

इन्द्रदेव०। (नानक से) अगर तुम उस माफी को पाकर ा हुए थे तो फिर पुराने रास्ते पर क्यों गये और पुनः अपनी को ले कर नन्हों के पास क्यों पहुंचे? तुम्हें बात करते शर्म ीं आती!!

गोपाल०। फिर भी मैं अपनी जुबान (माफी) का ख्याल ूंगा और तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न दूंगा, मगर अब ानाथ की तरह मैं भी तुम्हारी सूरत देखना पसन्द नहीं करता र न भूतनाथ को इस विषय में कुछ कहना चाहता हूं। इन्द्र- ा ने तुम्हारे साथ इतनी ही रियायत की सो बहुत किया कि तुमको

* देखिये उन्नीसवां हिस्सा, तीसरा बयान।

यहां से निकल जाने की आज्ञा दे दी नहीं तो तुम इस लायक कि जन्म भर कैद में पड़े सड़ा करते।

नानक०। जो आज्ञा, मगर मेरे पिता से इतना तो दीजिये कि जिससे मेरी मां जन्म भर खाने पीने की तरफ बेफिक्र रहे।

इन्द्रदेव०। अबे कमीने! तुझे यह कहते शर्म नहीं होती! इतना बड़ा हो के भी तू अपनी मां के लायक दाना नहीं जुटा सकता? खैर अब तुझे आखिरी मर्तबे कहा जाता कि अब हम लोगों से किसी तरह की उम्मीद न रख और मां को साथ ले कर यहां से चला जा, भूतनाथ ने भी मुझे ही करने के लिये कहला भेजा है।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने ताली बजाई और साथ ही ऐयार सर्यू सिंह को कमरे के अन्दर आते देखा।

इन्द्रदेव०। (सर्यू से) भूतनाथ कहां हैं?

सर्यू०। नम्बर पांच के कमरे में देवीसिंहजी से बातें रहे हैं, वे दोनों यहां आये भी थे मगर यह सुन कर कि यहां बैठा हुआ है, पिछले पैर लौट गये।

इन्द्रदेव०। अच्छा तुम जाओ और उन्हें यहां बुला लाओ।

सर्यू सिंह०। जो आज्ञा परन्तु मुझे आशा नहीं है कि के रहते वे यहां आवें।

इन्द्रदेव०। अच्छा तो मैं खुद जाता हूं।

गोपाल०। हां तुम्हारा ही जाना ठीक होगा, देवीसिंहजी भी बुलाते लाना।

इन्द्रदेव उठ कर चले गये और थोड़ी ही देर में भूतनाथ तथा देवीसिंह को साथ लिए हुए आ पहुँचे।

गोपाल०। (भूतनाथ से) क्यों साहब! आप यहां

आकर लौट क्यों गये ?

भूत० । यों ही, मैंने समझा कि आप लोग किसी खास बातों में लगे हुए हैं ।

गोपाल० । अच्छा बैठिये और एक बात का जवाब दीजिये ।

भूतनाथ० । कहिये ?

गोपाल० । रामदेई और नानक के बारे में आप क्या हुक्म देते हैं ?

भूत० । महाराज ने क्या आज्ञा दी है ?

गोपाल० । उन्होंने इनका फैसला आप ही के ऊपर छोड़ा है ।

भूत० । फिर जो राय आप लोगों की हो, मैंने तो इन दोनों के बारे में इसकी मां को हुक्म सुना ही दिया है ।

गोपाल० । इनके कसूर तो आप सुन ही चुके होंगे ।

भूत० । पिछले कसूरों को तो मैं सुन ही चुका हूं, हां नया कसूर सिर्फ इतना ही मालूम हुआ है कि ये दोनों नन्हों के यहां गिरफ्तार हुए हैं ।

गोपाल० । इसके अतिरिक्त एक बात और है ।

भूत० । वह क्या ?

गोपाल० । यही कि ये दोनों अगर खाली हाथ न होते तो बेचारी शान्ता को जान से मार डालते ।

इतने ही में नानक बोल उठा, "नहीं नहीं, यह आपके जासूसों ने हमारे ऊपर झूठा इलजाम लगाया है !"

भूत० । अगर यह बात है तो मैं इसे हथकड़ी बेड़ी से खाली क्यों देखता हूं ?

इन्द्रदेव० । इसी लिये कि हमारे हाते के अन्दर ये लोग कुछ कर नहीं सकते । जब ये लोग यहां गिरफ्तार होकर आये तो कुछ दिन तक तो भलमनसी के साथ रहे मगर आज इनकी नीयत

बिगड़ी हुई मालूम पड़ी।

भूतनाथ०। खैर, अब आप ही इनके लिये हुक्म सुनाइये। मगर, इन्द्रदेव! आप यह न समझियेगा कि इन लोगों के बारे में मुझे किसी तरह का रंज है। मैं सच कहता हूं कि इन दोनों का यहां आना मेरे लिये बहुत ही अच्छा हुआ। मैं इन लोगों के फेर में बेतरह फंसा हुआ था। आज मालूम हुआ कि ये लोग जहर हलाहल से भी बढ़े हुए हैं, अस्तु आज इन लोगों से पीछा छुड़ा कर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ। मेरे सिर से बोझा उतर गया और अब मेरी जिन्दगी खुशी के साथ बीतेगी। आपका कहना सच निकला अर्थात् इनका यहां आना मेरे लिये खुशी का सबब हुआ।

इन्द्रदेव०। अच्छा यह बताइये कि ये अगर इसी तरह छोड़ दिये जायं तो आपके खजाने को तो किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचा सकते जो 'लामाघाटी' के अन्दर है?

भूतनाथ०। कुछ भी नहीं, और 'लामाघाटी' के अन्दर जेवरों के अतिरिक्त और कुछ है भी नहीं, सो जेवरों को मैं वहां से मंगवा ले सकता हूं।

इन्द्रदेव०। अगर सिर्फ नानक की मां के जेवरों से आपका मतलब है तो वह अब मेरे कब्जे में है क्योंकि नन्हों के यहां वह बिना जेवरों के नहीं गई थी।

भूतनाथ०। बस तो मैं उस तरफ से भी बेफिक्र हो गया, यद्यपि उन जेवरों की मुझे कोई परवाह नहीं है मगर उसके पास मैं एक कौड़ी भी नहीं छोड़ा चाहता। इसके अतिरिक्त यह भी जरूर कहूंगा कि अब ये लोग सूखा छोड़ देने लायक नहीं रहे।

इन्द्रदेव०। खैर जैसी राय होगी वैसा ही किया जायगा।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने पुनः सर्यू सिंह को बुलाया और

जब वह कमरे के अन्दर आ गया तो कहा—"थोड़ी देर के लिये नानक को बाहर ले जाओ।"

नानक को लिये हुए सयूसिंह कमरे के बाहर चला गया और इसके बाद चारो आदमी विचार करने लगे कि नानक और उसकी मां के साथ क्या बर्ताव करना चाहिये। देर तक सोच विचार कर यही निश्चय किया गया कि उन दोनों को देश से निकाल दिया जाय और कह दिया जाय कि जिस दिन हमारे महाराज की अमलदारी में दिखाई दोगे उसी दिन मार डाले जाओगे।"

इस हुक्म पर महाराज से आज्ञा लेने की इन लोगों को कोई जरूरत न थी क्योंकि उन्होंने सब बातें सुन सुना कर पहिले ही हुक्म दे दिया था कि भूतनाथ की आज्ञानुसार काम किया जाय, अस्तु नानक कमरे के अन्दर बुलाया गया और इसके बाद रामदेई भी बुलाई गई। जब दोनों इकट्ठे हो गये तो उन्हें हुक्म सुना दिया गया।

यह हुक्म यद्यपि साधारण मालूम होता है मगर उन दोनों के लिये ऐसा न था जिन्हें भूतनाथ की बदौलत शाहखर्ची की आदत पड़ गई थी। नानक और रामदेई की आंखों से आंसू जारी था जब इन्द्रदेव ने सयूसिंह को हुक्म दिया कि चार आदमी इन दोनों को ले जायं और महाराज की सरहद के बाहर कर आवें। सयूसिंह दोनों को लिये हुए कमरे के बाहर निकल गया।

भूत०। सिर से बोझ उतरा और कम्बख्तों से पीछा छूटा, अच्छा अब बताइये कि कल क्या क्या होगा?

गोपाल०। महाराज ने तो यही हुक्म दिया है कि कल यहां से डेरा कूच किया जाय और तिलिस्म की सैर करते हुए चुनार-

गढ़ पहुँचें, चम्पा शान्ता हरनामसिंह भरतसिंह और दलीपशाह वगैरह बाहर की राह से चुनार भेज दिये जायं, यदि हमारे किसी ऐयार की भी इच्छा हो तो उनके साथ चला जाय।

भूतनाथ०। ऐसा कौन बेवकूफ होगा जो तिलिस्म की सैर छोड़ उनके साथ जायगा!

देवीसिंह०। सभी कोई ऐसा कहते हैं।

भूतनाथ०। हां यह तो बताइये कि मैंने नानक को जब दरबार में देखा तो उसके हाथ में एक लपेटी हुई तस्वीर थी, अब वह तस्वीर कहां है और उसमें क्या बात थी?

इन्द्रदेव०। वह कागज जिसे आप तस्वीर समझे हुए हैं मेरे पास है, मैं आपको दिखाऊंगा। असल में वह तस्वीर नहीं है बल्कि उसने एक बहुत बड़ी दर्खास्त लिख कर तैयार की थी जो दर्बार में आ के पेश किया चाहता था, मगर ऐसा कर न सका।

भूत०। उसमें लिखा क्या था?

इन्द्रदेव०। जो लोग उसे गिरफ्तार कर लाये हैं उनकी शिकायत के सिवाय और कुछ भी नहीं। साथ ही इसके उस दर्खास्त में इस बात पर बहुत जोर दिया गया था कि कमला की मां वास्तव में मर गई है और आज जिस शान्ता को सब कोई देख रहे हैं वह वास्तव में नकली है।

भूत०। वाह रे शैतान! (कुछ सोच कर) तो शायद वह दर्खास्त महाराज के हाथ तक नहीं पहुँची?

इन्द्र०। क्यों नहीं, मैंने जान बूझ कर उसे ऐसा करने का मौका दिया। वह रात को पहरे वालों से इत्तला करा कर खुद महाराज के पास पहुँचा और उनके सामने वह दर्खास्त रख दी। उस समय महाराज ने मुझे बुलाया और मुझी को वह दर्खास्त पढ़ने के लिये दी गई। उसे सुन कर महाराज ने मुस्कुरा दिया

और इशारा किया कि वह कमरे के बाहर निकाल दिया जाय क्योंकि इसके पहले मैं शान्ता और हरनामसिंह का पूरा पूरा हाल महाराज से अर्ज कर चुका था।

भूत०। अच्छा मुझे भी वह दर्खास्त दिखाइयेगा।

इन्द्र०। (उंगली से इशारा करके) वह कारन्दिस के ऊपर पड़ी हुई है, देख लीजिये।

भूतनाथ ने दर्खास्त उतार कर पढ़ी और इसके बाद कुछ देर तक उन लोगों में बातचीत होती रही।

नौवाँ बयान

सुबह का सोहावना समय सब जगह एक सां नहीं मालूम होता, घर की खिड़कियों में से उसका चेहरा कुछ और ही दिखाई देता है और बाग में उसकी कैफियत कुछ और ही मस्तानी होती है, पहाड़ में उसकी खूबी कुछ और ही ढंग की दिखाई देती है और जंगल में उसकी छटा कुछ निराली ही होती है। आज इन्द्रदेव के इस अनूठे स्थान में इसकी खूबी सब से चढ़ी बढ़ी है, क्योंकि यहां जंगल भी है, पहाड़ भी है, अनूठा बाग तथा सुन्दर बंगला या कोठी भी है, फिर यहां के आनन्द का पूछना ही क्या! इसी लिए हमारे महाराज कुंअर साहब और ऐयार लोग भी यहां घूम घूम कर सुबह के सोहावने समय का पूरा आनन्द ले रहे हैं, खास करके इसलिये कि आज ये लोग यहां से डेरा कूच करने वाले हैं।

बहुत देर तक घूमने फिरने के बाद सब कोई बाग में आकर बैठे और इधर उधर की बातें होने लगीं।

जीत०। (इन्द्रदेव से) भरतसिंह वगैरह तथा औरतों को आपने चुनार रवाना कर दिया?

इन्द्र०। जी हां, बड़े सवेरे ही उन लोगों को बाहर की राह से रवाना कर दिया और औरतों के लिये सवारी का इन्तजाम कर देने के अतिरिक्त अपने दस पन्द्रह मातबिर आदमी भी साथ कर दिये हैं।

जीत०। तो अब हम लोग भी कुछ भोजन करके यहां से रवाना हुआ चाहते हैं।

इन्द्रदेव०। जैसी मर्जी।

जीत०। भैरो और तारा जो आपके साथ यहां आये थे कहां चले गए? दिखाई नहीं पड़ते!

इन्द्रदेव०। अब भी मैं उन्हें अपने साथ ही ले जाने की आज्ञा चाहता हूं क्योंकि उनके मदद की मुझे जरूरत है।

जीत०। तो क्या आप हम लोगों के साथ न चलेंगे?

इन्द्र०। जी हां उस बाग तक तो जरूर साथ चलूंगा जहां से मैं आप लोगों को यहां तक ले आया हूं, पर उसके बाद गुप्त हो जाऊंगा क्योंकि मैं आपको कुछ तिलिस्मी तमाशे दिखाया चाहता हूं और इसके अतिरिक्त उन चीजों को भी तिलिस्म के अन्दर से निकलवा कर चुनार पहुँचाना है जिनके लिये आज्ञा मिल चुकी है।

सुरेन्द्र०। नहीं नहीं, गुप्त रीति पर हम तिलिस्म का तमाशा नहीं देखा चाहते, हमारे साथ रह कर जो कुछ दिखा सको दिखा दो. बाकी रहा उन चीजों को निकलवा कर चुनार पहुँचाना, सो यह काम दो दिन के बाद भी होगा तो कोई हर्ज नहीं है।

इन्द्र०। जैसी आज्ञा।

इतना कह कर इन्द्रदेव थोड़ी देर के लिये कहीं चले गये और तब भैरोसिंह तथा तारासिंह को साथ लिये आकर बोला, "भोजन तैयार है।"

सब कोई वहां से उठे और भोजन इत्यादि से छुट्टी पा कर तिलिस्म की तरफ रवाना हुए। जिस तरह इन्द्रदेव इन लोगों को अपने स्थान में ले आये थे उसी तरह पुनः उस तिलिस्मी बाग में ले गया जिसमें से लाया था।

जब महाराज सुरेन्द्रसिंह वगैरह उस बारहदरी में पहुंचे जिसमें पहिले दिन आराम किया था और जहां बाजे की आवाज सुनी थी तब दिन पहर भर से कुछ ज्यादे बाकी था। जीतसिंह ने इन्द्रदेव से पूछा—"अब क्या करना चाहिये ?"

इन्द्रदेव०। यदि महाराज आज की रात यहां रहना पसन्द करें तो एक दूसरे बाग में चल कर वहां की कुछ कैफियत दिखाऊं ?

जीत०। बहुत अच्छी बात है, चलिये।

इतना सुन कर इन्द्रदेव ने उस बारहदरी की कई आलमारियों में से एक आलमारी खोली और उसके अन्दर जाकर सभों को अपने पीछे आने का इशारा किया। यहां एक गली की तौर पर रास्ता बना हुआ था जिसमें सब कोई इन्द्रदेव की इच्छानुसार बेखौफ चले गये और थोड़ा दूर जाने बाद जब इन्द्रदेव ने दूसरा दर्वाजा खोला तब उसके बाहर होकर सभों ने अपने को एक छोटे बाग में पाया जिसकी बनावट कुछ विचित्र ही ढंग की थी। यह बाग जङ्गली पौधों की सब्जी से हरा भरा था और पानी का चश्मा भी बह रहा था मगर चारदीवारी के अतिरिक्त और किसी तरह की बड़ी इमारत इसमें न थी, हां बीच में एक बहुत बड़ा चबूतरा जरूर था जिस पर धूप और बरसाती पानी के बचाव के लिये सिर्फ मोटे मोटे बारह खम्भों के सहारे पर छत बनी हुई थी और चबूतरे पर चढ़ने के लिये चारो तरफ सीढ़ियां थीं।

यह चबूतरा कुछ अजीब ढङ्ग का बना हुआ था। लगभग चालीस हाथ के चौड़ा और इतना ही लम्बा होगा। इसके फर्श में लोहे की बारीक नालियां जाल की तरह जड़ी हुई थीं और बीच में एक चौखूटा स्याह पत्थर इस अन्दाज का जड़ा हुआ था जिस पर चार आदमी बखूबी बैठ सकते थे। बस इसके अतिरिक्त इस चबूतरे में और कुछ भी न था।

थोड़ी देर तक सब कोई उस चबूतरे की बनावट देखते रहे, इसके बाद इन्द्रदेव ने महाराज से कहा, "तिलिस्म बनाने वालों ने यह बगीचा केवल तमाशा देखने के लिये बनाया था। यहां की कैफियत आपके साथ रह कर मैं नहीं दिखा सकता, हां यदि आप मुझे दो तीन पहर की छुट्टी दें तो......

इन्द्रदेव की बात महाराज ने मंजूर कर ली और तब वह (इन्द्रदेव) सभों के देखते देखते उस चौखूटे पत्थर के ऊपर चला गया जो चबूतरे के बीच में जड़ा हुआ था। सवार होने के साथ ही वह पत्थर हिला और इन्द्रदेव को लिए हुए जमीन के अन्दर चला गया मगर थोड़ी देर में पुनः ऊपर चला आया और अपने ठिकाने पर ज्यों का त्यों बैठ गया लेकिन इस समय इन्द्रदेव उस पर न थे।

इन्द्रदेव के चले जाने बाद थोड़ी देर तक तो सब कोई उस चबूतरे पर खड़े रहे, इसके बाद धीरे धीरे वह चबूतरा गरम होने लगा और वह गर्मी यहां तक बढ़ी कि लाचार उन सभों को चबूतरा छोड़ देना पड़ा, अर्थात् सब कोई चबूतरे के नीचे उतर आए और बाग में टहलने लगे। इस समय दिन घण्टे भर से कुछ कम बाकी था।

इस खयाल से कि देखें इस बाग की दीवार किस ढङ्ग की बनी हुई है, सब कोई घूमते हुए पूरब तरफ वाली दीवार के पास

ना पहुंचे और गौर से देखने लगे मगर कोई अनूठी बात दिखाई न दी। इसके बाद उत्तर तरफ वाली और फिर पश्चिम तरफ वाली दीवार को देखते हुए सब कोई दक्खिन तरफ गए और उधर की दीवार को आश्चर्य के साथ देखने लगे क्योंकि इसमें कुछ विचित्रता जरूर थी।

यह दीवार शीशे की मालूम होती थी और इसमें महाभारत की तस्वीरें बनी हुई थीं। ये तस्वीरें उसी ढङ्ग की थीं जैसी उस तिलिस्मी बङ्गले में चलती फिरती तस्वीरें इन लोगों ने देखी थीं। ये लोग इन तस्वीरों को बड़ी देर तक देखते रहे और सभों को विश्वास हो गया कि जिस तरह उस बङ्गले वाली तस्वीरों को चलते फिरते और काम करते हमलोग देख चुके हैं उसी तरह इन तस्वीरों को भी देखेंगे क्योंकि दीवार पर हाथ फेरने से साफ मालूम होता था कि तस्वीरें शीशे के अन्दर हैं।

इन तस्वीरों के देखने से महाभारत की लड़ाई का जमाना आंखों के सामने फिर जाता था। कौरवों और पाण्डवों की फौज, बड़े बड़े सेनापति, तथा रथ हाथी घोड़े इत्यादि जो कुछ बने थे सभी अच्छे और दिल पर असर पैदा करने वाले थे। 'इस लड़ाई की नकल अपनी आंखों से देखेंगे।' इस विचार से सब कोई प्रसन्न थे और बड़ी दिलचस्पी के साथ उन तस्वीरों को देख रहे थे, यहां तक कि सूर्य अस्त हो गया और धीरे धीरे अन्धकार ने चारो तरफ अपना दखल जमा लिया। उस समय यकायक दीवार चमकने लगी और तस्वीरों में हरकत पैदा हुई जिससे सभों ने समझा कि नकली लड़ाई हुआ ही चाहती है मगर कुछ ही देर बाद लोगों का यह विश्वास ताज्जुब के साथ बदल गया जब यह देखा कि उसमें की तस्वीरें एक एक करके गायब हो रही हैं यहां तक कि घड़ी भर के अन्दर ही सब तस्वीरें गायब हो

गई और दीवार साफ दिखाई देने लगी। इसके बाद दीवार की चमक भी बन्द हो गई और फिर अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देने लगा।

थोड़ी देर बाद उस चबूतरे की तरफ रोशनी मालूम हुई। यह देख कर सब कोई उसी तरफ रवाना हुए और जब उसके पास पहुँचे तो देखा कि उस चबूतरे की छत में जड़े हुए शीशे के दस बारह टुकड़े इस तेजी के साथ चमक रहे हैं कि जिससे केवल चबूतरा ही नहीं बल्कि तमाम बाग उजाला हो रहा है। इसके अतिरिक्त सैकड़ों मूरतें भी उस चबूतरे पर इधर उधर चलती फिरती दिखाई दीं। गौर करने से मालूम हुआ कि ये मूरतें (या तस्वीरें) बेशक वे ही हैं जिन्हें उस दीवार के अन्दर देख चुके हैं। ताज्जुब नहीं कि वह दीवार इन सभों का खजाना हो और वही यहां इस चबूतरे पर आ कर तमाशा दिखाती हों।

इस समय जितनी मूरतें उस चबूतरें पर थीं सब अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की लड़ाई से सम्बन्ध रखती थीं। जब उन मूरतों ने अपना काम शुरू किया तो ठीक अभिमन्यु की लड़ाई का तमाशा आंखों के सामने दिखाई देने लगा। जिस तरह कौरवों के रचे हुए व्यूह के अन्दर फंस कर कुमार अभिमन्यु ने बीरता दिखाई थी और अन्त में अधर्म के साथ जिस तरह वह मारा गया था उसी को आज नाटक स्वरूप में देख कर सब कोई बड़े प्रसन्न हुए और सभों के दिलों पर बहुत देर तक इसका असर रहा।

इस तमाशे का हाल खुलासे तौर पर हम इसलिये नहीं लिखते कि इसकी कथा बहुत प्रसिद्ध है और महाभारत में विस्तार के साथ लिखी है।

यह तमाशा थोड़ा ही देर में खतम नहीं हुआ बल्कि देखते देखते तमाम रात बीत गई। सवेरा होने के कुछ देर पहिले अन्ध-

र हो गया और उसी अन्धकार में सब मूरतें गायब हो गईं। जाला होने और आंखें ठहरने पर जब सभों ने देखा तो उस चूतरे पर सिवाय इन्द्रदेव के और कुछ भी दिखाई न दिया।

इन्द्रदेव को देख कर सब कोई प्रसन्न हुए और साहब सलात के बाद इस तरह बातचीत होने लगी :—

इन्द्रदेव०। (चबूतरे से नीचे उतर कर और महाराज के पास आ कर) मैं उम्मीद करता हूं कि इस तमाशे को देख कर महाराज प्रसन्न हुए होंगे।

महाराज०। बेशक! क्या इसके सिवाय और भी कोई तमाशा यहां दिखाई दे सकता है?

इन्द्रदेव०। जी हां यहां पूरा महाभारत दिखाई दे सकता है, अर्थात् महाभारत ग्रन्थ में जो कुछ लिखा है वह सब इसी ढंग पर और इसी चबूतरे पर आप देख सकते हैं मगर दो चार दिन में नहीं बल्कि महीनों में, इसके साथ ही साथ बनाने वालों ने इसकी भी तर्कीब रक्खी है कि चाहे शुरू ही से यह तमाशा दिखलाया जाय या बीच ही से कोई टुकड़ा दिखा दिया जाय अर्थात् महाभारत के अन्तर्गत जो कुछ चाहें देख सकते हैं।

महाराज०। इच्छा तो बहुत कुछ देखने की थी मगर इस समय हम लोग यहां ज्यादे रुक नहीं सकते अस्तु फिर कभी जरूर देखेंगे। हां हमें इस तमाशे के विषय में कुछ समझाओ तो सही कि यह काम क्यों कर हो सकता है और तुमने यहां से कहां जा कर क्या किया?

इन्द्रदेव ने इस तमाशे का पूरा पूरा भेद सभों को समझाया और कहा कि ऐसे ऐसे कई तमाशे इस तिलिस्म में भरे पड़े हैं, अगर आप चाहें तो इस काम में वर्षों बिता सकते हैं, इसके अतिरिक्त यहां की दौलत का भी यह हाल है कि वर्षों तक ढोते रहिये

फिर भी कमी न हो, सोने चांदी का तो कहना ही क्या है, जव
हिरात भी आप जितने चाहें ले सकते हैं, सच तो यों है कि जि
तनी दौलत यहां है उसके रखने का ठिकाना भी यहीं हो सकता
है। इस बागीचे के पास ही पास और भी चार बाग हैं, शायद
उस सभों में घूमना और वहां के तमाशों को देखना इस समय
आप पसन्द न करें........

महाराज०। बेशक इस समय हम इन सब तमाशों में समय
बिताना पसन्द नहीं करते। सब से पहिले शादी ब्याह के काम
से छुट्टी पाने की इच्छा लगी हुई है मगर इसके बाद पुनः एक
दफे इस तिलिस्म में आ कर यहां की सैर जरूर करेंगे।

कुछ देर तक इसी किस्म की बातें होती रहीं, इसके बाद इन्द्र
देव सभों को पुनः उसी बाग में ले आये जिसमें उनसे मुलाकात
हुई थी या जहां से इन्द्रदेव के स्थान में जाने का रास्ता था।

दसवां बयान

इस बाग में पहिले दिन जिस बारहदरी में बैठ कर सभों
भोजन किया था, आ पुनः उसी बारहदरी में बैठने और भोजन
करने का मौका मिला। भोजन की चीजें ऐयार लोग अपने साथ
ले आये थे और जल की वहां कुछ कमी ही न थी, अस्तु स्नान
सन्ध्योपासन और भोजन इत्यादि से छुट्टी पा कर सब कोई उस
बारहदरी में सो रहे क्योंकि रात के जागे हुए थे और बिना कुछ
आराम किये आगे बढ़ने की इच्छा न थी।

जब दिन पहर भर से कुछ कम बाकी रह गया तब सब
उठे और चश्मे के जल से हाथ मुंह धो कर आगे की तरफ बढ़ने
के लिये तैयार हुए।

हम ऊपर के किसी बयान में लिख आये हैं कि यहां

तरफ की दीवारों में कई आलमारियां भी थीं अस्तु इस समय कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने उन्हीं आलमारियों में से एक आलमारी खोली और महाराज की तरफ देख कर कहा, "चुनार के तिलिस्म में जाने का यही रास्ता है और हम दोनों भाई इसी रास्ते से वहां तक गये थे।"

रास्ता बिल्कुल अन्धेरा था इसलिये इन्द्रजीतसिंह तिलिस्मी खंजर की रोशनी करते हुए आगे आगे रवाना हुए और उनके पीछे महाराज सुरेन्द्रसिंह राजा वीरेन्द्रसिंह गोपालसिंह इन्द्रदेव वगैरह और ऐयार लोग रवाना हुए। सब से पीछे कुंअर आनन्दसिंह तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी करते हुए जाने लगे क्योंकि सुरंग पतली थी और केवल आगे की एक रोशनी से काम नहीं चल सकता था।

ये लोग उस सुरंग में कई घण्टे तक बराबर चले गये और इस बात का पता न लगा कि कब संध्या हुई या अब कितनी रात बीत चुकी है। जब सुरंग का दूसरा दर्वाजा इन लोगों को मिला और उसे खोल कर सब कोई बाहर निकले तो अपने को एक लम्बी चौड़ी कोठड़ी में पाया जिसमें इस दर्वाजे के अतिरिक्त तीनों तरफ की दीवारों में और भी तीन दर्वाजे थे जिनकी तरफ इशारा करके कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने कहा, "अब हम लोग उस चबूतरे वाले तिलिस्म के नीचे आ पहुँचे हैं। इस जगह एक दूसरे से मिली हुई सैकड़ों कोठड़ियां हैं जो भूलभूलैये की तरह चक्कर खिलाती हैं और जिनमें फंसा हुआ अनजान आदमी जल्दी निकल ही नहीं सकता। जब पहिले पहिले हम दोनों भाई यहां आये थे तो सब कोठड़ियों के दर्वाजे बन्द थे जो तिलिस्मी किताब की सहायता से खोले गये और जिसका खुलासा हाल आपको तिलिस्मी किताब के पढ़ने से मालूम होगा मगर इनके खोलने में

कई दिन लगे और तकलीफ भी बहुत हुई। इन कोठड़ियों के मध्य में एक चौखूटा कमरा आप देखेंगे जो ठीक उस चबूतरे के नीचे है और इसी में से बाहर निकलने का रास्ता है, बाकी सब कोठड़ियों में असबाब और खजाना भरा हुआ है। इसके अतिरिक्त छत के ऊपर ही ऊपर एक और रास्ता उस चबूतरे में से बाहर निकलने के लिये बना हुआ है जिसका हाल मुझे पहिले मालूम न था, जिस दिन हम दोनों भाई उस चबूतरे की राह निकले हैं उस दिन देखा कि इसके अतिरिक्त एक रास्ता और भी है।"

इन्द्र०। जी हां दूसरा रास्ता भी जरूर है मगर वह तिलिस्मी दारोगा के लिये बनाया गया था, तिलिस्म तोड़ने वाले के लिये नहीं। मुझे उस रास्ते का हाल बखूबी मालूम है।

गोपाल०। मुझे भी उस रास्ते का हाल (इन्द्रदेव की तरफ इशारा करके) इन्हीं की जुबानी मालूम हुआ है। इसके पहले मैं कुछ भी नहीं जानता था और न यही मालूम था कि इस तिलिस्म के दारोगा यही हैं।

इसके बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने सभों को उस तहखाने अथवा कोठड़ियों और कमरों की सैर कराई जिसमें लाजवाब और हद दरजे की फजूलखर्ची को भी मात करने वा[ली] दौलत भरी हुई थी और एक से एक बढ़ कर अनूठी चीजें ल[ोगों] के दिल अपनी तरफ खैंच रही थीं। साथ ही इसके यह भी स[म]झाया कि इन कोठड़ियों को हम लोगों ने कैसे खोला और [इस] काम में कैसी कैसी कठिनाइयां उठानी पड़ीं।

घूमते फिरते और सैर करते हुए सब कोई उस मध्य व[ाले] कमरे में पहुंचे जो ठीक तिलिस्मी चबूतरे के नीचे था। वास्तव [में] यह कमरा कल पुरजों से बिल्कुल भरा हुआ था। जमीन से

तक बहुत सी तारें लगी हुई थीं, बड़े बड़े नांदों में मसाले भरे रक्खे थे जिनसे उन तारों और कल पुर्जों का सम्बन्ध था और दीवार के अन्दर से ऊपर चढ़ जाने के लिये सीढ़ियां दिखाई दे रही थीं।

दोनों कुमारों ने महाराज को समझाया कि तिलिस्म टूटने के पहिले वे कल पुरजे किस ढंग पर लगे हुए थे और तोड़ते समय उनके साथ कैसी कार्रवाई की गई। इसके बाद इन्द्रजीतसिंह ने सीढ़ियों की तरफ इशारा करके कहा, "अब भी इन सीढ़ियों का तिलिस्म कायम है, हर एक की मजाल नहीं कि इन पर पैर रख सके।"

बीरेन्द्र०। यह सब कुछ है मगर असल तिलिस्मी बुनियाद वही खोह वाला बंगला जान पड़ता है जिसमें चलती फिरती तस्वीरों का तमाशा देखा था और जहां से तिलिस्म के अन्दर घुसे थे।

सुरेन्द्र०। इसमें क्या शक है! वही चुनार जमानिया और रोहतासगढ़ वगैरह के तिलिस्म की नकेल है और वहां रहने वाला तरह तरह के तमाशे देख दिखा सकता है और सब से बढ़ कर आनन्द ले सकता है।

जीत०। वहां की पूरी पूरी कैफियत अभी देखने में नहीं आई।

इन्द्रजीत०। दो चार दिन में वहां की कैफियत देख भी नहीं सकते। जो कुछ आप लोगों ने देखा वह रुपये में एक आना भी न था। मुझे भी अभी पुनः वहां जा कर बहुत कुछ देखना बाकी है।

सुरेन्द्र०। इस समय तो जल्दी में थोड़ा बहुत देख लिया है मगर कामों से निश्चिन्त होकर पुनः हम लोग वहां चलेंगे

उसी जगह से रोहतासगढ़ के तहखाने की भी सैर करेंगे। अब यहां से बाहर होना चाहिये।

आगे आगे कुंअर इन्द्रजीतसिंह रवाना हुए। पांच सीढ़ियां चढ़ जाने के बाद एक छोटा सा लोहे का दरवाजा जिसे उसी हीरे वाली तिलिस्मी ताली से खोला और तब ओ लिये हुए दोनों कुमार तिलिस्मी चबूतरे के बाहर हुए। समय रात नाम मात्र को बाकी थी।

ग्यारहवां बयान

सब कोई तिलिस्म की सैर करके लौट आये और अपने काम धन्धे में लगे। कैदियों के मुकद्दमे को थोड़े दिन मुलतवी रख कर कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की पर सभों ने ध्यान दिया और इसी के इन्तजाम की फिक्र लगे। महाराज सुरेन्द्रसिंह ने जो काम जिसके लायक उसके सपुर्द कर के कुल कैदियों को चुनारगढ़ भेजने का दिया और यह भी निश्चय कर लिया कि दो तीन दिन के हम लोग भी चुनारगढ़ चले जायंगे क्योंकि बारात चुनारग से निकल कर यहां आवेगी।

भरतसिंह और दलीपशाह वगैरह का डेरा बलभद्रसि पड़ोस ही में पड़ा और दूसरे मेहमानों के साथ ही साथ इ खातिरदारी का बोझ भी भूतनाथ के ऊपर डाला गया। इस संक्षेप में हम यह भी लिख देना उचित समझते हैं कि कौन किसके सपुर्द किया गया।

(१) इस तिलिस्मी इमारत के इर्द गिर्द जिन मेहमा डेरे पड़े हैं उन्हें किसी बात की तकलीफ तो नहीं है, या जरूरत की चीजों के पहुँचने में किसी तरह की ढिलाई तो

इस बात को बराबर मालूम करते रहने का काम भूतनाथ
र्द किया गया।

(२) मोदी बनिये और हलवाई वगैरह किसी से किसी
का दाम तो नहीं लेते, इस बात की तहकीकात के लिये
ारायण ऐयार मुकर्रर किये गये।

(३) रसद वगैरह के काम में कहीं किसी तरह की बेईमानी
हीं होती, या चोरी का नाम तो किसी की जुबान से नहीं
देता, इसको जानने और शिकायतों के दूर करने पर चुन्नी-
ऐयार तैनात किये गये।

(४) इस तिलिस्मी इमारत से ले कर चुनारगढ़ तक की
और उसकी सजावट का काम पन्नालाल और पण्डित
ाथ के जिम्मे किया गया।

(५) चुनारगढ़ में वाहर से न्योते में आये हुए पण्डितों की
रदारी और पूजा पाठ इत्यादि के सामान की दुरुस्ती का
जगन्नाथ ज्योतिषी के ऊपर डाला गया।

(६) बारात और महफिल वगैरह की सजावट तथा उसके
न्ध में जो कुछ काम हो उसके जिम्मेवार तेजसिंह बनाये
।

(७) आतशबाजी और अजायबात के तमाशे तैयार कराने
ाथ ही साथ उसी ढंग की एक इमारत के बनवाने का हुक्म
देव को दिया गया जैसी इमारत के अन्दर हंसते हंसते
जीतसिंह वगैरह एक दफे कूद गये थे और जिसका भेद
ी तक खोला नहीं गया है। ※

(८) पन्नालाल वगैरह के बदले में रणधीरसिंहजी के डेरे

※ देखिये सन्तति पाँचवां हिस्सा चौथा बयान।

की हिफाजत तथा किशोरी कामिनी वगैरह की निगरानी जिम्मेवार देवीसिंह बनाये गये।

(९) ब्याह सम्बन्धी खर्च की तहवील (रोकड़) राजा गोपालसिंह के हवाले की गई।

(१०) कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के साथ रह कर उनके विवाह सम्बन्धी शानशौकत और जरूरतों को कायदे के साथ निबाहने के लिए भैरोसिंह और तारासिंह छोड़ दिए गए।

(११) हरनामसिंह को अपने मातहत में ले कर जीतसिंह जी ने यह काम अपने जिम्मे ले लिया कि हर एक के कामों की जांच और निगरानी रखने के अतिरिक्त कुल कैदियों को भी किसी उचित ढंग से इस विवाहोत्सव के तमाशे दिखा दें जिसमें वे लोग देख लें कि जिस शुभ दिन के हम बाधक थे वह आज किस खुशी और खूबी के साथ बीत रहा है और सर्वसाधारण भी देख लें कि धन दौलत और ऐश आराम के फेर में पड़ कर अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारने वाले, छोटे हो कर बड़ों के साथ बैर बांध के नतीजा भोगने वाले, मालिक के साथ में नमकहरामी और उग्र पाप करने का कुछ फल इस जन्म में भी भोग लेने वाले, और बदनीयती तथा पाप के साथ ऊंचे दर्जे पर पहुँच कर यकायक रसातल में पहुंच जाने वाले, धर्म्म और ईश्वर से विमुख ये ही प्रायश्चित्ती लोग हैं।

इन सभों के साथ मातहती में काम करने के लिये आदमी भी काफी तौर पर दिये गये।

इनके अतिरिक्त और और लोगों को भी तरह तरह के काम सपुर्द किये गये और सब कोई बड़ी खूबी के साथ अपना अपना काम करने लगे।

अब हम थोड़ा सा हाल कुंअर इन्द्रजीतसिंह का बयान करेंगे

जिन्हें इस बात का बहुत ही रञ्ज है कि कमलिनी की शादी किसी दूसरे के साथ हो गई और ये उम्मीद ही में बैठे रह गये।

रात पहर भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है और कुंअर इन्द्रजीतसिंह अपने कमरे में बैठे भैरोसिंह से धीरे धीरे बातें कर रहे हैं। इन दोनों के सिवाय कोई तीसरा आदमी इस कमरे में नहीं है और कमरे का दर्वाजा भी भिड़काया हुआ है।

भैरो०। तो आप साफ साफ कहते क्यों नहीं कि आपकी उदासी का सबब क्या है? आपको तो आज खुश होना चाहिये कि जिस काम के लिये बरसों परेशान रहे, जिसकी उम्मीद में तरह तरह की तकलीफें उठाई, जिसके लिये हथेली पर जान रख के बड़े बड़े दुश्मनों से मुकाबिला करना पड़ा और जिसके होने या मिलने ही पर तमाम दुनिया की खुशी खुशी समझी जाती थी, आज वही काम आपकी इच्छानुसार हो रहा है और उसी किशोरी के साथ अपनी शादी का इन्तजाम अपनी आंखों से देख रहे हैं, फिर भी ऐसी अवस्था में आपको उदास देख कर कौन ऐसा है जो ताज्जुब न करेगा?

इन्द्रजीत०। बेशक मेरे लिये आज बड़ी खुशी का दिन है और मैं खुश हूं भी मगर कमलिनी की तरफ से जो रंज मुझे हुआ है उसे हजार कोशिश करने पर भी मेरा दिल बरदाश्त नहीं करता।

भैरो०। (ताज्जुब का चेहरा बना कर) हैं! कमलिनी की तरफ से और आपको रंज! जिसके अहसानों के बोझ से आप दबे हुए हैं उसी कमलिनी से रंज! यह आप क्या कह रहे हैं?

इन्द्रजीत०। इस बात को तो मैं खुद कह रहा हूं कि उसके अहसानों के बोझ से मैं जिन्दगी भर हलका नहीं हो सकता और अब तक उसके जी में मेरी भलाई का ध्यान बंधा ही हुआ है मगर रञ्ज इस बात का है कि अब मैं उसे उस मुहब्बत की

निगाह से नहीं देख सकता जिससे कि पहिले देखता था।

भैरो०। सो क्यों, क्या इसलिये कि अब वह अपने सु
चली जायगी और फिर उसे आप पर अहसान करने का मौका
न मिलेगा?

इन्द्रजीत०। हां करीब करीब यही बात है।

भैरो०। मगर अब आपको उसके मदद की जरूरत भी तो
नहीं है। हां इस बात का खयाल बेशक हो सकता है कि अब
आप उसके तिलिस्मी मकान पर कब्जा न कर सकेंगे।

इन्द्रजीत०। नहीं नहीं, मुझे इस बात की कुछ जरूरत नहीं
है और न इसका कुछ खयाल ही है!

भैरो०। तो क्या इस बात का खयाल है कि उसने अप
शादी में आपको न्योता नहीं दिया? मगर वह एक हिन्दू लड़
की हैसियत से ऐसा कर भी तो नहीं सकती थी! हां इस बा
की शिकायत आप गोपालसिंह से जरूर कर सकते हैं क्यों
उस काम के कर्ता धर्ता वे ही रहे हैं।

इन्द्रजीत०। उनसे तो मुझे बहुत ही शिकायत है मगर
शर्म के मारे कुछ कह नहीं सकता।

भैरो०। (चौंक कर) शर्म! शर्म तो तब होती जब आ
इस बात की शिकायत करते कि मैं खुद उससे शादी कि
चाहता था!

इन्द्रजीत०। हां, बात ऐसी ही है। (मुस्कुरा कर) मगर तु
तो पागलों की सी बातें करते हो।

भैरो०। (हंस कर) यह न कहिये! आप दोनों हाथ ल
चाहते थे!! तो इस चोर को आप इतने दिनों तक छिपाये क
रहे?

इन्द्रजीत०। तो यही कब उम्मीद हो सकती थी कि इस त

यकायक और गुमसुम शादी हो जायगी!

भैरो०। खैर अब तो जो कुछ होना था सो हो गया, मगर आप को इस बात का कुछ ख्याल न करना चाहिये। इसके अतिरिक्त क्या आप समझते हैं कि किशोरी इस बात को पसन्द करती? कभी नहीं, बल्कि आये दिन का झगड़ा पैदा हो जाता।

इन्द्रजीत०। नहीं, किशोरी से मुझे ऐसी उम्मीद नहीं हो सकती। खैर अब इस विषय पर बहस करना व्यर्थ है, मगर मुझे इसका रंज जरूर है। अच्छा यह तो बताओ तुमने उन्हें देखा है जिसके साथ कमलिनी की शादी हुई है?

भैरो०। कई दफे, बातें भी अच्छी तरह कर चुका हूं।

इन्द्रजीत०। कैसे हैं?

भैरो०। बड़े लायक, पढ़े लिखे, पण्डित, बहादुर, दिलेर, हंसमुख और सुन्दर! इस अवसर पर आवेंगेही, देख लीजियेगा। आपने कमलिनी से इस बारे में बातचीत नहीं की?

इन्द्रजीत०। इधर तो नहीं मगर तिलिस्म की सैर को जाने के पहिले मुलाकात हुई थी, उसने खुद मुझे बुलाया था बल्कि उसी की जुबानी उसकी शादी का हाल मुझे मालूम हुआ था। मगर उसने मेरे साथ विचित्र ढङ्ग का बर्ताव किया!

भैरो०। सो क्या?

इन्द्रजीत०। (जो कुछ कैफियत हो चुकी थी उसे बयान करने के बाद) तुम इस बर्ताव को कैसा समझते हो?

भैरो०। बहुत अच्छा और उचित!

इस तरह की बातें हो ही रही थीं कि पहिले दिन की तरह ाल वाले कमरे का दर्वाजा खुला और एक लौंडी ने आ कर ाम करने के बाद कहा, "कमलिनीजी आपसे मिला चाहती ाज्ञा हो तो........"

इन्द्रजीत०। अच्छा मैं चलता हूं, तू दर्वाजा बन्द कर दे।

भैरो०। तो अब मैं भी जाकर आराम करता हूं।

इन्द्रजीत०। अच्छा जाओ, फिर कल देखा जायगा।

लौंडी०। इनसे (भैरोसिंह से) भी उन्हें कुछ कहना है।

यह कहती हुई लौंडी ने दर्वाजा बन्द कर दिया, तब तक स्वयं कमलिनी उस कमरे में आ पहुँची और भैरोसिंह की तरफ देख के बोली जो उठ कर बाहर जाने लिये तैयार थे, "आप कहां चले ? आप ही से तो मुझे बहुत सी शिकायत करनी है !"

भैरो०। सो क्या ?

कमलिनी०। अब उसी कमरे में चलिए तो बातचीत होगी।

इतना कह कर कमलिनी ने कुमार का हाथ पकड़ लिया और अपने कमरे की तरफ ले चली, पीछे पीछे भैरोसिंह भी गए। लौंडी दर्वाजा बन्द करके दूसरी राह से बाहर चली गई और कमलिनी ने इन दोनों को उचित स्थान पर बैठा कर पानदान आगे रख दिया और भैरोसिंह से कहा, "आप लोग तिलिस्म की सैर कर आये और मुझे पूछा भी नहीं !"

भैरो०। महाराज खुद कह चुके हैं कि शादी के बाद औरतों को भी तिलिस्म की सैर करा दी जाय और फिर तुम्हारे लिये तो कहना ही क्या है, तुम जब चाहो तिलिस्म की सैर कर सकती हो।

कम०। ठीक है, मानो यह मेरे हाथ की बात है !

भैरो०। हई है !

कम०। (हंस कर) टालने के लिये यह अच्छा ढङ्ग है, खैर जाने दीजिये, मुझे कुछ ऐसा शौक भी नहीं है, हां यह बताइये कि वहां क्या क्या कैफियत देखने में आई ? मैंने सुना कि भूतनाथ वहां बड़े चक्कर में पड़ गया था और उसकी पहिली स्त्री भी वहां दिखाई पड़ गई।

भैरो०। बेशक ऐसा ही हुआ।

इतना कह कर भैरोसिंह ने कुल हाल खुलासा बयान किया और इसके बाद कमलिनी ने इन्द्रजीतसिंह से कहा, "खैर आप यह बताइये कि शादी की खुशी में मुझे क्या इनाम मिलेगा ?"

इन्द्रजीत०। (हंस कर) गालियों के सिवाय और किसी चीज की तुम्हें कमी ही क्या है जो मैं दूं ?

कमलिनी०। (भैरो से) सुन लीजिये, मेरे लिये कैसा अच्छा इनाम सोचा गया है ! (कुमार से, हंस कर) याद रखियेगा, इस जवाब के बदले में आपको ऐसा छकाऊंगी कि खुश हो जाइयेगा !!

भैरो०। इन्हें तो तुम छका ही चुकी हो, अब इससे बढ़ के क्या होगा कि चुपचाप दूसरे के साथ शादी कर ली और इन्हें अंगूठा दिखा दिया !! अब तुम्हें ये गालियां न दें तो क्या करें ?

कमलिनी०। (मुस्कुराती हुई) आपकी भी यही राय है ?

भैरो०। बेशक !!

कमलिनी०। तो बेचारी किशोरी के साथ आप अच्छा सलूक करते हैं !

भैरो०। इसका इलजाम तो कुमार के ऊपर हो सकता है !

कमलिनी०। हां साहब, मर्दों की मुरौवत जो कुछ कर खाये थोड़ा है, मैं किशोरी बहिन से इसका जिक्र जरूर करूंगी !

भैरो०। तब तो अहसान पर अहसान करोगी।

इन्द्र०। (भैरो से) तुम भी व्यर्थ की छेड़छाड़ मचा रहे भला इन बातों से क्या फायदा ?

भैरो०। ब्याह शादी में ऐसी ही बातें हुआ करती हैं !

इन्द्रजीत०। तुम्हारा सिर हुआ करता है ! (कमलिनी से)

अच्छा यह बताओ कि इस समय तुमने मुझे क्यों याद किया?

कमलिनी० । हरे राम ! अब क्या मैं ऐसी भारी हो गई मुझसे मिलना भी बुरा मालूम होता है ?

इन्द्रजीत० । नहीं नहीं, अगर मिलना बुरा मालूम होता तो मैं यहां आता ही क्यों? पूछता हूं कि आखिर कोई काम भी था!

कमलिनी० । हां है तो सही ।

इन्द्रजीत० । कहो ।

कमलिनी० । आपको शायद मालूम होगा कि मेरे पिता जब से यहां आये हैं उन्होंने अपने खाने पीने का इन्तजाम अलग रक्खा है अर्थात् आपके यहां का अन्न नहीं खाते और न कुछ अपने लिये खर्च कराते हैं ।

इन्द्रजीत० । हां मुझे मालूम है ।

कमलिनी० । अब उन्होंने इस मकान में रहने से भी इन्कार किया है । उनके एक मित्र ने खेमे वगैरह का इन्तजाम कर दिया है और वे उसी में अपना डेरा उठा ले जाने वाले हैं ।

इन्द्रजीत० । यह भी मालूम है ।

कमलिनी० । मेरी इच्छा है कि यदि आप आज्ञा दें तो लाडिली को साथ लेकर मैं भी उसी डेरे में चली जाऊं ।

इन्द्रजीत० । क्यों ? और तुम्हें यहां रहने में परहेज ही क्या हो सकता है ?

कमलिनी० । नहीं नहीं मुझे किस बात का परहेज होगा! मगर यों ही जी चाहता है कि मैं दो चार दिन अपने बाप के साथ ही रह कर उनकी खिदमत करूं ।

इन्द्रजीत० । यह दूसरी बात है, इसकी इजाजत तुम्हें अपने मालिक से लेनी चाहिये, मैं कौन हूं जो इजाजत दूं ?

कमलिनी० । इस समय वे तो यहां हैं नहीं अस्तु उनके बदले

मैं आप ही को अपना मालिक समझती हूं।

इन्द्रजीत०। (मुस्कुरा कर) फिर तुमने वही रास्ता पकड़ा? र मैं इस बात की इजाजत न दूंगा।

कमलिनी०। तो मैं आज्ञा के विरुद्ध कुछ न करूंगी।

इन्द्रजीत०। (भैरो से) इन की बातचीत का ढङ्ग देखते हो?

भैरो०। (हंस कर) शादी हो जाने पर भी ये आपको नहीं छोड़ा चाहतीं तो मैं क्या करूं?

कमलिनी०। अच्छा मुझे एक बात की इजाजत तो जरूर दीजिये।

इन्द्रजीत०। वह क्या?

कमलिनी०। आपकी शादी में मैं आपसे एक विचित्र दिल्लगी किया चाहती हूं।

इन्द्रजीत०। वह कौन सी दिल्लगी होगी?

कमलिनी०। वही बता दूंगी तो उसमें मजा ही क्या रह जायगा? बस आप इतना कह दीजिये कि उस दिल्लगी से रंज न होंगे चाहे वह कैसी ही गहरी दिल्लगी क्यों न हो!

इन्द्रजीत०। (कुछ सोच कर) खैर मैं रंज न होऊंगा।

इसके बाद थोड़ी देर तक हंसी की बातें होती रहीं और फिर सब कोई उठ कर अपने अपने ठिकाने चले गये।

बारहवां बयान

ब्याह की तैयारी और हंसी खुशी में ही कई सप्ताह बीत गये और किसी को कुछ मालूम न हुआ। हां कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को खुशी के साथ ही साथ रंज और उदासी से भी मुकाबला करना पड़ा। यह रंज और उदासी क्यों? शायद कमलिनी और लाडिली के सबब से हो। जिस तरह कुंअर

इन्द्रजीतसिंह कमलिनी से मिल कर और उसकी जुबानी ब्याह का हो जाना सुन कर दुःखी हुए, उसी तरह आनन्दसिं को भी लाडिली से मिल कर दुःखी होना पड़ा था नहीं से हम नहीं कह सकते क्योंकि लाडिली से और आनन्दसिंह से जो बातें हुई उससे और कमलिनी की बातों से बड़ा फर्क है। कम लिनी ने तो खुद इन्द्रजीतसिंह को अपने कमरे में बुलाया था मगर लाडिली ने ऐसा नहीं किया। लाडिली का कमरा भी आनन्दसिंह के कमरे के बगल ही में था। जिस रात कमलिनी से और इन्द्रजीतसिंह से दूसरी मुलाकात हुई थी, उसी रात को आनन्दसिंह ने भी अपने बगल वाले कमरे में लाडिली को देखा था मगर दूसरे ढंग से। आनन्दसिंह अपने कमरे में मसहरी पर लेटे हुए तरह तरह की बातें सोच रहे थे कि उसी समय बगल वाले कमरे में से कुछ खटके की आवाज आई जिससे आनन्द सिंह चौंके और उन्होंने घूम कर देखा तो उस कमरे का दर्वाजा कुछ खुला हुआ नजर आया। इन्हें यह जरूर मालूम था कि हमारे बगल ही में लाडिली का कमरा है और उससे मिलने की नीयत से इन्होंने कई दफे दर्वाजा खोलना भी चाहा था मगर बन्द पाकर लाचार रह गये थे। आज दर्वाजा खुला पाकर बहुत खुश हुए और मसहरी पर से उठ धीरे धीरे दर्वाजे के पास गये। हाथ के सहारे दर्वाजे को कुछ विशेष खोला और अन्दर की तरफ झांक कर देखा। लाडिली पर निगाह पड़ी जो एक शमादान के आगे बैठी हुई कुछ लिख रही थी। शायद उसे इस बात की कुछ खबर ही न थी कि मुझे कोई देख रहा है।

भीतर सन्नाटा पाकर अर्थात् किसी गैर को न देख कर आनन्दसिंह बेधड़क कमरे के अन्दर चले गये। पैर की आहट पाते ही लाडिली चौंकी और आनन्दसिंह को अपनी तरफ आते

: उठ खड़ी हुई तथा प्रणाम करके मुस्कुराती हुई बोली, "आपने
जा कैसे खोल लिया ?"

आनन्द०। (मुस्कुराते हुए) किसी हिक्मत से !

लाडिली०। क्या आज के पहिले यह हिकमत मालूम न
? शायद सफाई के लिये किसी लौंडी ने दर्वाजा खोला हो
र उसे बन्द करना भूल गई हो।

आनन्द०। अगर ऐसा ही हो तो क्या कुछ हर्ज है ?

लाडिली०। नहीं हर्ज काहे का है, मैं तो खुद ही आपसे मिला
हती थी मगर लाचारी......

आनन्द०। लाचारी कैसी ? क्या किसी ने मना कर दिया था ?

लाडिली०। मना ही समझना चाहिये जब कि मेरी बहिन
लिनी ने जोर देकर यह कह दिया कि 'या तो तू मेरी इच्छा-
सार शादी कर ले या इस बात की कसम खा जा कि किसी गैर
से कभी बातचीत न करेगी।' जिस समय उनकी (कमलिनी
) शादी होने लगी थी उस समय भी लोगों ने मुझ पर शादी
लेने के लिये दबाव डाला था मगर मैं इस समय जैसी हूं
ी ही रहने के लिये कसम खा चुकी हूं। मतलब यह है कि
ी बखेड़े में मुझसे और उनसे कुछ तकरार भी हो गई है।

आनन्द०। (घबराहट और ताज्जुब के साथ) क्या कम-
नी की शादी हो गई ?

लाडिली०। जी हां।

आनन्द०। किसके साथ ?

लाडिली०। सो तो मैं नहीं कह सकती, आपको खुद मालूम
जायगा।

आनन्द०। यह बहुत बुरा हुआ।

लाडिली०। बेशक बुरा हुआ मगर क्या किया जाय, जीजा

जी (गोपालसिंह) की मर्जी ही ऐसी थी क्योंकि किशोरी ने ऐसा करने के लिये उन पर बहुत जोर डाला था अस्तु कमलिनी बहिन दबाव में पड़ गई, मगर मैंने साफ इन्कार कर दिया कि जैसी हूं वैसी ही रहूंगी।

आनन्द०। तुमने बहुत अच्छा किया।

लाडिली०। और मैं ऐसा करने के लिये सख्त कसम खा चुकी हूं।

आनन्द०। (ताज्जुब से) क्या तुम्हारे इस कहने का यह मतलब लगाया जाय कि अब तुम शादी करोगी ही नहीं?

लाडिली०। बेशक!

आनन्द०। यह तो कोई अच्छी बात नहीं है!

लाडिली०। जो हो, अब तो मैं कसम खा चुकी हूं और बहुत जल्द यहां से चली जाने वाली भी हूं, सिर्फ कामिनी बहिन की शादी हो जाने का इन्तजार कर रही हूं।

आनन्द०। (कुछ सोच कर) कहां जाओगी?

लाडिली०। आप लोगों की कृपा से अब तो मेरा बाप भी प्रगट हो गया है, अब इसकी चिन्ता ही क्या है?

आनन्द०। मगर जहां तक मैं समझता हूं तुम्हारे बाप शादी करने के लिये जरूर जोर देंगे।

लाडिली०। इस विषय में उनकी कुछ न चलेगी।

लाडिली की बातों से आनन्दसिंह को ताज्जुब के साथ ही साथ रञ्ज भी हुआ और ज्यादे रञ्ज तो इस बात का था कि अब तक लाडिली ने खड़े ही खड़े बातचीत की और कुमार को बैठने तक के लिये नहीं कहा। शायद इसका यह मतलब हो कि 'मैं ज्यादे देर तक आपसे बात नहीं कर सकती।' अस्तु आनन्दसिंह को क्रोध और दुःख के साथ ही साथ लज्जा ने भी धर दबाया

र वे यह कह कर कि 'अच्छा मैं जाता हूं' अपने कमरे की फ लौट चले।

आनन्दसिंह के दिल में जो बातें घूम रही थीं उसका न्दाजा शायद लाडिली को भी मिल गया और जब वे लौट कर ने लगे तब उसने पुनः इस ढंग पर कहा मानों उसकी आखिरी त अभी पूरी नहीं हुई थी, "क्योंकि जिनकी मुझ पर कृपा ती थी अब वे और ही ढंग के हो गये !!"

इस बात ने कुमार को तरद्दुद में डाल दिया। उन्होंने घूम र एक तिरछी निगाह लाडिली पर डाली और कहा, "इसका या मतलब ?"

लाडिली०। सो कहने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है। हां जब ापकी शादी हो जायगी तब मैं साफ साफ आपसे कह दूंगी, स समय जो कुछ आप राय देंगे उसे मैं कबूल भी कर लूंगी।

इस आखिरी बात से कुमार को कुछ हिम्मत बंध गई मगर ठने की या और कुछ कहने की हिम्मत न पड़ी और 'अच्छा' ह कर वे अपने कमरे में चले आये।

तेरहवाँ बयान

विवाह का सब सामान ठीक हो गया मगर हर तरह की ैयारी हो जाने पर भी लोगों की मेहनत में कमी नहीं हुई। सब ोई उसी तरह दौड़ धूप और काम काज में लगे हुए दिखाई दे हे हैं। महाराज सुरेन्द्रसिंह सभों को लिये हुए चुनारगढ़ चले ये। अब इस तिलिस्मी मकान में सिर्फ जरूरत की चीजों के ेर और इन्तजामकार लोगों के डेरे भर ही दिखाई दे रहे हैं। इसी मकान में से उन लोगों के लिये भी रास्ता बनाया गया है जो हंसते हंसते उस तिलिस्मी इमारत में कूदा करेंगे जिसके बनाने

की आज्ञा इन्द्रदेव को दी गई थी और जो इस समय बन तैयार हो गई है।

यह इमारत बीस गज लम्बी और इतनी ही चौड़ी थी ऊंचाई इसकी लगभग चालीस हाथ से कुछ ज्यादे होगी। चारो तरफ की दीवार साफ और चिकनी थी तथा किसी तरफ कोई दरवाजे का निशान दिखाई नहीं देता था। पूरब तरफ ऊपर चढ़ जाने के लिये छोटी छोटी सीढ़ियां बनी हुई थीं जिनके दोनों तरफ हिफाजत के लिये लोहे के सीखचे लगा दिये गये थे। उसी पूरब तरफ वाली दीवार पर बड़े बड़े हरफों में यह भी लिखा हुआ था :—

"जो आदमी इन सीढ़ियों की राह ऊपर जायगा और एक नजर अन्दर की तरफ झांक वहां की कैफियत देख कर इन्हीं सीढ़ियों की राह नीचे उतर आवेगा उसे एक लाख रुपये इनाम में दिये जायंगे।"

इस इमारत ने चारो तरफ एक अनूठा रंग पैदा कर दिया था। हजारों आदमी उस इमारत के ऊपर चढ़ जाने के लिये तैयार थे और हर एक आदमी लालसा पूरी करने के लिये जल्दी मचा रहा था, मगर सीढ़ी का दरवाजा बन्द था। पहरेदार लोग किसी को ऊपर जाने की इजाजत नहीं देते थे और यह कह कर सभों को संतोष करा देते थे कि 'बारात वाले दिन दर्वाजा खुलेगा और पन्द्रह दिन तक बन्द न होगा।'

यहां से चुनारगढ़ की सड़क के दोनों तरफ जो सजावट की गई थी उसमें भी एक अनूठापन था। दोनों तरफ रोशनी के लिये जाफरी बनी हुई थी और उसमें अच्छे अच्छे नीति के श्लोक दरसाए गये थे जो रोशनी होने पर बहुत साफ तौर पर पढ़े जा सकते थे। बीच बीच में थोड़ी थोड़ी दूर पर नौबतखाने के बगल में एक एक मचान था जिस पर एक या दो कैदियों के बैठने के लिए

गाह बनी हुई थी। जाफरी के दोनों तरफ दस दस हाथ चौड़ी ज़मीन में बाग का नमूना तैयार किया गया था और उसके बाद आतशबाजी लगाई गई थी। आध आध कोस की दूरी पर सर्व-साधारण और गरीब तमाशबीनों के लिये महफिल तैयार की गई थी और उसके लिये अच्छी अच्छी गाने वाली रंडियां और भांड़ मुकर्रर किये गये थे। रात अंधेरी होने के कारण रोशनी का सामान ज्यादे तैयार किया गया था और वह तिलिस्मी चंद्रमा जो दोनों राजकुमारों को तिलिस्म के अन्दर से मिला था * चुनारगढ़ किले के ऊंचे कंगूरे पर लगा दिया था जिसकी रोशनी उस तिलिस्मी मकान तक बड़ी खूबी और सफाई के साथ पड़ रही थी।

पाठक! दोनों कुमारों के बारात की सजावट, महफिलों की तैयारी, रोशनी और आतिशबाजी की खूबी, मेहमानदारी की तारीफ, और खैरात की बहुतायत इत्यादि का हाल विस्तार पूर्वक लिख कर पढ़ने वालों का समय नष्ट करना हमारी आत्मा और आदत के विरुद्ध है। आप खुद समझ सकते हैं कि दोनों कुमारों की शादी का इन्तजाम किस खूबी के साथ किया गया होगा, फ़रमायश की चीजें कैसी अच्छी होंगी, बड़प्पन का कितना बड़ा ख्याल किया गया होगा, और बारात किस धूमधाम से निकली होगी!! हम आज तक जिस तरह संक्षेप में लिखते आये हैं अब भी उसी तरह लिखेंगे, तथापि हमारी उन लिखावटों से जो ब्याह के सम्बन्ध में ऊपर कई दफे मौके मौके पर लिखी जा चुकी हैं आपको अन्दाज के साथ साथ अनुमान करने का हौसला भी निकल जायगा और विशेष सोच विचार की जरूरत न रहेगी। हम इस जगह पर केवल इतना ही लिखेंगे कि—

* देखिये इक्कीसवां हिस्सा आठवां बयान।

बरात बड़े धूमधाम से चुनारगढ़ के बाहर हुई। आगे आगे न
निशान और उसके बाद सिलसिलेवार फौजी सवार पैदल औ
खाना वगैरह था, जिसके बाद ऐसी फुलवारियां थीं जिनके दे
से खुशी और लूटने से दौलत हासिल हो। इसके बाद बहुत
सजे हुए अंबारीदार हाथी पर दोनों कुमार हाथी ही पर
अपने बड़े बुजुर्गों रिश्तेदारों और मेहमानों से घिरे हुए धीरे
आतशी बहार लूटते और दुश्मनों के कलेजों को जलाते हुए ज
थे और उनके बाद तरह तरह की सवारियों और घोड़ों पर
हुए बड़े बड़े सर्दार लोग दिखाई दे रहे थे। अन्त में फिर
फौजी सिपाहियों का सिलसिला था। आगे वाले नौबत
से लेकर कुमारों के हाथी तक कई तरह के बाजे वाले अपने
मौके से अपना इल्म और हुनर दिखा रहे थे।

कुशल पूर्वक बारात ठिकाने पहुंची और शास्त्रानुसार
तथा रीति होने के बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्द
का विवाह किशोरी और कामिनी के साथ हो गया और
काम में रणधीरसिंह ने भी वित्त के अनुसार दिल खोल कर
किया। दूसरे रोज पहर भर दिन चढ़ने के पहिले ही दोनों
ओं की रुखसती करा कर महाराज चुनार की तरफ लौट प

चुनारगढ़ पहुँचने पर जो कुछ रसमें थीं वे पूरी होने
और मेहमान तथा तमाशबीन लोग तरह तरह के तमाशों
महफिलों का आनन्द लूटने लगे। उधर तिलिस्मी मकान
सीढ़ियों पर लाख रुपया इनाम पाने की लालसा से लो
चढ़ना आरम्भ किया। जो कोई दीवार के ऊपर पहुँच
अन्दर की तरफ झांकता वह अपने दिल को किसी त
सम्हाल सकता और एक दफे खिलखिला कर हंसने के
अन्दर की तरफ कूद पड़ता तथा कई घन्टे के बाद उस

वाली बहुत बड़ी तिलिस्मी इमारत की राह से बाहर निकाला जाता।

बस, विवाह का इतना ही हाल संक्षेप में लिख कर हम इस बयान को पूरा करते हैं और इसके बाद सोहागरात की एक अनूठी घटना का उल्लेख कर के हम इस बाईसवें हिस्से को समाप्त करेंगे क्योंकि हम दिलचस्प घटनाओं ही का लिखना पसन्द करते हैं।

सोलहवाँ बयान

आज कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की खुशी का कोई ठिकाना नहीं है क्योंकि तरह तरह की तकलीफें उठा कर एक मुद्दत के बाद इन दोनों की दिली मुरादें हासिल हुई हैं।

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है और एक सुन्दर सजे हुए कमरे में ऊंची और मुलायम गद्दी पर किशोरी और कुंअर इन्द्रजीतसिंह बैठे हुए दिखाई देते हैं। यद्यपि कुंअर इन्द्रजीतसिंह की तरह किशोरी के दिल में भी तरह तरह की उमंगें भरी हुई हैं और वह आज इस ढंग पर कुंअर इन्द्रजीतसिंह की पहिली मुलाकात को सौभाग्य का कारण समझती है मगर उस अनोखी लज्जा के पाले में पड़ी हुई किशोरी का चेहरा घूंघट की ओट से बाहर नहीं होता जिसे प्रकृति अपने हाथों से औरतों की बुद्धि में जन्म ही से दे देती है। यद्यपि आज के पहिले कुंअर इन्द्रजीतसिंह को कई दफे किशोरी देख चुकी है और उनसे बातें भी कर चुकी है तथापि आज पूरी स्वतंत्रता मिलने पर भी यकायक सूरत दिखाने की हिम्मत नहीं पड़ती। कुमार तरह तरह की बातें कह कर और समझा कर उसकी लज्जा दूर किया चाहते हैं मगर कृतकार्य नहीं होते। बहुत कुछ कहने सुनने पर कभी कभी

किशोरी दो एक शब्द बोल देती है मगर वह भी धड़कते हुए कलेजे के साथ। कुमार ने सोच लिया कि—यह स्त्रियों की प्रकृति है अतएव इसके विरुद्ध जोर न देना चाहिये। यदि इस समय इसकी हिम्मत नहीं खुलती तो क्या हुआ, घण्टे दो घण्टे, पहर दो पहर, या एक दो दिन में खुल ही जायेगी। यदि इस समय यह चांद पर्दे के बाहर नहीं होता तो सवेरा होते होते तक हो ही जायगा। आखिर ऐसा ही हुआ।

इसके बाद किस तरह की छेड़छाड़ शुरू हुई या क्या हुआ सो हम नहीं लिख सकते, हां उस समय का हाल जरूर लिखेंगे जब धीरे धीरे सुबह की सफेदी आसमान पर फैलने लग गई थी और नियमानुसार प्रातः काल बजाये जाने वाली नफीरी की आवाज ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह और किशोरी को नींद से जगा दिया था। किशोरी जो कुंअर इन्द्रजीतसिंह के बगल में सोई हुई थी घबड़ा कर उठ बैठी और मुंह धोने तथा बिखरे हुए बालों को सुधारने की नीयत से उस सुनहरी चौकी की तरफ बढ़ी जिस पर सोने के बर्तन में गंगाजल भरा हुआ था और जिसके पास ही जल गिराने के लिये एक बड़ा सा चांदी का आफताबा भी रक्खा हुआ था। हाथ में जल ले कर चेहरे पर लगाने और पुनः अपना हाथ देखने के साथ ही किशोरी चौंक पड़ी और घबड़ा कर बोली, "हैं !! यह क्या मामला है ?"

इन शब्दों ने इन्द्रजीतसिंह को चौंका दिया। वे घबड़ा कर किशोरी के पास चले गये और पूछा, "क्यों क्या हुआ ?"

किशोरी०। मेरे साथ आपने यह क्या दिल्लगी की ?

इन्द्रजीत०। कुछ कहो भी तो क्या हुआ ?

किशोरी०। (हाथ दिखा कर) देखिये यह रंग कैसा है जो चेहरे पर से पानी लगाने के साथ ही छूट रहा है !

इन्द्रजीत०। (हाथ देख कर) हां है तो सही! मगर मैंने तो कुछ भी नहीं किया, तुम खुद सोच सकती हो कि मैं भला तुम्हारे चेहरे पर रंग क्यों लगाऊंगा और यहां रंग आया ही कहां से!

किशोरी०। (पुनः चेहरे पर जल लगा के) यह देखिये है या नहीं?

इन्द्र०। सो तो मैं खुद ही कह रहा हूं कि रंग जरूर है, मगर जरा मेरी तरफ देखो तो सही!!

किशोरी ने जो अब समयानुकूल लज्जा के हाथों से छूट कर ढिठाई का पल्ला पकड़ चुकी थी और जो कई घण्टों की कशमकश और चलनचाल की बदौलत बातचीत करने लायक समझी जाती थी, कुमार की तरफ देखा और फिर कहा, "देखिये और कहिये यह किसकी करतूत है?"

इन्द्रजीत०। (और भी हैरान होकर) बड़े ताज्जुब की बात है! और इस रंग के छूटने से तुम्हारा चेहरा भी कुछ बदला हुआ सा मालूम पड़ता है! अच्छा, जरा अच्छी तरह मुंह धो डालो!"

किशोरी ने "अच्छा" कह कर मुंह धो डाला और रुमाल से पोंछने के बाद कुमार की तरफ देख कर बोली, "बताइये अब कैसा मालूम पड़ता है? रंग अब छूट गया या अभी नहीं?"

इन्द्रजीत०। (घबड़ा कर) हैं! अब तो तुम साफ कमलिनी मालूम पड़ती हो!! यह क्या मामला है?

किशोरी०। कमलिनी तो हई हूं, क्या पहिले कोई दूसरी मालूम पड़ती थी?

इन्द्रजीत०। बेशक! पहिले तुम किशोरी मालूम पड़ती थीं, कम रोशनी और कुछ लज्जा के कारण यद्यपि बहुत अच्छी तरह

देख कर तुम्हारे दिल में किसी तरह का शक पैदा न हुआ?

कमलिनी०। क्यों कर शक पैदा हो सकता था जब कि आप ही की तरह मेरे लिये भी 'सोहागरात' आज ही तै की गई थी! मैं नहीं कह सकती कि दूसरी तरफ का क्या हाल है! ताज्जुब नहीं कि जिस तरह मैं धोखे में डाली गई उसी तरह किशोरी के साथ भी बेईमानी की गई हो और आपके बदले में किशोरी मेरे पति के पास पहुंच गई हो!!

ओ हो! कमलिनी की इस बात ने तो कुमार की रही सही अक्ल भी खो दी! जिस बात का अब तक कुमार के दिल में ध्यान भी न था उसे समझा कर तो कमलिनी ने अनर्थ कर दिया। ब्याह हो जाने पर भी किशोरी किसी दूसरे मर्द के पास भेजी जाय, क्या इस बात को कुमार बर्दाश्त कर सकते थे? कभी नहीं! सुनने के साथ ही मारे क्रोध के उनका शरीर कांपने लगा और वे घबड़ा कर कमलिनी से बोले, "यह तो तुमने ठीक कहा! ताज्जुब नहीं कि ऐसा हुआ हो! लेकिन अगर ऐसा हुआ होगा तो मैं उन दोनों को इस दुनिया से उठा दूंगा!!"

इतना कह कर कुमार ने अपनी तलवार उठा ली जो गद्दी पर पड़ी हुई थी और कमरे के बाहर जाने लगे। उस समय कमलिनी ने कुमार का हाथ पकड़ लिया और कहा, "कृपानिधान! जरा मेरी एक बात का जवाब दे दीजिये तो यहां से जाइये!"

इन्द्रजीत०। कहो।

कमलिनी०। आपका धर्म नष्ट हुआ, खैर कोई चिन्ता नहीं, क्योंकि धर्मशास्त्र में मर्दों के लिये कोई कड़ी पाबन्दी नहीं लगाई गई है, मगर औरतों को तो किसी लायक नहीं छोड़ा है। आपके लिये तो प्रायश्चित्त भी है मगर मेरे लिये तो कोई प्रायश्चित्त भी

नहीं जिसे कर मैं सुधर जाऊंगी। इतना जान कर भी मेरा धर्म नष्ट होने पर आपको उतना रञ्ज और क्रोध नहीं हुआ जितना यह सोच कर हुआ कि किशोरी की भी ऐसी ही दशा हुई होगी! ऐसा क्यों? क्या मेरा पति कमजोर और नामर्द है? क्या वह भी आपकी ही तरह क्रोध में न आया होगा? क्या इसी तरह वह भी तलवार ले कर मेरी और आपकी खोज में न निकला होगा? आप जल्दी क्यों करते हैं, वह खुद यहां आता होगा क्योंकि वह आपसे ज्यादे क्रोधी है! मैं तो खुद उसके सामने अपनी गरदन झुका दूंगी!!

कुमार को क्रोध पर क्रोध रञ्ज पर रञ्ज और अफसोस पर अफसोस होता ही जाता था। कमलिनी की इस आखिरी बात ने कुमार के दिल में दूसरा ही रंग पैदा कर दिया। उन्होंने घबड़ा कर एक लम्बी सांस ली और ऊपर की तरफ मुंह करके कहा, "विधाता! तूने यह क्या किया? मैंने कौन सा ऐसा पाप किया था जिसके बदले में इस खुशी को ऐसे रञ्ज के साथ तूने बदल दिया! अब मैं क्या करूं? क्या अपने हाथ से अपना गला काट कर निश्चिन्त हो जाऊं? मुझ पर आत्मघात का दोष तो नहीं लगाया जायगा!"

इन्द्रजीतसिंह ने इतना ही कहा था कि कमरे का दूसरा दर्वाजा जिसे कुमार बन्द समझते थे खुला और किशोरी तथा कमला अन्दर आती हुई दिखाई पड़ीं। कुमार ने समझा कि बेशक किशोरी इसी ढङ्ग का उराहना ले कर आई होगी, मगर उन दोनों के चेहरों पर हंसी देख कर कुमार को ताज्जुब हुआ और यह देख कर उनका ताज्जुब और भी बढ़ गया कि किशोरी और कमला को देखते ही कमलिनी खिलखिला कर हंस पड़ी और किशोरी से बोली—"लो बहिन! आज मैंने तुम्हारे पति को

अपना बना लिया !" इसके जवाब में किशोरी बोली, "तु
पहिले ही अपना बना लिया था, आज की बात ही क्या है !!"

❀ बाईसवां हिस्सा समाप्त ❀

॥ श्री ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

तेईसवाँ हिस्सा

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित



प्रकाशक

लहरी बुक डिपो

बनारस सिटी

[तेरहवीं बार]

[मूल्य— ||=

प्रकाशक—

दुर्गाप्रसाद खत्री

प्रोप्रा० लहरी बुक डिपो

काशी

मुद्रक—

दुर्गाप्रसाद ख

लहरी प्रेस

चन्द्रकान्ता सन्तति

तेईसवां हिस्सा

पहिला बयान

[illegible] के दिन [illegible] गये थे, [illegible] बैठे [illegible] और [illegible] [illegible] ढंग का [illegible] आनन्दसिंह और [illegible] [illegible] रात [illegible] हुआ [illegible] और [illegible] और संतोष के [illegible] हुआ [illegible] की मेहनत और [illegible] आनन्दसिंह ने [illegible] दिनों से [illegible] के [illegible] सिंह का [illegible] [illegible] साथ [illegible]

लज्जा और डर को विदाई का बीड़ा दे कुमार से बातचीत करने लगी।

जब रात लगभग दो घण्टे के बाकी रह गई तो कामिनी भाग पड़ी और घबराहट के साथ चारो तरफ देख के सोचने लगी कि कहीं सबेरा तो नहीं हो गया क्योंकि कमरे के सभी दर्वाजे बन्द रहने के कारण आसमान दिखाई नहीं देता था। उस समय आनन्दसिंह गहरी नींद से सो रहे थे और उनके खुर्राटों की आवाज से मालूम होता था कि वे अभी दो तीन घण्टे तक बिना जगाये नहीं जाग सकते। कामिनी अपनी जगह से उठी और कमरे की छोटी छोटी कई खिड़कियों (छोटे दर्वाजों) में से जो मकान के पिछली तरफ पड़ती थी खिड़की खोल कर आस्मान की तरफ देखने लगी। इस तरफ से पतित पावनी भगवती जान्हवी के तरल तरंगों की सुन्दर छटा दिखाई देती थी जो उदास से उदास और बुझे हुए दिल को भी एक दफे प्रसन्न करने की सामर्थ्य रखती थी परन्तु इस समय अन्धकार के कारण कामिनी उस छटा को नहीं देख सकती थी और इसी सबब से आसमान की तरफ देख कर भी वह इस बात का पता न लगा सकी कि अब रात कितनी बाकी है, मगर सबेरा होने में अभी देर है इतना जान कर उसके दिल को कुछ भरोसा जरूर हुआ। उसी समय सरकारी घण्टे वाले ने घड़ी बजाई जिसे सुन कर कामिनी ने निश्चय कर लिया कि रात अभी दो घण्टे से कम बाकी नहीं है। उसने उसी तरफ की एक और खिड़की भी खोल दी और तब उस जगह चली गई जहां चौकी के ऊपर गंगा जमनी लोटे में जल रक्खा हुआ था। उसी चौकी पर से एक रूमाल उठा लिया और उसे गीला करके अपना मुंह अच्छी तरह पोंछने अथवा धोने के बाद रूमाल खिड़की के बाहर फेंक दिया और तब उस जगह चली आई जहां आनन्दसिंह गहरी नींद से सो रहे थे।

कामिनी ने आंचल के कपड़े से एक मामूली बत्ती बनाई और नाक में डाल कर उसके जरिये से दो तीन छींक मारी। जिसकी आवाज से सिंह की आंख खुल गई और उन्होंने अपने पास कामिनी को

ठे हुए देख कर ताज्जुब से कहा, "हैं, तुम बैठी क्यों हो ? खैरियत है ?"

कामिनी० । जी हां मेरी तबियत तो अच्छी है मगर तरद्दुद और सोच के मारे नींद नहीं आती, बहुत देर से जाग रही हूं ।

आनन्द० । (उठ कर) इस समय कौन से तरद्दुद और सोच ने तुम्हें आ घेरा है ?

कामिनी० । क्या कहूं, कहते हुए भी शर्म मालूम पड़ती है ?

आनन्द० । आखिर कुछ कहो तो सही, शर्म कहां तक करोगी ?

कामिनी० । खैर मैं कहती हूं मगर आप बुरा तो न मानेंगे ?

आनन्द० । मैं कुछ भी बुरा न मानूंगा, तुम्हें जो कुछ कहना है कहो ।

कामिनी० । बात केवल इतनी ही है कि मैं छोटे कुमार से एक दिल्लगी कर बैठी हूं मगर आज उस दिल्लगी का भेद जरूर खुल गया होगा इसलिये सोच रही हूं कि अब क्या करूं ? इस समय कामिनी बहिन से भी मुलाकात नहीं हो सकती जो उसको कुछ समझा बुझा देती ।

आनन्द० । (ताज्जुब में आकर) तुमने कोई भयानक स्वप्न तो नहीं देखा जिसका असर अभी तक तुम्हारे दिमाग में घुसा हुआ है ? यह मामला क्या है ? तुम कैसी बातें कर रही हो ?

कामिनी० । जी नहीं कोई विशेष बात नहीं है और मैंने कोई भयानक स्वप्न भी नहीं देखा, बात केवल इतनी ही है कि मैं हंसी में छोटे कुमार से कह चुकी हूं कि 'मेरी शादी अभी तक नहीं हुई है और मैं प्रतिज्ञा कर चुकी हूं कि ब्याह कदापि न करूंगी ।' अब आज ताज्जुब नहीं कि कामिनी बहिन ने मेरा सब भेद खोल दिया हो और कह दिया हो कि 'लाडिली की शादी तो कमलिनी की शादी के साथ ही साथ अर्थात् दोनों की एक ही दिन हो चुकी है, और आज उस की भी सोहागरात है ।' अगर ऐसा हुआ तो मुझे बड़ी शर्म.....

आनन्द० । (ताज्जुब और घबराहट से) तुम तो पागलों की सी

बातें कर रही हो, आखिर तुमने अपने को और मुझको समझा क्या है? जरा घूंघट हटा कर बातें करो! तुम्हारा मुंह दिखता ही नहीं!!

कामिनी०। नहीं मुझे इसी तरह बैठे रहने दीजिये। आपने कहा मैं कुछ भी न समझी, इसमें पागलपने की कौन सी बात है?

आनन्द०। तुमने जरूर कोई ऐसा सपना देखा है जिसका असर अभी तक तुम्हारे दिमाग में बना हुआ है और तुम अपने को ला... समझ रही हो। ताज्जुब नहीं कि लाडिली ने तुमसे ये बातें कही हों और उसने मुझसे दिल्लगी के ढंग पर की थी।

कामिनी०। मुझे आपकी बातों पर ताज्जुब मालूम पड़ता है। समझती हूं कि आप ही ने कोई अनूठा स्वप्न देखा है। और वह ...ता है कि कामिनी आपके बगल में बैठी हुई है जिसका ... अभी तक बना हुआ है और मुझे आप कामिनी समझ रहे हैं। ... सोचिये तो सही कि छोटे कुमार (आनन्दसिंह) को छोड़कर ... आपके पास आने ही क्यों लगी? कहीं आप मुझसे दिल्लगी तो कर रहे हैं?

कामिनी की आखिरी बात को सुन कर आनन्दसिंह बहुत बेचैन हो गये और उन्होंने घबड़ा कर कामिनी के मुंह से घूंघट ... दिया, मगर शमादान की रोशनी में उसका खूबसूरत चेहरा देख... वे चौंक पड़े और बोले—"हैं! यह मामला क्या है, लाडिली को ... बाद आने की क्या जरूरत थी? बेशक तुम लाडिली मालूम प... हो! कहीं तुमने अपना चेहरा रंगा तो नहीं है?"

कामिनी०। (घबराहट के ढंग पर) आपकी बातें तो मेरे ... में हौल पैदा करती हैं! न मालूम आप क्या कह रहे हैं और ... बात को क्यों नहीं सोचते कि कामिनी को आपके पास आने ... जरूरत ही क्या थी?

आनन्द०। (बेचैनी के साथ) पहिले तुम अपना चेहरा धो ... ...मसे बातें करूं! तुम मुझे जरूर धोखा देती हो! अपनी ...

छिली की थी बना कर मेरी जान सांसत में डाल रही हो, मैं अभी तुम्हें कामिनी समझ रहा था और समझता हूं।

कामिनी०। (ताज्जुब से आनन्दसिंह की सूरत देखकर) आपकी तें तो कुछ विचित्र ढंग की हो रही हैं! जब आप मुझे कामिनी समझते हैं तो अपने को भी जरूर आनन्दसिंह समझते होंगे?

आनन्द०। इसमें शक ही क्या है क्या मैं आनन्द नहीं हूं?

कामिनी०। (अफसोस से हाथ मल कर) हे परमेश्वर। आप को क्या हो गया है?

आनन्द०। बस तुम अपना चेहरा पहिले धो डालो तो मुझसे बातें करो! तुम नहीं जानती कि इस समय मेरे दिल की कैसी अवस्था है।

कामिनी०। ठहरिये ठहरिये, मैं बाहर जा कर सभों को इस बात की खबर देती हूं कि आपको कुछ हो गया है। मुझे आपके पास बैठते डर लगता है! हे परमेश्वर!!

आनन्द०। तुम तो नाहक मेरी जान को दुःख दे रही हो! पास ही तो पानी पड़ा है, अपना चेहरा क्यों नहीं धो डालती? मुझे ऐसी दिल्लगी अच्छी नहीं मालूम होती! खैर अब बहुत हो गया, तुम धो डालो!

कामिनी०। मेरे चेहरे में क्या लगा है जो धो डालूं? आप ही क्यों नहीं अपना चेहरा धो डालते! क्या मुंह में पानी लगा कर मैं कामिनी से कोई दूसरी ही औरत बन जाऊंगी? या आप मुंह धोकर छोटे कुमार बन जायेंगे?

आनन्द०। (बेचैनी से बिगड़ कर) बस बस, अब मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता और न ज्यादे देर तक ऐसी दिल्लगी सह सकता हूं! हुक्म देता हूं कि तुम अपना चेहरा धो डालो, नहीं तो तुम्हारे साथ बदसलूकी की जायगी, फिर पीछे दोष न देना!

यह सुनते ही कामिनी घबड़ा कर उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई कि "आज भोर ही भोर ऐसी दुर्दशा में फंसी हूं, न मालूम दिन कैसा बीतेगा!" उस चौकी के पास चली गई जिस पर गंगा जमनी

होदा जल से भरा हुआ रक्खा था पास ही में एक तख्ता भी था। पानी से अपना चेहरा साफ किया और दो चार करने के बाद रूमाल से मुंह पोंछ आनन्दसिंह से बोली, गयी हूं कि बदल गई ?"

कामिनी के साथ ही साथ आनन्दसिंह भी सिंहासन पर से उठ वहां तक चले आये थे जहां पानी और आफताबा रक्खा हुआ जब कामिनी ने मुंह धो कर उनकी तरफ देखा तो कुमार के का कोई हद न रहा और वह पत्थर की मूरत बन कर एक टक तरफ देखते रह गये। इस समय खिड़कियों में से आसमान सुबह की सुफेदी फैली हुई दिखाई दे रही थी और कमरे में की कमी न थी।

कामिनी०। (कुछ चिढ़ी हुई आवाज से) कहिये कहिये, क्या मुंह धोने से सूरत बदल गई? आप बोलते क्यों नहीं?

आनन्द०। (एक लम्बी सांस लेकर) अफसोस! तुम्हारे धोखा दिया! अगर मिलाप के पहिले तुम्हारी सूरत देख लेते ऐसा न होता!!

कामिनी०। (जिसे अब हम लाडिली लिखेंगे क्योंकि यह लाडिली ही थी) फिर भी आप उसी ढंग की बातें कर रहे हैं अपने को छोटे कुमार समझते हैं! इतना खिंचने ढोलने पर दिमाग से स्वप्न का गुब्बार न निकला (कमरे में लटकते हुए आईने की तरफ उंगली से इशारा करके) अब आप अपना चेहरा देख लीजिये तो मुझसे बातें कीजिये!

कुंअर आनन्दसिंह भी यही चाहते थे, अस्तु वे उस आईने के पास चले गये और बड़े गौर से अपनी सूरत देखने लगे। लाडिली भी उनके साथ ही साथ उस आईने के पास चली गई और जब वे ताज्जुब के साथ आईने में अपना चेहरा देख रहे थे तो बोली, "कहिये अब भी आप अपने को छोटे कुमार ही समझते हैं या कोई और?

क्रोध के साथ ही साथ शर्मिन्दगी ने भी आनन्दसिंह पर अपना

ज़ा कर लिया और वे घबड़ा कर अपनी पौशाक पर ध्यान देने लगी और उसमें किसी तरह की खराबी न पा कर उन्होंने पुनः लाडिली की तरफ देखा और कहा, "यह क्या मामला है? मेरी सूरत किसने बिगाड़ी?"

लाडिली०। (ताज्जुब और घबराहट के ढंग पर) क्या आप अपनी सूरत बदली हुई समझते हैं?

आनन्द०। बेशक!!

लाडिली०। (अफसोस के साथ हाथ मल कर) अफसोस! अगर यह बात ठीक है तो बड़ा ही गजब होगा!!

आनन्द०। जरूर ऐसा है, मैं अभी अपना चेहरा धोता हूं!

इतना कह कर कुंअर आनन्दसिंह उस चौकी के पास चले गये जिस पर पानी रक्खा हुआ था और अपना चेहरा धोने लगे। पानी लगते ही हाथ पर रंग उतर आया जिस पर निगाह पड़ते ही लाडिली चौंकी और रंज के साथ बोली, "बेशक चेहरा रंगा हुआ है! हाय, बड़ा ही गजब हो गया! मैं बे मौत मारी गई! मेरा धर्म नष्ट हुआ! अब मैं अपने पति के सामने किस मुंह से जाऊंगी और अपनी हमजोलियों की बातों का क्या जवाब दूंगी! औरतों के लिये यह घोर पातक है कि पराये मर्द का संग करें!! अब तो यों है कि पराये मर्द का शरीर छू जाने से भी प्रायश्चित लगता है और बात का तो कहना ही क्या है! हाय! मैं बर्बाद हो गई और कहीं की भी न रही! इसमें कोई शक नहीं कि आपने जान बूझकर मुझे मिट्टी में मिला दिया!!

आनन्द०। (अच्छी तरह चेहरा धोने बाद रुमाल से मुंह पोंछ कर) क्या कहा? क्या जान बूझकर मैंने तुम्हारा धर्म नष्ट किया?

लाडिली०। बेशक ऐसा ही है, मैं इस बात की दुहाई दूंगी और लोगों से इन्साफ चाहूंगी।

आनन्द०। क्या मेरा धर्म नष्ट नहीं हुआ?

लाडिली०। मर्दों के धर्म का क्या कहना है और उनका बिगड़ ही क्या है जो दस दस पन्द्रह पन्द्रह ब्याह से भी ज्यादे कर सकते हैं

मर्दानगी तो औरतों के लिये है। इसमें कोई शक नहीं कि आपने बूझ कर मेरा धर्म नष्ट किया! जब आप छोटे कुमार ही थे तो को मेरे पास से उठ जाना चाहिये था या मेरे पास मुनासिब न था!

आनन्द०। मैं कसम खाकर कहता हूं कि मैंने तुम्हारी घूंघट के सबब से अच्छी तरह देखा नहीं, एक दफे ऐं आता निगाह पड़ भी गई थी तो तुम्हें कामिनी ही समझा था और इसके लिये भी मैं कसम खाता हूं कि मैंने तुम्हें धोखा देने के लिये जान कर अपनी सूरत नहीं रंगी है बल्कि मुझे इस बात की खबर कि मेरी सूरत किसने रंगी या क्या हुआ!

लाडिली०। अगर आपका यह कहना ठीक है तो समझ लीजिये कि और भी गजब हो गया! मेरे साथ ही साथ कामिनी भी धोखे गई होगी। जिस धर्मात्मा ने धोखा दे कर मेरा संग आपके साथ किया है, उसने कामिनी को भी जो आपके साथ ब्याही गई है, धोखा देकर मेरे पति के पलंग पर सुला दिया होगा!

यह एक ऐसी बात थी जिसे सुनते ही आनन्दसिंह का रंग बदल गया। रंज और अफसोस की जगह क्रोध ने अपना दखल जमा और कुछ सुस्त तथा ठण्डी रगों में बेमौके हरारत पैदा हो गई खून खौलने लगा और उन्होंने लाल आंखें करके लाडिली की देख के कहा—"क्या कहा? तुम्हारे पति के पलंग पर कामिनी! किसकी मजाल है कि..."

लाडिली०। ठहरिये ठहरिये, आप गुस्से में न आ जाइये। जिस तरह आप अपनी और कामिनी की इज्जत को समझते हैं उसी मेरी और मेरे पति की इज्जत पर भी आपको ध्यान देना चाहि मेरी बर्बादी पर तो आपको गुस्सा न आया और कामिनी का भी ही सा हाल सुनकर आप जोश में आकर उछल पड़े, अपने आपे से हो गये और आपको बदला लेने की धुन सवार हो गई! सच है, दुनिया में बिरले ही महात्मा को हमदर्दी और इंसाफ का ध्यान रहता

े पर जो कुछ बीती है उसका अन्दाजा किसी को तब तक नहीं लग ता जब तक उस पर भी वैसी ही न बीते। भूख का दुःख भूखा और का दुःख प्यासा ही समझ सकता है। जिसने कभी एक वक्-त भी नहीं किया है, वह अकाल के मारे भूखे गरीबों पर उचित सच्ची हमदर्दी नहीं कर सकता, यों उनके उपकार के लिये भले बहुत कुछ जोश दिखावे और कुछ कर भी बैठे। ताज्जुब नहीं कि र बुजुर्ग और बड़े लोग इस खयाल से बहुत से व्रत चला गये हों इससे उनका मतलब यह भी हो कि 'स्वयं भूखे रह कर देख लो भूखों की कदर कर सकोगे।' दूसरे के गले पर छुरी चला देना बड़ी बात नहीं है मगर अपने गले पर सुई से भी एक निशान किया जाता। जो दूसरों की बहू बेटियों को झांका करते हैं वे नी बहू बेटियों का झांका जाना सहन नहीं कर सकते। बस इसी समझ लीजिये कि मेरी बर्बादी पर आपको अगर कुछ खयाल हुआ केवल इतना ही कि नख कसम खा कर अफसोस करने लगे और चने लगे कि मेरे दिल से किसी तरह इस बात का रंज निकल मगर कामिनी का भी मेरा ही ऐसा हाल सुन कर म्यान से बाहर गये ! बस यही इन्साफ है और यही हमदर्दी ! इसी दिल को लेकर राजा बनेंगे और राज काज करेंगे !!

लाडिली की जोश भरी बातें सुन कर आनन्दसिंह सहम गये और ने उनकी गर्दन झुका दी। वह सोचने लगे कि क्या करूं और की बातों का क्या जवाब दूं? उसी समय कमरे का दर्वाजा खुला जो शायद धोखे से खुला रह गया होगा) और इन्द्रदेव की लड़की इंदिरा साथ लिये हुए कामिनी आती हुई दिखाई पड़ी।

लाडिली०। आइये ! कामिनी बहिन जी, आप पहुंची ! ताज्जुब कि वे भी अपना हाल कहने के लिये आई हों, (कामिनी से) बहिन! आज हम तुम्हारे बराबर हो चुके !!

कामिनी०। बराबर नहीं बल्कि बढ़ के !!

दूसरा बयान

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है। महल के अन्दर एक कमरे में एक तरफ रानी चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बैठी और उनके थोड़ी ही दूर पर राजा वीरेन्द्रसिंह गोपालसिंह और सिंह बैठे आपुस में कुछ बातचीत कर रहे हैं।

चन्द्र०। (वीरेन्द्र से) सच्चा सच्चा हाल मालूम होता तो, तुम्हें इस बात का किसी तरह का कुछ गुमान भी न हुआ। इस में दुलहिनों की सोहागरात का इन्तजाम देख सुन कर यहां आ दिन भर की थकावट से सुस्त हो कर पड़ रही, जो में आया दो घण्टे सो रहूं मगर इसी बीच में चपला बहिन आ पहुंची बोली, "लो बहिन, मैं तुम्हें एक अनूठा हाल सुनाती हूं तक हम लोगों को कुछ भी खबर न थी!" बस इतना कह कर और कहने लगी कि 'कमलिनी और लाडिली की शादी अन्दर ही इन्द्रजीत और आनन्द के साथ हो चुकी है जिसके अब तक हम लोगों को किसी ने कुछ भी नहीं कहा था, लड़के (भैरोसिंह) ने मुझसे कहा है।' सुनते ही मैं का राज वह कौन सी बात थी जिसे अभी तक सब कोई रहे!!

चपला०। (भैरोसिंह की तरफ इशारा कर के) सामने हुआ है, पूछिये कि इस समय के पहिले कभी कुछ कहा था! दोनों की शादियां इसके सामने ही तिलिस्म के अन्दर हुई थीं

वीरेन्द्र०। मुझे भी इस विषय में किसी ने कुछ भी नहीं अभी थोड़ी देर हुई कि गोपालसिंह ने यह सब हाल बयान किया तब मालूम हुआ।

चन्द्र०। यही सुन के तो मैंने आपको तकलीफ दी क्योंकि की जुबानी सुने बिना मेरी दिलजमई नहीं हो सकती।

वीरेन्द्र०। जो कुछ तुमने सुना सब ठीक है।

चन्द्र० । मजा तो यह है कि लड़कों ने भी मुझसे इस बात की कुछ नहीं की !

वीरेन्द्र० । लड़कों को तो खुद ही इस बात की खबर नहीं है कि उनकी शादी कमलिनी और लाडिली के साथ हुई थी ।

चन्द्र० । यह तो आप और भी ताज्जुब की बात कहते हैं ? भला कैसे हो सकता है कि जिनकी शादी हो उन्हीं को पता न लगेगा कि मेरी शादी हो गई है । इसे कौन विश्वास करेगा !

वीरेन्द्र० । बात ही ऐसी हो गई थी और यह शादी जान बूझ कर किसी मतलब से छिपाई गई थी (गोपालसिंह की तरफ इशारा कर के) जब ये खुलासा हाल तुमसे बयान करेंगे तब तुम समझ जाओगी कि ऐसा क्यों हुआ ।

गोपाल० । मैं सब हाल आप से खुलासा बयान करता हूं और आशा करता हूं कि आप मेरा कसूर माफ करेंगी क्योंकि यह सब मेरी ही करतूत है और मैं ही ने यह शादी कराई है ।

चन्द्र० । अगर तुमने ऐसा किया तो छिपाने की क्या जरूरत थी ? क्या हम लोग तुम से रंज हो जाते ? या हम लोग इस बात को नहीं समझते कि जो कुछ तुम करोगे अच्छा ही समझ के करोगे !

गोपाल० । ठीक है मगर किया क्या जाय, इस बात को छिपाये बिना काम नहीं चलता था, यहां तो सबब हुआ कि खुद दोनों कुमारों को भी इस बात का पता न लगा कि उनकी शादी फलाने के साथ हो गई है ।

चन्द्र० । आखिर ऐसा किया क्यों गया सो तो कहिये ?

गोपाल० । इसका सबब यह है कि एक दिन कमला मेरे पास आई और बोली कि 'मैं आप से एक जरूरी बात कहा चाहती हूं जिस पर आपको विशेष ध्यान देना होगा ।' मैंने पूछा—क्या ? इस पर उसने जवाब दिया कि कमलिनी ने जो कुछ एहसान हम लोगों पर, खास कर के दोनों कुमारों तथा किशोरी और कामिनी पर किये हैं यह किसी

से छिपे नहीं हैं। किशोरी का खयाल है कि 'इसका बदला किसी तरह हो ही नहीं सकता' और बात भी ऐसी ही है, अस्तु कि बात ही बात में अपने दिल का हाल मुझसे भी कह दिया बारे में जो कुछ उसने सोच रक्खा था वह भी बयान किया। कहती है कि अगर मैं शादी न करूं या शादी होने के पहिले दुनिया से उठ जाऊं तो उसके अहसान और ताने से कुछ बच रहूं। इस विषय पर जब मैंने किशोरी को बहुत कुछ समझाया तो कि "खैर अगर मेरी शादी के पहिले कमलिनी की शादी कुंअर गोपालसिंह के साथ हो जायगी तब मैं सुख से अपनी जिन्दगी सकुंगी और उसके अहसान से भी हलकी हो जाऊंगी क्योंकि होने से कमलिनी को पटरानी की पदवी मिलेगी और उसी को गद्दी का मालिक समझा जायगा। मैं छोटी रानी और क लौंडी हो कर रहूंगी तब मेरे दिल को तस्कीन होगी और मैं कि कमलिनी के अहसान का बोझ मेरे सिर से उतर गया।"

चन्द्र०। शाबाश ! शाबाश !!

वीरेन्द्र०। बेशक किशोरी ने बड़े हौसले की और जालानी सोचा !

चपला०। बेशक, यह साधारण बात नहीं है, यह बड़े कलेजे वालों का काम है, और इससे बढ़ कर किशोरी कुछ कर ही सकती थी।

गोपाल०। मैंने जब कमला की जुबानी यह बात सुनी तो गया और मन में किशोरी की तारीफ करने लगा। अब तो यह बात मेरे दिल में जम गई। अस्तु मैंने कमला से कह दिया कि "ऐसा ही होगा" मगर तरद्दुद में पड़ गया कि यह क्योंकर किशोरी की इच्छानुसार पूरा होगा—क्योंकि यह बात ही कठिन बल्कि असम्भव था कि इन्द्रजीतसिंह और कमलिनी राय को मंजूर करें। इसके अतिरिक्त यह भी उम्मीद नहीं थी हमारे महाराज इस बात को स्वीकार कर लेंगे।

मेरो० । बेशक यह कठिन काम था, इन्द्रजीतसिंह इस बात को मंजूर न करते ।

गोपाल० । खैर कई दिन के सोच विचार के बाद मैंने और भैरो० ने मिल कर तर्कीब निकाल ली और किसी न किसी तरह कम-[illegible] और लाडिली को इन्द्रानी और आनन्दी बना कर दोनों को इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के साथ कर दी । उन दिनों कम-[illegible] के लिए बलभद्रसिंह भूतनाथ की मदद से छूट कर यहां (पथ-[illegible] वाले तिलिस्मी मकान में) आ चुके थे अस्तु मैं [illegible] के [illegible] अन्दर यहां आया और बलभद्रसिंह को [illegible] करने [illegible] समझा बुझा कर [illegible] ले गया । ❀ उस दिन भूतनाथ [illegible] परेशान हुआ था और भैरोसिंह मेरे साथ था । हम लोग पहले [illegible] उस मकान में आये थे तो भूतनाथ और बलभद्रसिंह के [illegible] एक चीठी दोनों को चारपाई पर रख के चले गये । बलभद्र-[illegible] में उनको दिलजमई के लिये एक अंगूठी भी रक्खी [illegible] पाकर मुझे बहुत शगुन [illegible] थी । इसके [illegible] फिर पहुंचे और भूतनाथ का [illegible] पूरा पूरा परिचय [illegible] जी को ले गये । उनके ले जाने का सबब भूतनाथ [illegible] किया [illegible] हाल हम [illegible] को भी [illegible] [illegible] को मालूम न होवे ।

इस [illegible] देर के लिये [illegible] फिर इस [illegible] —

[illegible] इस बात [illegible] कि [illegible] मेरा [illegible] इस बात को [illegible] मंजूर [illegible] से [illegible] और [illegible] सुन [illegible] सुन कर [illegible] और [illegible] खुशी [illegible] उन्होंने [illegible]

❀ देखिये अट्ठारहवां हिस्सा, आठवां बयान ।

और लाडिली का कन्यादान कर दिया॥* इस काम में भैरोसिं
को कुछ तरद्दुद नहीं उठाना पड़ा बल्कि दोनों कुमार इनसे रं
हो गये थे क्योंकि इनकी जुबानी असल बातों का उन्हें पता
लगता था, परन्तु शादी हो जाने के बाद इस बात का बन्दोबस्त
गया कि इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह इस अनूठे व्याह को
जायं तथा इन्द्रानी और आनन्दी से मिलने की उम्मीद न रक्खें

इसके बाद राजा गोपालसिंह ने और भी बहुत सा हाल
किया जो इस सन्तति के अट्ठारहवें हिस्से में लिख आये हैं औ
बातें सुन कर अन्त में चन्द्रकान्ता ने कहा, "खैर जो हुआ अ
हुआ, हम लोगों के लिये तो जैसी किशोरी और कामिनी हैं वैसे
कमलिनी और लाडिली हैं, मगर किशोरी के नाना को इस बात
कुछ रंज हो तो ताज्जुब नहीं।"

वीरेन्द्र०। पिताजी भी यही कहते थे। मगर इसमें कोई श
कि किशोरी ने अच्छे सिरे की हिम्मत दिखाई!

गोपाल०। साथ ही इसके यह भी समझ लीजिये कि कम
इस बात को सहज ही में स्वीकार नहीं कर लिया, इसके लिये भी
लोगों को बहुत कुछ उद्योग करना पड़ा। बात यह है कि कमलिनी
किशोरी को जान से ज्यादे चाहती और मानती है।

चन्द्र०। मगर मुझे इस बात का अफसोस जरूर है कि इन
की शादी में किसी तरह की तैयारी नहीं की गई और न कुछ
ही हुई।

इसके बाद बहुत देर तक इन सभों में बातचीत होती रही।

तीसरा बयान

हम अब कुंअर इन्द्रजीतसिंह की तरफ चलते हैं और देखते हैं
उधर क्या हो रहा है।

किशोरी और कमलिनी की बातचीत सुन कर कुंअर इन्द्रजीतसि

* देखिये अट्ठारहवां हिस्सा बारहवां बयान।

रह्यान गया और उन्होंने बेचैनी के साथ उन दोनों की तरफ देख कर
र, "क्या तुम लोगों ने मुझे जलाने और दुःख देने के लिये कसम
खा ली है? क्यों मेरे दिल में हौल पैदा कर रही हो? असल मामला
ो क्यों नहीं बताती?"

किशोरी०। (मुस्कुराती हुई) यद्यपि मुझे आपसे शर्म करनी
हिये मगर कमला और कमलिनी बहिन ने मुझे बेहया बना दिया
ज पर आज की दिल्लगी मुझे हंसाते हंसाते बेहाल कर रही है!
प बिगड़े क्यों जाते हैं! ठहरिये ठहरिये, जल्दी न कीजिये, और
ाफ लीजिये कि मेरी शादी आपके साथ हुई है।

कुमार०। सो कैसे हो सकता है? और मैं क्यों कर ऐसी अनहोनी
त मान लूं!

कमलिनी०। अब आपकी हालत बहुत ही खराब हो गई! क्या
है, मैं तो आपको अभी और छकाती मगर दया आती है इसलिये
ह देती हूं। इसमें कोई शक नहीं कि मैंने आप से दिल्लगी की
ार इसके लिये मैं आपसे इजाजत ले चुकी हूं! अपनी ...
की अंगूठी दिखा कर) आप इसे पहिचानते हैं?

कुमार०। हां हां, मैं इस अंगूठी को खूब पहिचानता हूं। ... मुझसे
अन्दर यह अंगूठा मैंने इन्हीं को दी थी, ... कि किसी तरह मेरी ...

कमलिनी०। अफसोस न कीजिये, आपके साथ हो जाय मगर
ी जीती जागती आपके सामने खड़ी है! और कमलिनी रानी

कमलिनी की इस आखिरी बात ने कुमार ... हाल कर हुए
ख दुःख को धो कर साफ कर दिया और उन्होंने किशोरी से कहा,
नी और किशोरी का हाथ पकड़ कर कहा—"क्या ... सच
किशोरी०। जी हां सच है। ... मेरी शादी ...

कुमार०। और जिन दोनों को मैंने मरी हुई देखा था, ...

किशोरी०। वे वास्तव में माधवी और मायारानी थीं ...
ि अन्दर ही अपनी बदकारियों का फल भोग कर ...
ापके दिल से वह शादी का ख्याल ... देने के लिये ...

कमलिनी को पटरानी बनाऊं और आप उसकी लौंडी होकर... अफसोस है कि तू मेरी बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं देती... नतीजा यह होगा कि एक दिन तू रोवेगी और पछतावेगी!"

किशोरी की इस आखिरी बात से मेरे कलेजे पर एक... लगी और मैंने सोचा कि जो कुछ यह कहती है बहुत ठीक... होना ही चाहिये। आखिर मैंने राजा गोपालसिंह से यह... कहा और उन्हें अपनी तरफ से भी बहुत कुछ समझाया... नतीजा यह निकला कि वे दिलोजान से इस काम के लिये... गये। जब वे खुद ही तैयार हो गये तो फिर क्या था! सब... कुछ साफ होने लगा।

... राजा गोपालसिंह ने इस विषय में कमलिनी से कहा... [illegible] मगर ये राजी न हुई और बोलीं कि मैं... बेहतर है ब्याह कर लेने के लिये तैयार हूं मगर यह नहीं हो... किशोरी से पहिले ही अपनी शादी करके उसका हक मार... किशोरी की शादी हो जाने के बाद जो कुछ आप आज्ञा... करूंगी। यह जवाब सुन कर गोपालसिंह जी ने फिर... समझाया और कहा कि अगर तुम किशोरी की इच्छा... करोगी तो वह अपनी जान दे देगी, फिर तुम ही सोच लो कि... मर जाने से कुमार की क्या हालत होगी और तुम्हारी इस... क्या नतीजा निकलेगा?

गोपालसिंह जी की इस बात ने (कमलिनी की तरफ... उन्हें ला जवाब कर दिया और ये लाचार हो शादी करने पर... गईं। तब राजा साहब ने भैरोसिंह को सिखाया और वे भी... पर राजी हो गये। इसके बाद यह सोचा गया कि कुमार इस... स्वीकार न करेंगे, अस्तु उन्हें धोखा देकर और जहां तक... तिलिस्म के अन्दर ही कमलिनी के साथ उनकी शादी कर देनी... क्योंकि तिलिस्म के बाहर हो जाने पर हम लोग स्वाधीन... मगर बड़े महाराज इस बात को सुन कर स्वीकार न कर...

…म लोग कुछ भी न कर सकेंगे, इत्यादि।

…स यही सबब हुआ कि तिलिस्म के अन्दर आपके तरह तरह की …ालियां खेली गईं और भैरोसिंह ने भी आपसे भेद छिपा रक्खा। …जा गोपालसिंह भी तिलिस्म के अन्दर आये और बुड्ढे दारोगा …र इस काम में उद्योग करते रहे।

कुमार०। (बात रोक कर ताज्जुब के साथ) क्या खुद गोपालसिंह …ी दारोगा बने थे?

कमला०। जी हां, वह बुड्ढो में बनी थी और किशोरी और …रा आदि ने लड़कों का रूप धरा था।

कमलिनी०। (हंस कर) यह बुड्ढी भैरोसिंह की जोरू बनी थी! इस बात को भी सच कर दिखाना चाहिये अर्थात् इस बुड्ढी को …सिंह के गले मढ़ना चाहिये।

कुमार०। जरूर! (कमला से) तब तो मैं समझता हूं कि …रन्द' इत्यादि के बारे में जो कुछ भैरोसिंह ने बयान किया था यह …झूठ था?

कमला०। हां बेशक वह सोलह आने से ज्यादे झूठ था।

कुमार०। खैर तब क्या हुआ? तुम आगे बयान करो।

कमला ने फिर इस तरह बयान करना शुरू किया :—

"भैरोसिंह जान बूझ कर इस लिये पागल बना कर आपको …ाये गये थे कि जिसमें एक तो आप धोखे में पड़ जायं और उसमें … हमारे तिलस्मी लोग भी यहां रहते हैं, दूसरे आप से मिलाप हो…ने पर यदि भैरोसिंह से कुछ भूल भी हो जाय तो आप यही समझें … अभी तक इनके दिमाग में पागलपन का धूंआ बचा हुआ है। …स समय हम लोग तिलिस्म के अन्दर पहुंचाये गये थे उस समय …जा गोपालसिंह जी ने अपनी खास तिलिस्मी किताब कमलिनी जी … दे दी थी जिससे तिलिस्मी का बहुत कुछ हाल इन्हें मालूम होग… और इनकी मदद से हम लोग जो चाहते थे करते थे तथा किसी …त की तकलीफ भी नहीं होती थी और खाने पीने की — नी…

राजा गोपालसिंह ही पहुंचा दिया करते थे।

"भैरोसिंह जब पागल बनने के बाद आपसे मिले थे तो ऐयारी का बटुआ जान बूझ कर कमलिनी जी के पास रख फिर जब भैरोसिंह को बुलाने की इच्छा हुई तो उन्हीं का ब भोले मकरन्द की जदाई दिखा कर वे आपसे अलग कर दिये कमलिनी भोले मकरन्द की सूरत में थी और मैं उनका सुका रही थी। वही बदी और मेल की लड़ाई थी इसी लिये आपने होगा कि हम दोनों बहादुर और लड़ाके हैं, खैर। इस बाद जब इन्द्रानी और आनन्दी वाले बाग में भैरोसिंह आपसे तब इन्होंने बहुत सी झूठी बातें बना कर आपसे कहीं और जब आप रंज हुए तो आपका संग छोड़ कर फिर हम लोगों आ गये।* आप दोनों भाई उस समय शादी करने से इन्कार थे मगर मजबूरी और लाचारी ने आपका पीछा न छोड़ा और अतिरिक्त खुद इन्द्रानी और आनन्दी ने भी आप दोनों को और कामिनी को धोखा दिया कर खुश कर लिया था। बड़ी आपने सुना ही है कि कमलिनी जी के पिता बलभद्रसिंह जिन्हें साथ छुड़ा लाया था यकायक गायब हो गये और कई दिनों के लौट आये।

कुमार०। हां सुना था।

कमला०। उन्हें राजा गोपालसिंह ही यहां आकर ले और खुद बलभद्रसिंह जी ने ही अपनी दोनों लड़कियों का किया था।

कुमार०। (हंसते हुए) ठीक है, अब मैं सब बात समझ और मुझे यह भी मालूम हो गया कि केवल धोखा देने ही के माधवी और मायारानी जो पहिले ही मर चुकी थीं इन्द्रानी आनन्दी बनाकर दिखाई गई थी।

भैरोसिंह०। जी हां।

---

* देखिये आठवां हिस्सा ग्यारहवां बयान।

कुमार० । मगर नानक वहां क्योंकर पहुंचा था ?

भैरोसिंह० । आप सुन चुके हैं कि तारासिंह ने नानक को कैसा [छका]या था, अस्तु वह हम लोगों से बदला लेने की नीयत करके यहां [आय]ा और मायारानी से मिल गया था। कमलिनी जी ने वहां का [हाल पह]ले ही से पता लगा लिया था। उसी का यह नतीजा निकला। जब माया-[रान]ी राजा गोपालसिंह के कब्जे में पड़ गई तब राजा साहब ने नानक [को] बहुत कुछ बुरा भला कहा, यहां तक कि नानक उनके पैरों पर गिर [पड़]ा और उनसे अपने कसूर की माफी मांगी। उस समय राजा साहब [ने] उसका कसूर माफ करके उसे अपने साथ रख लिया। तब से वह [उन्]हीं के कब्जे में रहा और उन्हीं की आज्ञानुसार आपको धोखे [में डा]लने की नीयत से मायारानी और माधवी की लाश के पास दिखाई [दि]या था। वे दोनों पहिले ही मारी जा चुकी थीं मगर आपको धोखा [दे]ने की नीयत से उनकी लाश इन्द्रानी और आनन्दी बना कर [दि]खाई गई थी। इसके अतिरिक्त और जो कुछ हाल है वह आपको [रा]जा गोपालसिंह जी की जुबानी मालूम होगा।

कुमार० । ठीक है, मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूं कि मायारानी [मा]धवी की लाश को इन्द्रानी और आनन्दी की सूरत में देख कर मुझे [जो] रंज हुआ था और आज तक इस घटना का जो कुछ असर मेरे दिल में था वह जाता रहा। अब मैं अपने को खुशनसीब समझने लगा। (कमलिनी से) अच्छा यह बताओ कि रात की दिल्लगी तुमने किस तौर पर की ? मेरी समझ में कुछ न आया और न इस बात का पता लगा कि मेरी सूरत क्यों कर बदली गई।

कमलिनी० । इस बात का जवाब आपको कमला से मिलेगा।

कमला० । वह तो एक मामूली बात है ! समझ लीजिये कि आप [आ]प सो गये तो इन्हीं (कमलिनी) ने आपको बेहोश करके आपकी सूरत बदल दी।*

* यही काम उधर लाडिली ने किया था। सूरत तो पहिले [illegible] से [illegible] बनी हुई थी मगर जब कुमार सो गये थे तब उन्हें बेहोश

कुमार० । ठीक है मगर ऐसा क्यों किया ?

कमला० । एक तो दिल्लगी के लिये और दूसरे किशोरी के ख्याल से कि जिसकी शादी पहिले हुई है उसी की सोहागरात पहिले होनी चाहिये ।

कुमार० । (हंस कर और किशोरी की तरफ देख कर) यह आपकी बहादुरी है । और आज आपकी बारी होगी, समझ र

किशोरी ने शर्मा कर सिर नीचा कर लिया और कुमार की बात का कुछ भी जवाब न दिया ।

इसके बाद वे लोग कुछ देर तक हंसी खुशी की बातें करते रहे और फिर अपने अपने ठिकाने चले गये ।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की शादी के बाद भी कई दिनों तक हंसी खुशी का जलसा बराबर बना रहा क्योंकि इस शादी के आठवें ही दिन कमला की भैरोसिंह के साथ और तारासिंह की शादी इन्दिरा के साथ हो गई और इस नाते को भूतनाथ तथा इन्द्रदेव ने खुशी के साथ मंजूर कर लिया ।

इन सब कामों से छुट्टी पाकर महाराज ने निश्चय किया कि पुनः उसी पुराने बाले तिलिस्मी मकान में चल कर कैदियों का मुकदमा सुना जाय अस्तु उनकी आज्ञानुसार बाहर के आये हुए मेहमान लोग हंसी खुशी के साथ बिदा किए गये और फिर कई दिनों तक तैयारी करने के बाद सभों का डेरा कूच हुआ और पहिले की तरह पुनः वह तिलिस्मी मकान हरा भरा दिखाई देने लगा । कैदी भी उसी मकान के तहखानों में पहुंचाये गये और सब का मुकदमा सुनने की तैयारी होने लगी ।

चौथा बयान

अब हम थोड़ा सा हाल नानक और उसकी मां का बयान करते हैं जो हर तरह से कसूरवार होने पर भी महाराज की आज्ञानुसार

* और सुबह को उनके जागने के पहिले ही अपना चेहरा साफ कर लिया ।

किये जाने से बच गये और उन्हें केवल देश निकाले का दण्ड दिया गया।

यद्यपि महाराज ने उन दोनों पर दया की और उन्हें छोड़ दिया पर यह बात सर्वसाधारण को पसन्द न आई। लोग यही कहते रहे कि यह काम महाराज ने अच्छा नहीं किया और इसका नतीजा बहुत बुरा निकलेगा। आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात् नानक ने इस अहसान को भूल कर फसाद करने और लोगों की जान लेने पर कमर बांधी।

जब नानक की मां और नानक को देश निकाले का हुक्म हो गया और इन्द्रदेव के आदमी उन दोनों को सरहद के पार करके घर लौट गए तब ये दोनों बहुत दुःखी और उदास एक पेड़ के नीचे बैठ कर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये। उस समय सवेरा हो चुका था और सूर्य्य की लालिमा पूरब तरफ आसमान पर फैल रही थी।

रामदेई०। कहो अब क्या इरादा है? हम लोग तो बड़ी मुसीबत में फंस गए!

नानक०। बेशक मुसीबत में फंस गए और बिल्कुल कंगाल कर दिए गए। तुम्हारे जेवरों के साथ ही साथ मेरे रुपये भी छीन लिये गए और अब इस लायक भी न रहे कि किसी ठिकाने पहुंच कर रोजी के लिए कुछ उद्योग करते।

रामदेई०। ठीक है मगर मैं समझती हूं कि अगर हम लोग किसी तरह नन्हों के यहां पहुंच जायंगे तो खाने पीने का ठिकाना हो जायगा और उससे किसी तरह की मदद भी ले सकेंगे।

नानक०। नन्हों के यहां जाने से क्या फायदा होगा? वह तो खुद गिरफ्तार होकर कैदखाने की हवा खा रही होगी! हां उसका भतीजा बेशक बचा हुआ है जिसे उन लोगों ने छोड़ दिया और जो नन्हों की जायदाद का मालिक बन बैठा होगा मगर उससे किसी तरह की उम्मीद मुझको नहीं हो सकती।

रामदेई०। ठीक है मगर नन्हों की लौंडियों में से एक ऐसी है जिससे मुझे मदद मिल सकती है।

नानक० । मुझे इस बात की भी उम्मीद नहीं है, इसके यहां तक पहुंचने के लिये भी तो समय चाहिये, यहां तो एक भूख बुझाने के लिए भी पल्ले में कुछ नहीं होगा।

रामदेई० । ठीक है मगर क्या तुम अपने घर भी मुझे नहीं ले जाते ? वहां तो तुम्हारे पास रुपये पैसे की कमी नहीं है !!

नानक० । हां यह तो हो सकता है, वहां पहुंचने पर मुझे तरह की तकलीफ नहीं हो सकती मगर इस समय तो वहां तक चलना भी कठिन हो रहा है। (लम्बी सांस लेकर) अफसोस! ऐयारी का बटुआ भी छीन लिया गया और हम लोग इस लायक न रह गये कि किसी तरह सूरत बदल कर अपने को लोगों की से छिपा लेते।

रामदेई० । खैर जो होना था सो हो गया अब इस समय सोच करने से काम न चलेगा। सब जेवर छिन जाने पर भी मेरे थोड़ा सा सोना बचा हुआ है अगर इसमें कुछ काम चले तो...

नानक० । (चौंक कर) क्या कुछ है ?

रामदेई० । हां।

इतना कह कर रामदेई ने धोती के अन्दर छिपी हुई सोने की करधनी निकाली और नानक के आगे रख दी।

नानक० । (करधनी को हाथ में ले कर) बहुत है, हम लोगों को घर तक पहुंचा देने के लिये काफी है, वहां पहुंचने पर किसी तरह की तकलीफ न रहेगी क्योंकि वहां मेरे पास खाने पीने की कमी नहीं है।

रामदेई० । तो क्या वहां चल कर इन बातों को भूल.....

नानक० । (बात काट कर) नहीं नहीं, यह न समझना कि वहां पहुंच कर हम इन बातों को भूल जायंगे और बेकार बैठे टुकड़े तोड़ेंगे बल्कि वहां पहुंच कर इस बात का बन्दोबस्त करेंगे कि अपने दुश्मनों से बदला लिया जाय।

रामदेई० । हां मेरा भी यही इरादा है क्योंकि मुझे तुम्हारे बाप

बेमुरौवती का बड़ा रंज है जिसने हम लोगों को दूध की मक्खी तरह एक दम निकाल कर फेंक दिया और पिछली मुहब्बत का कुछ ख़याल न किया। शान्ता और हरनामसिंह को पाकर ऐंठ गया और इस बात का कुछ ख़याल न किया कि आख़िर नानक भी तो मेरा लड़का है और वह भी ऐयारी जानता है!

नानक०। (जोश के साथ) बेशक यह उसकी बेईमानी और हरामज़दगी है! अगर वह चाहता तो हम लोगों को बचा सकता था!!

रामदेई०। बचा लेना क्या, यह जो कुछ किया सब उसी ने किया! महाराज ने तो हुक्म दे ही दिया था कि 'भूतनाथ की इच्छानुसार इन दोनों के साथ बर्ताव किया जाय।'

नानक०। बेशक ऐसा ही है। इस कम्बख़्त ने हम दोनों के साथ ऐसा सलूक किया! मगर क्या चिन्ता है इसका बदला लिये बिना मैं कभी न छोड़ूंगा।

रामदेई०। (आंसू बहा कर) तेरी बातों पर मुझे विश्वास नहीं होता क्योंकि तेरा जोश थोड़ी ही देर का होता है......

नानक०। (क्रोध के साथ रामदेई के पैरों पर हाथ रख) मैं तुम्हारे चरणों की कसम खा कर कहता हूं कि इसका बदला लिये बिना कभी न रहूंगा।

रामदेई०। भला मैं यह भी तो सुनूं कि तुम क्या बदला लोगे? मेरे ख़याल से तो वह जान से मार देने लायक है।

नानक०। ऐसा ही होगा, ऐसा ही होगा! जो तुम कहती हो वही करूंगा और उसके लड़के हरनामसिंह को भी यमलोक पहुंचाऊंगा!!

रामदेई०। शाबाश! मगर मेरा चित्त तब तक प्रसन्न न होगा जब तक शान्ता का सिर अपने लातों से न रगड़ने पाऊंगी!

नानक०। मैं उसका सिर भी काट कर तुम्हारे सामने लाऊंगा और तब तुमसे आशीर्वाद लूंगा।

रामदेई०। शाबाश! ईश्वर तेरा भला करे। मगर मैं चाहती हूं कि इन बातों के लिये तू एक दफे फिर कसम खा जिसमें मेरी पूरी

दिलजमई हो जाय।

नानक० । (सूर्य्य की तरह हाथ उठा कर) मैं त्रिलोकीनाथ सामने हाथ उठा कर कसम खाता हूं कि अपनी मां की इच्छा करूंगा और जब तक ऐसा न कर लूंगा अन्न न खाऊंगा।

रामदेई० । (नानक की पीठ पर हाथ फेर कर) बस बस, अब प्रसन्न हो गई और मेरा आधा दुःख जाता रहा !

नानक० । अच्छा तो अब यहां से उठो (हाथ का इशारा कर के) किसी तरह उस गांव में पहुंचना चाहिये फिर सब बन्दोबस्त जायगा।

दोनों उठे और एक गांव की तरफ रवाना हुए जो वहां से दिखाई दे रहा था।

पाठक ! आपने सुना कि नानक ने क्या प्रण किया ? अस्तु अब यहां पर हम यह कह देना उचित समझते हैं कि नानक अपनी को लिये हुए जब घर पहुंचा तो वहां उसने एक दिन के लिये भी आराम न किया। ऐयारी का बटुआ तैयार करने के बाद हर तरह का इन्तजाम करके और चार पांच शागिर्दों और नौकरों को साथ ले उसी दिन घर के बाहर निकला और चुनार की तरफ रवाना हुआ। जिस दिन कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की बरात निकलने वाली थी उस दिन वह चुनार की सरहद में मौजूद था। बारात की कैफियत उसने अपनी आंखों से देखी थी और इस बात की फिक्र में लगा हुआ था किसी तरह दो चार कैदियों को भी कैद से छुड़ा कर अपना साथी बना लेना चाहिये और मौका मिलने पर राजा गोपालसिंह को भी इस दुनिया से उठा देना चाहिये।

अब हम कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का हाल बयान करते हैं।

दो पहर दिन का समय है और सब कोई भोजन इत्यादि से निश्चिन्त हो चुके हैं। एक सजे हुए कमरे में राजा गोपालसिंह, भरत आनन्दसिंह, भैरोसिंह और तारासिंह बैठे हुए हंसी खुशी

ो बातें कर रहे हैं।

गोपाल०। (भरतसिंह से) क्या मुझे स्वप्न में भी इस बात की उम्मीद हो सकती थी कि आपसे किसी दिन मुलाकात होगी? कदापि नहीं, क्योंकि लोगों के कहने पर मुझे विश्वास हो गया था कि आप जंगल में डाकुओं के हाथ से मारे गये......

भरत०। और इसका बहुत बड़ा सबब तो यह था कि सब लोग दारोगा की बेईमानी का आपको पता न लगा था, उसे आप ईमानदार समझते थे और उसी ने मुझे कैद किया था।

गोपाल०। बेशक यही बात है, मगर खैर, ईश्वर जिसका सहायक रहता है वह किसी के बिगाड़े नहीं बिगड़ सकता। देखिये मायारानी ने मेरे साथ क्या कुछ न किया! मगर ईश्वर ने मुझे बचा लिया और आप से बिछुड़े हुओं को भी मिला दिया।

भरत०। ठीक है, मगर मेरे प्यारे-दोस्त! मैं कह नहीं सकता कि कम्बख्त दारोगा ने मुझे कैसी कैसी तकलीफें दी हैं, और मजा तो यह है कि इतना करने पर भी वह अपने को निर्दोष बताता रहा! खैर जब मैं अपना हाल बयान करूंगा तब आपको मालूम होगा कि दुनिया में कैसे कैसे निमकहराम और संगदिल लोग होते हैं और बदों के साथ नेकी करने का नतीजा कैसा बुरा होता है।

गोपाल०। ठीक है ठीक है, इन्हीं बातों को सोच कर भैरोसिंह बार बार मुझसे कहते हैं कि 'आपने नानक को सूखा छोड़ दिया सो अच्छा नहीं किया, वह बद है और बदों के साथ नेकी करना वैसा ही है। जैसा नेकों के साथ बदी करना।'

भरत०। भैरोसिंह का कहना वाजिब है, मैं उसका समर्थन करता हूं।

भैरो०। कृपानिधान! सच तो यों है कि नानक की तरफ से मुझे किसी तरह बेफिक्री होती ही नहीं। मैं अपने दिल को कितना ही समझाता हूं मगर वह जरा नहीं मानता। ताज्जुब नहीं कि......!

भैरोसिंह इतना कह रहे थे कि सामने से भूतनाथ आता हु-

दिखाई पड़ा।

गोपाल०। अजी वाह जी भूतनाथ ! चार चार दफे बुलाने पर आपके दर्शन नहीं होते।

भूत०। (मुस्कुराता हुआ) अभी क्या हुआ है, दो चार दिन तो मेरे दर्शन और भी दुर्लभ हो जायंगे !

गोपाल०। (ताज्जुब से) सो क्या ?

भूतनाथ०। कहो कि मेरा सपूत लड़का नानक इस शहर में पहुंचा है और मेरी अन्त्येष्टि क्रिया करके बहुत जल्द अपने बाप ... का बदला लेने की फिक्र में लगा है। (बैठ कर) कृपा कर ... भी जरा होशियार रहियेगा।

गोपाल०। तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि वह ... के साथ आया है !

भूत०। मुझे अच्छी तरह मालूम हो गया है। इसी से तो मुझे आने में देर हो गई क्योंकि मैं यह हाल कहने और तीन चार दिन छुट्टी लेने के लिए महाराज के पास चला गया था। वहां से ... आपके पास आ रहा हूं।

गोपाल०। तो क्या महाराज से छुट्टी ले आये ?

भूत०। जी हां, अब आपसे यह पूछता है कि आप अपने ... क्या बन्दोबस्त करेंगे ?

गोपाल०। तुम तो इस तरह की बातें करते हो जैसे उसकी ... से बहुत बड़ा तरद्दुद हो गया हो ! वह बेचारा कल का लौंडा ... लोगों के साथ क्या कर सकता है ?

भूत०। सो तो ठीक है मगर दुश्मन को छोटा और ... समझना चाहिये।

गोपाल०। तुम्हें ऐसा ही डर है तो कहो बैठे बैठे पचीस ... अन्दर उसे गिरफ्तार कराके तुम्हारे हवाले कर दूं ?

भूत०। यह मुझे विश्वास है और आप ऐसा कर सकते हैं ... मंजूर नहीं है, क्योंकि मैं जरा दूसरे ही ढंग से उसका ...

॥ किया चाहता हूं। अगर ज़रा आप बेटे की लड़ाई देखिये तो। हां गर आपकी तरफ़ पद झुके तो जैसा मौका देखिये कीजिये।

गोपाल०। ऐसा ही सही, मगर तुमने क्या सोचा है, ज़रा अपना मसूबा तो सुनाओ?

इसके बाद उन लोगों में देर तक बातें होती रहीं और दो घण्टे के द भूतनाथ उठ कर अपने डेरे की तरफ़ चला गया।

पांचवाँ बयान

नानक जब चुनारगढ़ की सरहद पर पहुंचा तब सोचने लगा कि दुश्मनों से क्योंकर बदला लेना चाहिये वह पांच आदमियों को अपना शिकार समझे हुए था और इन्हीं पांचों की जान लेने का इरादा करता था। एक राजा गोपालसिंह और दूसरा इन्द्रदेव, तीसरा भूतनाथ, चौथा हरनामसिंह और पांचवीं शान्ता। यह पांच उसकी आंखों में खटक रहे थे मगर इनमें से दो अर्थात् राजा गोपालसिंह और इन्द्रदेव के पास फटकने की तो उसकी हिम्मत नहीं पड़ती थी और वह समझता था कि ये दोनों तिलिस्मी आदमी हैं इनके काम जादू की तरह हुआ करते हैं और इन लोगों में दिल की बात समझ जाने की कुदरत है मगर बाकी तीनों को वह निरा शिकार ही समझता था और विश्वास करता था कि इन तीनों को किसी न किसी तरह फंसा लेंगे। परन्तु चुनारगढ़ की सरहद में आ पहुंचने के बाद उसने गोपालसिंह और इन्द्रदेव का खयाल तो छोड़ दिया और भूतनाथ, उसकी स्त्री और उसके लड़के हरनामसिंह को जान लेने के फेर में पड़ा। साथ ही इसके यह भी समझ लेना चाहिये कि नानक यहां अकेला नहीं आया था बल्कि समय पर मदद पहुंचाने के लायक चार पाठ आदमी और भी अपने साथ लाया था जिनमें से चार पांच तो उसके शागिर्द ही थे।

दोनों कुमारों की शादी में जिस तरह दूर दूर के मेहमान, तमाशबीन लोग आये थे उसी तरह से कुछ महात्मा तथा

चारों पाखंडी लोग भी बहुत से इकट्ठे हो गये थे जिन्हें सरका
तरफ से खाने पीने को भरपूर मिलता था और इस लालच में भी
इन लोगों ने अभी तक चुनार का पीछा नहीं छोड़ा था तथा तिलि
मकान के चारो तरफ आस पास के जंगलों में डेरा डाले पड़े हु
नानक और उसके साथी लोग भी साधुओं ही के भेष में वहां
और उसी मंडली में मिल जुल कर रहने लगे।

नानक को यह बात मालूम थी कि भूतनाथ का डेरा तिलि
इमारत के अन्दर है और वह वहां बड़ी कड़ी हिफाजत के साथ
है। इसलिये वह कभी कभी यह भी सोचता था कि मेरा काम
ही में नहीं हो जायगा बल्कि उसके लिये बड़ी भारी मेहनत
पड़ेगी। मगर वहां पहुंचने के कुछ ही दिन बाद (जब शादी के
काम से सब कोई निश्चिन्त होकर तिलिस्मी इमारत में आ
उसने सुना और देखा कि महाराज की आज्ञानुसार भूतनाथ
और उसके सहित तिलिस्मी इमारत के बाहर एक बहुत बड़े और
खूबसूरत खेमे में डेरा डाला है, अतएव वह बहुत ही प्रसन्न हुआ औ
विश्वास हो गया कि अब हम अपना काम शीघ्र सुबीते के
निकाल लेंगे।

नानक ने और भी दो तीन रोज तक इन्तजार किया औ
बीच में यह भी जान लिया कि भूतनाथ के खेमे की कुछ विशेष
जत में नहीं होती और पहरे वगैरह का इन्तजाम भी साधारण
तथा उसके शागिर्द लोग भी आज कल वहां मौजूद नहीं हैं।

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी थी, यद्यपि चन्द्रदेव के
नहीं होते थे मगर आसमान साफ होने के कारण टुटपुंजिये ता
अपनी नामवरी पैदा करने का उद्योग कर रहे थे और नान
बुद्धिमान लोगों से पूछ रहे थे कि यदि हम लोग इकट्ठे हो जा
क्या चन्द्रमा से चौगुनी और अठगुनी चमक दमक नहीं दिखा
जवाब में यह भी सुनना चाहते थे कि 'निःसन्देह!' इसी
दमी स्याह [illegible] ओढ़े रहने पर भी लोगों की नि

को पधांना हुआ भूतनाथ के खेमे की तरफ आ रहा है। पाठक
हो गये होंगे कि यह नानक है। अस्तु जब वह खेमे के पास
तो अपने मतलब का सन्नाटा देखकर खड़ा हो गया और किसी
ने का इन्तजार करने लगा। थोड़ी ही देर में एक दूसरा आदमी
उसके पास आया और दो चार बातें तक बातें करके चला गया।
अब नानक जमीन पर लेट गया और धीरे धीरे घिसकता हुआ
के कनात के पास जा पहुंचा, तब उसे धीरे से उठाकर अन्दर
गया। वहां उसने अपने को गुलामगर्दिश में पाया मगर यहां
त ही अन्धकार था, हां यह मालूम होता था कि आगे वाली
के अंदर अर्थात् खेमे में कुछ रोशनी हो रही है। नानक फिर
ट गया और पहिले की तरह यह दूसरी कनात भी उठा कर खेमे
न्दर जाने का विचार कर ही रहा था कि दाहिने तरफ से कुछ
ड़ाहट की आहट मालूम पड़ी। नानक चौंका और उसी अन्धेरे
न चार कदम बाईं तरफ हट गया और पुनः खटके की आवाज
और उसे जानने की नीयत से ठहर गया। जब थोड़ी देर में
ी तरह की आहट नहीं मालूम हुई तो पहिले की तरह फिर कना-
ट गया और कनात उठाकर अन्दर जाया ही चाहता था कि दू-
तरफ फिर किसी के पैर पटक पटक कर चलने की आहट मालूम
। वह खड़ा हो गया और पुनः चार पांच कदम पीछे की तरफ
ईं तरफ) हट गया मगर इसके बाद फिर किसी तरह की आहट
म न हुई और यह कुछ देर तक इन्तजार करने के बाद जमीन पर
या और कनात के अन्दर सिर डालकर देखने लगा। कोने की
एक मामूली शमादान जल रहा था जिसकी मद्धिम रोशनी में
ारपाई बिछी हुई दिखाई पड़ी। कुछ देर तक गौर करने पर नानक
निश्चय हो गया कि इन दोनों चारपाइयों पर भूतनाथ तथा उसकी
शान्ता सोई हुई है। परन्तु उसका लड़का हरनामसिंह खेमे के
र दिखाई न दिया और उसके लिए नानक को कुछ चिन्ता हुई
पि यह मालूम करके खेमे के अन्दर चला हो गया।

वह धीरे धीरे डरता कांपता चारपाई के पास पहुंच चाहा कि खंजर से इन दोनों का गला काट डालें मगर फिर ने लगा कि पहिले किस पर वार करूं, भूतनाथ पर या शान्ता वे दोनों सिर से पैर तक चादरा ताने पड़े हुए थे इससे व करने की जरूरत थी कि किस चारपाई पर कौन सो रहा है इसके नानक इस बात पर भी गौर कर रहा था कि रोशनी जाय या नहीं। यद्यपि वह वार करने के लिये खंजर हाथ में था मगर उसकी दिली कमजोरी ने उसका पीछा नहीं छोड़ा उसका हाथ कांप रहा था।

सातवाँ बयान

किशोरी कामिनी कमलिनी और लाडिली ये चारो बड़ी के साथ अपना दिन बिताने लगीं। इनकी मुहब्बत दिखौआ बल्कि दिली और सफाई के साथ थी। वे चारो जमाने के । अच्छी तरह समझ बूझ चुकी थी और खूब जानती थी कि हर एक के साथ दुःख और सुख का चर्खा लगा ही रहता तो मुश्किल से मिलती है मगर रंज और दुःख के लिये किसी उद्योग नहीं करना पड़ता, वह आपसे आप पहुंचता है और सब को लपेटकर भी अपना पीछा नहीं छोड़ता, इस लिये बु का काम यही है कि जहां तक हो सके खुशी का पल्ला न छोड़े कोई काम ऐसा करे जिसमें दिल को किसी तरह का रंज चारो औरतों का दिल उन नादान और कमीनी औरतों का था जो दूसरों की खुशी देखते ही जलभुन कर कोयला हो और दिन रात कुप्पे की तरह मुंह फुलाये आंखों से पनाले बहाया करती हैं अथवा घर की औरतों के साथ मिलजुल कर अपनी बेइज्जती समझती हैं।

इन चारों का दिल आइने की तरह साफ था। नहीं न गये, हमें दिखावे साथ आइने की उपमा पसन्द नहीं! न

ने इस उपमा को किस लिये पसन्द कर रक्खा है! उपमा में वस्तु का व्यवहार करना चाहिये जिसकी प्रकृति में किसी तरह फर्क न पड़े, मगर आइने (शीशे में) यह बात पाई नहीं जाती, क आइना बेऐब साफ और बिना धब्बे के नहीं होता और वह क की सूरत एकसा भी नहीं दिखाता बल्कि जिसकी जैसी सूरत है उसके मुकाबले में वैसा ही बन जाता है। इस लिये आइना लोगों के दिल को कहना चाहिये जो नीति कुशल हैं या जिन्होंने ठान ली है कि जो जैसा करे उसके साथ वैसा ही करना है, चाहे वह अपना हो या पराया, छोटा हो या बड़ा। मगर रों में यह बात न थी, ये बड़ों की झिड़की को आशीर्वाद और की ऐंठन को उनकी नादानी समझती थीं। अगर कोई जो या जापुस वाली क्रोध में भरी हुई अपना मुंह बिगाड़े सामने आती तो यदि मौका होता तो ये हंस कर कह देती कि ईश्वर ने क्या अच्छी सूरत बनाई है!" या "बहिन! इसने हारा जो कुछ बिगाड़ा जो बिगाड़ा है मगर तुम्हारी सूरत ने क्या कसूर किया है जो तुम उसे बिगाड़ रही हो?" बस ही में उसका रंग बदल जाता। इन बातों को विचार हम इनके आईने के साथ मिलान करना पसन्द नहीं करते बल्कि यह मुनासिब समझते हैं कि 'इनका दिल समुद्र की तरह गम्भीर

यारों को इस बात का खयाल ही न था कि हम अमीर हैं, और हिलाना या घर का कामकाज करना हमारे लिये पाप है। ते घर का काम जो उनके लायक होता करतीं और खाने पीने जों पर विशेष ध्यान रखतीं। सबसे बड़ा खयाल उन्हें इस बात था कि उनके पति उनसे किसी तरह रंज न होने पावें और किसी बड़े बुजुर्ग को उन्हें वे अदब कहने का मौका न मिले। नी चन्द्रकान्ता की तो बात ही दूसरी है, वे चपला और चमेली साथ की तरह समझती और इज्जत करती थीं।

डिया तक इनसे प्रसन्न रहतीं और जब किसी लौंडी से कोई जाता तो भिड़की और गालियों के बदले नसीहत के साथ से उसे कायल और शर्मिन्दा कर देतीं और उसके मुंह से कि 'बेशक मुझसे भूल हुई। आइन्दे कभी ऐसा न होगा!!' विचित्र बात तो यह थी कि इनके चेहरे पर रंज क्रोध का कभी दिखाई देती ही न थी और जब कभी ऐसा होता तो किसी घटना का अनुमान किया जाता था। हां उस समय इनके चिन्ता का कोई ठिकाना नहीं रहता था जब ये अपने पति कारण दुखी देखतीं। ऐसी अवस्था में इनकी सच्ची भक्ति के इनके पति को अपनी उदासी छिपानी पड़ती या इन्हें प्रसन्न और हंसाने के लिये और किसी तरह का उद्योग करना पड़ता लब यह कि इन्होंने घर भर का दिल अपने हाथ में कर और ये घर भर की प्रसन्नता का कारण समझी जाती थीं।

भूतनाथ की स्त्री शान्ता का इन्हें बहुत बड़ा ख्याल रहता उसकी पिछली घटनाओं को याद कर के उसकी पतिभक्ति सा किया करतीं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन्हें अपनी जिन्दगी में दुख बड़े समुद्र पार करने पड़े थे परन्तु ईश्वर की कृपा से जब ये आगीं तब इन्हें कल्पवृक्ष की छाया मिली और किसी बात न रही।

इस समय सन्ध्या होने में घण्टे भर की देर है। सूर्य अस्ताचल की तरफ तेजी के साथ झुके चले जा रहे हैं और लाल लाल पिछली किरणों से बड़ी बड़ी अटारियों तथा ऊंचे के ऊपरी हिस्सों पर ठहरा हुआ सुनहरा रंग बड़ा ही मोहक पड़ता है और ऐसा जान पड़ता है कि प्रकृति ने प्रसन्न होकर गौरव बढ़ाने के लिये अपने सहचारियों और सहायकों को न पहिरा दिया है।

ऐसे समय में किशोरी कामिनी कमलिनी लाडिली और

री पर एक सजे हुए बंगले के अन्दर बैठी जालदार खिड़कियों से जंगल की शोभा देख रही हैं जो इस तिलिस्मी मकान से थोड़ी दूर है और साथ ही इसके मीठी मीठी बातें भी करती जाती हैं।

कमलिनी०। (किशोरी से) बहिन! एक दिन वह था कि हमें री इच्छा के विरुद्ध ऐसे ऐसे बल्कि इससे भी बढ़ कर भयानक लों में घूमना पड़ता था और उस समय यह सोच कर डर मालूम ता था कि कोई शेर इधर उधर से निकल कर हम पर हमला न करे एक आज का दिन है कि इस जंगल की शोभा भली मालूम ती है और इसमें घूमने को जी चाहता है।

किशोरी०। ठीक है, जो काम लाचारी के साथ करना पड़ता है चाहे अच्छा ही क्यों न हो परन्तु चित्त को बुरा ही लगता है और भयानक तथा कठिन कामों का तो कहना ही क्या! मुझे तो जंगल में र और भेड़िये का इतना खयाल न था जितना दुश्मनों का, मगर समय और ही था जो ईश्वर न करे किसी दुश्मन को भी दिखावे। समय हम लोगों की किस्मत बिगड़ी हुई थी और अपने भी ही दुश्मन बन कर सताने के लिये तैयार हो जाते थे। (कमला तरफ देख कर) भला तुम्हीं बताओ कि उस कमेला छोकरी का ने क्या बिगाड़ा था जिसने मुझे हर तरह से तबाह कर दिया! गर वह मेरी मुहब्बत का हाल मेरे पिता से न कह देती तो मुझ पर वैसी मुसीबत क्यों आ जाती?

कमला०। बेशक ऐसा ही है, मगर उसने जैसी ही निमकहरामी वैसी ही सजा भी पाई। मेरे हाथ के कोड़े * वह जनम भर न भूलेगी!

किशोरी०। मगर इतना होने पर भी उसने मेरे पिता का ठीक ठीक भेद न बताया!

कमला०। बेशक वह बड़ी जिद्दी निकली मगर तुमने भी वह बा

* देखिये हिस्सा पहिला बयान ग्यारहवें का अन्त।

आपकी दिखाई कि अन्त में उसे छोड़ देने का हुक्म दे दिया भी वह जहां जायगी दुःख ही भोगेगी।

किशोरी०। इसके अतिरिक्त उस जमाने में दलपति ने क्या मुझे कम तकलीफ दी थी जब मैं नागर के यहां कैद थी! कम्बख्त की सूरत देखने से मेरा खून खुश्क होता था।*

लाडिली०। यही जिसे भूतनाथ ने जहन्नुम में पहुंचा नागर इस मामले को बिल्कुल छिपा गई, मायारानी से उसने न कहा और इसी में उसका मजा भी था।

किशोरी०। (लाडिली से) बहिन! तुम तो बड़ी नेक हो तुम्हारा ध्यान भी धर्म विषय के कामों में विशेष रहता है मगर दिनों तुम्हें क्या हो गया था कि मायारानी के साथ बुरे अपना दिन बिताती थीं और हम लोगों की जान लेने के लिये थीं?

लाडिली०। (लज्जा और उदासी के साथ) फिर तुमने चरचा छेड़ी! मैं कई दफे हाथ जोड़ कर तुमसे कह चुकी हूं बातों को याद दिला कर मुझे शर्मिन्दा न करो, दुःख न दो, मेरे मैं बार बार स्याही न लगाओ, उन दिनों मैं पराधीन थी, मेरा सहायक न था, मेरे लिये कोई और ठिकाना न था और उस साथ रह कर मैं अपने को कहीं छिपा भी नहीं सकती थी और थी कि यहां से निकल भागने पर कहीं मेरी इज्जत पर न आ मगर बहिन! तुम जान बूझ कर बार बार उन बातों को याद कर मुझे सताती हो, कहो बैठूं या यहां से उठ जाऊं?

किशोरी०। अच्छा अच्छा जाने दो माफ करो, मुझसे गई, मगर मेरा मतलब वह न था जो तुमने समझा है, मैं दो बातें नानक के विषय में पूछा चाहती थी जिनका पता अभी तक लगा और जो भेद की तरह हम लोगों......

* देखिये हिस्सा आठ बयान नौवां।

ाडिली०। (बात काट कर) वे बातें भी मेरे लिये वैसी ही
ाई हैं!!

किशोरी०। नहीं नहीं मैं यह न पूछूंगी कि तुमने नानक के
रामभोली बन कर क्या क्या किया बल्कि यह पूछूंगी कि उस
के डब्बे में क्या था जो नानक ने चुरा ला कर तुम्हें मजरे में दिया
कूए में से हाथ कैसा निकला था? नहर के किनारे वाले बंगले
हुंच कर वह छंबोकर फंसा लिया गया? उस बंगले में वह तस्वीरें
थी? असली रामभोली कहां गई और क्या हुई? रोहतासगढ़
ाने के अन्दर तुम्हारी तस्वीर किसने लटकाई और तुम्हें वहां का
कैसे मालूम हुआ था? इत्यादि बातें मैं कई दफे कई तरह से
चुकी हूं मगर उनका असल भेद अभी तक कुछ मालूम न
। ❀।

लाडिली०। हां इन सब बातों का जवाब देने के लिये मैं तैयार हूं
र तुम जानती हो और अच्छी तरह सुन और समझ चुकी हो कि
तिलिस्मी बाग तरह तरह के अजायबातों से भरा हुआ है, विशेष
तो भी वहां का बहुत कुछ हाल मायारानी और दारोगा को
लूम था, वहां अथवा उसकी सरहद में ले जा कर किसी को डराने
काने या तकलीफ देने के लिये कोई ताज्जुब का तमाशा दिखाना
न बड़ी बात थी!

किशोरी०। हां सो तो ठीक ही है।

लाडिली०। और फिर नानक जानबूझ कर खास निकाले के
ये तो गिरफ्तार ही किया गया था। इसके अतिरिक्त तुम यह भी
न चुकी हो कि दारोगा के बंगले या अजायबघर से खास बाग तक
चे नीचे रास्ता बना हुआ है, ऐसी अवस्था में नानक के साथ वैसा
व करना हो कौन बड़ी बात थी!

किशोरी०। बेशक ऐसा ही है अच्छा उस डिब्बे वगैरह का भेद
बताओ?

❀ देखिये सन्तति चौथा हिस्सा नौवां बयान।

लाडिली० । उस गठरी में जो कलमदान था वह हमारे काम का न था मगर उस डिब्बे में वही इन्दिरा वाला जिसके लिये दारोगा साहब बेताब हो रहे थे और चाहते थे किसी तरह पुनः मेरे कब्जे में आ जाय । असल में इसी लिये मुझे रामभोली बनना पड़ा था । दारोगा ने असली रा को गिरफ्तार करवा के इस तरह मरवा डाला कि किसी को कान खबर भी न हुई और मुझे रामभोली बन कर यह काम की आज्ञा दी । लाचार मैं रामभोली बन कर नानक से मिली से अपने वश में करने बाद इन्द्रदेवजी के मकान में से वह तथा उसके साथ और भी कई तरह के कागज नानक की मार्फत मंगवाए । मुझे तो उस कलमदान की सूरत देखने से डर था क्योंकि मैं जानती थी कि वह कलमदान हमलोगों के खून का और दारोगा के बड़े बड़े भेदों से भरा हुआ है । इसके अ पर इन्दिरा का बचपन की तस्वीर भी बनी हुई थी और सुन्दर में इन्दिरा का नाम लिखा हुआ था, जिसके विषय में मैं जानती थी कि वे मां बेटी बड़ी बेदर्दी के साथ मारी गईं । यही था कि कलमदान की सूरत देखते ही मुझे तरह तरह की बातें आ मेरा कलेजा दहल गया, और मैं डर के मारे कांपने लगी । खैर, मैं नानक को लिये हुए जमानिया की सरहद में पहुंची तो उसे के एकान्त करके खास बाग में चली गई, अपना दुपट्टा नहर में गई, दूसरी राह से उस तिलिस्मी कुएं के नीचे पहुंच कर पानी उछाला और बनावटी हाथ निकलने के बाद मायारानी से जा और फिर बचा हुआ काम धनपति और दारोगा ने पूरा किया । बाग वाले बंगले में जो तस्वीर रक्खी गई थी वह केवल नानक को देने के लिये थी, उसका और कोई मतलब न था, और तहखाने में जो मेरी तस्वीर * लोगों ने देखी थी वह वास्तव में जयसिंह की बूआ ने मेरे सुबीते के लिये लटकाई थी और तहखाने

* देखिये सन्तति चौथा हिस्सा दसवां बयान ।

त सी बातें समझा कर बता दिया था कि 'जहां तू अपनी तस्वीर
खियो समझ लीजियो कि उसके फलानी तरफ फलानी बात है,'
त्यादि। बस यह तस्वीर इतने ही काम के लिये लटकाई गई थी।
ह बुढ़िया बड़ी ही तेज थी और उस तहखाने का हाल बनिस्बत
गिविजयसिंह के बहुत ज्यादे जानती थी, मैं पहिले भी महाराज के
ामने बयान कर चुकी हूं कि उसने मेरी मदद की थी। वह कई दफे
रे डेरे पर आई थी और तरह तरह की बातें समझा गई थी। मगर
गिविजयसिंह को इन सब बातों की कुछ खबर न थी क्योंकि न तो
गिविजयसिंह उसकी कद्र करता था और न वह दिग्विजयसिंह को
ाहती थी। इसके अतिरिक्त यह भी कह देना आवश्यक है कि मैं तो
स बुढ़िया की मदद से तहखाने के अन्दर चली गई थी मगर कुन्दन
र्थात् धनपति ने वहां जो कुछ किया था वह मायारानी के दारोगा की
ौलत था। घर लौटने पर मुझे मालूम हुआ कि दारोगा वहां कई दफे
ुप कर गया और कुन्दन से मिला था मगर उसे मेरे बारे में कुछ
बर न थी, अगर खबर होती तो मेरे और कुन्दन में जुदाई न रहती,
गर मुझे इन बातों का ताज्जुब जरूर है कि घर पहुंचने पर भी धन-
ति ने वहां की बहुत सी बातें मुझसे छिपा रक्खी।

किशोरी०। अच्छा यह तो बताओ कि रोहतासगढ़ में जो तस्वीर
मने कुन्दन को दिखाने के लिये मुझे दी थी वह तुम्हें कहां से मिली
ी और तुम्हें तथा कुन्दन को उसका असली क्योंकर मालूम हुआ था?

कामिनी०। उन दिनों मैं यह जानने के लिये बेताब हो रही थी कि
न्दन असल में कौन है! मुझे इस बात का भी शक हुआ था कि वह
ाजा साहब (बीरेन्द्रसिंह) की कोई ऐयार होगी और वही शक मिटाने
े लिये मैंने वह तस्वीर खुद बना कर उसे दिखाने के लिये तुम्हें दी
ी। असल में उस तस्वीर का भेद हम लोगों को मनोरमा की जुबानी
ालूम हुआ था और मनोरमा ने इन्दिरा से उस समय सुना था जब
ह मनोरमा को मां समझ के उसके फेर में पड़ गई थी।*

*देखिये हिस्सा ३ बयान १० और हिस्सा १२ बयान ६।

इन्द्रजीतसिंह के) ऊपर वार किया था।

किशोरी०। हां हां हां, तो क्या वह वही कम्बख्त था ?

कमलिनी०। हां वही था, उसे मैं अपना पक्षपाती समझती थी मगर बेईमान ने मुझे धोखा दिया। ईश्वर की कृपा थी कि पहिली ही बार में वह उसी जगह गिरफ्तार हो गया नहीं तो शायद मुझे धोखे में पड़ कर बहुत बड़ी तकलीफ उठानी पड़ती और.........

कमलिनी ने इतना कहा ही था कि उसका ध्यान सामने के जंगल की तरफ जा पड़ा, देखा कि कुंअर आनन्दसिंह एक सब्जे घोड़े पर सवार सामने की तरफ से आ रहे हैं साथ में केवल तारासिंह एक मोटे टट्टू पर सवार बातें करते आते हैं और कोई आदमी नहीं है। साथ ही इसके कमलिनी को कोई और भी अद्भुत दृश्य दिखाई दिया जिससे वह यकायक चौंक पड़ी और कुछ लिये उसका तथा और सभों का ध्यान भी उसी तरफ जा पड़ा।

उसने देखा कि आनन्दसिंह और तारासिंह जंगल में से निकल कर कुछ ही दूर मैदान में आये थे कि यकायक रुक कर पुनः पीछे की तरफ घूमे और गौर के साथ कुछ देखने लगे। कुछ ही देर के बाद और भी दस बारह नकाबपोश आदमी हाथ में तीर कमान लिये दिखाई पड़े जो जंगल से बाहर निकलते ही इन दोनों पर फुर्ती के साथ तीर चलाने लगे। ये दोनों भी म्यान से तलवार निकाल कर उन लोगों की तरफ झपटे और देखते ही देखते सब के सब लड़ते भिड़ते पुनः जंगल में घुस कर देखने वालों की नजरों से गायब हो गये। कमलिनी किशोरी और कामिनी वगैरह इस तमाशे को देख कर घबरा गईं, सभों की इच्छानुसार कमला दौड़ी हुई नीचे आई और एक लौंडी को इस मामले की खबर करने के लिये कुंअर इन्द्रजीतसिंह के पास भेजा।

आठवां बयान

नानक इस बात को सोच रहा था कि मैं पहिले किस पर वार करूं ? अगर पहिले शान्ता पर वार करूंगा तो आहट पाकर भूत०

किशोरी०। ठीक है! मगर इसमें भी कोई शक नहीं कि इन बखेड़ों की जड़ वही कम्बख्त दारोगा है। यदि जमानिया के राज दारोगा न होता तो इन सब बातों में से एक भी न सुनाई देती और हम लोगों की दुःखमय कहानी का कोई अंश लोगों में कहने सुनने लिये पैदा होता (कमलिनी से) मगर बहिन! यह तो बताओ उस हरामी के पिल्ले (दारोगा) का कोई वली वारिस या रिश्तेदार दुनिया में है या नहीं?

कमलिनी०। सिवाय एक के और कोई नहीं! दुनिया का है कि जब आदमी भलाई बुराई कुछ सीखता है तो पहिले अपने ही से आरम्भ करता है। मां बाप के अनुचित लाड़ प्यार और असावधानी से बुरी राह पर चलने वाले लड़के घर ही में भी करते हैं और तब कुछ दिन के बाद दुनिया में मशहूर होने योग्य है। यही बात इस हरामखोर की भी थी! इसने पहिले अपने रिश्तेदारों ही पर सफाई का हाथ फेरा और उन्हें जहन्नुम में कर समय के पहिले घर का मालिक बन बैठा। साधू का भेष इसने लड़कपन ही से सीखा है और विशेष करके इसके इसी भेष बदौलत लोग धोखे में भी पड़े। हमारे राजा गोपालसिंह जी ने (मुस्कुराती हुई) इसे वशिष्ठ ऋषि ही समझ कर अपने यहां र खा। हां इसका एक चचेरा भाई जरूर बच गया था जो इसके नहीं चढ़ा था क्योंकि वह परले सिरे का बदमाश था, आखिर इसको खुशामद करनी ही पड़ी और उसे अपना साथी बनाना ही पड़ा।

किशोरी०। क्या वह मर गया? उसका नाम क्या था?

कमलिनी०। नहीं वह मरा नहीं मगर मरने के ही बराबर क्योंकि वह हमारे यहां कैद है। उसने अपना नाम शिखण्डी लिखा था। तुम जानती ही हो कि जब मैं जमानिया के खास बाग तहखानों और सुरंग की राह से दोनों कुमारों तथा बाकी कैदियों को ले कर बाहर निकल रही थी तो हाथी वाले दरवाजे पर हमने उनके

^ आठवां हिस्सा दूसरा बयान।

इन्द्रजीतसिंह के) ऊपर वार किया था।

किशोरी०। हां हां हां, तो क्या वह वही कम्बख्त था ?

कमलिनी०। हां वही था, उसे मैं अपना पक्षपाती समझती थी मगर बेईमान ने मुझे धोखा दिया। ईश्वर की कृपा थी कि पहिली ही वार में वह उसी जगह गिरफ्तार हो गया नहीं तो शायद मुझे धोखे में पड़ कर बहुत बड़ी तकलीफ उठानी पड़ती और........

कमलिनी ने इतना कहा ही था कि उसका ध्यान सामने के जंगल की तरफ जा पड़ा, देखा कि कुंअर आनन्दसिंह एक सब्जे घोड़े पर सवार सामने की तरफ से आ रहे हैं साथ में केवल तारासिंह एक टट्टू पर सवार बातें करते आते हैं और कोई आदमी नहीं है। साथ ही इसके कमलिनी को कोई और भी अद्भुत दृश्य दिखाई दिया जिससे वह यकायक चौंक पड़ी और इस लिये उसका तथा और सभों का ध्यान भी उसी तरफ जा पड़ा।

उसने देखा कि आनन्दसिंह और तारासिंह जंगल में से निकल कर कुछ ही दूर मैदान में आये थे कि यकायक रुक कर पुनः पीछे की तरफ घूमे और गौर के साथ कुछ देखने लगे। कुछ ही देर के बाद और भी दस बारह नकाबपोश आदमी हाथ में तीर कमान लिये दिखाई पड़े जो जंगल से बाहर निकलते ही इन दोनों पर फुर्ती के साथ तीर चलाने लगे। ये दोनों भी म्यान से तलवार निकाल कर उन लोगों की तरफ झपटे और देखते ही देखते सब के सब लड़ते भिड़ते पुनः जंगल में घुस कर देखने वालों की नजरों से गायब हो गये। कमलिनी किशोरी और कामिनी वगैरह इस तमाशे को देख कर घबरा गईं, सभों की इच्छानुसार कमला दौड़ी हुई नीचे आई और एक लौंडी को इस मामले की खबर करने के लिये कुंअर इन्द्रजीतसिंह के पास भेजा।

आठवां बयान

नानक इस बात को सोच रहा था कि मैं पहिले किस पर वार करूं ? अगर पहिले शान्ता पर वार करूंगा तो आहट पाकर भूत-

नाथ आ जायगा और मुझे गिरफ्तार कर लेगा क्योंकि मैं किसी तरह उसका मुकाबला नहीं कर सकता, अतएव पहिले भू- ही का काम तमाम करना चाहिये, अगर इसकी छुट्टी पा कर जाएगी भी जायगी तो कोई चिन्ता नहीं मैं उसे खाट लेने को भी न दूंगा, वह औरत की जात मेरे मुकाबले में क्या कर सकती है अस्तु ऐसा करने के लिये यह जानने की सख्त जरूरत है कि इन दो में शान्ता कौन है और भूतनाथ कौन है।

थोड़ी ही देर में ऐसी ऐसी बहुत सी बातें नानक के दिमाग में दौड़ गईं और "इन दोनों में भूतनाथ कौन है" इसका पता न लगने के कारण लाचार होकर उसने यह निश्चय किया कि इन दोनों को बेहोश करके यहां से ले चलना चाहिये। ऐसा करने से मेरी मां बहुत ही प्रसन्न होगी।

नानक ने अपने बटुए में से बहुत ही तेज बेहोशी की दवा निकाली और उन दोनों के मुंह पर चादर के ऊपर ही छिड़क दी और दोनों के बेहोश होने का इन्तजार करने लगा।

थोड़ी ही देर में उन दोनों ने हाथ पैर हिलाये जिससे समझ गया कि अब इन पर बेहोशी का असर हो गया अस्तु दोनों के ऊपर से चादर हटा दी और तब देखा कि उन दोनों में भूतनाथ नहीं है बल्कि ये दोनों औरतें ही हैं जिनमें एक तो उसकी शान्ता है, दूसरी औरत को नानक पहिचानता न था।

नानक ने फिर एक दफे बेहोशी सुंघा कर शान्ता को अच्छी तरह बेहोश किया और चारपाई पर से उठा कर बहुत हिफाजत और होशियारी के साथ खेमे के बाहर निकाल लाया और वहां अपने एक साथी को मौजूद पाया। दोनों ने मिल कर उसकी गठरी बांधी और फुर्ती से लश्कर के बाहर निकाल ले गये।

शान्ता को पा जाने से नानक बहुत ही खुश था और सोचता था कि इसे पा कर मेरी मां बहुत ही प्रसन्न होगी और हद से ज्यादे तारीफ करेगी। मैं इसे अपने साथ ले जाऊंगा और

यही दफे लौटूंगा तो भूतनाथ पर कब्जा कर लूंगा। इसी तरह धीरे धीरे अपने सब दुश्मनों को जहन्नुम में मिला डालूंगा।

कोस भर निकल जाने के बाद जब नानक एक संकेत पर पहुंचा तो उसके और साथियों से भी मुलाकात हुई जो कि कसे कसाये कई घोड़ों के साथ उसका इन्तजार कर रहे थे।

एक घोड़े पर सवार होने के बाद नानक ने शान्ता को अपने आगे ले लिया, उसके साथी लोग भी घोड़े पर सवार हुए और सभों ने पूरब का रास्ता लिया।

दूसरे दिन सन्ध्या के समय नानक अपने घर पहुंचा। रास्ते में उसने और उसके साथियों ने कई दफे भोजन किया मगर शान्ता को कुछ खबर न की गई बल्कि जब जब इस बात का खयाल हुआ कि अब इसकी बेहोशी उतरा चाहती है तब पुनः पुनः दवा सुंघा कर उसकी बेहोशी मजबूत कर दी गई।

नानक को देख कर उसकी मां बहुत ही प्रसन्न हुई और जब उसे यह मालूम हुआ कि उसका सपूत शान्ता को गिरफ्तार कर लाया है तब तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने नानक की बहुत ही आओ भगत की और बहुत तारीफ करने बाद बोली, "इससे बदला लेने में अब जरा भर की भी देर न करनी चाहिये, इसे तुरत खम्भे के साथ बांध कर होश में लाओ और पहिले जूतियों से खूब अच्छी तरह खबर लो फिर जो कुछ होगा देखा जायगा। मगर इसके मुंह में खूब अच्छी तरह कपड़ा ठूंस दो जिसमें कुछ बोल न सके और हम लोगों को गालियां न दे।"

नानक को भी यह बात पसन्द आई उसने ऐसा ही किया। शान्ता के मुंह में कपड़ा ठूंसा गया और वह दालान के एक खम्भे के साथ बांध कर होश में लाई गई। होश में आने के बाद अपने को ऐसी अवस्था में देख कर बहुत ही घबराई और जब उद्योग करने पर भी कुछ बोल न सकी तो आंखों से आंसू की धारा बहाने लगी।

नानक ने उसकी दशा पर कुछ भी ध्यान न दिया और अपनी मां

की आज्ञा पा कर उसने शान्ता को जूते से मारना शुरू किया यहां तक मारा कि अन्त में वह बेहोश होकर झुक गई। उस समय नानक की मां कागज का एक लपेटा हुआ पुर्जा नानक के आगे फेंक कर यह कहती घर के बाहर निकल गई कि 'इसे अच्छी तरह पढ़ तब तक मैं लौट आती हूं।'

उसकी इस कार्रवाई ने नानक को ताज्जुब में डाल दिया, उसने जमीन पर से पुर्जा उठा लिया और चिराग के सामने ले जा कर पढ़ा, यह लिखा हुआ था :—

"भूतनाथ के साथ ऐयारी करना या उसका मुकाबला करना नानक ऐसे नौसिखे लौंडों का काम नहीं है, तू समझता होगा कि मैं शान्ता को गिरफ्तार कर लाया मगर खूब समझ रख कि वह कभी तेरे पंजे में नहीं आ सकती। जिस औरत को तू जूतियों से मार रहा है वह शान्ता नहीं है, पानी से उसका चेहरा धो डाल और भूतनाथ की कारीगरी का तमाशा देख! अब अगर अपनी जान तुझे प्यारी है तो खबरदार भूतनाथ का पीछा कभी न कीजियो।'

पुर्जा पढ़ते ही नानक के होश उड़ गये। झटपट पानी का लोटा उठा लिया और मुंह में ठूंसा हुआ लत्ता निकालकर शान्ता का चेहरा धोने लगा, तब तक वह भी होश में आ गई। चेहरा साफ होने पर नानक ने देखा कि वह तो उसकी असली मां "रामदेई" है। उसने होश में आते ही नानक से कहा, "क्यों बेटा! तुमने मेरे ही साथ ऐसा सलूक किया?"

नानक के ताज्जुब का कोई हद न रहा। वह घबराहट के साथ अपनी मां का मुंह देखने लगा और ऐसा परेशान हुआ कि मानों उसमें कुछ बोलने की शक्ति न रही। इस बीच में रामदेई ने उसे तरह तरह की बेतुकी बातें सुनाईं जिसे वह सिर नीचा किये हुए चुपचाप सुनता रहा। जब उसकी तबीयत कुछ ठिकाने हुई तब
... कि पहिले उस रामदेई को पकड़ना चाहिये जो मे
... फंसा कर मकान के बाहर निकल गई है, परन्तु यह उसकी

चुके हैं तथा वहां जैसी जैसी घटनाएं हो गई हैं उसकी नजीर भी सुनने में न आवेगी।

गोपाल०। इन बखेड़ों का सबब भी उसी तिलिस्म को समझना चाहिये, उसी का आनन्द लूटने के लिये लोगों ने ऐसे बखेड़े और इसी के बदौलत लोगों की ताकत और हैसियत भी बढ़ी।

जीत०। बेशक यही बात है जैसे जैसे तिलिस्म के भेद खुलते गये तैसे तैसे पाप और लोगों की बदकिस्मती का जमाना सरकता गया।

सुरेन्द्र०। हमें तो कम्बख्त दारोगा के कामों पर आश्चर्य होता है, न मालूम किस सुख के लिये उस कम्बख्त ने ऐसे ऐसे कुकर्म किये!!

भरत०। (हाथ जोड़ के) मैं समझता हूं कि दारोगा के कुकर्मों का हाल महाराज ने अभी बिल्कुल नहीं सुना है, इसको कुछ पूर्ति तभी होगी जब हमलोग अपना किस्सा बयान कर चुकेंगे।

सुरेन्द्र०। ठीक है हमने भी आज आप ही का किस्सा सुनने की नीयत से आराम नहीं किया।

भरत०। मैं अपनी दुर्दशा बयान करने के लिये तैयार हूं।

जीत०। अच्छा तो अब आप शुरू करें।

भरत०। जो आज्ञा।

इतना कह कर भरतसिंह ने इस तरह अपना हाल बयान करना शुरू किया :—

मैं जमानिया का रहने वाला और एक जमींदार का लड़का हूं, मुझे इस बात का सौभाग्य प्राप्त था कि राजा गोपालसिंह जी मुझे अपना मित्र समझते थे यहां तक कि भरी मजलिस में भी मित्र कह कर मुझे सम्बोधन करते थे और घर में किसी तरह का पर्दा नहीं रखते थे। सबब था कि वहां के कर्मचारी लोग तथा अच्छे अच्छे रईस मुझसे डरते और मेरी इज्जत करते थे परन्तु दारोगा को यह बात पसन्द न थी। केवल राजा गोपालसिंह ही नहीं इनके पिता भी मुझे अपने लड़के की तरह मानते और प्यार करते थे, विशेष करके इसलिये कि

ों मित्रों की चाल चलन में किसी तरह की बुराई दिखाई नहीं देती

जमानिया में जो बेईमान और दुष्ट लोगों की एक गुप्त कमेटी उसका हाल आप लोग जान ही चुके हैं अतएव उसके विषय में तार के साथ कुछ कहना वृथा ही है, हां जरूरत पड़ने पर उसके य में इशारा ही कर देने से काम चल जायगा।

रियासतों में मामूली तौर पर तरह तरह की घटनाएं हुआ ही करती सलिये राजा गोपालसिंह को गद्दी मिलने के पहिले जो कुछ मुझ पर चुकी है उसे मामूली समझ कर मैं छोड़ देता हूं और उस समय अपना हाल बयान करता हूं जब इनकी शादी हो चुकी थी। में जो कुछ चालबाजी हुई थी उसका हाल आप सुन ही चुके हैं। जमानिया की वह गुप्त कुमेटी यद्यपि भूतनाथ की बदौलत टूट थी मगर उसकी जड़ नहीं गई थी क्योंकि वह कम्बख्त दारोगा तरह से साफ साफ बच रहा था और उसका कमजोर दफ्तर उसके जे में था।

गोपालसिंह जी की शादी हो जाने के बहुत दिन बाद एक दिन एक नौकर ने रात के समय जब कि वह मेरे पैरों में तेल लगा था कहा कि राजा गोपालसिंह की शादी असली लक्ष्मीदेवी के थ नहीं हुई बल्कि किसी दूसरी ही औरत के साथ हुई है और काम दारोगा ने रिश्वत लेकर किया है और इस काम में सुभीता के लिये गोपालसिंह जी के पिता को भी दारोगा ही ने मारा है। सुनने के साथ ही मैं चौंक पड़ा, मेरे ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा, उससे तरह तरह के सवाल किये जिसका जवाब उसने ऐसा तो दिया जिससे मेरी दिलजमयी हो जाती मगर इस बात पर बहुत दिया कि—जो कुछ मैं कह चुका हूं वह बहुत ठीक है।

मेरे जी में तो यही आया कि इसी समय उठ कर राजा गोपाल- के पास जाऊं और सब हाल कह दूं, परन्तु यह सोच कर कि ी काम में जल्दी न करनी चाहिये मैं चुप रह गया और सोचने

लगा कि यह कार्रवाई क्यों कर हुई और इसका ठीक ठीक पता किस तरह लग सकता है।

रात भर मुझे नींद न आई और इन्हीं बातों को सोचता रह गया, सवेरा होने पर स्नान सन्ध्या इत्यादि से छुट्टी पाकर मैं राजा साहब से मिलने के लिये गया, मालूम हुआ कि राजा साहब अभी महल से बाहर नहीं निकले हैं, मैं सीधे महल में चला गया। उस समय गोपालसिंहजी सन्ध्या कर रहे थे और इनसे थोड़ी ही दूर पर सामने बैठी हुई मायारानी फूलों का गजरा तैयार कर रही थी। उसने मुझे देखते ही कहा, "अहा! आज क्या है? मालूम होता है मेरे लिये आप कोई अनूठी चीज लाये हैं।"

इसके जवाब में मैं हंस कर चुप हो रहा और इशारा पा कर गोपालसिंह जी के पास एक आसन पर बैठ गया। जब वे सन्ध्योपासन से छुट्टी पा चुके तब मुझसे बातचीत होने लगी। मैं चाहता था कि मायारानी यहां से उठ जाय तब मैं अपना मतलब बयान करूं और वह वहां से उठती ही न थी और चाहती थी कि ये जो कुछ बयान करें उसे मैं भी सुन लूं। सम्भव था कि मैं मामूली बात करके मौका टाल देता और वहां से उठ खड़ा होता, क्योंकि उन दोनों को इस बात का विश्वास हो गया था कि ये जरूर कोई अनूठी बात कहने के लिए आये हैं। लाचार मुझे गोपालसिंहजी से इशारे ही में कह देना पड़ा कि मैं एकान्त में केवल आपही से कुछ कहा चाहता हूं! जब गोपालसिंह जी ने किसी काम के बहाने से उसे अपने सामने से उठाया तब वह भी मेरा मतलब समझ गई और कुछ मुंह बनाकर उठ खड़ी हुई।

हम दोनों यही समझते थे कि मायारानी वहां से चली गई मगर उस कम्बख्त ने हम दोनों की बातें जरूर सुन लीं क्योंकि उसी दिन से मेरी कम्बख्ती का जमाना शुरू हो गया। मैं ठीक नहीं कह सकता कि किस ढंग से उसने हमारी बातें सुन लीं। जिस जगह हम दोनों थे उसके पास ही की दीवार में एक छोटी खिड़की पड़ती थी,

शायद उसी जगह पिछवाड़े की तरफ खड़ी होकर उसने मेरी बातें सुन ली हों तो कोई ताज्जुब नहीं।

मैंने जो कुछ अपने नौकर से सुना था सब तो नहीं कहा केवल इतना कहा कि 'आपके पिता को दारोगा ही ने मारा है और इस लक्ष्मीदेवी की शादी में भी उसने कुछ गड़बड़ किया है, गुप्तरीति पर इसकी जांच करनी चाहिये। मगर अपने नौकर का नाम नहीं बताया क्योंकि मैं जैसा उसे बहुत चाहता था वैसा ही उसकी हिफाजत का भी खयाल रखता था। इसमें कोई शक नहीं कि मेरा वह नौकर बहुत ही होशियार और बुद्धिमान था बल्कि इस योग्य था कि राज्य का कोई भारी काम उसके सपुर्द किया जाता परन्तु वह जात का कहार था इस लिये किसी बड़े मर्तबे पर नहीं पहुँच सका।

गोपालसिंह जी ने मेरी बातें ध्यान देकर सुनी मगर इन्हें उन बातों का विश्वास न हुआ क्योंकि ये मायारानी को पतिव्रता की नाक और दारोगा को सचाई तथा ईमानदारी का पुतला समझते थे। मैंने इन्हें अपनी तरफ से बहुत समझाया और कहा कि यह बात चाहे झूठ ही हो मगर आप दारोगा से हर दम होशियार रहा कीजिये और उसके कामों को जांच की निगाह से देखा कीजिये मगर अफसोस इन्होंने मेरी बातों पर कुछ भी ध्यान दिया और मेरे साथ ही साथ अपने को भी बर्बाद कर दिया।

उसके बाद भी कई दिनों तक मैं इन्हें समझाता रहा और ये भी हां में हां मिला देते रहे जिससे विश्वास होता था कि कुछ और उद्योग करने से ये समझ जांयगे मगर ऐसा न हुआ। एक दिन मेरे उसी नौकर ने जिसका नाम हरदीन था मुझसे फिर एकान्त में कहा कि अब आप राजा साहब को समझाना बुझाना छोड़ दीजिये, मुझे निश्चय हो गया है कि उनकी बदकिस्मती के दिन आ गये हैं, वे आपकी बातों पर कुछ भी ध्यान न देंगे। उन्होंने बहुत ही बुरा किया कि आपकी बातें मायारानी और दारोगा पर प्रगट कर दीं। अब उनको समझाने के बदले आप अपनी जान बचाने की फिक्र कीजिये और अपने को हर

एक आफतसे घिरा हुआ समझिये। शुक्र है कि आपने सब बातें न कह दी नहीं तो और भी गजब हो जाता......

औरों को चाहे कैसा ही कुछ खयाल हो मगर मैं अपने खिदमतगार हरदीन की बातों पर विश्वास करता था और उसे अपना खैरखाह समझता था। उसकी बातें सुन कर मुझे गोपालसिंह पर बेहिसाब क्रोध चढ़ आया और उसी दिन से मैंने उन्हें समझाना बुझाना छोड़ दिया मगर इनकी मुहब्बत ने मेरा साथ न छोड़ा।

मैंने हरदीन से पूछा कि ये सब बातें तुझे क्योंकर मालूम हुई और होती हैं? मगर उसने ठीक ठीक न बताया, बहुत जिद करने पर कहा कि कुछ दिन और सब्र कीजिये, मैं इसका भेद भी आपको बता दूंगा।

दूसरे दिन जब कि सूरज अस्त होने में दो घण्टे की देर थी मैं अकेला अपने नजरबाग में टहल रहा था और इस सोच में पड़ा हुआ था कि राजा गोपालसिंह का भ्रम मिटाने के लिये अब क्या बन्दोबस्त करना चाहिये, उसी समय रघुबरसिंह मेरे पास आया और साहब सलामत करने के बाद इधर उधर की बातें करने लगा। बात ही बात में उसने कहा कि आज मैंने एक घोड़ा नेहायत उम्दा खरीद किया मगर अभी तक उसे दाम नहीं दिया गया है, आप उस पर सवारी करके देखिये, आप भी उसे पसन्द करें तो मैं उसका दाम चुका दूं; इस समय मैं उसे अपने साथ लेता आया हूं आप उस पर सवार हो लें और मैं अपने पुराने घोड़े पर सवार हो कर आपके साथ चलता हूं चलिये दो चार कोस का चक्कर लगा आवें।

मुझे घोड़े का बहुत ही शौक था, रघुबर की बातें सुन कर मैं खुश हो गया और यह सोच कर कि "अगर जानवर उम्दा होगा तो मैं उसका दाम देकर अपने लिए रख लूंगा" मैंने जवाब दिया कि देखें कैसा घोड़ा है, एक घोड़े की जरूरत तो मुझे भी थी। इसके जवाब में रघुबर ने कहा कि अच्छी बात है अगर आपको पसन्द आवे तो आप ही रख लीजिएगा।

दिनों मैं रघुबरसिंह को भला आदमी, अशराफ और अ

समझता था, मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि यह दरें का बेईमान और शैतान का भाई है, इसी तरह दारोगा को इतना बुरा नहीं समझता था और राजा गोपालसिंह की तरह विश्वास था कि जमानिया की उस गुप्त कुमेटी से इन दोनों कुछ भी सम्बन्ध नहीं है, मगर हरदीन ने मेरी आंखें खोल दीं और र कर दिया कि जो कुछ हम लोग सोचे हुए थे वह हमारी भूल

खैर मैं रघुबरसिंह के साथ ही साथ बाग के बाहर निकला दर्वाजे पर आया जहां कसे कसाये दो घोड़े दिखाई दिये जिनमें तो खास रघुबरसिंह का घोड़ा था और दूसरा नया बहुत ही दार घोड़ा था जिसकी रघुबरसिंह ने तारीफ की थी।

मैं उस घोड़े पर सवार होनेवाला ही था कि हरदीन दौड़ा हुआ हवास मेरे पास आया और बोला, "घर में बहूजी (मेरी स्त्री) न मालूम क्या हो गया है कि गिर कर बेहोश हो गई हैं और मुंह खून निकल रहा है, जरा चल कर देख लीजिये।"

हरदीन की बात सुन कर मैं तरद्दुद में पड़ गया और उसे साथ कर घर के अन्दर गया क्योंकि हरदीन बराबर जनाने में आया या करता था और उसके लिये किसी तरह का परदा न था। घर की दूसरी ड्योढ़ी मैंने लांघी तब वहां एकांत देख कर हर-न ने मुझे रोका और कहा, "जो कुछ मैंने आपको खबर दी थी वह कुल झूठ थी, बहूजी बहुत अच्छी तरह हैं।"

मैं०। तो तुमने ऐसा क्यों किया ?

हरदीन०। इसलिये कि रघुबरसिंह के साथ जाने से आपको है।

मैं०। क्यों ?

हरदीन०। इसलिये कि वह आपको धोखा देकर ले जा रहा है और आपकी जान लिया चाहता है, मैं उसके सामने आपको रोक नहीं सकता था, अगर रोकता तो उसे मेरी तरफदारी मालूम हो जाती

और मैं जान से मारा जाता और फिर आपको इन दुष्टों की दगाबाजी से बचाने वाला कोई न रहता, यद्यपि मुझे अपनी जान बढ़ कर प्यारी नहीं है तथापि आपकी रक्षा करना मेरा फर्ज और यह बात आपके आधीन है, यदि आप मेरा भेद खोल तो फिर मेरा इस दुनिया में रहना मुश्किल है !

मैं० । (ताज्जुब के साथ) तुम क्या कह रहे हो ? रघुवर तो ह दोस्त है ।

हर० । इस दोस्ती पर आप भरोसा न करें और इस समय मौके को टाल जायं, रात को मैं सब बातें आपको अच्छी समझा दूंगा । यदि आपको मेरी बातों पर बिश्वास न हो तो अगर एक तमञ्चा कमर में छिपा के लेते जाइये और पश्चिम कदापि न जा कर पूरब तरफ जाइये और हर तरह होशियार रहि इतनी होशियारी करने पर भी आपको मालूम हो जायगा कि मैं कुछ कह रहा हूं वह सच है या झूठ ।

हरदीन की बातों ने मुझे चक्कर में डाल दिया, कुछ सोच बाद मैंने कहा, "शाबाश ! हरदीन ! तुमने बेशक इस समय मेरी बचाई मगर खैर तुम चिन्ता न करो और मुझे इस दुष्ट के जाने दो अब मैं इसके पंजे में न फसूंगा और जैसा तुमने वैसा ही करूंगा ।"

इसके बाद मैं चुपचाप अपने कमरे में चला गया और एक भरा तमंचा भर कर अपने कमर में छिपा लेने के बाद बाहर निक मुझे देखते ही रघुवरसिंह ने पूछा, "कहिये क्या हाल है ?" जवाब दिया, "अब तो होश में आ गई है, वैद्यजी को बुला ला लिये कह दिया है तब तक हम लोग भी घूम आवेंगे ।"

इतना कह कर मैं उस घोड़े पर सवार हो गया, रघुवरसिंह अपने घोड़े पर सवार हुआ और मेरे साथ चला । शहर के निकलने के बाद मैंने पूरब तरफ घोड़े को घुमाया, उसी समय ...ह ने टोका और कहा, "उधर नहीं पश्चिम तरफ चलिये

दान बहुत अच्छा और सोहावना है।

मैं०। इधर भी तो कुछ बुरा नहीं है, मैं इधर ही चलूंगा।

रघु०। नहीं नहीं आप पश्चिम ही की तरफ चलिये, उधर एक और निकलेगा। दारोगा साहब भी इस घोड़े चाल देखा चाहते ने कह दिया था कि आप अपने घोड़े पर सवार हो कर जाइये ी जगह ठहरियेगा, हमलोग घूमते हुए उसी तरफ आवेंगे, वे वहां गये होंगे। और हम लोगों का इन्तजार कर रहे होंगे।

मैं०। ऐसा ही शौक था तो दारोगा साहब भी हमारे यहां आ और हम लोगों के साथ चलते।

रघु०। खैर अब तो जो हो गया सो हो गया अब उनका खयाल करना चाहिये। ी तरह

मैं०। मुझे भी पूरब तरफ जाना बहुत जरूरी है क्योंकि मग मी से मिलने का वादा कर चुका हूं।

इसी तौर पर मेरे उसके बहुत देर तक हुज्जत होती रही। मैं पूरब जाना चाहता था और वह पश्चिम तरफ जाने के लिये जोर रहा, नतीजा यह निकला कि न पूरब ही गये न पश्चिम ही गये, कर सीधे घर चले आये और यह बात रघुबरसिंह को बहुत ही मालूम हुई, उसने मुझसे मुंह फुला लिया और कुढ़ा हुआ अपने ला गया।

रा रहा सहा शक भी जाता रहा और हरदीन की बातों पर पूरा पूरा विश्वास हो गया मगर मेरे दिल में इस बात की उलझन ज्यादे पैदा हुई कि हरदीन को इन सब बातों की खबर क्यों ग जाती है। आखिर रात के समय जब एकान्त हुआ तब मुझसे र हरदीन से इस तरह की बातें होने लगीं।

मैं०। हरदीन! तुम्हारी बात ठीक निकली, उसने पश्चिम तरफ जाने के लिये बहुत जोर मारा मगर उसकी मैंने एक न सुनी।

हरदीन०। आपने बहुत ही अच्छा किया, नहीं तो इस समय बड़ा धेर हो गया होता।

मैं० । खैर यह तो बताओ कि यकायक वह मेरी जान का क्यों बन बैठा ? वह तो मेरी दोस्ती का दम भरता था !!

हर० । इसका सबब वही लक्ष्मीदेवी वाला भेद है, मैं अपनी पर अफसोस करता हूं, मुझसे चूक हो गई जो मैंने वह भेद आ खोल दिया, मैंने तो राजा गोपालसिंह का भला करना चाहा मगर उन्होंने नादानी करके मामला ही बिगाड़ दिया। उन्होंने जो आप से सुना था लक्ष्मीदेवी से कह कर दारोगा और रघुवीरसिंह आपका दुश्मन बना दिया, क्योंकि इन्हीं दोनों की बदौलत वह इ दर्जे को पहुंची, इन्हीं दोनों की बदौलत हमारे महाराज (गोपाल[illegible] [illegible]) मारे गये और इन्हीं दोनों ने लक्ष्मीदेवी ही को नहीं ब[illegible] सब [illegible] भर को बर्बाद कर दिया !

[illegible] । इस समय तो तुम बड़े ही ताज्जुब की बातें सुना रहे [illegible]

हर० । मगर इन बातों को आप अपने ही दिल में रख ज़माने [illegible] चाल के साथ काम करें नहीं तो आपको पछताना पड़ेगा मैं यह कदापि न कहूंगा कि आप राजा गोपालसिंह का ध्यान छोड़ और उन्हें डूबते दें क्यों कि वह आपके दोस्त हैं।

मैं० । जैसा तुम चाहते हो मैं वैसा ही करूंगा ! अच्छा यह बताओ कि लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह पर क्या बीती ?

हर० । उन दोनों को दारोगा ने अपने कब्जे में फंसा कर कैद कर दिया था, इतना तो मुझे मालूम है मगर इसके बाद का हा मैं कुछ भी नहीं जानता, न मालूम वे मार डाले गये या अभी तक क कैद हैं। हां उस गदाधरसिंह को इसका हाल शायद मालूम होगा ज रणधीरसिंह का ऐयार है और जिसने नानक की मां को धोखा दे के लिये कुछ दिन तक अपना नाम रघुबरसिंह रख लिया था, ज जिसकी बदौलत यहां की गुप्त कमेटी का भण्डा फूटा है। उसने इ रघुबरसिंह और दारोगा को खूब ही छकाया है। लक्ष्मीदेवी की जग सुन्दर की शादी करा देने की बाबत जो इनके और हेलासिंह के बी व्यवहार हुआ था उसकी नकल भी गदाधरसिंह रणधीरसि[illegible]

ऐयार के पास मौजूद है जो कि उसने समय पर काम देने के लिये पने हाथ से असल चीठियों से नकल की थी। अफसोस! सने रुपये की लालच में पड़ कर रघुबरसिंह और दारोगा को छोड़ या और इस बात को छिपा रक्खा कि येही दोनों उस गुप्त कमेटी मुखिया हैं। इस पाप का फल गदाधरसिंह को जरूर भोगना ड़ेगा, ताज्जुब नहीं कि एक दिन उन चीठियों की नकल से उसी को ख भोगना पड़े और वे चीठियां उसी के लिये काल बन जायं।

इस समय मुझे हरदीन की वे बातें अच्छी तरह याद आ रही हैं, मैं खता हूं कि जो कुछ उसने कहा था सब सच उतरा, उन चीठियों की कल ने खुद भूतनाथ का गला दबा दिया जो उन दिनों गदाधरसिंह नाम से मशहूर हो रहा था। भूतनाथ का हाल मुझे अच्छी तरह लूम है इधर जो कुछ हो चुका है वह सब भी मैं सुन चुका हूं मगर तना जरूर कहूंगा कि भूतनाथ के मुकद्दमे में तेजसिंह जी ने बहुत बड़ी लती की। गलती तो सभों ने की मगर तेजसिंहजी को ऐयारों का दार मान कर मैं सब के पहिले इन्हीं का नाम लूंगा। इन्होंने जब क्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाडली इत्यादि के सामने वह कागज का ड्डा खोला था और चीठियों को पढ़कर भूतनाथ पर इलजाम लगाया ा कि "बेशक ये चीठियां भूतनाथ के हाथ की लिखी हुई हैं" तो तना क्यों नहीं सोचा कि भूतनाथ की चीठियों के जवाब में हेलासिंह जो चीठियां भेजी हैं वे भी तो भूतनाथही के हाथ की लिखी हुई लूम पड़ती हैं! तो क्या अपनी चीठी का जवाब भी भूतनाथ ही पने हाथ से लिखा करता था?"

यहां तक कहकर भरतसिंह चुप हो रहे और तेजसिंह की तरफ खने लगे! तेजसिंह ने कहा "आपका कहना बहुत ठीक है बेशक उस मय मुझसे बहुत बड़ी भूल होगई उसमें की एक ही चीठी पढ़ कर ोध के मारे हमलोग ऐसे पागल होगये कि इस बात पर कुछ भी ान न दे सके। बहुत दिनों के बाद देवीसिंह यह बात सुझाई तब मलोगों को बहुत अफसोस हुआ और तब से हमलोगों का खयाल भी

बदल गया।"

भरतसिंह ने कहा, तेजसिंहजी ! इस दुनियां में बड़े २ चलाकों और होशियारों से यहां तक कि स्वयं विधाता ही से भूल होगईहै तो हम लोगों की क्या बात है ? मगर मजा तो यह है कि बड़ों की भूल कहे सुनने में नहीं आती इसी लिये आपकी भूल पर भी किसी ने ध्यान नहीं दिया। किसी कवि ने बहुत ही ठीक कहा है—

"को कहिसकै बड़ेन सों, लखे बड़ेई भूल।
दीन्हें दई गुलाब के, इन डारनि ये फूल॥

अस्तु अब मैं पुनः अपनी कहानी शुरू करता हूं।

इसके बाद भरतसिंह ने फिर इस तरह कहना शुरू किया:—

मैंने हरदीन से कहा कि "अगर यह बात है तो गदाधरसिंह से मुलाकात करनी चाहिये, मगर वह मुझसे अपने भेद की बातें क्यों कहने लगा ? इसके अतिरिक्त वह यहां रहता भी नहीं है कभी कभी आ जाता है साथ ही इसके यह जानना भी कठिन है कि वह कब आया और कब चला गया।"

हर०। ठीक है मगर मैं आपसे उसकी मुलाकात करा सकता हूं, आशा है कि वह मेरी बात भी मान लेगा और आपको असल असल हाल भी बता देगा। कल वह जमानियां में आनेवाला है।

मैं०। मगर मुझसे और उससे तो किसी तरह की मुलाकात नहीं है वह मुझपर क्यों भरोसा करेगा ?

हर०। कोई चिन्ता नहीं, मैं आपके उसके मुलाकात भी करा दूंगा।

हरदीन की इस बात ने मुझे और भी ताज्जुब में डाल दिया, मैं सोचने लगा कि इससे और गदाधरसिंह (भूतनाथ) से ऐसी गहरी जान पहिचान क्यों कर हो गई और वह इस पर क्यों भरोसा करता है ?

भरतसिंह ने अपना किस्सा यहां तक बयान किया था कि उनमें बिघ्न पड़ गया अर्थात् उसी समय एक चोबदार ने आकर

पढ़ने से जब उसे मालूम हुआ कि मैंने जो कुछ किया अपनी ही मां साथ किया तब वह बहुतही शर्मिन्दा हुआ, उस समय उन दोनों की जैसी कैफियत हुई मैं क्या बयान करूं आपलोग खुद सोच सम लीजिये ।

भूतनाथ की बात सुनकर सब कोई हंस पड़े, महाराज ने अपने पा बुलाकर बैठाया और कहा "भूतनाथ ! जरा एकदफे तुम इस किस्से को फिर बयान कर जाओ मगर जरा खुलासे तौर पर कहो ।"

भूतनाथ ने इस हाल को विस्तार के साथ ऐसे ढङ्ग पर दोहराया कि हंसते हंसते सभों का दम फूलने लगा । इसके बाद जब भूतनाथ को मालूम हुआ कि भरतसिंह अपना किस्सा बयान कर रहे हैं तब उसने भरतसिंह की तरफ देखा और कहा "मुझे भी तो आपके किस्से से कुछ सम्बन्ध है ।"

भरत० । बेशक, वही हाल तो मैं इस समय बयान कर रहा था ।

भूत० । (गोपालसिंह से) क्षमा कीजियेगा मैंने आपसे उस समय जब आप कृष्णाजिन्न बने हुए थे यह झूठ बयान किया था कि "राजा गोपालसिंह के छूटने के बाद मैंने उन कागजों का पता लगाया है जो इस समय मेरे ही साथ दुश्मनी कर रहे हैं इत्यादि" असल में वे कागज मेरे पास उसी जमाने में मौजूद थे जब जमानियां में मुझसे और भरतसिंहजी से मुलाकात हुई थी । आप यह हाल इनकी जुबानी सुन चुके होंगे ।

भरत० । हां भूतनाथ ! इस समय मैं वही हाल बयान कर रहा था अभी कह नहीं चुका ।

भूत० । खैर तो अभी श्रीगणेश ही है, अच्छा आप बयान कीजिये ।

भरतसिंह ने फिर इस तरह बयान करना शुरू किया :—

भरत० । दूसरे दिन आधी रात के समय जब मैं गहरी नींद में हुआ था हरदीन ने आ कर मुझे जगाया और कहा

दीजिये मैं गदाधरसिंह को ले आया हूं, उठिये और इनसे मुलाकात कीजिये, ये बड़े ही लायक और बात के धनी आदमी हैं" मैं खुशी खुशी उठ बैठा और बड़ी नर्मी के साथ भूतनाथ से मिला। इसके बाद मुझसे और भूतनाथ (गदाधरसिंह) से इस तरह बातचीत होने लगी :—

भूतनाथ०। साहब आपका हरदीन बड़ा ही नेक और दिलावर है। ऐसे जीवट का आदमी दुनिया में कम दिखाई देगा। मैं तो इसे अपना परम हितैषी और मित्र समझता हूं, इसने मेरे साथ जो कुछ भलाइयां की हैं उसका बदला मैं किसी तरह चुका ही नहीं सकता। मुझसे आपसे कभी की जान पहिचान नहीं, मुलाकात नहीं, ऐसी अवस्था में मैं पहिले पहिल बिना मतलब के आपके घर कदापि न आता, परन्तु इनकी इच्छा के विरुद्ध मैं नहीं चल सकता, इन्होंने यहां आने के लिये कहा और मैं बेधड़क चला आया। इनकी जुबानी मैं सुन भी चुका हूं कि आजकल आप किस फेर में पड़े हुए हैं और मुझसे मिलने की जरूरत आपको क्यों पड़ी अस्तु हरदीन की आज्ञानुसार मैं वह कागज का मुट्ठा भी आपको दिखाने के लिये लेता आया हूं जिससे आपको दारोगा और रघुबरसिंह की हरमजदगी और राजा गोपालसिंह की शादी का पूरा पूरा हाल मालूम हो जायगा मगर खूब याद रखिये कि इस कागज को पढ़ कर आप बेताब हो जायंगे, आपको बेहिसाब गुस्सा चढ़ आवेगा और आपका दिल बेचैनी के साथ तमाम भण्डा फोड़ देने के लिये तैयार हो जायगा। मगर नहीं, आपको बहुत बर्दाश्त करना पड़ेगा, दिल को सम्हालना और इन बातों को हर तरह से छिपाना पड़ेगा। मुझे हरदीन ने आपका बहुत ज्यादे विश्वास दिलाया है तब मैं यहां आया हूं और यह अनूठी चीज दिखाने के लिये तैयार हुआ हूं नहीं तो कदापि न आता।

मैं०। आपने बड़ी मेहरबानी की जो मुझ पर भरोसा किया और यहां तक चले आये, मेरी जुबान से आप का रत्ती भर भेद भी किसी को नहीं मालूम हो सकता इसे आप विश्वास रखिये। ...

मैं इस बात का निश्चय कर चुका हूं कि गोपालसिंह के मामले में आप कुछ भी दखल न दूंगा मगर इस बात का अफसोस जरूर है कि वह मेरा मित्र है और दुश्मनों ने उसे बेहतर फंसा रक्खा है।

भूत०। केवल आपही को नहीं इस बात का अफसोस मुझको भी है और मैं खुद गोपालसिंह को इस आफत से छुड़ाने का इरादा कर रहा हूं मगर लाचार हूं बलभद्रसिंह का और लक्ष्मीदेवी का अभी भी पता नहीं लगता और जब तक उन दोनों का पता न लग जाय तब तक इस मामले को उठाना बड़ी भूल है।

मैं०। मगर यह तो आपको निश्चय है न कि इसका इसका कर्ता धर्ता कम्बख्त दारोगा ही है?

भूत०। भला इसमें भी कुछ शक है? लीजिये इस कागज के मुट्ठे को पढ़ जाइये तब आपको भी विश्वास हो जायगा।

इतना कह कर भूतनाथ ने कागज का एक मुट्ठा निकाला और मेरे आगे रख दिया मैंने भी उसे पढ़ना शुरू किया। मैं आपसे नहीं कह सकता कि उन कागजों को पढ़ कर मेरे दिल की कैसी बुरी अवस्था हो गई और दारोगा तथा रघुबरसिंह पर मुझे कितना क्रोध चढ़ आया। आप लोग तो उसे पढ़ सुन चुके हैं अतएव इस बात को खुद समझ सकते हैं। मैंने भूतनाथ से कहा कि यदि तुम मेरा साथ दो तो मैं आज ही दारोगा और रघुबरसिंह को इस दुनिया से उठा दूं।

भूत०। इससे फायदा ही क्या होगा? और यह काम ही कितना बड़ा है? मुझे खुद इस बात का खयाल है और मैं लक्ष्मीदेवी का पता लगाने के लिये दिल से कोशिश कर रहा हूं। आपका हरदीन भी पता लगा रहा है। इस तरह समय के पहिले छेड़छाड़ करने से खुद अपने को झूठा बनना पड़ेगा और लक्ष्मीदेवी भी जहां की तहां पड़ी सड़ेगी या मर जायगी।

मैं०। ठीक है, अच्छा यह तो बताइये कि आप हरदीन की इज्जत क्यों करते हैं?

करना चाहिये ? इसके जवाब में भूतनाथ ने कहा कि अब पां सात दिन के बाद भरतसिंह को झूठमूठ हल्ला मचा देना चाहिये मुझको किसी ने जहर दे दिया, बल्कि कुछ बीमारों की सी नकल करके दिखा देनी चाहिये।

इसके बाद थोड़ी देर तक और भी भूतनाथ से बातचीत हो रही और दूसरे दिन फिर मिलने का वादा करके भूतनाथ बिदा हुआ।

इस घटना के बाद कई दफे भूतनाथ से मुलाकात हुई बल्कि कह चाहिये कि इनके और मेरे बीच में एक प्रकार की मित्रता हो गई और इन्होंने कई कामों में मेरी सहायता भी की।

जैसी कि आपुस में सलाह हो चुकी थी मुझे यह मशहूर कर पड़ा कि मुझे किसी ने जहर दे दिया साथ ही इसके कुछ बीमारी की नकल भी की गई जिससे मेरे नौकर पर कम्बख्त दारोगा को शक न हो जाय, मगर इससे कोई अच्छा नतीजा न निकला अर्थात् दारोगा को मालूम हो गया कि हरदीन उसका सच्चा साथी और खैरखाह नहीं है।

एक दिन रात के समय एकान्त में हरदीन ने मुझसे कहा, लीजिये अब दारोगा साहब को निश्चय हो गया कि मैं उसका सच्चा साथी नहीं हूं आज उसने मुझे अपने पास बुलाया था मगर मैं गया नहीं क्योंकि मुझे यह निश्चय हो गया कि जाने के साथ ही मैं उसके कब्जे में आ जाऊंगा और फिर किसी तरह जान न बचेगी, यों तो छिपे रहने से लड़ते झगड़ते जैसा होगा देखा जायगा अस्तु इस समय मुझे आपसे यह कहना है कि आज से मैं आपके यहां रहना छोड़ दूंगा और तब तक आपके पास न आऊंगा जब तक मैं दारोगा की तरफ से बेफिक्र न हो जाऊंगा, देखा चाहिये मेरे उसके क्यों कर निपटती है, वह मुझे मार कर निश्चिन्त होता है या मैं उसे जहन्नुम में पहुंचा कर कलेजा ठंढा करता हूं, मुझे अपने मरने का रंज कुछ नहीं है मगर इस बात का अफसोस जरूर है कि मेरे जाने के बाद

आपका मददगार यहां कोई भी नहीं है और कम्बख्त दारोगा आपको फंसाने में किसी तरह की कसर नहीं करेगा। खैर लाचारी है क्योंकि रे यहां रहने पर आपका कल्याण नहीं हो सकता, यों तो मैं छिपे छिपे कुछ न कुछ आपकी मदद जरूर करूंगा परन्तु आप जहां तक हो के होशियारी के साथ काम कीजिये।

मैं०। अगर यही बात है तो तुम्हारे भागने की कोई जरूरत नहीं मालूम होती। हम लोग दारोगा के भेदों को खोल कर खुल्लमखुल्ला उसका मुकाबला कर सकते हैं।

हर०। इससे कोई फायदा नहीं हो सकता क्योंकि हम लोगों के पास दारोगा के खिलाफ कोई सबूत नहीं है और न उसके बराबर ताकत है।

मैं०। क्या इन भेदों को हम गोपालसिंह से नहीं खोल सकते और ऐसा करने से भी कोई काम नहीं चलेगा?

हर०। नहीं ऐसा करने से जो कुछ बरस दो बरस गोपालसिंह जी की जिन्दगी है वह भी न रहेगी अर्थात् हम लोगों के साथ ही साथ वे भी मार डाले जायंगे। आप नहीं समझ सकते और नहीं जानते कि दारोगा की असली सूरत क्या है, उसकी ताकत कैसी है, और उसके मजबूत जाल किस कारीगरी के साथ फैले हुए हैं। गोपालसिंह अपने को राजा और हाकिमान समझते होंगे मगर मैं सच कहता हूं कि दारोगा के सामने उनकी कुछ भी हकीकत नहीं है, हां यदि राजा गोपालसिंह किसी तरह भी खबर किये बिना ही यकायक दारोगा को गिरफ्तार करके मार डालें तो बेशक वे राजा कहला सकते हैं मगर इस अवस्था में मायारानी उन्हें जीता न छोड़ेगी और लक्ष्मीदेवी का भेद जो का त्यों बना रह जायगा, वह भी किसी तहखाने में सूखी प्यासी मर जायगी।"

इसी तरह की बहुत सी बातें हरनामसिंह और मैं देर तक करते रहे और बहुत देर तक इन बातों का ख्याल होता रहा। अन्त में वह रुखसत हुआ कर घर से बाहर निकल गया और फिर उसका

पता न लगा।

रात भर मुझे नींद न आई और मैं हर तरह की बातें सोचता रह गया। सुबह को चारपाई से उठा, हाथ मुंह धोने के बाद कपड़े पहिर, हर्बे लगाये और राजा साहब की तरफ रवाना हुआ। जब उस तिमुहानी पर पहुंचा जहां से एक रास्ता राजा साहब के दीवानखाने की तरफ और दूसरा खास बाग की तरफ गया है तब उस जगह पर दारोगा साहब से मुलाकात हुई जो दीवानखाने की तरफ से चले हुए आ रहे थे।

प्रगट में मुझसे और दारोगा साहब से बहुत अच्छी तरह बातें सलामत हुई और उन्होंने उदासीनता के साथ मुझसे कहा, "आप दीवानखाने की तरफ कहां जा रहे हैं, राजा साहब तो खास बाग में चले गये, मेरे साथ चलिये, मैं भी उन्हीं से मिलने के लिये जा रहा हूं। सुना है कि रात से उनकी तबीयत बहुत खराब हो रही है।"

मैं०। (ताज्जुब के साथ) क्यों क्यों खुशाक तो है?

दारोगा०। अभी अभी पता लगा है कि आधी रात के बाद से उन्हें बेहिसाब दस्त और कै आ रहे हैं, आप कृपा करके यदि मोहन वैद्य को अपने साथ लेते आवें तो बड़ा काम हो मैं खुद उनकी तरफ जाने का इरादा कर रहा था।

दारोगा की बात सुन कर मैं घबड़ा गया, राजा साहब की बीमारी का हाल सुनते ही मेरी तबीयत उदास हो गई और मैं 'बहुत अच्छा' कह कर उल्टे पैर लौटा और मोहन जी वैद्य की तरफ रवाना हुआ।

यहां तक अपना हाल कह कर कुछ देर के लिये भरतसिंह चुप हो गये और दम लेने लगे। उसी समय जीतसिंह ने महाराज की तरफ देखा और कहा, "भरतसिंहजी का किस्सा भी दर्बारे आम में सभों के सामने ही सुनने लायक है।

महाराज०। बेशक ऐसा ही है (गोपालसिंह से) आप की क्या राय है?

गोपाल०। महाराज की इच्छा के विरुद्ध मैं कुछ बोल नहीं सकता

नहीं तो मैं भी यही चाहता था कि और नकाबपोशों की तरह इनका किस्सा भी कैदियों के सामने ही सुना जाय।

और सभों ने भी यही राय दी, आखिर महाराज ने हुक्म दिया कि "कल दरबार-आम किया जाय और कैदी लोग दरबार में लाये जायं।"

दिन पहर भर से कुछ कम बाकी था जब यह छोटा सा दरबार बर्खास्त हुआ और सब कोई अपने अपने ठिकाने चले गये, कुंअर आनन्दसिंह शिकारी कपड़े पहिन कर तारासिंह को साथ लिए हुए महल के बाहर आये और दोनों दोस्त घोड़े पर सवार हो जंगल की तरफ रवाना हो गये।

दसवाँ बयान

घोड़े पर सवार तारासिंह को साथ लिए हुए कुंअर आनन्दसिंह जंगल जंगल घूमते और साधारण ढंग पर शिकार खेलते हुए बहुत दूर निकल गये और जब दिन बहुत कम बाकी रह गया तब धीरे धीरे घर की तरफ लौटे।

हम ऊपर के किसी बयान में लिख आये हैं कि 'अटारी पर एक सजे हुए बंगले में बैठी किशोरी, कामिनी और कमलिनी वगैरह ने जंगल से निकल कर घर की तरफ आते हुए कुंअर आनन्दसिंह और तारासिंह को देखा, तथा यह भी देखा कि दस बारह नकाबपोशों ने जंगल में से निकल इन दोनों पर तीर चलाये और ये दोनों उनका पीछा करते हुए पुनः जंगल के अन्दर घुस गये इत्यादि।'

परन्तु यह वही मौका है जिसका हम जिक्र कर रहे हैं। इसी समय कमला ने एक लौंडी की जुबानी इन्द्रजीतसिंह को इस बात की खबर कहला दी थी, परन्तु खबर पाते ही कुंअर इन्द्रजीतसिंह भैरोसिंह तथा और भी बहुत से आदमी आनन्दसिंह की मदद के लिये चले गये थे।

असल बात यह थी कि भूतनाथ की चालाकी से शर्मिन्दगी उठा कर भी नानक ने सब्र नहीं किया बल्कि पुनः इन लोगों का पीछा

किया और उसकी दफे इस ढंग से जाहिर हुआ। वह बहुत देर और दूर से इसी घात में लगा हुआ था कि मौका मिले तो आनन्दसिंह को तीर का निशाना बनावे और इसी तरह बारी बारी से अप दुश्मनों की जान ले कर कलेजा ठण्ढा करे मगर उसकी यह चालाकी भी काम न आई, आनन्दसिंह और तारासिंह की चालाकी और उन घोड़ों की चञ्चलता के कारण उसका निशाना कारगर न हुआ पर उन्होंने तेजी से उसके घर पर पहुंच कर सभों को हर तरह से मजबूर कर दिया। तब तक मदद लिये हुए कुंअर इन्द्रजीतसिंह भी पहुंचे और आठ आदमियों के सहित बेईमान नानक को गिरफ्तार किया। यद्यपि उस समय यह मालूम हो गया कि इसके साथियों से कई आदमी निकल गये मगर इस बात की कुछ परवाह न की और जो कुछ गिरफ्तार हो गये थे उन्हीं को ले कर सब कोई घर तरफ रवाना हो गये।

कम्बख्त नानक पर हर तरह की रियायत की गई, बहुत सजा पाने योग्य होने पर भी उसे किसी तरह की सजा न दी गई, इस खयाल से बिल्कुल साफ छोड़ दिया गया शायद फिर सुधर जाय मगर नहीं :—

भूयोऽपि सिक्ता प्रयसा घृतेन

न निम्ब वृक्षो मधुरत्वमेति

अर्थात् "नीम न मीठी होय सींच गुड़ घीव से।

आखिर नानक को यह दुःख भोगना ही पड़ा जो उसकी किस्मत में बदा हुआ था।

जिस समय नानक गिरफ्तार कर के लाया गया और लोगों ने उसका हाल सुना उस समय सभों को उसकी नादानी पर बहुत रंज हुआ। महाराज की आज्ञानुसार वह कैदखाने में पहुंचाया गया। सभों को निश्चय हो गया कि अब वह किसी तरह छूट नहीं सकता।

दूसरे दिन दर्बार आम का बन्दोबस्त किया गया, कैदियों का [मु]कदमा सुनने के लिये बड़े शौक से लोग इकट्ठा होने लगे। हथक[ड़ि]यों और बेड़ियों से जकड़े हुए कैदी लोग हाजिर किये गये और [ऐ]यारों तथा ऐयारों को साथ लिये हुए महाराज भी दर्बार [मे]ं आ कर एक ऊंची गद्दी पर बैठ गये। आज के दर्बार में भी मामूली [से] बहुत ज्यादे भीड़ थी और कैदियों का मुकदमा सुनने के लिये सभी [बे]तावे हो रहे थे। भरतसिंह, दलीपसिंह, अर्जुन तथा उनके और भी [स]ाथी जो तिलिस्म के बाहर होने बाद अपने अपने घर चले गये [थे] और अब वे लौट आये हैं अपने अपने चेहरे पर नकाब डाल कर [दर्]बार में राजा गोपालसिंह के पास बैठ गये और महाराज के हुक्म [क]ा इन्तजार करने लगे।

महाराज का इशारा पा कर भरतसिंह खड़े हो गये और उन्होंने [दा]रोगा तथा जैपाल की तरफ देख कर कहा :—

"दारोगा साहब ! जरा मेरी तरफ देखिये और पहिचानिये कि [मैं] कौन हूं। जैपाल तू भी इधर निगाह कर।"

इतना कह कर भरतसिंह ने अपने चेहरे पर से नकाब उतार दी [औ]र एक दफे चारों तरफ देख कर सभों का ध्यान अपनी तरफ खैंच [लि]या। सूरत देखते ही दारोगा और जयपाल थर थर कांपने लगे। [दा]रोगा ने लड़खड़ाती हुई आवाज से कहा, "ओफ!! भरतसिंह!! [न]हीं नहीं भरतसिंह कहां, उसे मरे बहुत दिन हो गये, यह तो कोई [ऐ]यार है।"

भरत०। नहीं नहीं दारोगा साहब ! मैं ऐयार नहीं हूं मैं वही भर[त]सिंह हूं जिसे आपने हद से ज्यादा सताया था, मैं वही भरतसिंह हूं [जि]सके मुंह पर आपने मिर्च का तोबड़ा चढ़ाया था, मैं वही भरत[सिं]ह हूं जिसे आपने अंधेरे कुंए में लटका दिया था। सुनिये मैं अपना [कि]स्सा बयान करता हूं और यह भी कहता हूं [illegible] [जा]न क्यों कर बची। जयपाल सिंह ! आप भी सुनिये और हुंकारी [भ]रते जाइये।

इतना कह कर अर्जुनसिंह ने अपना किस्सा आदि से कहना आरम्भ किया जैसा कि हम ऊपर बयान कर आये हैं और उसके बा यों कहने लगे :—

अर्जु० । दारोगा की बातों ने मुझे पगला दिया और मैं उलटे पै मोहनजी वैद्य को बुलाने के लिये रवाना हुआ। मुझे इस बात का रत्ती भर शक न था कि मोहनजी वैद्य और दारोगा साहब एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं अथवा इन दोनों में हमारे लिये कुछ बातें तै पा चुकी हैं। मैं बेधड़क उनके मकान पर जा पहुंचा और इत्तला करने के बाद उनके एकान्त वाले कमरे में जा पहुंचा जहां उन्होंने मुझे बुला भेजा था। उस समय वे अकेले बैठे माला जप रहे थे नौकर मुझे वहां तक पहुंचा कर बिदा हो गया और मैंने उनके पास बैठ कर दारोगा साहब का हाल बयान किया और साथ जाने के लिये कहा। जवाब में वैद्यजी यह कह कर कि मैं दवाओं का बन्दोबस्त करके अभी आपके साथ चलता हूं, उठ खड़े हुए और आलमारी में से कई तरह की शीशियां निकाल निकाल जमीन पर रखने लगे। उसी बीच में उन्होंने एक छोटी सी शीशी निकाल कर मेरे हाथ में दी और कहा, "देखिये यह मैंने एक नये ढंग की ताकत की दवा तैयार की है आल तो दूर रहे इसके सूंघने ही से तुरन्त मालूम होता है कि बदन में ए तरह की ताकत आ रही है। लीजिये जरा सूंघ के अन्दाज तो कीजिये।"

मैं वैद्यजी के फेर में पड़ गया और शीशी का मुंह खोल कर सूंघने लगा। इतना तो मालूम हुआ कि उसमें कोई खुशबूदार चीज है मग फिर तनोबदन की सुध न रही। जब मैं होश में आया तो अपने को हथकड़ी बेड़ी से मजबूर एक अन्धेरी कोठड़ी में कैद पाया। नहीं क सकता कि वह दिन का समय था या रात का। कोठड़ी के एक को में चिराग जल रहा था और दारोगा तथा जयपाल हाथ में नं लिये सामने बैठे हुए थे।

। (दारोगा से) अब मालूम हुआ कि आपने इसी काम

-लिये मुझे वैद्यजी के पास भेजा था।

दारोगा०। बेशक इसीलिये, क्योंकि तुम मेरी जड़ काटने के लिये तैयार हो चुके थे।

मैं०। तो फिर मुझे कैद कर रखने से क्या फायदा? मार कर बखेड़ा निपटाइये और फिर बेखटके आनन्द कीजिये।

दारोगा०। अगर तुम मेरी बात न मानोगे तो बेशक मुझे ऐसा ही करना पड़ेगा।

मैं०। मानने की कौन सी बात है? मैंने तो अभी तक कोई ऐसा काम नहीं किया जिससे आपको किसी तरह का नुकसान पहुंचे।

दारोगा०। ये सब बातें तो रहने दो क्योंकि तुम और हरनाम मिलकर जो कुछ कर चुके थे और जो किया चाहते थे उसे मैं खूब जानता हूं मगर यह बात है कि अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें इस कैद से छुट्टी दे सकता हूं नहीं तो मौत तो तुम्हारे लिये रक्खी ही हुई है।

मैं०। खैर तो बताइये तो सही कि वह कौन सा काम है जिसके करने से मुझे छुट्टी मिल सकती है?

दारोगा०। यही कि तुम एक चीठी इस रघुबरसिंह अर्थात् जयपाल के नामकी लिख दो जिसमें यह बात हो कि "लक्ष्मीदेवी के बदले में सुन्दर को मायारानी बना देने में जो कुछ मेहनत की गई है वह हम तुम दोनों ने मिलकर की है अतएव उचित है कि इस काम में जो कुछ तुमने फायदा उठाया है उसमें से आधा मुझे बांट दो नहीं तो तुम्हारे लिए अच्छा न होगा।"

मैं०। ठीक है, मैं आपका मतलब समझ गया, खैर आज तो नहीं मगर कल जैसा आप कहते हैं वैसा ही कर दूंगा।

दारोगा०। आखिर एक दिन की देर करने में तुमने फायदा ही क्या सोच लिया है?

मैं०। सो भी कल ही बताऊंगा।

दारोगा०। अच्छा क्या हर्ज है कल ही सही।

इतना कह कर दारोगा चला गया और मैं भूखा प्यासा उसी

कोठड़ी में पड़ा हुआ तरह तरह की बातें सोचने लगा। क्योंकि उस दिन दारोगा ने मेरे खाने पीने के लिए कुछ भी प्रबन्ध न किया। मुझे निश्चय हो गया कि इस ढंग की चीठी लिखाने के बाद दारोगा मुझे जान से मार डालेगा और मेरे मारने बाद यही चीठी मेरी बदनामी का सबब बनेगी, मेरे दोस्त गोपालसिंह मुझको बेईमान समझेंगे और तमाम दुनिया मुझे कमीना खयाल करेगी अस्तु मैंने दिल में ठान ली कि चाहे जान जाय या रहे मगर इस तरह की चीठी मैं कदापि न लिखूंगा। आखिर मरना जरूर है फिर कलंक का टीका जान बूझ कर अपने माथे क्यों लगाऊं?

दूसरे दिन रघुबर को साथ लिये हुए दारोगा पुनः मेरे पास आया।

भरतसिंह ने अपना हाल यहां तक बयान किया था कि राजा गोपालसिंह ने बीच ही में टोका और पूछा, "क्या रघुबरसिंह भी इसी जयपाल का नाम है?"

भरत०। जी हां इसका नाम रघुबरसिंह भी है कुछ दिन के लिए इसने अपना नाम भूतनाथ भी रख लिया था।

गोपाल०। ठीक है, मुझे इस बारे में धोखा हुआ, नहीं बल्कि मेरे खजानची ही ने मुझे धोखा दिया, खैर तब क्या हुआ?

भरत०। हां तो दूसरे दिन जयपाल को साथ लिये हुए दारोगा पुनः मेरे पास आया और बोला, "कहो चीठी लिख देने के लिए तैयार हो या नहीं?" इसके जवाब में मैंने कहा कि 'नहीं मर जाना मंजूर है मगर झूठे ही कलंक का टीका अपने माथे पर लगाना मुझे मंजूर नहीं?'

दारोगा ने मुझे कई तरह से समझाया बुझाया और धोखे में डालना चाहा मगर मैंने उसकी एक न सुनी आखिर दोनों ने मिल कर मुझे मारना शुरू किया, यहां तक मारा कि मैं बेहोश हो गया, जब होश में आया तो फिर उसी तरह अपने को कैद पाया। भूख और ... के मारे मेरा बुरा हाल हो रहा था और मार के सबब

साम बदन चूर चूर हो रहा था। तीसरे दिन दोनों शैतान पुनः मेरे पास आये और जब मैंने दारोगा की बात न मानी तो उसने घोड़ों के दाना खाने वाले तोबड़े में चूर किया हुआ मिरचा भर कर मेरे मुंह पर चढ़ा दिया। हाय हाय उस तकलीफ को मैं कभी नहीं भूल सकता।

यहां तक कह कर भरतसिंह चुप हो गये और दारोगा तथा जयपाल की तरफ देखने लगे। वे दोनों डर नीचा किये हुए जमीन की तरफ देख रहे थे और डर के मारे दोनों का बदन कांप रहा था। भरतसिंह ने पुकार के कहा, "कहिये दारोगा साहब! जो कुछ मैं कह रहा हूं वह सच है या झूठ?" दारोगा ने इसका कुछ भी जवाब न दिया। उस समय दरबार में जितने आदमी बैठे थे क्रोध के मारे सभों का बुरा हाल था और सब कोई दारोगा की तरफ जलती हुई निगाह से देख रहे थे। भरतसिंह ने फिर इस तरह कहना शुरू किया :—

दारोगा के सम्बन्ध में मेरा किस्सा वैसा दिलचस्प नहीं है जैसा बलीरशाह और अर्जुनसिंह का आप लोग सुनेंगे, क्योंकि उनके साथ बड़ी विचित्र घटनायें हो चुकी हैं, बल्कि यों कहना चाहिये कि मेरा तमाम किस्सा उनके एक एक दिन की घटना का मुकाबला भी नहीं कर सकता परन्तु साथ ही इसके यह बात जरूर है कि मैंने न तो कभी किसी के साथ किसी तरह की बुराई की और न किसी से विशेष मेल जोल या हंसी दिल्लगी रखता था, फिर भी उन दिनों जमानिया की यह दशा थी कि अच्छे ढंग पर जिन्दगी बिताने वालों में भी सुख की नींद न सो सका और राजा साहब की दोस्ती की बदौलत मुझे इस तरह का दुःख भोगना पड़ा। इस हरामखोर दारोगा ने ऐसे ऐसे कर्म किये हैं कि जिनका पूरा पूरा बयान हो ही नहीं सकता और न मेरी समझ में आता है कि दुनिया में कौन सी ऐसी सजा है जो इसके योग्य समझी जाय। अस्तु अब मैं संक्षेप में अपना हाल समाप्त करता हूं।

अपने मन के माफिक चीठी लिखाने की नीयत से आठ दिन कमबख्त दारोगा ने मुझे बेहिसाब तकलीफें दीं, मिर्चे का तो बड़ा मुंह पर चढ़ाया, लहरी की राई का लेप मेरे बदन पर किया, कूए लटकाया, गन्दी कोठड़ी में बन्द किया, जो जो सूझा सब कुछ और इतने दिनों तक बराबर भूखा रक्खा मगर न मालूम क्या स है कि मेरी जान न निकली। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता था कि कि तरह मुझे मौत दे जिसमें इस दुःख से छुट्टी मिले। मैं इतना कम हो गया था कि मुझमें बात करने की भी ताकत न थी।

एक दिन आधी रात के समय मैं उसी कोठड़ी में पड़ा पड़ा मौ का इन्तजार कर रहा था कि यकायक कोठड़ी का दरवाजा खुला एक नकाबपोश दाहिने हाथ में नंगी तलवार और बाएं हाथ में छोटी सी गठड़ी लिये हुए कोठड़ी के अन्दर आता हुआ दिखाई हाथ में जो तलवार लिये हुए था उसके अतिरिक्त उसके कमर में तलवार और भी थी। कोठड़ी के अन्दर आते ही उसने भीतर दरवाजा बन्द कर दिया और मेरे पास चला आया। हाथ की गठ और तलवार जमीन पर रख मुझसे चिमट गया और रोने लगा उसकी ऐसी मुहब्बत देख मैं चौंक पड़ा और मुझे तुरन्त मालूम गया कि यह पुराना खैरखाह "हरदीन" है। उसके चेहरे से नका हटाकर मैंने उसकी सूरत देखी और रोने में मैंने भी उसका साथ दि

थोड़ी ही देर बाद हरदीन मुझसे अलग हुआ और बोला, "किसी न किसी तरह यहाँ तक पहुँच तो गया मगर यहाँ से नि भागना जरा कठिन है, तथापि आप घबड़ाएं नहीं, मैं एक दफे दुश्मन को सताये बिना नहीं रहता। अब आप शीघ्र उठें और कुछ मैं खाने पीने के लिये लाया हूं, उसे भोजन करके चैतन्य जायं।"

जो गठड़ी हरदीन लाया था उसमें खाने पीने का सामान उसने मुझे भोजन कराया, पानी पिलाया और इसके बाद मेरे हाथ

बार देकर बोला, "बस अब आप उठिये और मेरे पीछे

[illegible] आइये, इतना [illegible] नहीं [illegible] कि मैं आप से [illegible] [illegible]
[illegible] के अतिरिक्त [illegible] [illegible]
[illegible] हैं, यहां से निकलने के लिये [illegible] बहुत [illegible]

भोजन करते [illegible] कुछ [illegible] [illegible] मिलने का [illegible] [illegible] खड़ा हुआ और [illegible] बाद [illegible] बाहर निकल [illegible] मैं [illegible] के पीछे [illegible] हूं [illegible] [illegible] चुका [illegible] था और [illegible] [illegible] नहीं [illegible] [illegible] है और [illegible]

खैर मैं [illegible] के बाहर निकल कर [illegible] आये और [illegible] [illegible] ने [illegible] कहा, "[illegible] [illegible] से [illegible] [illegible] मिल [illegible] जायगा।"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुए, लगभग पचास कदम [illegible] के बाद [illegible] [illegible] [illegible] मिली जिन्हें [illegible] बाद हम [illegible] में पहुंचे [illegible] बहुत लम्बा चौड़ा [illegible] [illegible] का बना हुआ था। [illegible] [illegible] में पहुंचे [illegible] [illegible] और जयपाल [illegible] के साथ [illegible] हुए [illegible] ने [illegible] कुछ [illegible] न की और कहा, "इन दोनों के [illegible] मैं [illegible] अकेला हो [illegible] हूं।"

हरदीन मुझे अपने पीछे करने के बाद अड़ कर खड़ा हो गया उसने दारोगा को सैकड़ों गालियां दीं और मुकाबला करने के ललकारा मगर उन दोनों की हिम्मत न पड़ी कि आगे बढ़ें और हरदीन का मुकाबला करें। कुछ देर तक खड़े खड़े देखने और सोचने बाद दारोगा ने अपने जेब में से एक छोटा सा गोला निकाला इस दोनों की तरफ फेंका। हरदीन समझ गया कि जमीन पर गि के साथ ही इसमें से बेहोशी का धूआं निकलेगा। उसने अपने मुझे भी भागने का इशारा किया। गोला जमीन पर गिर कर और उसमें से बहुत सा धूआं निकला मगर हम दोनों वहां से हट थे इसीलिये उसका कुछ असर न हुआ। उस समय दारोगा ने दोनों की तरफ फेंकने के लिये दूसरा गोला निकाला।

उस दालान के बीचो बीच में एक छोटा सा चबूतरा संग का बना हुआ था मगर हम दोनों यह नहीं जानते थे कि इसमें क्या है। दारोगा को दूसरा गोला निकालते देख हम दोनों उस पर चढ़ गये मगर उस पर से उतर कर भाग न सके। चढ़ने के ही चबूतरा हिला और हम दोनों को लिये जमीन के अन्दर धंस गया। साथ ही न मालूम किस चीज के असर से हम दोनों बेहोश हो गये। जब होश में आये तो चारों तरफ अन्धकार ही अन्ध दिखाई दिया, नहीं कह सकते कि हम दोनों कितनी देर तक रहे।

कुछ देर तक चुपचाप बैठे रहने के बाद सामने की तरफ उजाला मालूम हुआ और वह उजाला धीरे धीरे बढ़ने लगा। हमने समझा कि सामने कोई दरवाजा है और उसमें से सुब सुफेदी आ रही है, हम दोनों उठ खड़े हुए और उसी उजाले की रवाना हुए। वास्तव में वैसा ही था जैसा हम लोगों ने सोचा कई कदम चलने के बाद दरवाजा मिला जिसे लांघ कर हम उसी बुर्ज वाले बाग में जा पहुंचे, जहां दोनों कुमारों से मुलाकात

इसके बाद बाहर का हाल बहुत दिनों तक कुछ भी न मा

[illegible]ाया कि क्या हो रहा है और क्या हुआ, बहुत दिनों तक [illegible] भी बाहर निकलने के लिये उद्योग करते रहे परन्तु सब व्यर्थ हुआ। एकाएक [illegible] से छुट्टी तभी मिली जब दोनों कुमारों के दर्शन [illegible] बाद दलीपशाह से भी इसी बाग में मुलाकात हुई [illegible] और [illegible] का किस्सा सुनने से आप लोगों को मालूम होगा। बस यही बा[illegible] मेरा किस्सा है जब आप लोग दलीपशाह की कहानी सुनेंगे तब [illegible] कुछ आनन्द मिलेगा और दारोगा तथा जयपाल वगैरह की बदमाशी का पता लगेगा (एक नकाबपोश की तरफ बता कर) मेरा [illegible] शेरखाह [illegible] भी था जो इतने दिनों तक मेरे दुःख का साथी बना रहा और अन्त में मेरे साथ ही कैद से छूटा।

भरतसिंह की कथा समाप्त होने के बाद दरबार बर्खास्त किया गया और महाराज ने हुक्म दिया कि 'कल दरबार में दलीपशाह अपना किस्सा बयान करेंगे।'

ग्यारहवाँ बयान

दूसरे दिन पुनः उसी ढंग का दरबार लगा और सब कोई अपनी [illegible] जगह पर बैठ गये।

इशारा पाकर दलीपशाह उठ खड़ा हुआ और उसने अपने चेहरे से नकाब हटा कर दारोगा, जयपाल, बेगम और नागर वगैरह की तरफ देखा और कहा, "आप लोगों की खुशकिस्मती का जमाना तो बीत गया, अब वह जमाना आ गया है कि आप लोग अपने किये का फल भोगें और मुझे [illegible] लोगों को जहन्नुम में पहुंचाने [illegible] कृपा से वही लोग आज मुझे हंसते [illegible] देते हैं। और मुझे इन बातों से कोई मतलब नहीं [illegible] खैर जो महाराज के हुक्म से होगा मुझे अपना किस्सा बयान करने [illegible] बयान करता हूँ [illegible] (लोगों की तरफ देख कर) [illegible]

महाराज ने भूतनाथ का कसूर माफ करके उसे अपना ऐ
पूछने वाले हैं मैं अपने किस्से में उन बातों का जिक्र छोड़ता जा
[illegible] नाथ की बदनामी होती है, इसके अतिरिक्त भूतनाथ
[illegible] महाराज के आगे पेश करने के लिये स्वयम् अपनी जी
आप [illegible] है जिससे महाराज को उसका पूरा हाल मालूम हो जा
मुझे कुछ कहने की जरूरत नहीं है।

मैं मिर्जापुर का रहने वाला दीनदयालसिंह ऐयार का लड़का
मेरा बाप महाराज शिवपुर के यहां रहता था और वहां उसकी
इज्जत और कदर थी। उसने मुझे ऐयारी सिखाने में किसी तरह
त्रुटि नहीं की जहां तक हो सका उसने दिल लगा कर मुझे ऐ
सिखाई और मैं भी इस फन में खूब होशियार हो गया परन्तु पि
मरने बाद किसी रियासत में नौकरी नहीं की। मुझे अपने बाप
जगह मिलती थी और महाराज मुझे बहुत चाहते भी थे, मगर
पिता के मरने के साथ ही रियासत छोड़ दी और अपने जन्म
मिर्जापुर में चला आया, क्योंकि मेरा बाप मेरे लिये बहुत दौ
छोड़ गया था और मुझे खाने पीने की कुछ परवाह न थी। पिता
देहान्त के साल भर पहिले ही मेरी मां मर चुकी थी अतएव केवल
और मेरी स्त्री दो ही आदमी अपने घर के मालिक थे।

जमानिया की रियासत से मुझे किसी तरह का सम्बन्ध नहीं
परन्तु इसलिये कि मैं एक नामी ऐयार का लड़का और खुद भी ऐ
था तथा बहुत से ऐयारों से गहरी जान पहिचान रखता था मुझे
तरफ की खबर बराबर मिला करती थी, इसी तरह जमानिया में
कुछ चालबाजियां हुआ करती वह भी मुझसे छिपी हुई न थी।
नाथ की स्त्री और मेरी स्त्री आपुस में मौसेरी बहिन होती है
भूतनाथ को जमानिया से बहुत घना सम्बन्ध हो गया था इस
जमानिया का हाल जानने के लिये मैं उद्योग भी किया करता
मगर उसमें किसी तरह का दखल नहीं देता था। (दारोगा की त
(करके) [illegible] दारोगा ने रियासत पर अपना

ठगने की नीयत से विचित्र ढोंग रच लिया था, शादी नहीं की थी बाबाजी तथा ब्रह्मचारी के नाम से अपने को प्रसिद्ध कर रक्खा था और मौके मौके पर लोगों को कहा करता था कि 'मैं तो साधु आदमी मुझे रुपये पैसे की जरूरत ही क्या है मैं तो देवाधव की भलाई और परोपकार में अपना समय बिताना चाहता हूं, इत्यादि।' परन्तु वास्तव में यह परले सिरे का बेईमान और लालची था जिसके विषय में कुछ कहना मैं पसन्द नहीं करता।

मेरे पिता और इन्द्रदेव के पिता दोनों ही दोस्त और देखादेखी में एक ही गुरु के शिष्य थे अस्तु मुझमें और इन्द्रदेव में भी उसी प्रकार की दोस्ती और मुहब्बत थी इसलिये मैं प्रायः इन्द्रदेव से मिलने के लिये उनके घर जाया करता और कभी कभी वे भी मेरे घर आया करते। जरूरत पड़ने पर इन्द्रदेव की इच्छानुसार मैं उनका कुछ काम भी कर दिया करता और उन्हीं के यहां कभी कभी इस कमबख्त दारोगा से भी मुलाकात हो जाया करती थी। बल्कि यों कहना चाहिये कि इन्द्रदेव ही के सबब से दारोगा, जैपाल राजा गोपालसिंह और भरतसिंह तथा जमानिया के और भी कई नामी आदमियों से मेरी मुलाकात हुई और साहब सलामत हो गई थी।

जब भूतनाथ के हाथ बेचारा दयाराम मारा गया तब से मुझमें और भूतनाथ में एक प्रकार की खिचाखिची हो गई थी और वह खिचाखिची दिनों दिन बढ़ती ही गई यहां तक कि कुछ दिनों बाद हम दोनों की साहब सलामत भी छूट गई।

एक दिन मैं इन्द्रदेव के यहां बैठा हुआ भूतनाथ के विषय में बातचीत कर रहा था क्योंकि उन दिनों यह खबर बड़ी तेजी के साथ मशहूर हो रही थी "गदाधरसिंह (भूतनाथ) मर गया।" परन्तु उस समय इन्द्रदेव इस बात पर जोर दे रहे थे कि भूतनाथ मरा नहीं, कहीं छिप कर बैठ गया है, कभी न कभी यकायक प्रकट हो जायगा। उसी समय दारोगा के आने की इत्तला मिली—यह बड़े शान शौकत के साथ इंद्रदेव से मिलने के लिये आया था। इन्द्रदेव बाहर निकले और

बड़ी खातिर के साथ उसे घर के अन्दर ले गये और अपने कारिन्दों को हुक्म दे गये कि दारोगा के साथ जितने आदमी आये हैं उनके खाने पीने और रहने का उचित प्रबन्ध किया जाय।

दारोगा को लिये हुए इन्द्रदेव उसी कमरे में आये जिसमें मैं पहिले ही से बैठा हुआ था क्योंकि इन्द्रदेव की तरह मैं दारोगा को लेने के लिये मकान के बाहर नहीं गया था और न दारोगा के आ पहुंचने पर मैंने उठ कर इसकी इज्जत ही बढ़ाई। हां साहब सलामत जरूर हुई मगर इन्द्रदेव गुरुभाई का नाता निबाहते थे, दिल से दारोगा की खातिर नहीं करते थे।

इन्द्रदेव से और दारोगा से देर तक तरह तरह की बातें होती रहीं और मौके मौके पर दारोगा अपनी होशियारी और बुद्धिमानी की तस्वीर खैंचता रहा। जब ऐयारी की कहानी छिड़ी तो यकायक मेरी तरफ देखा और बोला, "इतने बड़े ऐयार के लड़के होकर घर में क्यों बैठे रहते हैं? और नहीं तो मेरी ही रियासत में काम कीजिये, वहां आपको इज्जत और आराम मिलेगा, देखिये बिहारीसिंह और हरनामसिंह कैसे आराम और खुशी के साथ रहते हैं, आप तो उनसे बहुत ज्यादे इज्जत के लायक हैं।"

मैं०। बेकार बैठा रहता हूं मगर अभी तक अपने को महाराज धौलपुर का नौकर समझता हूं क्योंकि रियासत का काम छोड़ देने पर भी वहां से मुझे खाने को बराबर मिलता है।

दारोगा०। (मुंह बना कर) अजी मिलता भी होगा तो क्या, कुछ थोड़ी सी रकम से आपका क्या काम चल सकता है, आखिर अपने पल्ले की जमा खर्च करते ही होंगे।

मैं०। यह भी तो महाराज ही का दिया हुआ है।

दारोगा०। नहीं, यह आपके बाप का दिया हुआ है। खैर मेरा मतलब यह है कि वहां से अगर कुछ मिलता है तो उसे भी ला रखिये और मेरी रियासत से भी फायदा उठाइये।

1. ऐसा करना बेईमानी और नमकहरामी कहा जायगा

ह मुझसे न हो सकेगा।

दारोगा०। (हंस कर) वाह वाह !! ऐयार लोग दिन रात ईमान-दारी की ही हंड़िया तो चढ़ाये रहते हैं !!

मैं०। (तेजी के साथ) बेशक ! अगर ऐसा न हो तो ऐयार नहीं रियासत का कोई ओहदेदार कहा जायगा।

दारोगा०। (तन कर) ठीक है, गदाधरसिंह आप ही का नाते-दार तो है, जरा उसकी तस्वीर तो खैंचिये।

मैं०। गदाधरसिंह किसी रियासत का ऐयार नहीं है और न मैं से ऐयार समझता हूं, इतना होने पर भी आप यह नहीं साबित कर सकते कि उसने अपने मालिक के साथ किसी तरहकि बेईमानी की।

दारोगा०। (और भी तनक के) बस बस बस, रहने दीजिये, हमारे यहां भी तो बिहारीसिंह और हरनामसिंह ऐयार ही तो है।

मैं०। इसी से तो मैं आपकी रियासत में जाना बेइज्जती सम-झता हूं।

दारोगा०। (भौं सिकोड़ कर) तो इसका यह मतलब कि हम लोग बेईमान और नमकहराम हैं।

मैं०। (मुस्कुरा कर) इस बात को तो आप ही सोचिये !

दारोगा०। देखिये जरा जुबान सम्हाल कर बातें कीजिये, नहीं तो समझ रखिये कि मैं मामूली आदमी नहीं हूं।

मैं०। (क्रोध से) यह तो मैं खुद कहता हूं कि आप मामूली आदमी नहीं हैं क्योंकि आदमी में शर्म होती है और वह जानता है कि ईश्वर कोई चीज है।

दारोगा०। (क्रोध भरी आंखें दिखा कर) फिर वही बात !!

मैं०। हां वही बात ! गोपालसिंह के पिता वाली बात ! गुप्त कुमेटी वाली बात ! गदाधरसिंह की दोस्ती वाली बात ! लक्ष्मीदेवी की शादी वाली बात ! और जो बात तुम्हारे गुरुभाई को नहीं मालूम है वह बात !!

दारोगा० । (दांत पीस कर)और कुछ देर तक मेरी तरफ देख अब इस बहुत सी "बात" का जवाब लात ही से दिया जायगा।

मैं० । बेशक, साथ ही इसके यह भी समझ रखिये कि जवाब वाले भी एक दो नहीं हैं । लातों की गिनती भी आप न सम्हाल सकें दारोगा साहब ! जरा आप होश में आइये और सोच विचार बातें कीजिये । अपने को आप ईश्वर न समझिये बल्कि यह सम कर बातें कीजिये कि आप आदमी हैं और रेयासत धौलपूर के ऐयार से बातें कर रहे हैं ।

दारोगा० । (इन्द्रदेव की तरफ़ गुरेर कर) क्या आप चुप बैठे तमाशा देखेंगे ? और अपने मकान में मुझे बेइज्जत करावेंगे

इन्द्रदेव० । आप खुद अपनी अनोखी मिलनसारी से अपने बेइज्जत कर रहे हैं, इनसे बात बढ़ाने की आपको जरूरत ही क्या थी मैं आप दोनों के बीच में नहीं बोल सकता क्योंकि दलीपशाह भी अपना भाई समझता और इज्जत की निगाह से देखता हूं ।

दारोगा० । तो फिर जैसा बने हम इनसे निपट लें ?

इन्द्रदेव० । हां हां ।

दारोगा० । पीछे उराहना न देना क्योंकि आप इन्हें अपना समझते हैं ।

इन्द्रदेव० । मैं कभी उराहना न दूंगा ।

दारोगा० । अच्छा तो अब मैं जाता हूं फिर कभी मिलूंगा बातें करूंगा ।

इन्द्रदेव ने इस बात का कुछ जवाब न दिया, हां जब दारोगा साहब बिदा हुए तो उन्हें दरवाजे तक पहुँचा आये । जब लौट कर कमरे मेरे पास आये तो मुस्कुराते हुए बोले, "आज तुमने इनकी खूब ली, 'जो बात कि तुम्हारे गुरुभाई साहब को नहीं मालूम है वह बात' इन शब्दों ने तो उसका कलेजा छेद दिया होगा । मगर तुमसे वह रंज हो कर गया है इस बात का खूब खयाल रखना ।

० । आप इस बात की चिन्ता न कीजिये, देखिये मैं इन्हें

उसने मुझसे आज्ञा ले ही ली और उसी दिन सब सामान दुरुस्त कर मेरे यहां से चला गया।

अब मैं थोड़ा सा हाल गिरजाकुमार का बयान करूंगा कि उसने दारोगा के साथ क्या क्या किया।

आप लोगों को यह सुन कर ताज्जुब होगा कि मनोरमा असल में दारोगा साहब की रण्डी है, इन्हीं की बदौलत मायारानी के दरबार में उसकी इज्जत बढ़ी और इन्हीं की बदौलत उसने मायारानी को अपने फंदे में फंसा कर बेहिसाब दौलत पैदा की। पहिले पहिल गिरजाकुमार ने मनोरमा के मकान ही पर दारोगा साहब से मुलाकात की थी।

दारोगा साहब मनोरमा से प्रेम रखते थे सही मगर इसमें कोई शक नहीं कि इस प्रेम और ऐयाशी को इन्होंने बहुत अच्छे ढंग से छिपाया और बहुत आदमियों को मालूम होने न दिया तथा लोगों की निगाह में साधू और ब्रह्मचारी ही बने रहे। स्वयम् तो जमानिया में रहते थे मगर मनोरमा के लिये इन्होंने काशी में मकान बनवा दिया था, दसवें बारहवें दिन अथवा जब समय मिलता तेज घोड़े पर या रथ पर सवार होकर काशी चले जाते और दस बीस घण्टे मनोरमा के मेहमान रह कर लौट आते।

एक दिन दारोगा साहब आधी रात के समय मनोरमा के खास कमरे में बैठे हुए उसके साथ शराब पी रहे थे और साथ ही साथ हंसी दिल्लगी का आनन्द लूट रहे थे। उस समय इन दोनों में नीचे लिखी बातें हो रही थीं:—

दारोगा०। जो कुछ मेरे पास है सब तुम्हारा है, रुपये पैसे के बारे में तुम्हें कभी तकलीफ न होने दूंगा, तुम बेशक अमीराना ठाठ के साथ रहो और खुशी से जिन्दगी बिताओ। गोपालसिंह अगर तिलिस्म का राजा है तो क्या हुआ, मैं भी तिलिस्म का दारोगा हूं, दो चार स्थान ऐसे हैं कि जिनकी खबर राजा साहब को भी नहीं वहां बखूबी जा सकता हूं और वहां की दौलत को काम

नी मिलकियत समझता हूं। इसके अतिरिक्त मायारानी से भी मैंने ारी मुलाकात करा दी है और वह भी हर तरह से तुम्हारी खातिर ती ही है, फिर तुम्हें परवाह किस बात की है ?

मनोरमा०। बेशक मुझे किसी बात की परवाह नहीं है और आपकी लत में बहुत खुश रहती हूं, मगर मैं यह चाहती हूं कि मायारानी के खुल्लमखुल्ला मेरी आमदरफ्त हो जाय, अभी गोपालसिंह के से बहुत छिप लुक कर और नखरे तिल्ले के साथ जाना पड़ता ।

दारोगा०। फिर यह तो जरा मुश्किल बात है।

मनोरमा०। मुश्किल क्या है ? लक्ष्मीदेवी की जगह दूसरी औरत राजरानी बना देना क्या साधारण काम था। सो तो आपने सहज में कर दिखाया और इस एक सहज काम के लिये कहते हैं कि श्किल है !!'

दारोगा०। (मुस्करा कर) सो तो ठीक है गोपालसिंह को मैं हज ही में बैकुण्ठ पहुँचा सकता हूं मगर यह काम मेरे किये न हो केगा, उसके ऊपर मेरा हाथ न उठेगा।

मनोरमा०। (तनक कर) अब इतनी रहमदिली से तो काम चलेगा ! उनके मौजूद रहने से बहुत बड़ा हर्ज हो रहा है, अगर वे रहे तो बेशक आप खुद जमानिया और तिलिस्म का राज्य करसकते मायारानी तो अपने को आपका तावेदार समझती है।

दारोगा०। बेशक ऐसा ही है मगर .....

मनोरमा०। और इसमें आपको कुछ करना भी न पड़ेगा, सब म मायारानी ठीक कर लेगी।

दारोगा०। (चौंक कर) क्या मायारानी का भी ऐसा इरादा है ?

मनोरमा०। जी हां, वह इस काम के लिये तैयार है मगर आपसे रती है, आप आज्ञा दे दें तो बस सब कुछ ठीक हो जाय।

दारोगा०। तो तुम उसी की तरफ से इस बात की कोशिश कर

मनोरमा० । बेशक ! मगर साथ ही इसके आपका और अपना भी फायदा समझती हूं तब ऐसा कहती हूं, (दारोगा के ले में हाथ डाल कर) बस अब आप आज्ञा दे दीजिये ।

दारोगा० । (मुस्करा कर) खैर तुम्हारी खातिर मुझे मंजूर है, मगर एक काम करना कि मायारानी से और मुझसे इस बारे में बातचीत न करना जिसमें कभी मौका पड़े तो मैं यह कहने लायक रह जाऊं कि मुझे इसकी कुछ खबर नहीं । तुम मायारानी की दिलजमई कर दो कि दारोगा साहब इस बारे में कुछ भी न बोलेंगे, तुम जो कुछ चाहो कर गुजरो मगर साथ ही इसके इस बात का खयाल रक्खो कि सर्वसाधारण को किसी तरह का शक न होने पावे और लोग यही समझें कि गोपालसिंह अपनी मौत से मरा है । मैं जहां तक हो सकेगा छिपाने की कोशिश करूंगा ।

मनोरमा० । (खुश हो कर) बस अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम मुझसे प्रेम रखते हो !!

इसके बाद इन दोनों में बहुत ही धीरे धीरे बातें होने लगीं जिन्हें गिरजाकुमार सुन न सका । गिरजाकुमार चोरों की तरह उस मकान में घुस गया था और छिप कर ये बातें सुन रहा था । जब मनोरमा ने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया तब वह कमन्द लगा कर मकान के पीछे की तरफ उतर गया और धीरे धीरे मनोरमा के अस्तबल में जा पहुँचा । अब की दफे दारोग यहां रथ पर सवार होकर आया था वह रथ अस्तवल में था, घोड़ा बांधा हुआ था और सारथी रथ के अन्दर सो रहा था । उससे कुछ दूर पर मनोरमा के और सब साईस तथा घसियारे वगैरह पड़े खुर्राटे ले रहे थे ।

बहुत होशियारी से गिरजाकुमार ने दारोगा के सारथी को बेहोशी की दवा सुंघा के बेहोश किया और उसे उठा के एक कोने में घनी झाड़ी के अन्दर छिपा कर रख आया, उसके कपड़े आप पहिर लिये और चुपचाप रथ के अन्दर घुस कर सो रहा ।

त घण्टा भर के लगभग बाकी रह गई तब दारोगा बाहर

या जाने के लिये विदा हुए और एक लौंडी ने अस्तबल में र रथ जोतने की आज्ञा सुनाई। नये सारथी अर्थात् गिरजा- ने रथ जोत कर तैयार किया और फाटक पर लाकर दारोगा ां का इन्तजार करने लगा। शराब के नशे में चूर झूमते और लौंडी का हाथ थामे हुए दारोगा साहब भी आ पहुंचे, उनके रथ सवार होने के साथ ही रथ तेजी के साथ रवाना हुआ। सुबह की डी हवा ने दारोगा साहब के दिमाग में खुनकी पैदा करदी और वे के अन्दर लेट कर बेखबर सो गये। गिरजाकुमार ने जिधर चाहा ोड़े का मुंह फेर दिया और दारोगा साहब को लेकर रवाना हुआ। तौर पर उसे सूरत बदलने की भी जरूरत न पड़ी।

हीं कह सकते कि मनोरमा के बाग में दारोगा का असली सारथी होश में आया होगा तो वहां कैसी खलबली मची होगी। गिरजाकुमार को इस बात की कुछ भी परवाह न थी, उसने ासगढ़ की सड़क पर रथ रवाना किया और चलते चलते अपने र में से मसाला निकाल कर अपनी सूरत साधारण ढंग पर बद- । जिसमें होश आने पर दारोगा उसकी असली सूरत से जानका हो सके, इसके बाद उसने दवा सुंघा कर दारोगा को और भ होश कर दिया।

जब रथ एक घने जङ्गल में पहुँचा और सुबह की सुफेदी भी निक आई तब गिरजाकुमार रथ को सड़क पर से हटा कर जङ्गल में गया जहां सड़क पर चलने वाले मुसाफिरों की निगाह पड़े। घो खोल लम्बी बागडोर के सहारे एक पेड़ के साथ बांध दिया और दार को पीठ पर लाद वहां से थोड़ी दूर पर एक घनी झाड़ी के अन्द गया जिसके पास ही पानी का एक चश्मा भी बह रहा था। घोड़े रास से दारोगा साहब को एक पेड़ के साथ बांध दिया और बे दूर करने की दवा सुंघाने के बाद थोड़ा सा पानी भी चे डाला जिसमें शराब का नशा भी ठण्डा हो जाय और तब सामने खड़ा हो गया।

दारोगा साहब जब होश में आये तो बड़ी परेशानी के साथ च
तरफ निगाह दौड़ाने लगे। अपने को मजबूर और एक अनजान आ
को हाथ में कोड़ा लिये सामने खड़ा देख कांप उठे और बोले, "
तुम कौन हो और मुझे इस तरह क्यों सता रक्खा है ? मैंने तुम्ह
क्या बिगाड़ा है ?

गिरजा०। क्या करूं लाचार हूं, मालिक का हुक्म ही ऐसा है

दारोगा०। तुम्हारा मालिक कौन है और उसने ऐसी आज्ञा
क्यों दी ?

गिरजा०। मैं मनोरमाजी का नौकर हूं और उन्होंने अपना
ठीक करने के लिये मुझे ऐसी आज्ञा दी है।

दारोगा०। (ताज्जुब से) तुम मनोरमा के नौकर हो ! नहीं न
ऐसा नहीं हो सकता, मैं उसके सब नौकरों को अच्छी त
पहिचानता हूं।

गिरजा०। मगर आप मुझे नहीं पहिचानते क्योंकि मैं गुप्त री
पर उनका काम किया करता हूं और उनके मकान पर बराबर न
रहता।

दारोगा०। शायद ऐसा हो, मगर मुझे विश्वास नहीं होता,
यह बताओ कि उन्होंने किस काम के लिये ऐसा करने को कहा

गिरजा०। आपको विश्वास हो चाहे न हो इसके लिये मैं ला
हूं, हां उनके हुक्म की तामीली किये बिना नहीं रह सकता। उ
मुझे यह कह के कि दारोगा साहब मायारानी के लिये इस बात
इजाजत दे गये हैं कि वह जिस तरह हो सके राजा गोपालसिं
मार डाले हम इस मामले में कुछ दखल न देंगे, मगर यह बात
नशे में कह गये हैं कहीं ऐसा न हो कि भूल जायं अस्तु जिस तरह
सके तुम इस बात की एक चीठी उनसे लिखा कर मेरे पास
आओ जिसमें उन्हें अपना वादा अच्छी तरह याद रहे, अब
पा कर इस मजमून की एक चीठी लिख दीजिये कि मैं गोपाल
...र डालने के लिये मायारानी को इजाजत देता हूं।

दारोगा०। (ताज्जुब का चेहरा बना कर) न मालूम तुम क्या [कह] रहे हो ! मैंने मनोरमा से ऐसा वादा नहीं किया है !!

गिरजा०। तो शायद मनोरमा ने मुझसे झूठ कहा होगा, मैं इस [बा]त को नहीं जानता, हां उन्होंने जो आज्ञा दी है सो आपसे कह रहा [हूं]।

इतना सुन दारोगा सोच में पड़ गया। मालूम होता था कि उसे [गि]रजाकुमार की बातों पर विश्वास हो रहा है मगर फिर भी बात को [टा]ला चाहता है।

दारोगा०। मगर ताज्जुब है कि मनोरमा ने मेरे साथ ऐसा बुरा [बर्]ताव क्यों किया और उसे जो कुछ कहना था स्वयम् मुझसे क्यों नहीं [क]हा ?

गिरजा०। मैं इस बात का जवाब क्योंकर दे सकता हूं !

दारोगा०। अगर मैं तुम्हारे कहे मुताबिक चीठी लिख कर न दूं [तो] ?

गिरजा०। तब इस कोड़े से आपकी खबर ली जायगी और जिस [तर]ह हो सकेगा आपसे चीठी लिखाई जायगी। आप खुद समझ सकते [हैं] कि यहां आपका कोई मददगार भी नहीं पहुँच सकता।

दारोगा०। क्या तुमको या मनोरमा को इस बात का कुछ भी [ख्]याल नहीं है कि मैं चीठी लिख कर भी छूट जाने के बाद क्या कर [सक]ता हूं !

गिरजा०। अब ये सब बातें तो आप उन्हीं से पूछियेगा मुझे जवाब [देने] की कोई जरूरत नहीं, मैं सिर्फ उनके हुक्म की तामीली करना [जा]नता हूं। आप जल्द चीठी लिख देते हैं या नहीं ? मैं ज्यादे देर तक [इन्त]जार नहीं कर सकता !

दारोगा०। (झुंझला कर और यह समझ कर कि यह मुझ पर हाथ [न उ]ठावेगा केवल धमकाता ही है) अबे ! मैं चीठी किस बात की [लिख] दूं ? व्यर्थ की बकबक लगा रक्खा है !!

इतना सुनते ही गिरजाकुमार ने कोड़े जमाने शुरू किये, पांच ही

सात कोड़े खाकर दारोगा बिलबिला उठा और हाथ जोड़ कर बो
"बस बस माफ करो, जो कुछ कहो मैं लिख देने के लिये तै
हूं !"

गिरजाकुमार ने झट कलम दावात और कागज अपने
में से निकाल कर दारोगा के सामने रख दिया और उसके
की रस्सी ढीली कर दी। दारोगा ने उसकी इच्छानुसार चीठी लि
दी। चीठी अपने कब्जे में कर लेने के बाद उसने दारोगा की त
ली, कमर में एक खंजर और कुछ अशर्फियां निकलीं वह भी ले लेने
बाद दारोगा के हाथ पैर खोल दिये और बता दिया कि फ
जगह आपका रथ और घोड़ा खड़ा है, जाइये कस कसा कर अ
घर का रास्ता लीजिये।

इतना कह गिरजाकुमार चला गया और फिर दारोगा को मा
न हुआ कि वह कहां और क्या हुआ।

बारहवां बयान

इतना किस्सा कह कर दलीपशाह ने कुछ दम लिया और फिर
तरह कहना शुरू किया :—

गिरजाकुमार ने अपना काम करके दारोगा का पीछा छोड़
दिया बल्कि उसे यह जानने का शौक पैदा हुआ कि देखें अब दा
साहब क्या करते हैं, जमानिया की तरफ विदा होते हैं या
मनोरमा के घर जाते हैं अगर मनोरमा के घर जाते हैं तो दे
चाहिये कि किस ढंग की बातें होती हैं और कैसी रंगत नि
है।

यद्यपि दारोगा का चित्त द्विविधा में पड़ा हुआ था परन्तु
इस बात का कुछ कुछ विश्वास जरूर हो गया था कि मेरे साथ
खोटाबर्ताव मनोरमा ही ने किया है, दूसरे को क्या मालूम
मुझसे उससे किस समय क्या क्या बातें हुई। मगर साथ ही
इस बात को भी जरूर सोचता था कि मनोरमा ने ऐसा

मैं तो कभी उसकी बात से किसी तरह इनकार नहीं करता जो कुछ उसने कहा उस बात की इजाजत भी दे दी अगर वह लिख देने के लिये कहती तो चीठी भी लिख देता, फिर उसने क्यों किया ? इत्यादि.........

जो कुछ हो दारोगा साहब अपने हाथ से रथ जोत कर सवार और मनोरमा के पास न जा कर सीधे जमानिया की तरफ रवाना गये। यह देख कर गिरजाकुमार ने उस समय उनका पीछा छोड़ या और मेरे पास चला गया। जो कुछ मामला हुआ था खुलासा यान करने बाद दारोगा साहब की लिखी हुई चीठी मुझे दे दी और र मुझसे विदा हो कर जमानिया की तरफ चला गया।

मुझे यह जान कर एक हौल सा पैदा हो गया कि वेचारे गोपाल- ह की जान मुफ्त में जाया चाहती है, मैं सोचने लगा कि अब क्या रना चाहिये जिसमें गोपालसिंह की जान बचे। एक दिन और रात तो इसी सोच में पड़ा रह गया, अन्त में यह निश्चय किया कि न्द्रदेव से मिल कर यह सब हाल कहना चाहिये। दूसरा दिन मुझे घर के इन्तजाम में लग गया क्योंकि दारोगा की दुश्मनी के खयाल से मुझे घर की हिफाजत का पूरा पूरा इन्तजाम कर के बाहर जाना जरूरी था, अस्तु मैंने अपनी स्त्री और बच्चे को तो गुप्त रीति से अपने ससुराल अर्थात स्त्री के मां बाप के घर पहुँचा दिया और उन लोगों को भी जो कुछ समझाना था समझा दिया और इसके बाद घर का इन्तजाम करके इन्द्रदेव की तरफ रवाना हुआ।

जब इन्द्रदेव के मकान पर पहुंचा तो देखा कि वे भी सफर की तैयारी कर रहे हैं। पूछने पर जवाब दिया कि राजागोपालसिंह बीमार हो गये हैं उन्हें देखने के लिये जाते हैं, सुनने के साथ ही मेरा दिल धड़क उठा और मेरे मुंह से ये शब्द निकल पड़े—"हाय अफसोस ! कम्बख्त दुश्मन लोग अपना काम कर गये !!"

मेरी बात सुन कर इन्द्रदेव चौंक पड़े और उन्होंने पूछा "आपने यह क्या कहा ?" जो दो चार खिदमतगार वहां मौजूद थे उन्हें विदा

सात कोड़े खाकर दारोगा बिलबिला उठा और हाथ जोड़ कर बो "बस बस माफ करो, जो कुछ कहो मैं लिख देने के लिये तै हूं!"

गिरजाकुमार ने झट कलम दावात और कागज अपने ब में से निकाल कर दारोगा के सामने रख दिया और उसके हा की रस्सी ढीली कर दी। दारोगा ने उसकी इच्छानुसार चीठी लि दी। चीठी अपने कब्जे में कर लेने के बाद इसने दारोगा की तला ली, कमर में एक खंजर और कुछ अशर्फियां निकलीं वह भी ले लेने बाद दारोगा के हाथ पैर खोल दिये और बता दिया कि फला जगह आपका रथ और घोड़ा खड़ा है, जाइये कस कसा कर अ घर का रास्ता लीजिये।

इतना कह गिरजाकुमार चला गया और फिर दारोगा को मालू न हुआ कि वह कहां और क्या हुआ।

बारहवां बयान

इतना किस्सा कह कर दलीपशाह ने कुछ दम लिया और फिर इ तरह कहना शुरू किया :—

गिरजाकुमार ने अपना काम करके दारोगा का पीछा छोड़ दिया बल्कि उसे यह जानने का शौक पैदा हुआ कि देखें अब दारो साहब क्या करते हैं, जमानिया की तरफ विदा होते हैं या मनोरमा के घर जाते हैं अगर मनोरमा के घर जाते हैं तो देख चाहिये कि किस ढंग की बातें होती हैं और कैसी रंगत निक है।

यद्यपि दारोगा का चित्त द्विविधा में पड़ा हुआ था परन्तु इस बात का कुछ कुछ विश्वास जरूर हो गया था कि मेरे साथ खोटाबर्ताव मनोरमा ही ने किया है, दूसरे को क्या मालूम मुझसे उससे किस समय क्या क्या बातें हुईं। मगर साथ ही इस बात को भी जरूर सोचता था कि मनोरमा ने ऐसा

तीन घण्टे के बाकी था, हम दोनों आदकी पेड़ के नीचे बैठे आँसू बहा रहे थे कि यकायक जमानिया से लौटता हुआ गिरजाकुमार भी उसी जगह आ पहुंचा। उस समय उसकी सूरत बदली हुई थी इसलिये हम लोगों ने तो उसे नहीं पहिचाना परन्तु वह स्वयम् हम लोगों को देख कर पास चला आया और अपना गुप्त परिचय दे कर बोला, "मैं गिरजाकुमार हूं।"

इन्द्रदेव०। (आंसू पोंछ कर) अच्छे मौके पर तुम आ पहुँचे, यह बताओ कि क्या वास्तव में राजा गोपालसिंह मर गये?

गिरजा०। जी हां, उनकी चिता मेरे सामने लगाई गई और मेरे देखते ही देखते उनकी लाश पञ्चतत्व में मिल गई, परन्तु अभी तक मेरे दिल को विश्वास नहीं होता कि राजा साहब मर गये।

इन्द्रदेव०। (चौंक कर) सो क्या? यह कैसी बात?

गिरजा०। जी हां हर तरह का रंग ढंग देख कर मेरा दिल कबूल नहीं करता कि वे मर गये।

मैं०। क्या तुम्हारी तरह वहां भी और किसी को इस बात का शक है?

गिरजा०। नहीं ऐसा तो नहीं मालूम होता बल्कि मैं तो समझता हूं कि खास दारोगा साहब को भी उनके मरने का विश्वास है मगर क्या किया जाय, मुझे विश्वास नहीं होता और दिल बार बार यही कहता है कि राजा साहब मरे नहीं।

इन्द्रदेव०। आखिर तुम क्या सोचते हो और इस बात तुम्हारे पास क्या सबूत है? तुमने कौन सी ऐसी बात देखी जिससे तुम्हारे दिल को अभी तक उनके मरने का विश्वास नहीं होता?

गिरजा०। और बातों के अतिरिक्त दो बातें तो बहुत ही ज्यादे शक पैदा करती हैं। एक तो यह कि कल दो घण्टे रात रहते रहते मैंने हरनामसिंह और बिहारीसिंह को एक कंगले की लाश उठाये हुए चोर दर्वाजे की राह से महल के अन्दर जाते हुए देखा फिर बहुत टोह लेने पर भी उस लाश का कुछ पता न लगा और न वह लाश लौटा कर

करके मैंने गिरजाकुमार का सब हाल इन्द्रदेव से बयान किया और दारोगा साहब की लिखी हुई वह चीठी उनके हाथ पर रख दी। देख कर और सब हाल सुन कर इन्द्रदेव बेचैन हो गये, आधे घड़ी तक तो ऐसा मालूम होता था कि उन्हें तनोबदन की सुध नहीं है, इसके बाद उन्होंने अपने को सम्हाला और मुझसे कहा—"बेशक दुश्मन लोग अपना काम कर गये मगर तुमने भी बहुत बड़ी भूल की कि दिनको देर करदी और आज मेरे पास खबर करने के लिये आये अभी दो ही घड़ी बीती है कि मुझे उनके बीमार होने की खबर मिली है, ईश्वर ही कुशल करे !"

इसके जवाब में चुप रह जाने के सिवाय मैं कुछ भी न कह सका और अपनी भूल स्वीकार कर ली। कुछ और बातचीत होने के बाद इन्द्रदेव ने मुझसे कहा, "खैर जो कुछ होना था सो हो गया, अब तुम भी हमारे साथ जमानियां चलो, वहां पहुँचने तक अगर ईश्वर ने कुशल रक्खा तो जिस तरह बन पड़ेगा उनकी जान बचावेंगे !!"

अस्तु हम दोनों आदमी तेज घोड़ों पर सवार हो कर जमानिया की तरफ रवाना हो गये और साथियों को पीछे से आने की ताकीद कर गये।

जब हम लोग जमानिया के करीब पहुँचे और जमानिया सिर्फ दो कोस की दूरी पर रह गया तो सामने से कई देहाती आदमी रोते और चिल्लाते हुए आते दिखाई पड़े। हम लोगों ने घबड़ा कर उनसे रोने का सबब पूछा तो उन्होंने हिचकियां ले ले कर कहा हमारे राजा गोपालसिंह हम लोगों को छोड़ कर वैकुण्ठ चले गये।

सुनने के साथ ही हम लोगों का कलेजा धक्क हो गया। आगे जाने की हिम्मत न पड़ी। और सड़क के किनारे एक घने पेड़ के नीचे जाकर घोड़ों पर से उतर पड़े। दोनों घोड़ों को पेड़ के साथ बांधदिया और जीनपोश बिछा कर बैठ गये, और आंखों से आंसू की धारा बहने लगी। घण्टे भर तक हम दोनों में किसी तरह की बातचीत न हुई क्योंकि चित्त बड़ा ही दुःखी हो गया था। उस समय दिन अनुमान

तीन घण्टे के बाकी था, हम दोनों आदकी पेड़ के नीचे बैठे आँसू बहा रहे थे कि यकायक जमानिया से लौटता हुआ गिरजाकुमार भी उसी जगह आ पहुंचा। उस समय उसकी सूरत बदली हुई थी इसलिये हम लोगों ने तो उसे नहीं पहिचाना परन्तु वह स्वयम् हम लोगों को देख कर पास चला आया और अपना गुप्त परिचय दे कर बोला, "मैं गिरजाकुमार हूं।"

इन्द्रदेव०। (आंसू पोंछ कर) अच्छे मौके पर तुम आ पहुँचे, कहो बताओ कि क्या वास्तव में राजा गोपालसिंह मर गये?

गिरजा०। जी हां, उनकी चिता मेरे सामने लगाई गई और मेरे देखते ही देखते उनकी लाश पञ्चतत्व में मिल गई, परन्तु अभी तक मेरे दिल को विश्वास नहीं होता कि राजा साहब मर गये।

इन्द्रदेव०। (चौंक कर) सो क्या? यह कैसी बात?

गिरजा०। जी हां हर तरह का रंग ढंग देख कर मेरा दिल कबूल नहीं करता कि वे मर गये।

मैं०। क्या तुम्हारी तरह वहां भी और किसी को इस बात का शक है?

गिरजा०। नहीं ऐसा तो नहीं मालूम होता बल्कि मैं तो समझता हूं कि खास दारोगा साहब को भी उनके मरने का विश्वास है मगर क्या किया जाय, मुझे विश्वास नहीं होता और दिल बार बार यही कहता है कि राजा साहब मरे नहीं।

इन्द्रदेव०। आखिर तुम क्या सोचते हो और इस बात तुम्हारे पास क्या सबूत है? तुमने कौन सी ऐसी बात देखी जिससे तुम्हारे दिल को अभी तक उनके मरने का विश्वास नहीं होता?

गिरजा०। और बातों के अतिरिक्त दो बातें तो बहुत ही ज्यादे शक पैदा करती हैं। एक तो यह कि कल दो घण्टे रात रहते रहते मैंने ...नामसिंह और बिहारीसिंह को एक कंगले की लाश बैठाये हुए चोर दर्वाजे की राह से महल के अन्दर जाते हुए देखा फिर बहुत टोह ढूंढने पर भी उस लाश का कुछ पता न लगा और न वह लाश लौटा कर

महल के बाहर निकाली गई, तो क्या वह महल ही में हजम हो गई! उसके बाद केवल राजा साहब की लाश बाहर निकली।

इन्द्रदेव०। जरूर यह शक करने की जगह है!

गिरजा०। इसके अतिरिक्त राजा गोपालसिंह की लाश को बाहर निकालने और जलाने में हद दर्जे की फुर्ती और जल्दी बाजी की गई, यहां तक कि रियासत के उमरा लोगों के भी इकट्ठा होने का इन्तजार नहीं किया। एक साधारण आदमी के लिये भी इतनी जल्दी नहीं की जाती, ये तो राजा ही ठहरे! हां एक बात और भी सोचने के लायक है, चिता पर की क्रिया नियम के विरुद्ध लाश का मुंह खोले बिना ही कर दी गई और इस बारे में बिहारीसिंह और हरनामसिंह तथा लौंडियों ने यह बहाना किया कि राजा साहब की सूरत देख कर मायारानी बहुत बेहाल हो जायंगी इसलिये मुर्दे का मुंह खोलने की कोई जरूरत नहीं है। और लोगों ने इन बातों पर खयाल किया हो चाहे न किया हो, मगर मेरे दिल पर तो इन बातों ने बहुत बड़ा असर किया। यही सबब है कि मुझे राजा साहब के मरने का विश्वास नहीं होता।

इन्द्रदेव०। (कुछ सोच कर) शक तो तुम्हारा बहुत ठीक है, अच्छा यह बताओ कि तुम इस समय कहां जा रहे थे?

गिरजा०। (मेरी तरफ इशारा करके) गुरुजी के पास यही सब हाल कहने के लिये जा रहा था।

मैं०। इस समय मनोरमा कहां है सो बताओ?

गिरिजा०। जमानिया में मायारानी के पास।

मैं०। तुम्हारे हाथ से छूटने के बाद दारोगा और मनोरमा में कैसी निपटी इसका हाल कुछ मालूम हुआ?

गिरजा०। जी हां मालूम हुआ, उस बारे में बहुत बड़ी दिल्लगी हुई जो मैं निश्चिन्ती के समय बयान करूंगा।

इन्द्रदेव०। अच्छा यह बताओ कि गोपालसिंह के बारे में तुम्हारी ... है? अब हम लोगों को क्या करना चाहिये?

गिरजा० । इस बारे में मैं एक अदना और नादान आदमी आपको क्या राय दे सकता हूं! मुझे जो कुछ आज्ञा हो सो करने के लिये तैयार हूं।

इतनी बातें हो ही रही थीं कि सामने जमानिया की तरफ से दारोगा और जयपाल घोड़ों पर सवार आते हुए दिखाई पड़े जिन्हें देखते ही गिरिजाकुमार ने कहा, "देखिये ये दोनों शैतान कहीं जा रहे हैं, इसमें भी कोई भेद जरूर है, यदि आज्ञा हो तो मैं इनके पीछे जाऊं।"

दारोगा और जैपाल को देखकर हम दोनों पेड़ की तरफ घूम गये जिसमें वे पहिचान न सकें। जब वे आगे निकल गये तब मैंने अपना घोड़ा गिरजाकुमारको दे कर कहा, "तुम जल्द सवार होके इन दोनों का पीछा करो।" और गिरजाकुमार ने भी ऐसा ही किया।

❀ तेईसवाँ हिस्सा समाप्त ❀

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

चौबीसवां हिस्सा

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित



लहरी बुक डिपो

बनारस सिटी

प्रकाशक—
दुर्गाप्रसाद खत्री
प्रोप्रा० लहरी बुक डिपो
बनारस सिटी

मुद्रक—
दुर्गाप्रसाद खत्री
लहरी प्रेस
काशी

॥ श्रीः ॥



चन्द्रकान्ता सन्तति

चौबीसवां हिस्सा

पहिला बयान

दिन घंटे भर से कुछ ज्यादे चढ़ चुका है। महाराज सुरेन्द्रसिंह सुनहरी चौकी पर बैठे दातन कर रहे हैं और जीतसिंह तेजसिंह इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह देवीसिंह भूतनाथ और राजा गोपालसिंह उनके सामने की तरफ बैठे हुए इधर उधर की बातें कर रहे हैं। रात महाराज की तबीयत कुछ खराब थी, इसलिये आज स्नान सन्ध्या में देर हो गई है।

सुरेन्द्र०। (गोपालसिंह से) गोपाल! इतना तो हम जरूर कहेंगे कि गद्दी पर बैठने के बाद तुमने कोई बुद्धिमानी का काम

नहीं किया बल्कि हर एक मामले में तुमसे भूल ही होती गई!!

गोपाल०। निःसन्देह ऐसा ही है और लापरवाही का नतीजा भी मुझे वैसा ही भोगना पड़ा।

बीरेन्द्र०। धोखा खाये बिना कोई होशियार नहीं होता। कैद से छूटने के बाद तुमने बहुत से अनूठे काम भी किये हैं। हां यह तो बताओ कि दारोगा और जयपाल के लिये तुमने कौन सी सजा तजवीज की है?

गोपाल०। इस बारे में मैं दिन रात सोचा ही करता हूं मगर कोई सजा ऐसी नहीं सूझती जो उन लोगों के लायक हो और जिससे मेरा गुस्सा शान्त हो।

सुरेन्द्र०। (मुस्कुरा कर) मैं तो यह समझता हूं कि यह काम भूतनाथ के हवाले किया जाय, वही उन शैतानों के लिये कोई मजेदार सजा तजवीज करेगा। (भूतनाथ की तरफ देख के) क्यों जी, तुम कुछ बता सकते हो?

भूत०। (हाथ जोड़ के) उनके योग्य क्या सजा है इसका बताना बड़ा ही कठिन है मगर एक छोटी सी सजा मैं जरूर बता सकता हूं।

गोपाल०। वह क्या?

भूत०। पहिले तो उन्हें कच्चा पारा खिलाना चाहिये जिसकी गरमी से उन्हें सख्त तकलीफ हो और तमाम बदन फूट जाय, जब जख्म खूब मजेदार हो जायं तो नित्य लाल मिर्च और नमक का उस पर लेप चढ़ाया जाय। जब तक वे दोनों जीते रहें तब तक ऐसा ही होता रहे।

सुरेन्द्र०। सजा हलकी तो नहीं है मगर किसी की आत्मा को........

गोपाल०। (बात काट कर) खैर इन कम्बख्तों के लिये

आप कुछ न सोचिये, इन्हें मैं जमानिया ले जाऊंगा और उसी जगह इनकी मरम्मत करूंगा।

वीरेन्द्र०। खैर इन सब रञ्ज देने वाली बातों का जिक्र जाने दो यह बताओ कि अगर हमलोग जमानिया के तिलिस्म की सैर किया चाहें तो कैसे कर सकते हैं ?

गोपाल०। यह तो मैं आपही निश्चय कर चुका हूं कि आप लोगों को वहां की सैर जरूर कराऊंगा।

इन्द्रजीत०। (गोपालसिंह से) हां खूब याद आया, वहां के बारे में मुझे दो एक बातों का शक बना हुआ है।

गोपाल०। वह क्या ?

इन्द्रजीत०। एक तो यह बताइये कि तिलिस्म के अन्दर जिस मकान में पहिले पहल आनन्दसिंह फंसे थे, उस मकान में सिंहासन पर बैठी हुई लाडिली की मूरत कहां से आई ? * और उस आईने (शीशे) वाले मकान में जिसमें कमलिनी लाडिली तथा हमारे ऐयारों की सी मूरतों ने हमें धोखा दिया था, क्या था ? जब हम दोनों उसके अन्दर गये तो उन मूरतों को देखा जो नालियों पर चला करती थीं † मगर ताज्जुब है कि.....

गोपाल०। (बात काट कर) वह सब कार्रवाई मेरी ही थी, एक तौर पर मैं आप लोगों को कुछ कुछ तमाशा भी दिखाता जाता था। वे सब मूरतें बहुत पुराने जमाने की बनी हुई हैं मगर मैंने उन पर ताजा रंग रोगन चढ़ाकर कमलिनी लाडिली वगैरह की सूरतें बना दी थीं।

इन्द्रजीत०। ठीक है, मेरा भी यही खयाल था। अच्छा एक बात और बताइये ?

* देखिये नौवां हिस्सा दूसरा बयान।

† देखिये सोलहवां हिस्सा छठवां बयान।

गोपाल०। पूछिये।

इन्द्रजीत०। जिस तिलिस्मी मकान में हम लोग हंसते हंसते कूद पड़े थे उसमें कमलिनी के कई सिपाही भी जा फंसे थे और......

गोपाल०। जी हां, ईश्वर की कृपा से वे लोग कैदखाने में जीते जागते पाये गये और इस समय जमानिया में मौजूद हैं उसी में के एक आदमी को दारोगा ने गठड़ी बांध कर रोहतासगढ़ के किले में छोड़ा था। जब मैं कृष्णाजिन्न बन कर पहिले पहिल वहां गया था। ‡

इन्द्रजीत०। बहुत अच्छा हुआ, उन बेचारों की तरफ से मुझे बहुत ही खुटका था।

बीरेन्द्र०। (गोपाल से) आज दलीपशाह की जुबानी जो कुछ उसका किस्सा सुनने में आया उससे हमें बड़ा ही आश्चर्य हुआ। यद्यपि उसका किस्सा अभी समाप्त नहीं हुआ है और समाप्त होने तक शायद और भी बहुत सी बातें मालूम हो परन्तु इस बात का ठीक ठीक जवाब तो तुम्हारे सिवाय कोई दूसरा शायद नहीं दे सकता कि तुम्हें कैद करने में मायारानी ने कौन सी ऐसी कारीगरी की कि किसी को पता न लगा और सभी लोग धोखे में पड़ गये, यहां तक कि तुम्हारी समझ में भी कुछ न आया और तुम चारपाई पर से उठा कर कैदखाने में डाल दिये गये।

गोपाल०। इसका ठीक ठीक जवाब तो मैं नहीं दे सकता। कई बातों का पता मुझे भी नहीं लगा क्योंकि मैं ज्यादे देर तक बीमारी की अवस्था में पड़ा नहीं रहा बहुत जल्द बेहोश कर दिया गया। मैं क्योंकर जान सकता था कि कम्बख्त मायारानी

‡ देखिये बारहवां हिस्सा सातवां बयान।

दवा के बदले मुझे जहर पिला रही है। मगर मुझे विश्वास है कि दलीपशाह को इसका हाल बहुत ज्यादे मालूम हुआ होगा।

जीत०। खैर आज के दर्बार में और भी जो कुछ है मालूम हो जायगा।

कुछ देर तक इसी तरह की बातें होती रहीं। जब महाराज उठ गये तब सब कोई अपने अपने ठिकाने चले गये और कारिन्दे लोग दर्बार की तैयारी करने लगे।

भोजन इत्यादि से छुट्टी पाने बाद दोपहर होते होते महाराज दर्बार में पधारे। आज का दर्बार भी कल की तरह रौनकदार था और आदमियों की गिनती बनिस्बत कल के आज बहुत ज्यादे थी।

महाराज की आज्ञानुसार दलीपशाह ने इस तरह अपना किस्सा बयान करना शुरू किया :—

"मैं बयान कर चुका हूं कि मैंने अपना घोड़ा गिरजाकुमार को दे कर दारोगा का पीछा करने के लिये उसे कहा, अस्तु जब वह दारोगा के पीछे चला गया तब हम दोनों में सलाह होने लगी कि अब क्या करना चाहिये, अन्त में यह निश्चय हुआ कि इस समय जमानिया न जाना चाहिये, बल्कि घर लौट चलना चाहिये।

"उसी समय इन्द्रदेव के साथी लोग भी वहां आ पहुँचे। उनमें से एक का घोड़ा मैंने ले लिया और फिर हम लोग इन्द्रदेव के मकान की तरफ रवाना हुए। मकान पर पहुँच कर इन्द्रदेव ने अपने कई जासूसों और ऐयारों को हर एक बातों का पता लगाने के लिये जमानिया की तरफ रवाना किया। मैं भी अपने घर जाने को तैयार हुआ मगर इन्द्रदेव ने मुझे रोक लिया।

"यद्यपि मैं कह चुका हूं कि अपने किस्से में भूतनाथ का

हाल बयान न करूंगा तथापि मौका पड़ने पर कहीं कहीं लाचारी से उसका जिक्र करना ही पड़ेगा अस्तु इस जगह यह कह देना जरूरी जान पड़ता है कि इन्द्रदेव के मकान ही पर मुझे इस बात की खबर लगी कि भूतनाथ की स्त्री बहुत बीमार है। मेरे एक शागिर्द ने आ कर यह संदेसा दिया और साथ ही इसके यह भी कहा कि आपकी स्त्री उसे देखने के लिये जाने की आज्ञा मांगती है।

"भूतनाथ की स्त्री शान्ता बड़ी नेक और स्वभाव की बहुत अच्छी है, मैं भी उसे बहिन की तरह मानता था इस लिये उसकी बीमारी का हाल सुन कर मुझे तरद्दुद हुआ और मैंने अपनी स्त्री को उसके पास जाने की आज्ञा दे दी तथा उसकी हिफ़ाजत का पूरा पूरा इन्तजाम भी कर दिया। इसके कई दिन बाद खबर लगी कि मेरी स्त्री शान्ता को ले कर अपने घर आ गई।

"आठ दस दिन बीत जाने पर भी न तो जमानिया से कुछ खबर आई न गिरजाकुमार ही लौटा। हां रियासत की तरफ से एक चीठी न्यौते की जरूर आई थी जिसके जवाब में इन्द्रदेव ने लिख दिया कि गोपालसिंह से और मुझसे दोस्ती थी सो वह तो चल बसे, अब उनकी क्रिया मैं अपनी आंखों से देखना पसन्द नहीं करता।

"मेरी इच्छा तो हुई कि गिरजाकुमार का पता लगाने के लिये मैं खुद जाऊं मगर इन्द्रदेव ने कहा कि नहीं दो चार दिन और राह देख लो, कहीं ऐसा न हो कि तुम उसकी खोज में जाओ और वह यहां आ जाय। अस्तु मैंने भी ऐसा ही किया।

"बारहवें दिन गिरजाकुमार हम लोगों के पास पहुँचा। उसके साथ अर्जुनसिंह भी थे जो हम लोगों की मण्डली में एक

अच्छे ऐयार गिने जाते थे, मगर भूतनाथ से और इनसे खूब ही चखाचखी चली आती थी। (महाराज और जीतसिंह की तरफ देख कर) आपने सुना ही होगा कि इन्होंने एक दिन भूतनाथ को धोखा दे कर कूंए में ढकेल दिया था और इनके बटुये में से कई चीजें निकाल ली थीं।"

जीत०। हां मालूम है मगर इस बात का पता नहीं लगा कि अर्जुनसिंह ने भूतनाथ के बटुए में से क्या निकाला था।

इतना कह कर जीतसिंह ने भूतनाथ की तरफ देखा।

भूत०। (महाराज की तरफ देख कर) मैंने जिस दिन अपना किस्सा सरकार को सुनाया था उस दिन अर्ज किया था कि जब कागज का मुट्ठा मेरे पास से चोरी गया तो मुझे बड़ा ही तरद्दुद हुआ। उसके बहुत दिनों के बाद राजा गोपालसिंह के मरने की खबर उड़ी * इत्यादि। यह वही कागज का मुट्ठा था जो अर्जुनसिंह ने मेरे बटुए में से निकाल लिया था तथा उसके साथ और भी कई कागज थे। असल बात यह है कि उन चीठियों की नकल के मैंने दो मुट्ठे तैयार किये थे। एक तो हिफाजत के लिए अपने मकान में रख छोड़ा था और दूसरा मुट्ठा समय पर काम देने के लिये हरदम अपने बटुए में रखता था। मुझे गुमान था कि अर्जुनसिंह ने जो मुट्ठा ले लिया था उसी से मुझे नुक्सान पहुँचा मगर अब मालूम हुआ कि ऐसा नहीं हुआ। अर्जुनसिंह ने न तो वह किसी को दिया और न उससे मुझे कुछ नुक्सान पहुँचा। हाल में जो दूसरा मुट्ठा जयपाल ने मेरे घर से चुरवा लिया था उसी ने तमाम बखेड़ा मचाया।

* देखिये इक्कीसवां हिस्सा दूसरा बयान।

जात०। ठीक है, (दलीप की तरफ देख के) अच्छा तब क्या हुआ?

दलीप ने फिर इस तरह कहना शुरू किया :—

"गिरिजाकुमार में और अर्जुनसिंह में एक तरह की नातेदारी भी है परन्तु उसका खयाल न करके ये दोनों आपुस में दोस्ती का वर्ताव रखते थे। खैर, उस समय इन दोनों के आ जाने से हम लोगों को खुशी हुई और फिर इस तरह बातें होने लगीं :—

मैं०। गिरजाकुमार, तुमने तो बहुत दिन लगा दिये?

गिरजा०। जी हां, मुझे तो और भी कई दिन लग जाते मगर इत्तफाक से अर्जुनसिंह से मुलाकात हो गई और इनकी मदद से मेरा काम बहुत जल्द हो गया।

मैं०। खैर यह बताओ कि तुमने किन किन बातों का पता लगाया और मुझसे बिदा होकर तुम दारोगा के पीछे कहां तक गये?

गिरजा०। जयपाल को साथ लिये हुए दारोगा सीधे मनोरमा के मकान पर चला गया। उस समय मनोरमा वहां न थी, वह दारोगा के तीन पहर बाद रात के समय अपने मकान पर पहुँची। मैं भी छिप कर किसी न किसी तरह उस मकान में दाखिल हो गया। रात को दारोगा और मनोरमा में खूब हुज्जत हुई मगर अन्त में मनोरमा ने उसे विश्वास दिला दिया कि राजा गोपालसिंह को मारने के विषय में तुमसे जबरदस्ती पुर्जा लिखा लेने वाला मेरा आदमी न था बल्कि वह कोई और था जिसे मैं नहीं जानती। दारोगा ने बहुत सोच विचार कर विश्वास कर लिया कि यह काम भूतनाथ का है। इसके बाद उन दोनों में जो कुछ बातें हुईं उससे यही मालूम हुआ कि गोपालसिंह जरूर मर गये और दारोगा को भी यही विश्वास है मगर मेरे दिल में यह

बात नहीं बैठती, खैर जो कुछ हो उसके दूसरे दिन मनोरमा के मकान में से एक कैदी निकाला गया जिसे बेहोश कर के जयपाल ने बेगम के मकान में पहुँचा दिया। मैंने उसे पहिचानने के लिए बहुत कुछ उद्योग किया मगर पहिचान न सका क्योंकि उसे गुप्त रखने में उन्होंने बहुत कोशिश की थी मगर मुझे गुमान होता है कि वह जरूर बलभद्रसिंह होगा। अगर वह दो दिन भी बेगम के मकान में रहता तो मैं जरूर निश्चय कर लेता मगर न मालूम किस वक्त और कहां बेगम ने उसे पहुँचवा दिया कि मुझे इस बात का कुछ भी पता न लगा, हां इतना जरूर मालूम हो गया कि दारोगा भूतनाथ को फंसाने के फेर में पड़ा हुआ है और चाहता है कि किसी तरह भूतनाथ मार डाला जाय।

"इन कामों से छुट्टी पाकर दारोगा अकेला अर्जुनसिंह के मकान पर गया. इनसे बड़ी नरमी और खुशामद के साथ मुलाकात की और देर तक मीठी मीठी बातें करता रहा जिसका तत्व यह था कि तुम दलीपशाह को साथ लेकर मेरी मदद करो और जिस तरह हो सके भूतनाथ को गिरफ्तार करा दो। अगर तुम दोनों की मदद से भूतनाथ गिरफ्तार हो जायेगा तो मैं इसके बदले में दो लाख रुपैया तुम दोनों को इनाम दूंगा इसके अतिरिक्त वह आपके नाम का एक पत्र भी अर्जुनसिंह को दे गया।

"अर्जुनसिंह ने दारोगा का वह पत्र निकाल कर मुझे दिया, मैंने पढ़ कर इन्द्रदेव के हाथ में दिया और कहा, "इसका मतलब भी वही है जो गिरजाकुमार ने अभी बयान किया है परन्तु यह कदापि नहीं हो सकता कि मैं भूतनाथ के साथ किसी तरह की बुराई करूं, हां दारोगा के साथ दिल्लगी अवश्य करूंगा और इस चीठी का जवाब जरूर लिखूंगा।"

"इसके बाद कुछ देर तक और भी बातचीत होती रही.

अन्त में गिरजाकुमार ने कहा कि मेरे इस सफर का नतीजा कुछ भी न निकला और न मेरी तबीयत ही भरी, आप कृपा कर मुझे जमानिया जाने की इजाजत दीजिये।

"गिरजाकुमार की दरखास्त मैंने मन्जूर कर ली। उस दिन रात भर हम लोग इन्द्रदेव के यहां रहे, दूसरे दिन गिरजाकुमार जमानिया की तरफ रवाना हुआ और मैं अर्जुनसिंह को साथ ले कर अपने घर मिर्जापुर चला आया।"

"घर पहुँच कर मैंने भूतनाथ की स्त्री शान्ता को देखा जो बीमार तथा बहुत ही कमजोर और दुबली हो रही थी, मगर उसकी सब बीमारी भूतनाथ की नादानी के सबब से थी और वह चाहती थी कि जिस तरह भूतनाथ ने अपने को मरा हुआ मशहूर किया था उसी तरह वह भी अपने और अपने छोटे बच्चे के बारे में मशहूर करे। उसकी अवस्था पर मुझे बड़ा ही दुःख हुआ और जो कुछ वह चाहती थी उसका प्रबन्ध मैंने कर दिया, यही सबब था कि भूतनाथ ने अपने छोटे बच्चे के विषय में धोखा खाया जिसका हाल महाराज और राजकुमारों को मालूम है मगर सर्वसाधारण के लिये मैं इस समय उसका जिक्र न करूंगा। इसका खुलासा हाल भूतनाथ अपनी जीवनी में बयान करेगा। खैर—

"घर पहुँच कर मैंने दिल्लगी के तौर पर भूतनाथ के विषय में दारोगा से लिखा पढ़ी शुरू कर दी मगर ऐसा करने से मेरा असल मतलब यह था कि मुलाकात होने पर मैं वह सब पत्र जो इस समय हरनामसिंह के पास मौजूद हैं भूतनाथ को दिखाऊं और उसे होशियार कर दूं, अस्तु अन्त में मैंने उसे (दारोगा को) साफ साफ जवाब दे दिया।"

यहां तक अपना किस्सा कह कर दलीपशाह ने हरनामसिंह

की तरफ देखा और हरनामसिंह ने सब पत्र जो एक छोटी सी सन्दूकड़ी में बन्द थे महाराज के आगे पेश किये, जिसे मामूली तौर पर सभों ने देखा। इन चीठियों से दारोगा की बेईमानी के साथ ही साथ यह भी साबित होता था कि भूतनाथ ने दलीपशाह पर व्यर्थ ही कलंक लगाया। महाराज की आज्ञानुसार वे चीठियां कम्बख्त दारोगा के आगे फेंक दी गईं और इसके बाद दलीपशाह ने फिर इस तरह बयान करना शुरू किया :—

"मेरे और दारोगा के बीच में जो कुछ लिखा पढ़ी हुई थी उसका हाल किसी तरह भूतनाथ को मालूम हो गया या शायद वह स्वयं दारोगा से जाकर मिला और दारोगा ने मेरी चीठियां दिखा कर इसे मेरा दुश्मन बना दिया और खुद भी मेरी बर्बादी के लिये तैयार हो गया। इस तरह दारोगा की दुश्मनी का वह पौधा जो कुछ दिन के लिये मुरझा गया था फिर से लहलहा उठा और हरा भरा हो गया और साथ ही इसके मैं भी हर तरह से दारोगा का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गया।

"कई दिन के बाद जब गिरजाकुमार जमानिया से लौटा तो उसकी जुबानी मालूम हुआ कि मायारानी का दिन बड़ी खुशी और चहल पहल के साथ गुजरा करता है। मनोरमा और नागर के अतिरिक्त धनपति नामी एक औरत और भी है जिसे मायारानी बहुत प्यार करती है मगर उस पर मर्द होने का शक होता है। इसके अतिरिक्त यह भी मालूम हुआ कि दारोगा ने मेरी गिरफ्तारी के लिए तरह तरह के बन्दोबस्त कर रक्खे हैं और भूतनाथ भी दो तीन दफे उसके पास आता जाता दिखाई दिया है मगर यह बात निश्चय रूप से मैं नहीं कह सकता कि वह जरूर भूतनाथ ही था। एक दिन सन्ध्या के समय जब दारोगा अपने बाग में टहल रहा था तो भेष बदले हुए गिरिजाकुमार

पिछली दीवार लांघ के उसके पास जा पहुँचा और बेखौफ साम्ह खड़ा हो कर बोला, "दारोगा साहब! इस समय आप मुझे गिरफ्तार करने का ख्याल भी न कीजिएगा क्योंकि मैं आपके कब्जे में आ नहीं सकता, साथ ही इसके यह भी समझ रखिये कि मैं आपकी जान लेने के लिये नहीं आया हूं बल्कि आपसे दो चार बातें करने के लिये आया हूं!"

"दारोगा घबड़ा गया और उसकी बातों का कुछ विशे जवाब न देकर बोला, "खैर कहो क्या कहते हो?"

गिरजा०। मनोरमा और मायारानी के फेर में पड़ कर तुमने राजा गोपालसिंह को मरवा डाला। इसका नतीजा एक न एक दिन तुम्हें भोगना ही पड़ेगा, मगर अब मैं यह पूछता हूं कि जिनके डर से तुमने लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह को कैद कर रक्खा था वे तो मर ही गये अब अगर तुम इन दोनों को छोड़ भी दोगे तो तुम्हारा क्या बिगड़ेगा?

दारोगा०। (ताज्जुब में आ कर) मेरी समझ में नहीं आता कि तुम कौन हो और क्या कह रहे हो!

गिरजा०। मैं कौन हूं इसके जानने की तुम्हें कोई जरूरत नहीं मगर क्या तुम कह सकते हो कि जो कुछ मैंने कहा है बा सब झूठ है?

दारोगा०। बेशक झूठ है! तुम्हारे पास इन बातों का क्या सबूत है?

गिरजाकुमार०। जयपाल और हेलासिंह के बीच में जो कुछ लिखा पढ़ी हुई है उसके अतिरिक्त वह चीठी इस समय भी मेरे पास मौजूद है जो राजा गोपालसिंह को मार डालने के लिये तुमने मनोरमा को लिख दी थी।

दारोगा०। मैंने कोई चीठी नहीं लिखी थी, मालूम होता

कि दलीपशाह और भूतनाथ वगैरह मिलजुल कर मुझ पर जाल बांधा चाहते हैं और तुम उन्हीं दोनों में से किसी के नौकर हो।

गिरजा०। भूतनाथ तो मर गया अब तुम भूतनाथ को क्यों बदनाम करते हो?

दारोगा०। भूतनाथ जैसा मरा है सो मैं खूब जानता हूं, अगर खुद मुझसे मुलाकात न हुई होती तो शायद मैं धोखे में आ भी जाता।

गिरजा०। भूतनाथ तुम्हारे पास न आया होगा, किसी दूसरे आदमी ने सूरत बदल कर तुम्हें धोखा दिया होगा, वह बेशक मर गया।

दारोगा०। (सिर हिला कर) हां ठीक है, शायद ऐसा ही होगा, मगर उन सब बातों से तुम्हें मतलब ही क्या है और तुम मेरे पास किस लिये आये हो सो कहो।

गिरजा०। मैं केवल इसी लिए आया हूं कि लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह को छोड़ देने के लिये तुमसे प्रार्थना करूं।

दारोगा०। पहिले तुम अपना ठीक ठीक परिचय दो तब मैं तुम्हारी बातों का जवाब दूंगा।

गिरिजा०। अपना ठीक परिचय तो मैं नहीं दे सकता।

दारोगा०। तब तुम्हारी बातों का जवाब भी नहीं मिल सकता।

"इतना कह कर दारोगा पीछे की तरफ हटा और उसने अपने आदमियों को आवाज दी मगर गिरजाकुमार झपट कर एक मुक्का दारोगा की गर्दन पर मारने के बाद तेजी के साथ बाग के बाहर निकल गया।

"उसके दूसरे दिन गिरजाकुमार ने उसी तरह मायारानी से भी मिलने की कोशिश की मगर उसके खास बाग के अन्दर न

जा सका। लाचार उसने मायारानी के ऐयार बिहारीसिंह औ हरनामसिंह का पीछा किया और दो ही तीन दिन की मेहनत में धोखा दे कर बिहारीसिंह को गिरफ्तार कर लिया और अ अर्जुनसिंह के यहां पहुँचा कर मेरे पास चला आया।

"ऊपर लिखी बातें बयान कर के गिरजाकुमार चुप हो गय और तब मैंने उससे कहा, "बिहारीसिंह को तुमने गिरफ्तार क लिया यह बहुत बड़ा काम हुआ और अब जब कि तुम बिहारी सिंह बन कर वहां जाओगे और चालाकी से उन लोगों में मिल जुल कर अपने को छिपा सकोगे तो बेशक बहुत सी बातों क पता लग जायगा और हम लोगों के लिये जो कुछ दारोगा किया चाहता है वह भी मालूम हो जायगा।"

गिरजा०। बेशक ऐसा ही है। मैं आपसे विदा हो क अर्जुनसिंह के यहां जाऊंगा और फिर बिहारीसिंह बन कर जमानिया पहुँचूंगा। मेरे जी में तो यही आया था कि मैं कम्ब- ख्त दारोगा को सीधे यमलोक पहुँचा दूं मगर यह काम आपकी आज्ञा के बिना नहीं कर सकता था।

मैं०। नहीं नहीं, इन्द्रदेव की आज्ञा बिना यह काम कदापि न करना चाहिये, पहिले वहां का असल हाल चाल तो मालूम कर लो फिर इस बारे में इन्द्रदेव से बातचीत करेंगे।

गिरजा०। जो आज्ञा।

"इसके बाद और भी तरह तरह की बातचीत होती रही। उस दिन गिरजाकुमार मेरे घर ही पर रहा और दूसरे दिन मुझसे बिदा हो अर्जुनसिंह के पास चला गया।

"इसके बाद आठ दिन तक मुझे किसी बात का पता नहीं लगा, आखिर जब गिरजाकुमार का पत्र आया तब मालूम हुआ कि वह बिहारीसिंह बन कर बड़ी खूबी के साथ उन लोगों में

। गया है और उन लोगों की गुप्त कमेटी में भी बैठ कर हर बातों में राय दिया करता है जिससे बहुत जल्द कुछ भेदों पता लग जाने की आशा होती है। गिरजाकुमार ने यह भी खा कि दारोगा को उस चीठी की बड़ी ही चिन्ता लगी हुई है मनोरमा के नाम से राजा गोपालसिंह को मार डालने के ये मैंने (गिरजाकुमार ने) जबरदस्ती उससे लिखवा ली थी। चाहता है कि जिस तरह हो वह चीठी उसके हाथ लग य और इस काम के लिये वह लाखों रुपया खर्च करने को ार है। वह कहता है और वास्तव में ठीक ही कहता है कि । चीठी का हाल अगर लोगों को मालूम हो जायगा तो दूसरों कौन कहे जमानिया की रिआया ही मुझे बुरी तरह से मारने लिये तैयार हो जायगी। एक दिन हरनामसिंह ने उसे राय कि दलीपशाह को मार डालना चाहिये। इस पर वह बहुत झुंझलाया और बोला कि जब तक वह चीठी मेरे हाथ न ग जाय तब तक दलीपशाह और उसके साथियों को मार लने से मुझे क्या फायदा होगा? बल्कि मैं और भी बहुत ल्द बर्बाद हो जाऊंगा क्योंकि दलीपशाह के मारे जाने से उके दोस्त लोग जरूर उस चीठी को मशहूर कर देंगे, इसलिये ब तक वह चीठी अपने कब्जे में न आ जाय तब तक किसी मारने का ध्यान भी न लाना चाहिये, हां दलीपशाह को रफ्तार करने से बेशक फायदा पहुँच सकता है। अगर वह ब्जे में आ जायगा तो उसे तरह तरह की तकलीफ पहुँचा कर सी न किसी तरह उस चीठी का पता जरूर लगा लूंगा, त्यादि।

"वास्तव में बात भी ऐसी ही थी, इसमें कोई शक नहीं कि सी चीठी की बदौलत हम लोगों की जान बची रही, यद्यपि

तकलीफें हद दर्जे की भोगनी पड़ीं मगर जान मारने की हिम्मत दारोगा को न हुई क्योंकि उसके दिल में विश्वास करा दिया गया था कि जिस दिन हम लोगों की मण्डली का एक आदमी भी मारा जायगा उसी दिन वह चीठी तमाम दुनिया में मशहूर हो जायगी, इस बात का बहुत ही उत्तम प्रबन्ध किया गया है।

इसके बाद कई दिन बीत गये मगर गिरिजाकुमार की फिर कोई चीठी न आई जिससे एक तरह का तरद्दुद हुआ और जी में आया कि खुद जमानिया चल कर उसका पता लगाना चाहिये।

दूसरे दिन अपने घर की हिफाजत का इन्तजाम करके मैं बाहर निकला और अर्जुनसिंह के घर पहुँचा। ये उस समय अपने बैठके में अकेले बैठे हुए एक चीठी लिख रहे थे, मुझे देखते ही उठ खड़े हुए और बोले, "वाह वाह! बहुत ही अच्छा हुआ जो आप आ गये! मैं इस समय आप ही के नाम एक चीठी लिख रहा था और अभी अपने शागिर्द के हाथ आपके पास भेजने वाला था, आइये बैठिये।"

मैं०। (बैठ कर) क्या कोई नई बात मालूम हुई है?

अर्जुन०। नहीं, बल्कि एक नई बात हो गई है।

मैं०। वह क्या?

अर्जुन०। आज रात को बिहारीसिंह हमारी कैद से ... कर भाग गया है।

मैं०। (घबड़ा कर) यह तो बहुत बुरा हुआ!

अर्जुन०। बेशक बुरा हुआ। जिस समय वह ज... पहुंचेगा उस समय बेचारे गिरजाकुमार पर जो बिहारी... ...है आफ... ...यगी और वह भा... कर वहां ... ...र देने के लि... ...य...

मैं ...

...ास आदमी भेजने वाला था।

मैं०। आखिर ऐसा हुआ ही क्यों ? क्या हिफाजत में कुछ ...कसर पड़ गई थी ?

अर्जुन०। हां अब तो ऐसा ही समझना पड़ेगा चाहे उसकी ...कैसी ही हिफाजत क्यों न की गई हो, मगर असल में यह मेरे एक ...सिपाही की बेईमानी का नतीजा है क्योंकि बिहारीसिंह के साथ ...ही साथ वह भी यहां से गायब हो गया है। जरूर बिहारीसिंह ...ने उसे लालच देकर अपना पक्षपाती बना लिया होगा।

मैं०। खैर जो कुछ होना था वह तो हो गया। अब किसी ...तरह गिरजाकुमार को बचाना चाहिये क्योंकि असली बिहारी-...सिंह के जमानिया पहुँचते ही नकली बिहारीसिंह (गिरजा-...कुमार) का भेद खुल जायगा और वह मजबूर करके कैदखाने में ...झोंक दिया जायगा।

अर्जुन०। मैं खुद यही बात कह चुका हूं। खैर अब इस ...विषय में विशेष सोच विचार न करके जहां तक जल्द हो सके ...जमानिया पहुंचना चाहिये।

मैं०। मैं तो तैयार ही हूं क्योंकि अभी कमर भी नहीं खोली।

अर्जुन०। खैर आप कमर खोलिये और कुछ भोजन ...कीजिये। मैं भी आपके साथ चलने के लिये घण्टे भर के अन्दर ...तैयार हो जाऊंगा।

मैं०। क्या आप भी जमानिया चलेंगे ?

अर्जुन०। (आवाज में जोर देकर) जरूर !

घण्टे भर के अन्दर ही हम दोनों आदमी जमानिया जाने ...के लिये हर तरह से तैयार हो गये और ऐयारी का पूरा पूरा ...सामान दुरुस्त कर लिया। दोनों आदमी असली सूरत में पैदल ...घर से बाहर निकले और कई कोस निकल जाने के बाद

जंगल में बैठ कर अपनी अपनी सूरत बदली, इसके बाद कु देर आराम करके फिर आगे की तरफ रवाना हुए और इरा कर लिया कि आज की रात किसी जंगल में पेड़ के ऊपर बै कर बिता देंगे।

आखिर ऐसा ही हुआ। सन्ध्या होने पर हम दोनों दोस एक जंगल में रमणीक स्थान देख कर अटक गये जहां पानी क सुन्दर चश्मा बह रहा था तथा सलई का एक बहुत बड़ा औ घना पेड़ भी था जिस पर बैठने के लिये ऐसी अच्छी जगह थी कि उस पर बैठे बैठे घण्टे दो घण्टे नींद भी ले सकते थे।

यद्यपि हम लोग किसी सवारी पर बहुत जल्द जमानिया पहुंच सकते थे और वहां अपने लिये टिकने का भी इन्तजाम कर सकते थे मगर उन दिनों जमानिया की ऐसी बुरी अवस्था थी कि ऐसा करने की हिम्मत न पड़ी और जंगल में टिक रहना ही उचित जान पड़ा। दोनों आदमी एकदिल थे इस लिए कुछ तरद्दुद या किसी तरह के खुटके का भी कुछ खयाल न था।

अन्धकार छा जाने के साथ ही हम दोनों आदमी पेड़ के ऊपर जा बैठे और धीरे धीरे बातें करने लगे, थोड़ी ही देर बाद कई आद सियों के आने की आहट मालूम हुई, हम दोनों चुप हो गये औ इन्तजार करने लगे कि देखें कौन आता है। थोड़ी ही देर में आदमी उस पेड़ के नीचे आ पहुंचे। रात हो जाने के सबब उनकी सूरत शक्ल अच्छी तरह देख नहीं सकते थे, घने पेड़ों से छनी हुई कुछ कुछ और कहीं कहीं चन्द्रमा की रोशनी जमी पर पड़ रही थी, उसी से अन्दाजा कर लिया कि ये दोनों सिपा हैं, मगर ताज्जुब होता था कि रास्ता छोड़ भेदियों और ऐया की तरह जंगल में क्यों आ टिके हैं ?

दोनों आदमी अपनी छोटी गठड़ी जमीन पर रख कर

नीचे बैठ गये और इस तरह बातें करने लगे :—

एक०। भाई हमें तो इस जंगल में रात काटना कठिन मालूम होता है।

दूसरा०। सो क्यों?

पहला०। डर मालूम होता है कि किसी जानवर का शिकार बन जायें।

दूसरा०। बात तो ऐसी ही है। मुझे भी यहां टिकना बुरा मालूम होता है, मगर क्या किया जाय, बाबाजी का हुक्म ऐसा है।

पहिला०। बाबाजी तो अपने काम के आगे दूसरे की जान का कुछ भी खयाल नहीं करते। जब से हमारे राजा साहब का देहान्त हुआ है तब से इनका दिमाग और भी बिगड़ गया है।

दूसरा०। इनकी हुकूमत के आगे तो हमारा जी ऊब गया, नौकरी करने की इच्छा नहीं होती।

पहिला०। मगर इस्तीफा देते भी तो डर मालूम होता है, कहीं यही कह बैठेंगे कि तू हमारे दुश्मनों से मिल गया है। अगर इस तरह की बात उनके दिल में बैठ जाय तो जान बचनी भी मुश्किल होगी।

दूसरा०। इनकी नौकरी में यही तो मुश्किल है, रुपया खूब मिलता है इसमें कोई सन्देह नहीं मगर जान का डर हर दम बना रहता है। कम्बख्त मनोरमा की हुकूमत के मारे तो और भी नाकों दम रहता है। जब से राजा साहब मरे हैं इसने महल में डेरा ही जमा लिया है, पहिले डर के मारे दिखाई भी नहीं देती थी। एक बाजारू औरत का इस तरह रियासत में घुस जाना कोई अच्छी बात है!

पहिला०। अजी जब हमारी रानी साहबा ही ऐसी हैं तो

दूसरे को क्या कहें ? मनोरमा तो बाबाजी की जान ही ठहरी।

दूसरा०। बीच में यह बेगम कम्बख्त नई निकल पड़ी है जहां घड़ी घड़ी दौड़ के जाना पड़ता है।

पहिला०। (हंस कर) जानते नहीं हो ? यह जयपालसिंह की नानी (रण्डी) है ! पहिले भूतनाथ के पास रही, अब इनके गले पड़ी है। इसे भी तुम आफत की पुड़िया समझो, चार दफे मैं उसके पास जा चुका हूं, आज पांचवीं दफे जा रहा हूं, इस बीच में मैं उसे अच्छी तरह पहिचान गया।

दूसरा०। मैं समझता हूं कि बिहारीसिंह से और उससे भी कुछ सम्बन्ध है।

पहिला०। नहीं ऐसा तो नहीं है, अगर बिहारीसिंह से बेगम का कुछ लगाव होता तो जयपाल और बिहारीसिंह में जरूर खटक जाती तिसमें इधर तो बिहारीसिंह बहुत दिनों तक अर्जुनसिंह के यहां कैद ही रहे आज किसी तरह छूट कर अपने घर पहुँचे हैं, अब देखें गिरजाकुमार पर क्या मुसीबत आती है।

दूसरा०। गिरजाकुमार कौन ?

पहिला०। वही जो बिहारीसिंह बना हुआ था।

दूसरा०। वह तो अपना नाम शिवशंकर बताता है।

पहिला०। बताता है मगर मैं तो उसे खूब पहिचानता हूं।

दूसरा०। तो फिर तुमने बाबाजी से कहा क्यों नहीं ?

पहिला०। मुझे क्या गरज पड़ी है जो उसके लिये दलीपशाह से दुश्मनी पैदा करूं ? वह दलीपशाह का बहुत प्यारा शागिर्द है, और खबरदार तुम भी इस बात का जिक्र किसी से न करना मैंने तुम्हें अपना दोस्त समझ कर कह दिया।

दूसरा०। नहीं जी, मैं क्यों किसी से कहने लगा ! (चौंक

कर) देखो यह किसी भयानक जानवर के बोलने की आवाज है।

पहिला०। तो डर के मारे तुम्हारा दम क्यों निकला जाता है? ऐसा ही है तो थोड़ी सी लकड़ी बटोर कर आग सुलगा दो या पेड़ के ऊपर चढ़ कर बैठो।

दूसरा०। इससे तो यही बेहतर होगा कि यहां से चले चलो सफर ही में रात काट देंगे, बाबाजी कुछ देखने थोड़े ही आते हैं!

पहिला०। जैसा कहो।

दूसरा०। हमारी तो यही राय है।

पहिला०। अच्छा चलो, जिसमें तुम खुश रहो वही ठीक।

"उन दोनों की बातें सुन कर हम लोगों को बहुत सी बातों का पता लग गया। गिरजाकुमार की खबर सुन कर मुझे बड़ा ही दुःख हुआ, साथ ही इस बात के जानने की उत्कंठा भी हुई कि ये दोनों बेगम के यहां क्यों जा रहे हैं। दिल दो तरफ के खिंचाव में पड़ गया, एक तो इच्छा हुई कि इन दोनों को कब्जे में करके मालूम कर लें कि बेगम के पास किस मजमून की चीठी ले जा रहे हैं और अगर उचित मालूम हो तो इनकी सूरत बन कर खुद बेगम के पास चलें, सम्भव है कि बहुत से भेदों का पता लग जाय, दूसरे इस बात की भी जल्दी पड़ गई कि किसी तरह शीघ्र जमानिया पहुँच कर गिरजाकुमार की मदद करनी चाहिये। जब यह मालूम हुआ कि अब ये दोनों यहां से जाया चाहते हैं तब हम लोग भी झट पेड़ के नीचे उतर आये और उन दोनों के सामने खड़े हो कर मैंने कहा, "नहीं, जानवरों के डर से मत भागो, हम लोग भी तुम्हारे साथ हैं।"

हम दोनों को यकायक इस तरह पेड़ से उतर कर सामने खड़े होते देख वे दोनों डर गये मगर कुछ देर बाद एक ने जी

कड़ा करके कहा, "भाई तुम लोग कौन हो? भूत हो प्रेत हो या जिन्न हो?"

मैं०। डरो मत, हम लोग भूत प्रेत नहीं हैं आदमी हैं और ऐयार हैं, तुम लोगों में जो कुछ बातें हुई हैं हम लोग पेड़ पर बैठे बैठे सुन रहे थे, जब देखा कि अब तुम लोग जाया चाहते हो तो हम दोनों भी उतर आये।

एक सिपाही०। (घबड़ानी आवाज से) आप कहां के रहने वाले और कौन हैं?

मैं०। हम दोनों आदमी दलीपशाह के नौकर हैं।

दूसरा०। अगर आप दलीपशाह के नौकर हैं तो हम लोगों को विशेष न डरना चाहिये क्योंकि आप लोग न तो हमारे मालिकों से मिलेंगे और न इस बात का जिक्र करेंगे कि हम लोग क्या क्या बातें करते थे, हां अगर कोई हमारे दर्बार का आदमी होता तो जरूर हम लोग बर्बाद हो जाते।

मैं०। बेशक ऐसा ही है और तुम लोगों की बातों से यह जान कर हम दोनों बहुत प्रसन्न हुए कि तुम लोग ईमानदार और इन्साफ पसन्द आदमी हो और हमें यह भी उम्मीद है कि जो कुछ हम पूछेंगे उसका ठीक ठीक जवाब दोगे।

दूसरा०। हमारी बातों से आप जान ही चुके हैं कि हमलोग कैसे खूंखार आदमी के नौकर हैं और आप लोगों से बातें करने का कैसा बुरा नतीजा निकल सकता है।

मैं०। ठीक है मगर तुम्हारे दारोगा साहब को इन बातों की खबर कुछ भी न लगेगी।

पहिला०। इस समय हम आपके काबू में हैं क्योंकि सिपाही होने पर भी ऐयारों का मुकाबला नहीं कर सकते तिस पर ऐसी अवस्था में कि दोनों तरफ की गिनती बराबर हो इसलिये हम

समय आप जो कुछ चाहें हमलोगों पर जबरदस्ती कर सकते हैं।

मैं०। नहीं नहीं, हमलोग जबरदस्ती नहीं किया चाहते बल्कि तुम्हें खुश और तुम्हारी हिफाजत का खयाल रख कर हम लोग अपना काम निकाला चाहते हैं।

पहिला०। इसके अतिरिक्त हमलोगों को इस बात का भी निश्चय हो जाना चाहिये कि आपलोग वास्तव में दलीपशाह के ऐयार हैं और हमलोगों की हिफाजत के लिये आपने कोई अच्छी तरकीब सोच ली है अगर हमलोग आपकी किसी बात का जवाब दें।

सिपाही की आखिरी बात से हमें निश्चय हो गया कि ये लोग हमारे कब्जे में आ जायंगे और हमारी बात मान जायंगे और अगर ऐसा न करते तो वे लोग कर ही क्या सकते थे? आखिर हर तरह का ऊंच नीच दिखा कर हमने उन्हें राजी कर लिया और अपना सच्चा परिचय देकर उन्हें विश्वास करा दिया कि जो कुछ हमने कहा है सब सच है। इसके बाद हमने जो कुछ पूछा उन्होंने साफ साफ बता दिया और जो कुछ देखना चाहा (बेगम के नाम का पत्र इत्यादि) दिखा दिया। गिरजाकुमार के बारे में तो जो कुछ पहिले मालूम कर चुके थे उससे ज्यादे हाल कुछ मालूम न हुआ क्योंकि उसके विषय में उन्हें कुछ विशेष खबर ही न थी केवल इतना ही जानते थे कि असली बिहारीसिंह के पहुँचने पर नकली बिहारीसिंह (गिरजाकुमार) गिरफ्तार कर लिया गया, हां दूसरी बात मालूम हो गई कि वे दोनों आदमी दारोगा और जयपाल की चीठी लेकर बेगम के पास जा रहे हैं, कल सन्ध्या तक बेगम के पास पहुँच जायंगे और परसों सन्ध्या को बेगम को साथ लिये हुए किश्ती की सवारी से गंगाजी की तरफ से रातो रात जमानिया लौटेंगे। अस्तु हम लोगों ने उन

दोनों सिपाहियों को जिस तरह बन पड़ा इस बात पर राजी कर लिया कि जब तुम लोग बेगम को लिये हुए रातो रात गंगा जी की राह लौटो तो अमुक समय में अमुक स्थान पर कुछ देरी के लिये किसी बहाने से किश्ती किनारे लगा के रोक लेना, उस समय हम लोग डाकुओं की तरह पहुँच कर बेगम को गिरफ्तार कर लेंगे और जो कुछ चीजें हमारे मतलब की उसके पास होंगी उन्हें ले लेंगे मगर तुम लोगों को छोड़ देंगे, इस तरह पर हमारा काम भी निकल जायगा और तुम लोगों पर कोई किसी तरह का शक भी न कर सकेगा।

"रुपये पाने के साथ ही साथ अपना किसी तरह का हर्ज न देख कर दोनों सिपाहियों ने इस बात को भी मंजूर कर लिया। इसके बाद हम लोगों में मेल मुहब्बत की बातचीत होने लगी और तमाम रात हम लोगों ने उसी पेड़ पर काट दी। सवेरा होने पर दोनों सिपाही हमसे बिदा होकर चले गये तब हमलोग आपुस में विचार करने लगे कि अब क्या करना चाहिये। अन्त में यह निश्चय करके कि अर्जुनसिंह तो गिरजाकुमार को छुड़ाने के लिये जमानिया जायं और मैं बेगम के फंसाने का बन्दोबस्त करूं, हम दोनों भी एक दूसरे से बिदा हुए।

"इस जगह मैं किस्से की तौर पर थोड़ा सा हाल गिरजाकुमार का बयान करूंगा जो कुछ दिन बाद मुझे उसी की जुबानी मालूम हुआ था।

"अर्जुनसिंह की कैद से छुटकारा पाकर बिहारीसिंह सीधे जमानिया में दारोगा के पास चला गया मगर ऐसे ढंग से गया कि किसी को कुछ मालूम न हुआ और न गिरजाकुमार ही को इस बात का पता लगा। रात पहर भर से कुछ ज्यादे जा चुकी थी जब दारोगा ने नकली बिहारीसिंह अर्थात् गिरजाकुमार को

अपने घर बुलाया। बेचारे गिरजाकुमार को क्या खबर थी कि आज मैं मुसीबत में डाला जाऊंगा। वह बेधड़क मामूली ढंग पर दारोगा (बाबाजी) के मकान पर चला गया और देखा कि दारोगा अकेले ऊंची गद्दी पर बैठा हुआ है और उसके सामने सात आठ सिपाही तलवार लगाये खड़े हैं। दारोगा का इशारा पाकर गिरजाकुमार उसके सामने बैठ गया। बैठने के साथ ही उन सब सिपाहियों ने एक साथ गिरजाकुमार को धर दबाया और बात की बात में हाथ पैर बांध के छोड़ दिया। बेचारा गिरजाकुमार अकेला कुछ भी न कर सका और जो कुछ हुआ उसने चुपचाप बर्दाश्त कर लिया। इसके बाद दारोगा ने ताली बजाई, उसी समय असली बिहारीसिंह कोठड़ी में से निकल कर बाहर चला आया और गिरजाकुमार की तरफ देख के बोला, "अब तो तुम समझ गये होओगे कि तुम्हारा भण्डा फूट गया और मैं तुम्हारी कैद से छूट कर निकल आया। मगर शाबाश ! तुमने बड़ी खूबी के साथ मुझे धोखा देकर गिरफ्तार किया था। अब मेरी पारी है, देखो मैं किस तरह तुमसे बदला लेता हूं।"

गिरजा०। यह तो ऐयारों का काम ही है कि एक दूसरे को धोखा दिया करता है, इसमें अनर्थ क्या हो गया? मेरा दांव लगा मैंने तुम्हें गिरफ्तार करके कैदखाने में डाल दिया, अब तुम्हारा दांव लगा है तो तुम मुझे कैदखाने में डाल दो, जिस तरह तुम अपनी चालाकी से छूट आये हो उसी तरह छूटने के लिये मैं भी उद्योग करूंगा।

बिहारी०। सो तो ठीक है, मगर इतना समझ रक्खो कि हम लोग तुम्हारे साथ मामूली बर्ताव न करेंगे बल्कि हद दर्जे की तकलीफ देंगे।

गिरजा०। यह तो ऐयारी के कायदे के बाहर है !

बिहारी० । जो भी हो।

गिरजा० । खैर कोई हर्ज नहीं, जो कुछ होगा झेलेंगे।

बिहारी० । अगर तुम तकलीफ से बचा चाहो तो मेरी बातों का साफ साफ सच सच जवाब दो।

गिरजा० । वादा तो नहीं करते मगर जो कुछ पूछना हो पूछो।

बिहारी० । तुम्हारा नाम क्या है ?

गिरजा० । शिवशंकर।

बिहारी० । किसके नौकर हो ?

गिरजा० । किसी के भी नहीं

बिहारी० । फिर यहां आये थे किस काम के लिये ?

गिरजा० । गुरूजी के।

बिहारी० । तुम्हारा गुरू कौन है ?

गिरजा० । वही जिसे तुम जान चुके हो और जिसके यहां इतने दिनों तक तुम कैद थे।

बिहारी० । अर्जुनसिंह ?

गिरजा० । हां।

बिहारी० । उन्हें हम लोगों से क्या दुश्मनी थी ?

गिरजा० । कुछ भी नहीं।

बिहारी० । फिर यहां उत्पात मचाने के लिये तुम्हें भेजा क्यों ?

गिरजा० । मुझे सिर्फ भूतनाथ का पता लगाने के लिए भेजा था क्योंकि उन्हें भूतनाथ से बहुत ही रंज है। यद्यपि भूतनाथ ने अपना मरना मशहूर किया है मगर उन्हें विश्वास है कि वह मरा नहीं और दारोगा साहब के साथ मिल जुल कर काम कर रहा है और इनकी (अर्जुनसिंह की) बर्बादी का बन्दोबस्त करता है। इसी से उन्होंने मुझे आज्ञा दी थी कि

दारोगा साहब के यहां घुस पैठ कर और कुछ दिन तक उन लोगों के साथ रह कर ठीक ठीक पता लगाओ और बन पड़े तो उसे गिरफ्तार भी कर लो, बस।

बिहारी०। भूतनाथ से अर्जुनसिंह से लड़ाई क्यों हो गई?

गिरजा०। लड़ाई तो बहुत पुरानी है मगर इधर जब से गुरूजी ने उसका ऐयारी का बटुआ ले लिया है तब से रंज ज्यादे हो गया है।

बिहारी०। (ताज्जुब से) क्या भूतनाथ का बटुआ अर्जुनसिंह ने ले लिया?

गिरजा०। हां।

बिहारी०। उसमें से क्या चीज निकली?

गिरजा०। सो तो नहीं मालूम मगर इतना गुरूजी कहते थे कि उस बटुए से हमारा काम नहीं चला इस लिए उसे गिरफ्तार ही करना पड़ेगा।

बिहारी०। मगर भूतनाथ के खयाल से तुम्हारे गुरूजी ने हमें क्यों तकलीफ दी?

गिरजा०। तुम्हें उन्होंने किसी तरह की तकलीफ नहीं दी बल्कि बड़े आराम के साथ कैद में रक्खा था क्योंकि तुम लोगों से उन्हें किसी तरह की दुश्मनी नहीं है। उनका खयाल तो यही था कि बिहारीसिंह को तीन चार दिन से ज्यादे कैद में रखने की जरूरत न पड़ेगी और इसके बीच ही में भूतनाथ का पता लग जायगा, उन्हें इस बात की खबर लगी थी कि भूतनाथ जमानिया में बिहारीसिंह के पास आया करता है, मगर यहां आने से उसका कुछ भी पता न लगा, अस्तु मैं एक दो दिन में खुद ही लौट जाने वाला था, तुम अपनी बुद्धिमानी से अगर न भी छूटते तो एक दो दिन में जरूर छोड़ दिये जाते।

"गिरजाकुमार ने ऐसे ढंग से सूरत बना कर बातें कीं कि दारोगा और बिहारीसिंह को उसकी सचाई पर विश्वास हो गया। मैं पहिले ही बयान कर चुका हूं कि गिरजाकुमार बातचीत के समय सूरत बनाना बहुत ही अच्छा जानता था अस्तु गिरजाकुमार और बिहारीसिंह की बातें सुन कर दारोगा ने कहा—"शिवशंकर! मालूम तो यही होता है कि तुम जो कुछ कहते हो वह सच ही है परन्तु ऐयारों की बातों पर विश्वास करना जरा मुश्किल है, फिर भी तुम अच्छे और साफ दिल के मालूम होते हो।"

गिरजा०। जो आप चाहें खयाल करें मगर मैं तो यही समझता हूं कि आप लोगों से मुझे झूठ बोलने की जरूरत ही क्या है? न गुरुजी को आप लोगों से दुश्मनी है न मुझी को, हां अगर यह मालूम हो जायगा कि हमारे मुकाबिले में आप लोग भूतनाथ की सहायता करते हैं तो बेशक दुश्मनी हो जायगी, यह मैं खुले दिल से कह देता हूं चाहे आप मुझे बेवकूफ समझें चाहे नालायक।

दारोगा०। नहीं नहीं शिवशंकर! हम लोग भूतनाथ की मदद किसी तरह नहीं कर सकते, हम तो उसे खुद ढूंढ रहे हैं मगर उस कम्बख्त का कहीं पता ही नहीं लगता, ताज्जुब नहीं कि वास्तव में मर ही गया हो।

गिरजा०। (सिर हिला कर) कदापि नहीं, अभी महीने भर से ज्यादा न हुआ होगा कि मैंने खुद अपनी आंखों से उसे देखा था मगर उस समय मैं ऐसी अवस्था में था कि कुछ कर न सका। खैर कम्बख्त जाता कहां है, मुझे उसके दो चार ठिकाने ऐसे मालूम हैं कि जिसके सबब से एक न एक दिन उसे जरूर गिरफ्तार कर लूंगा।

दारोगा०। (ताज्जुब और खुशी से) क्या तुमने उसे खुद अपनी आंखों से देखा था और उसके दो चार ठिकाने तुम्हें मालूम हैं ?

गिरजा०। बेशक !

दारोगा०। क्या उन ठिकानों का पता मुझे बता सकते हो ?

गिरजा०। नहीं।

दारोगा०। सो क्यों ?

गिरजा०। गुरुजी मुझे जो कुछ ऐयारी सिखाना था सिखा चुके। मैं गुरुजी से वादा कर चुका हूं कि अब आपकी इच्छानुसार गुरुदक्षिणा में भूतनाथ को गिरफ्तार करके आपके हवाले करूंगा और जब तक ऐसा न करूंगा अपने घर कदापि न जाऊंगा। ऐसी अवस्था में अगर मैं भूतनाथ का कुछ पता आपको बता दूं तो मानों अपने पैर में आप ही कुल्हाड़ी मारूं, क्योंकि आप अमीर और शक्तिसम्पन्न हैं, बनिस्बत मुझ गरीब के आप उसे बहुत जल्द गिरफ्तार करा सकते हैं, अस्तु अगर ऐसा हुआ और वह आपके हाथ में पड़ गया तो मैं सूखा ही रह जाऊंगा और गुरुदक्षिणा न दे सकने के कारण अपने घर भी न जा सकूंगा।

दारोगा०। (हंस कर) मगर शिवशंकर ! तुम बड़े ही बेबाक आदमी हो और बहुत ही साफ कह देते हो, ऐयारों को ऐसा न करना चाहिये।

गिरजा०। नहीं साहब, आपसे साफ साफ कह देने में कोई हर्ज नहीं है क्योंकि आप हमारे दुश्मन नहीं हैं, दूसरे यह कि अभी तक मुझे ऐयारी की पदवी नहीं मिली, जब दक्षिणा दे कर ऐयारी की पदवी पा जाऊंगा तो ऐयारों की सी चाल चलूंगा, अभी तो मैं एक गरीब छोकरा हूं।

दारोगा० । नहीं, तुम बहुत अच्छे आदमी हो। हम तुमसे खुश हैं। (बिहारीसिंह कि तरफ देख के) इस बेचारे के हाथ पैर खोल दो! (गिरजाकुमार से) मगर तुम भूतनाथ का जो कुछ पता ठिकाना जानते हो हमें बता दो, हम तुमसे वादा करते हैं कि भूतनाथ को गिरफ्तार करके काम भी निकाल लेंगे और तुम्हारे सिर से गुरुदक्षिणा का बोझ भी उतार देंगे।

गिरजा० । (मुंह बिचका कर और सिर हिला कर) जी नहीं, हां अगर इसके साथ आप और भी दो तीन बातों का वादा करें तो मैं बेशक आपकी मदद कर सकता हूं।

बिहारी० । (गिरजाकुमार के हाथ पैर खोल कर) तुम जो कुछ चाहोगे बाबाजी देंगे, मगर इनकी बातों से इन्कार न करो।

गिरजा० । (अच्छी तरह बैठ कर) ठीक है मगर मैं विशेष धन दौलत नहीं चाहता और न मुझे इसकी जरूरत ही है क्योंकि ईश्वर ने मुझे बिल्कुल ही अकेला कर दिया है, न बाप न मां, न भाई न भौजाई, ऐसी अवस्था में मैं धन दौलत लेकर क्या करूंगा, अगर दो तीन बातों का एकरार लिए बिना मैं दारोगा साहब को कुछ भी न बताऊंगा चाहे मार ही डाला जाऊं।

दारोगा० । (मुस्कुरा कर) अच्छा अच्छा बताओ तुम क्या चाहते हो?

गिरजा० । एक तो यह कि उसकी खोज में मैं अगुवा रक्खा जाऊं।

दारोगा० । मंजूर है, अच्छा और बताओ।

गिरजा० । बिहारीसिंह मेरी मदद के लिये दिये जायं क्योंकि मैं इन्हें पसन्द करता हूं।

दारोगा० । यह भी कबूल है, और बोलो!

गिरजा० । जहां तक जल्द हो सके मैं गुरुदक्षिणा के बोझ

सेहलका किया जाऊं क्योंकि इसके लिये मैं जोश में आकर बहुत बुरी कसम खा चुका हूं, यद्यपि गुरुजी मना करते थे कि तुम कसम न खाओ तुम्हारे ऐसे जिद्दी आदमी का कसम खाना अच्छा नहीं है।

दारोगा०। बेशक ऐसा ही किया जायगा, तुम जो चाहते हो वही होगा, और कहो ?

गिरजा०। गुरुदक्षिणा से छुट्टी पा कर जब मैं ऐयारी की पदवी पा जाऊं तो मुझे यहां किसी तरह की नौकरी मिल जाय जिसमें मेरा गुजारा चले, और मेरी शादी करा दी जाय। यह बात मैं इस लिये कहता हूं कि मुझे शादी करने का शौक है और मैं अपनी बिरादरी में ऐसा गरीब हूं कि कोई मुझे लड़की देना कबूल न करेगा।

दारोगा०। यह सब कुछ हो जायगा, तुम कुछ चिन्ता न करो, और फिर तुम गरीब भी न रहोगे। अच्छा बताओ और भी कुछ चाहते हो ?

गिरजा०। एक बात और है।

दारोगा०। वह भी कह डालो।

गिरजा०। (बिहारीसिंह की तरफ इशारा कर के) ये हमारे गुरुजी से किसी तरह की दुश्मनी न रक्खें और मेरे साथ वहां चलने में कोई परहेज न करें, देखिये मैं अपने दिल का हाल बहुत साफ साफ कह रहा हूं!

बिहारी०। ठीक है ठीक है, जो कुछ तुम कहते हो मुझे मंजूर है।

गिरजा०। (दारोगा की तरफ देख कर) तो बस मैं भी आपका हुक्म बजा लाने के लिये दिलोजान से तैयार हूं।

दारोगा०। अच्छा तो अब उसके दो तीन ठिकाने जो तुम

मालूम हैं, उनका पता बताओ।

गिरजा०। पता क्या, अब तो मैं खुद इनको (बिहारी को) अपने साथ ले चल कर सब कुछ दिखाऊंगा और पता लगाऊंगा। मैं उस कम्बख्त को बिना ढूंढे छोड़ने वाला नहीं, मुझे आप चाणक्य की तरह जिद्दी समझिये !

दारोगा०। अच्छा यह तो बताओ कि तुमने भूतनाथ को कहां देखा था जिसका जिक्र अभी तुमने किया है।

गिरजा०। बेगम के मकान से बाहर निकलते हुए।

बिहारी०। (ताज्जुब से) कौन बेगम ?

गिरजा०। वही जिसे जयपाल अपनी समझते हैं। ताज्जुब क्या करते हैं, उसे आप साधारण औरत न समझिये, मैं साबित कर दूंगा कि उसका मकान भी भूतनाथ का एक अड्डा है मगर वहां इत्तिफाक ही से वह कभी जाता है, हां बेगम उससे मिलने के लिये कभी कभी कहीं जाती है परन्तु उसका ठीक हाल मुझे अभी मालूम नहीं हुआ। मैं तो अब तक इसका भी पता लगा लिये होता मगर क्या कहूं गुरुजी ने कहा कि तुम जमानिया ही जाओ वहां भूतनाथ जल्दी मिल जायगा, नहीं तो मैं बेगम का ही पीछा करने वाला था।

दारोगा०। मुझे तुम्हारी इन बातों पर ताज्जुब मालूम पड़ता है !

गिरजा०। अभी क्या, आगे चल कर और भी ताज्जुब मालूम होगा जब खुद बिहारीसिंह वहां की कैफियत आपसे बयान करेंगे।

दारोगा०। खैर अगर तुम्हारी राय हो तो मैं बेगम को यहां बुलाऊं ?

गिरजा०। बुलवाइये, मगर मेरी समझ में उसे होशियार

कर देना मुनासिब न होगा बल्कि मैं तो कहता हूं कि इसका जिक्र अभी आप जयपालसिंह से भी न कीजिये, कुछ सबूत इकट्ठा कर लेने दीजिये।

दारोगा०। खैर जैसा तुम चाहते हो वैसा ही होगा, मैं बेगम को यहां बुलवा कर भूतनाथ का जिक्र न करूंगा बल्कि उसकी तबीयत और नीयत का अन्दाजा करूंगा।

गिरजा०। हां तो बुलवाइये।

दारोगा०। तब तक तुम क्या करोगे?

गिरजा०। कुछ भी नहीं, अभी तो दो तीन दिन तक मैं यहां से न जाऊंगा, बल्कि मैं चाहता हूं कि दो रोज मुझे आप इसी (बिहारीसिंह की) सूरत में रहने दीजिये और बिहारीसिंह को कहिये अपनी सूरत बदल लें जब बेगम आ कर यहां से चली जायगी तब हम दोनों आदमी भूतनाथ की खोज में जायंगे।

दारोगा०। इससे क्या फायदा? असली सूरत में अगर तुम यहां रहो तो क्या कोई हर्ज है?

गिरजा०। हां जरूर हर्ज है, यहां मैं कई ऐसे आदमियों से मिल जुल रहा हूं जिनसे भूतनाथ की बहुत सी बातें मालूम होने की आशा है, इन्हें अगर मेरा असल भेद मालूम हो जायगा तो बेशक हर्ज होगा। इसके अतिरिक्त जब बेगम यहां आ जाय तो मैं बिहारीसिंह बना हुआ आपके सामने ऐसे ढंग पर बातें करूंगा कि ताज्जुब नहीं आपको भी इस बात का पता लग जाय कि भूतनाथ से और इससे कुछ सम्बन्ध है।

दारोगा०। अगर ऐसी बात है तो तुम्हारा बिहारीसिंह ही बने रहना ठीक है।

गिरिजा०। इसी से तो मैं कहता हूं।

दारोगा०। खैर ऐसा ही होगा और मैं आज ही बेगम को

लाने के लिये आदमी भेजता हूं। (बिहारीसिंह की तरफ देख कर) तुम अपनी सूरत बदलने का बन्दोबस्त करो।

बिहारी०। बहुत अच्छा।

यहां तक बयान कर के दलीपशाह चुप हो गया और कुछ दम ले कर फिर इस तरह बयान करने लगा—

"इस समय मेरी बातें सुन सुन कर दारोगा और जयपाल वगैरह के कलेजे पर सांप लोट रहा होगा और उस समय की बातें याद करके ये बेचैन हो रहे होंगे क्योंकि वास्तव में गिरजाकुमार ने उन्हें ऐसा उल्लू बनाया कि उस बात को ये कभी भूल ही नहीं सकते। खैर, उस समय जब हम दोनों आदमी जंगल में दारोगा के सिपाहियों से जुदा हुए हमें गिरजाकुमार के मामले की कुछ खबर न थी, अगर खबर होती तो बेगम को न लूटते और न अर्जुनसिंह ही गिरजाकुमार की खोज में जमानिया जाते। खैर फिर भी जो कुछ हुआ अच्छा ही हुआ और अब मैं आगे का हाल बयान करता हूं।"

दूसरा बयान

दलीपशाह ने फिर इस तरह अपना किस्सा शुरू किया :—

"गिरजाकुमार ने अपनी बातचीत में दारोगा और बिहारीसिंह को ऐसा उल्लू बनाया कि उन दोनों को गिरजा कुमार पर पूरा पूरा भरोसा हो गया और वह खुशी के साथ जमानिया में रह कर बेगम का इन्तजार करने लगा बल्कि दारोगा के साथ जा कर उसने खास बाग का रास्ता और मायारानी को भी देख लिया। इधर अर्जुनसिंह गिरजाकुमार की खोज में जमानिया गये और मैं बेगम को गिरफ्तार करने की फिक्र में पड़ा।

"पहिले तो मैं अपने घर गया और वहां से कई आदमियों

ा इन्तजाम कर के लौटा और ठीक समय पर गंगा किनारे उस ठिकाने पहुँच गया जहां बेगम की किश्ती किनारे लगा कर लूट लेने की बातचीत कही बदी थी।

"मैं इस घटना का हाल बहुत बढ़ा कर न कहूंगा कि बेगम की किश्ती क्योंकर आई और क्या क्या हुआ तथा मैंने उसको किस तरह गिरफ्तार किया—संक्षेप में केवल इतना ही कहूंगा कि बेगम पर मैंने कब्जा कर लिया और जो चीजें उसके पास थीं सब ले ली गईं। इन्हीं चीजों में ये सब कागज और वह हीरे की अंगूठी भी थी जो भूतनाथ बेगम के यहां से ले आया है और जो इस समय दर्बार में मौजूद है। आगे चल कर मैं इन चीजों का हाल बयान करूंगा और यह भी कहूंगा कि ये सब चीजें मेरे कब्जे में आ कर फिर क्योंकर निकल गईं। इस समय मैं पुनः गिरजाकुमार का हाल बयान करूंगा जो उसी की जुबानी मुझे मालूम हुआ था।

"गिरजाकुमार जमानिया में बैठा हुआ दारोगा के साथ बेगम का इन्तजार कर रहा था। जब बेगम को लुटवा कर दोनों सिपाही जिनके साथ बेगम के भी दो आदमी थे और जिन्हें मैंने जान बूझ कर छोड़ दिया था, रोते कलपते जमानिया पहुँचे तो सीधे दारोगा के पास चले गये। उस समय वहां सूरत बदले हुए असली बिहारीसिंह और गिरजाकुमार भी बिहारीसिंह की सूरत बना हुआ बैठा था। दारोगा के सिपाहियों और बेगम के आदमियों ने अपनी बरबादी और बेगम के लुट जाने का हाल बयान किया जिसे सुनते ही दारोगा को ताज्जुब और रञ्ज हुआ और उसने गिरजाकुमार की तरफ देख कर कहा, "यह कार्रवाई किसने की होगी?"

गिरजा०। खुद बेगम ने, या फिर भूतनाथ ने! (बेगम के

आदमियों की तरफ देख के) क्यों जी! मैं समझता हूं शायद महीने भर के लगभग हुआ होगा जब एक दिन भूतना मेरे साथ बेगम के यहां गया था। उस समय तुम भी तो व थे, क्या तुमने मुझे पहिचाना था?

बेगम का आ०। जी नहीं मैंने आपको नहीं पहिचाना थ

गिरजा०। (दारोगा की तरफ देख के) आप ही के व मुताबिक मैं दो तीन दफे भूतनाथ के साथ बेगम के यहां ग था, मगर वास्तव में भूतनाथ अच्छा आदमी है और ये लो भी बड़ी मुस्तैदी के साथ वहां रहते हैं। (बेगम के आदमि की तरफ देख के) क्यों जी है न यही बात?

बेगम के आ०। (हाथ जोड़ के) जी हां सर्कार!

बेगम के आदमियों की जुबान से गिरजाकुमार ने ब खूबी के साथ 'जी हां सर्कार' कहलवा लिया। इसमें कोई श नहीं कि भूतनाथ बेगम के यहां जाया करता था और गिरजा कुमार को यह हाल मालूम था मगर ऐसे मौके पर उसके आद मियों की जुबान से 'हां' कहवा लेना मामूली बात न थी। उ खुशामदी आदमियों ने यह सोच कर कि जब खुद बिहारीसिं भूतनाथ के साथ अपना जाना कबूल करते हैं तो हां कहना ह अच्छा है—'जी हां सर्कार' कह दिया और गिरजाकुमार दारोग और बिहारी की निगाह में सच्चा बन बैठा। साथ ही इसके गिरजाकुमार दारोगा से पहिले ही कह चुका था कि बेगम आवेगी तो मैं बात ही बात में किसी तरह साबित कर दूंग कि भूतनाथ उसके यहां आता जाता है, यह बात भी दारोग को खूब याद थी, अस्तु दारोगा को गिरजाकुमार पर और भी विश्वास हो गया। उसने गिरजाकुमार का इशारा पा कर बेगम के दोनों आदमियों को बिना कुछ कहे थोड़ी देर के लिये बिदा

किया और फिर आपुस में इस तरह बातचीत करने लगा—

दारोगा०। कुछ समझ में नहीं आता कि क्या मामला है!

गिरजा०। अजी यह सब उसी कम्बख्त भूतनाथ की बद-माशी और दोनों की मिली जुली गठन है! बेगम जान बूझ कर यहां नहीं आई। अगर वह आती तो उसके आदमियों की तरह खास उसकी जुबान से भी मैं इस बात को साबित करा देता कि उससे और भूतनाथ से ताल्लुक है और इसी लिये मैं अभी बिहारीसिंह बना हुआ भी था, मगर खैर कोई चिन्ता नहीं, मैं बहुत जल्द इन सब भेदों का पूरा पूरा पता लगा लूंगा और भूतनाथ को भी गिरफ्तार कर लूंगा।

दारोगा०। तो अब देर क्यों करते हो?

गिरजा०। कुछ नहीं, कल मेरे साथ चलने के लिये बिहारी-सिंह तैयार हो जावें।

बिहारी०। अच्छी बात है, यह बताओ कि किस सूरत शक्ल में सफर किया जायगा?

गिरजा०। मैं तो एक ज्योतिषी की सूरत बनूंगा, और आप......

बिहारी०। मैं वैद्य बनूंगा।

गिरजा०। बस बस बस, यही ठीक है, मगर एक बात मैं अभी से कहे देता हूं कि दो घण्टे के लिये मैं गुरूजी से मिलने जरूर जाऊंगा।

बिहारी०। क्या हर्ज है, अगर कहोगे तो मैं भी तुम्हारे साथ चला चलूंगा या कहीं अटक जाऊंगा।

"मुख्तसर यह कि दूसरे दिन दोनों ऐयार ज्योतिषी और वैद्य बने हुए जमानिया के बाहर निकले।

"मजा तो यह है कि गिरजाकुमार ने चालाकी से उस समय

आदमियों की तरफ देख के) क्यों जी ! मैं समझता हूं कि शायद महीने भर के लगभग हुआ होगा जब एक दिन भूतनाथ मेरे साथ बेगम के यहां गया था। उस समय तुम भी तो वहां थे, क्या तुमने मुझे पहिचाना था ?

बेगम का आ०। जी नहीं मैंने आपको नहीं पहिचाना था।

गिरजा०। (दारोगा की तरफ देख के) आप ही के कहे मुताबिक मैं दो तीन दफे भूतनाथ के साथ बेगम के यहां गया था, मगर वास्तव में भूतनाथ अच्छा आदमी है और ये लोग भी बड़ी मुस्तैदी के साथ वहां रहते हैं। (बेगम के आदमियों की तरफ देख के) क्यों जी है न यही बात ?

बेगम के आ०। (हाथ जोड़ के) जी हां सर्कार !

बेगम के आदमियों की जुबान से गिरजाकुमार ने बड़ी खूबी के साथ 'जी हां सर्कार' कहलवा लिया। इसमें कोई शक नहीं कि भूतनाथ बेगम के यहां जाया करता था और गिरजाकुमार को यह हाल मालूम था मगर ऐसे मौके पर उसके आदमियों की जुबान से 'हां' कहवा लेना मामूली बात न थी। उन खुशामदी आदमियों ने यह सोच कर कि जब खुद बिहारीसिंह भूतनाथ के साथ अपना जाना कबूल करते हैं तो हां कहना ही अच्छा है—'जी हां सर्कार' कह दिया और गिरजाकुमार दारोगा और बिहारी की निगाह में सच्चा बन बैठा। साथ ही इसके गिरजाकुमार दारोगा से पहिले ही कह चुका था कि बेगम आवेगी तो मैं बात ही बात में किसी तरह साबित कर दूंगा कि भूतनाथ उसके यहां आता जाता है, वह बात भी दारोगा को खूब याद थी, अस्तु दारोगा को गिरजाकुमार पर और भी विश्वास हो गया। उसने गिरजाकुमार का इशारा पा कर बेगम के दोनों आदमियों को बिना कुछ कहे थोड़ी देर के लिये बिदा

निश्चय कर लिया था कि बिना किसी को फंसाये हुए गिरजा-कुमार का पता लगाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है।

"मुख्तसर यह है कि दो दिन की कोशिश में अर्जुनसिंह ने भुलावा देकर हरनामसिंह को गिरफ्तार कर लिया, उसे रामसरन के मकान की एक अन्धेरी कोठड़ी में ले जा कर कैद कर दिया और खाने पीने का भी प्रबन्ध कर दिया। हरनामसिंह को यह मालूम न हुआ कि उसे किसने कैद किया और किस स्थान पर वह रक्खा गया है, तथा उसे खाने पीने को कौन देता है। इस काम से छुट्टी पाकर हरनामसिंह की सूरत बन अर्जुनसिंह दारोगा के दर्बार में जा घुसे और इस तरकीब से बहुत जल्द गिरजाकुमार को पहिचान लिया और उसका पता लगा लिया। गिरजाकुमार ने जिस चालाकी से अपने को बचा लिया था उसे जान कर उसकी बुद्धिमानी पर अर्जुनसिंह को आश्चर्य हुआ मगर भण्डा फूटने के डर से ये अपने को बहुत ही बचाये हुए थे और दारोगा तथा असली बिहारीसिंह से सिर दर्द का बहाना करके कम बातचीत करते थे।

"जब बिहारीसिंह को साथ लेकर गिरजाकुमार शहर के बाहर निकला तो अर्जुनसिंह ने भी सूरत बदल कर उसका पीछा किया। जब दोनों मुसाफिर एक मंजिल रास्ता तै कर चुके तो दूसरे दिन के सफर में एक जगह मौका पाकर और कुछ देर के लिये गिरजाकुमार को अकेला देख कर अर्जुनसिंह उसके पास चले गये और इन्होंने अपने को उस पर प्रगट कर दिया। जल्द जल्द बातचीत करके इन्होंने उसे यह बता दिया कि उसके चले जाने के बाद क्या हुआ तथा अब उसे क्या क्या और किस ढंग पर कार्रवाई करनी चाहिये और हममें तुममें कहां कहां किस किस मौके पर या कैसी कैसी सूरत से मुलाकात

तक किसी को अपनी असली सूरत देखने नहीं दी। जब त
वहां रहा बिहारीसिंह ही बना रहा, जब बाहर निकला
ज्योतिषी बन कर निकला। खैर, दारोगा का तो कहना ही क्
है, खुद बिहारीसिंह भी ऐयार हो कर उल्लू बन गया। मैं
यही कहूंगा कि बिहारीसिंह और हरनामसिंह व्यर्थ ही ऐया
कहलाये, असल में कोई अच्छा काम इन दोनों के हाथ से हो
देखा सुना नहीं गया।

"अब हम थोड़ा सा हाल अर्जुनसिंह का बयान करते
जो गिरजाकुमार का पता लगाने के लिये हमसे जुदा हो क
जमानिया गये थे। जमानिया में रामसरन नामी एक महाज
अर्जुनसिंह का दोस्त था, अस्तु ये सूरत बदले हुए सीधे उस
के मकान पर चले गये और मौका पाकर उससे मुलाकात कर
बाद सब हाल बयान किया और उससे मदद चाही। पहिले तो
वह दारोगा और मायारानी के खिलाफ कार्रवाई करने के नाम
से बहुत डरा मगर अर्जुनसिंह ने उसे बहुत भरोसा दिलाय
और कहा कि जो कुछ हम करेंगे वह ऐसे ढंग से करेंगे कि तुम
पर किसी को किसी तरह का शक न होगा, इसके अतिरिक्त हम
तुमसे और किसी तरह की मदद नहीं चाहते केवल एक गुप्त
कोठड़ी ऐसे ढंग की चाहते हैं जिसमें अगर हम किसी को गिर-
फ्तार करके लावें तो दो चार दिन के लिये कैद कर रक्खें, और
यह काम भी ऐसी खूबी के साथ किया जायगा कि कैदी को
इस बात का गुमान भी न होगा कि वह कहां और किसके
मकान में कैद किया गया था।

"खैर, रामसरन ने किसी तरह अर्जुनसिंह की बात मंजूर
कर ली और तब अर्जुनसिंह उसके मकान से बाहर निकल कर
हरनामसिंह को फंसाने की फिक्र करने लगे, क्योंकि इन्होंने

निश्चय कर लिया था कि बिना किसी को फंसाये हुए गिरजा-कुमार का पता लगाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है।

"मुख्तसर यह है कि दो दिन की कोशिश में अर्जुनसिंह ने भुलावा देकर हरनामसिंह को गिरफ्तार कर लिया, उसे रामसरन के मकान की एक अन्धेरी कोठड़ी में ले जा कर कैद कर दिया और खाने पीने का भी प्रबन्ध कर दिया। हरनामसिंह को यह मालूम न हुआ कि उसे किसने कैद किया और किस स्थान पर वह रक्खा गया है, तथा उसे खाने पीने को कौन देता है। इस काम से छुट्टी पाकर हरनामसिंह की सूरत बन अर्जुनसिंह दारोगा के दर्बार में जा घुसे और इस तरकीब से बहुत जल्द गिरजाकुमार को पहिचान लिया और उसका पता लगा लिया। गिरजाकुमार ने जिस चालाकी से अपने को बना लिया था उसे जान कर उसकी बुद्धिमानी पर अर्जुनसिंह को आश्चर्य हुआ मगर भण्डा फूटने के डर से ये अपने को बहुत ही बचाये हुए थे और दारोगा तथा असली बिहारीसिंह से सिर दर्द का बहाना करके कम बातचीत करते थे।

"जब बिहारीसिंह को साथ लेकर गिरजाकुमार शहर के बाहर निकला तो अर्जुनसिंह ने भी सूरत बदल कर उसका पीछा किया। जब दोनों मुसाफिर एक मंजिल रास्ता तै कर चुके तो दूसरे दिन के सफर में एक जगह मौका पाकर और कुछ देर के लिये गिरजाकुमार को अकेला देख कर अर्जुनसिंह उसके पास चले गये और उन्होंने अपने को उस पर प्रगट कर दिया। जल्द जल्द बातचीत करके इन्होंने उसे यह बता दिया कि उसके जमानिया चले जाने के बाद क्या हुआ तथा अब उसे क्या क्या और किस ढंग पर कार्रवाई करनी चाहिये और हमसे तुमसे कहां कहां किस किस मौके पर या कैसी कैसी सूरत से मुलाकात

होगी।

"अर्जुनसिंह ने गिरजाकुमार को जो कुछ समझाया उसका हाल आगे चल कर मालूम होगा। इस जगह केवल इतना ही कहना काफी है कि गिरजाकुमार को समझा कर अर्जुनसिंह फिर जमानिया चले गये और रात के समय हरनामसिंह को बेहोश करके कैदखाने से निकाल और शहर के बाहर बहुत दूर मैदान ले जाकर छोड़ दिया और अपना रास्ता पकड़ा जिसमें होश में आकर वह अपने घर चला जाय और उसे मालूम न हो कि उसके साथ किसने क्या सलूक किया बल्कि यह बात उसे स्वप्न की तरह याद रहे।

"इसके बाद अर्जुनसिंह बहुत जल्द मेरे पास पहुँचे और जो कुछ हो चुका था उसे बयान किया। गिरजाकुमार का हाल सुन कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और मैंने बेगम के साथ जो कुछ सलूक किया था उसका हाल अर्जुनसिंह से बयान किया और जो कुछ चीज उसकी मेरे हाथ लगी थीं दिखा कर यह भी कहा कि बेगम अभी तक मेरे यहां कैद है अस्तु सोचना चाहिये कि अब उसके साथ क्या कारवाई की जाय?

"उन दिनों असल में मुझे तीन बातों का फिक्र लगी हुई थी। एक तो यह कि यद्यपि भूतनाथ से और मुझसे रंज चला आता था और भूतनाथ ने अपना मरना मशहूर कर दिया था, मगर भूतनाथ की स्त्री मेरे यहां आई हुई थी और उसकी अवस्था पर मुझे दुःख होता था, इसलिये मैं चाहता था किसी तरह भूतनाथ से मुलाकात हो और मैं उसे समझा बुझा कर ठीक रास्ते पर लाऊं, दूसरे यह कि राजा गोपालसिंह के मरने का असल सबब दरियाफ्त करूं, और तीसरे बलभद्रसिंह तथा लक्ष्मीदेवी को दारोगा को कैद से छुड़ाऊं जिसका कुछ कुछ हाल मुझे

मालूम हो चुका था। बस इन्हीं कामों के लिये हम लोगों ने इतनी मेहनत अपने सर पर उठाई हुई थी नहीं तो जमानिया के बारे में हम लोगों के लिये अब किसी तरह की दिलचस्पी नहीं रह गई थी।

"बेगम की जो चीजें मेरे हाथ लगी थीं उनमें से कई कागज और एक हीरे की अंगूठी ऐसी थी जिस पर ध्यान देने से हम लोगों को मालूम हो गया कि बेगम भी कोई साधारण औरत नहीं है। उन कागजों में से कई चीठियां ऐसी थीं जो भूतनाथ के विषय में जयपाल ने बेगम को लिखी थीं और कई चीठियां ऐसी थीं जिनके पढ़ने से मालूम होता था कि मायारानी के बाप को भी इसी जयपाल ने मायारानी और दारोगा की इच्छानुसार मार कर जहन्नुम में पहुंचवा दिया है और बलभद्रसिंह अभी तक जीता है, मगर साथ ही इसके उन चीठियों से यह भी जाहिर होता था कि असली लक्ष्मीदेवी दारोगा के कैदखाने से न मालूम किस तरह निकल कर भाग गई जिसका पता लगाने के लिये दारोगा बहुत उद्योग कर रहा है मगर पता नहीं लगता। वह जो हीरे की अंगूठी थी वह वास्तव में हेलासिंह (मायारानी के बाप) की थी जो उसके मारने के बाद जयपाल के हाथ लगी थी। उस अंगूठी के साथ एक कागज का पुर्जा बंधा हुआ था जिस पर बलभद्रसिंह को कैद में रखने और हेलासिंह को मार डालने की आज्ञा थी और उस पर मायारानी तथा दारोगा दोनों के हस्ताक्षर थे।

"वे कागज के पुर्जे और अंगूठी इस समय महाराज के दर्बार में मौजूद हैं जो भूतनाथ बेगम के यहां से उस समय ले आया था जब वह असली बलभद्रसिंह को छुड़ाने के लिये गया था आप लोगों को इस बात पर आश्चर्य होगा कि जब ये स

चीजें बेगम को गिरफ्तार करने पर मेरे कब्जे में आ ही चुकी थीं तो पुनः बेगम के कब्जे में कैसे चली गईं ? इसके जवाब में केवल इतना ही कह देना काफी है कि जब बेगम मेरे कब्जे से निकल गई तो वे चीजें भी उसी के साथ जाती रहीं और फिर मैं भी बेगम तथा दारोगा के कब्जे में चला गया और इन सब बातों का कर्ता-धर्ता भूतनाथ ही है जिसने उस समय बहुत बड़ा धोखा खाया और जिसके सबब से कुछ दिन बाद उसे तकलीफ उठानी पड़ी। मैंने यह भी सुना था कि अपनी इस भूल से शर्मिन्दा हो कर भूतनाथ ने बेगम और जयपाल को बड़ी बड़ी तकलीफें दीं मगर उसका नतीजा उस समय कुछ भी न निकला, खैर अब मैं पुनः अपने किस्से की तरफ झुकता हूं।

दलीपशाह की इस बात को सुन कर महाराज ने पुनः उस हीरे की अंगूठी और उन चीठियों के देखने की इच्छा प्रगट की जो भूतनाथ बेगम के यहां से लाया था। तेजसिंह ने पहिले महाराज को और फिर और लोगों को भी वे चीजें दिखाईं और इसके बाद फिर दलीपशाह ने इस तरह अपना हाल बयान करना शुरू किया :—

"अर्जुनसिंह ज्यादे देर तक मेरे पास नहीं ठहरे, उस समय जो कुछ हम लोगों को करना चाहिये था बहुत जल्द निश्चय कर लिया गया और इसके बाद अर्जुनसिंह के साथ मैं भी घर से बाहर निकला और हम दोनों मित्र गिरजाकुमार की तरफ रवाना हुए।

"अब गिरजाकुमार का हाल सुनिये कि अर्जुनसिंह से मिलने के बाद फिर क्या हुआ।

"बिहारीसिंह और गिरजाकुमार दोनों आदमी सफर करते हुए एक ऐसे स्थान में पहुँचे जहां से बेगम का मकान केवल पांच

ोस की दूरी पर था। यहां पर एक छोटा गांव था जहां मुसाफिरों के लिये खाने पीने का मामूली चीजें मिल सकती थीं और जिसमें हलवाई की एक छोटी सी दूकान भी थी। गांव के बाहरी प्रान्त में जिमीदारों के कई देहाती ढंग के बगीचे थे और पास ही में पलास का छोटा सा जंगल भी था। सन्ध्या होने में घन्टे भर की देर थी और बिहारीसिंह चाहता था कि हम लोग बराबर चले जायं, दो तीन घन्टे रात जाते बेगम के मकान तक पहुँच ही जायंगे, मगर गिरजाकुमार को यह बात मंजूर न थी, उसने कहा कि मैं बहुत थक गया हूं और अब एक कोस भी आगे नहीं चल सकता इस लिये यही अच्छा होगा कि आज की रात इसी गांव के बाहर किसी बगीचे अथवा जंगल में बिता दी जाय।

"यद्यपि दोनों की राय दो तरह की थी, मगर बिहारीसिंह को लाचार हो गिरजाकुमार की बात माननी पड़ी और यह निश्चय करना ही पड़ा कि आज रात अमुक बगीचे में बिताई जायगी, अस्तु सन्ध्या हो जाने पर दोनों आदमी गांव में हलवाई की दूकान पर गये और वहां पूरी तरकारी बनवा कर पुनः गांव के बाहर चले गये।

"चांदनी निकली हुई थी और चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। बिहारीसिंह और गिरजाकुमार एक पेड़ के नीचे बैठे हुए धीरे धीरे भोजन और निम्नलिखित बातें करते जाते थे—

गिरजा०। आज की भूख में ये पूरियां बड़ा ही मजा दे रही हैं।

बिहारी०। यह भूख ही का कारण नहीं है बल्कि बनी अच्छी हैं, इसके अतिरिक्त तुमने आज बूटा (भांग) भी गहरी पिला दी है।

गिरजा०। अजी इसी बूटी की बदौलत तो सफर की हर

रत मिटेगी।

बिहारी०। मगर नशा तो तेज हो रहा है और अभी तक बढ़ता ही जाता है!

गिरजा०। तो अपने लोगों को करना ही क्या है?

बिहारी०। और कुछ नहीं तो अपने कपड़े लत्ते और बटु का खयाल तो है।

गिरजा०। (हंस कर) मजा तो तब हो जो इस समय भूतनाथ से सामना हो जाय।

बिहारी०। हर्ज ही क्या है? मैं इस समय भी लड़ने को तैयार हूं मगर वह बड़ा ही तेज ताकतवर और काइयां ऐयार है।

गिरजा०। उसकी कदर तो राजा गोपालसिंह जानते थे।

बिहारी०। मेरे खयाल से तो यह बात नहीं है।

गिरजा०। तुम्हें खबर ही नहीं है, अगर मौका मिला तो मैं इस बात को साबित कर दूंगा।

बिहारी०। किस ढंग से साबित करोगे?

गिरजा०। खुद राजा गोपालसिंह की जुबान से।

बिहारी०। (हंस कर) क्या भंग के नशे में पागल हो गये हो? राजा गोपालसिंह अब कहां हैं?

गिरजा०। असल बात तो यह है कि मुझे राजा गोपालसिंह के मरने का विश्वास ही नहीं है।

बिहारी०। (चौकन्ना हो कर) सो क्या? तुम्हारे पास उनके जीते रहने का क्या सबूत है?

गिरजा०। बहुत कुछ सबूत है मगर इस विषय पर मैं हुज्जत या बहस करना पसन्द नहीं करता, जो कुछ असल बात है तुम स्वयम् जानते हो, अपने दिल से पूछ लो।

बिहारी०। मैं तो यही जानता हूं कि राजा साहब मर गये।

गिरजा० । खैर तो मैं कही चुका हूं कि इस विषय पर बहस करूंगा।

बिहारी० । मगर बताओ तो सही कि तुमने क्या समझ के ऐसा कहा ?

गिरजा० । मैं कुछ भी न बताऊंगा।

बिहारी० । फिर हमारी तुम्हारी दोस्ती ही क्या ठहरी जो एक जरा सी बात छिपा रहे हो और पूछने पर भी नहीं बताते !

गिरजा० । (हंस कर) तुम्हें ऐसा कहने का हक नहीं है, जब तुम खुद दोस्ती का खयाल न करके ये बातें छिपा रहे हो तो मैं क्या बताऊं ?

बिहारी० । (संकोच के साथ) मैं तो कुछ भी नहीं छिपाता।

गिरजा० । अच्छा मेरे सर पर हाथ रख के कह तो दो कि वास्तव में राजा साहब मर गए ! मैं अभी साबित कर देता हूं कि तुम छिपाते हो या नहीं। अगर तुम सच कह दोगे तो मैं भी बता दूंगा कि इसमें कौन कौन सी नई बात पैदा हो गई है और वह क्या रंग खिला चाहता है ?

बिहारी० । (कुछ सोच कर) पहिले तुम बताओ फिर मैं भी बताऊंगा।

गिरजा० । ऐसा नहीं हो सकता।

"इस समय बिहारीसिंह नशे में मस्त था, एक तो गिरजाकुमार ने उसे भंग पिला दी थी, दूसरे उसने जो पूरियां खाई थीं उनमें भी एक प्रकार का बेढब नशा मिला हुआ था क्योंकि वास्तव में उस हलवाई के यहां मैंने और अर्जुनसिंह ने पहिले ही से प्रबन्ध कर लिया था और ये बातें गिरजाकुमार से कही बदी थीं जैसा कि ऊपर के बयान से आपको मालूम हो चुका है, परन्तु गिरजाकुमार ने पहिले ही से एक दवा खा ली थी जिससे

उन पूरियों का असर उस पर कुछ भी न हुआ, मगर बिहारीसिंह धीरे धीरे अलमस्त हो गया और थोड़ी ही देर में बेहोश होने वाला था। वह ऐसा मस्त और दिल खुश करने वाला नशा था जिसके वश में हो कर बिहारीसिंह ने अपने दिल का भेद खोल दिया, मगर अफसोस, भूतनाथ ने हमारी कुल मेहनत पर मट्टी डाल दिया और हम लोगों को बरबाद कर दिया। उस भेद का पता लग जाने पर भी हम लोग कुछ न कर सके जिसका सबब आगे चल कर आपको मालूम होगा। जब गिरजाकुमार और बिहारीसिंह में बातें हो रही थीं उस समय हम दोनों मित्र भी वहां से थोड़ी ही दूर पर छिपे हुए खड़े थे और इन्तजार कर रहे थे कि बिहारीसिंह बेहोश हो जाय और गिरजाकुमार बुलाये तो हम दोनों भी वहां जा पहुँचें।

"गिरजाकुमार ने पुनः जोर दे कर कहा, "ऐसा नहीं हो सकता, पहिले तुम्हीं को अपने दिल का परदा खोल के और सच्चा सच्चा हाल कहके दोस्ती का परिचय देना चाहिये और यह बात मुझसे छिपी नहीं रह सकती कि तुमने सच कहा या झूठ, क्योंकि जो कुछ भेद है उसे मैं खूब जानता हूं।

बिहारी०। मुझे भी ऐसा ही मालूम होता है, खैर अब मैं कोई बात तुमसे न छिपाऊंगा, सब भेद साफ साफ कह दूंगा। मगर इस समय केवल इतना ही कहूंगा कि वास्तव में राजा साहब मरे नहीं बल्कि अभी तक जीते हैं।

गिरजा०। इतना तो मैं खुद कह चुका हूं, इससे कुछ ज्यादे कहो तो मुझे विश्वास हो।

"गिरजाकुमार की बात का बिहारीसिंह कुछ जवाब दिया ही चाहता था कि सामने से एक आदमी आता हुआ दिखाई पड़ा जो पास आते ही चांदनी के सबब से बहुत जल्द पहिचान

खुले मैदान भूतनाथ को गिरफ्तार करना दो चार आदमियों का काम नहीं है। साथ ही वह यह सुन कर और भी घबड़ा गया कि हमारा साथी वास्तव में शिवशंकर या हमारा मददगार नहीं है बल्कि हमें धोखे में डाल कर उल्लू बनाने वाला और भेद ले लेने वाला एक चालाक ऐयार है, इससे जो मैंने गोपालसिंह के जीते रहने का भेद बता दिया सो अच्छा नहीं किया।

"इसी घबराहट में बिहारीसिंह का नशा पूरे दर्जे पर पहुँच गया और सिर नीचा करके सोचता ही सोचता वह बेहोश हो कर जमीन पर लम्बा हो गया। इस समय गिरजाकुमार की तरफ देख के भूतनाथ ने कहा, "तुम इस बात का ख्याल छोड़ दो कि मेरे सामने से भाग जाओगे या चिल्ला कर लोगों को इकट्ठा कर लोगे!"

गिरजा०। मगर मुझसे आपको किसी तरह की दुश्मनी न होनी चाहिये क्योंकि मैंने आपका कुछ नुकसान नहीं किया है।

भूतनाथ०। सिवाय इसके कि मुझे गिरफ्तार कराने की फिक्र में हो।

गिरजा०। कदापि नहीं, यह तो एक तरकीब थी कि जिससे मैंने अपने को कैद होने से बचा लिया, यही सबब था कि इस समय मैंने इसे (बिहारीसिंह को) धोखा देकर बेहोशी की दवा खिला दी और इसे बांध कर अपने घर ले जाने वाला था।

भूत०। तुम्हारी बातें मान लेने के योग्य हैं मगर मैं इस बात को भी खूब जानता हूं कि तुम बड़े बातूनी हो और बातों के जाल में बड़े बड़े चालाकों को फंसा कर उल्लू बना सकते हो।

"इतना कह कर भूतनाथ ने अपनी जेब में से कपड़े का एक टुकड़ा निकाल कर गिरजाकुमार के मुंह पर रख दिया और फिर गिरजाकुमार को दीन दुनिया की कुछ भी खबर न रही।

कर मुझे गिरफ्तार करा देने का बन्दोबस्त कर रहा है।

"उस मामले के कई सप्ताह बाद एक दिन आधी रा समय भूतनाथ पागलों की सी हालत में मेरे घर आया उसने मेरा लड़का समझ कर अपने हाथ से खुद अपने लड़ खून किया जिसका रंज इस जिन्दगी में उसके दिल से निकल सकता और जिसका खुलासा हाल वह स्वयं उ जीवनी में बयान करेगा। इसी के थोड़े दिन बाद भूतनाथ बदौलत मैं दारोगा के कब्जे में जा फंसा।

"जब तक मैं स्वतन्त्र रहा मुझे गिरजाकुमार का हाल भी मालूम न हुआ, जब मैं पराधीन होकर कैदखाने में और वहां गिरजाकुमार से जिसे भूतनाथ ने दारोगा के कर दिया था मुलाकात हुई तब गिरजाकुमार की जुबानी हाल मालूम हुआ।

"भूतनाथ के कब्जे में पड़ जाने के बाद जब गिरजाकु होश में आया तो उसने अपने को एक पत्थर के खम्भे के बंधा हुआ पाया जो किसी सुन्दर सजे हुए कमरे के बा दालान में था। वह चौकन्ना होकर चारों तरफ देखने गौर करने लगा मगर इस बात का निश्चय न कर सका कि मकान किसका है, हां शक होता था कि यह दारोगा का म होगा क्योंकि अपने सामने भूतनाथ के साथ ही साथ बिह सिंह और दारोगा साहब को भी बैठे हुए देखा।

"गिरजाकुमार दारोगा बिहारीसिंह और भूतनाथ में तक तरह तरह की बातें होती रहीं और गिरजाकुमार ने अपनी बातों की उलझन में उन्हें ऐसा बनाया कि किसी त असल भेद का वे लोग पता न लगा सके, मगर फिर भी गिर कुमार को उनके हाथों से छुट्टी न मिली और वह तिलिस

मेरे साथ जमानिया चलने को तैयार हो गये, अस्तु हम दोनों आदमी भेष बदल कर घर से निकले और जमानिया की तरफ रवाना हुए।

"सन्ध्या हुआ ही चाहती थी जब हम दोनों आदमी जमानिया शहर के पास पहुँचे, उस समय सामने से दारोगा का एक सिपाही आता हुआ दिखाई पड़ा। हम लोग बहुत खुश हुए और अर्जुनसिंह ने कहा, "लो भाई सगुन तो बहुत अच्छा मिला कि शिकार सामने आ पहुंचा और चारो तरफ सन्नाटा भी छाया हुआ है, इस समय इसे जरूर गिरफ्तार करना चाहिये, इसके बाद इसी की सूरत बन कर दारोगा के पास पहुँचना और उसे धोखा देना चाहिये।"

"हम दो आदमी थे और सिपाही अकेला था, ऐसी अवस्था में किसी तरह की चालबाजी की जरूरत न थी केवल तकरार कर लेना ही काफी था। हुज्जत और तकरार करने के लिये किसी मसाले की जरूरत नहीं पड़ती, जरा सा छेड़ देना ही काफी होता है। पास आने पर अर्जुनसिंह ने जान बूझ कर उसे धक्का दे दिया और वह भी दारोगा के घमंड पर फूला हुआ हम लोगों से उलझ पड़ा। आखिर हम लोगों ने उसे गिरफ्तार कर लिया और बेहोश कर के वहां से दूर एक सन्नाटे जंगल में ले जाकर उसकी तलाशी लेने लगे। उसके पास से भूतनाथ के नाम की एक चीठी निकली जो खास दारोगा के हाथ की लिखी हुई थी और उसमें यह लिखा हुआ था—

"प्यारे भूतनाथ,

कई दिन से हम तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं। ठीक ठीक बताओ कि कब मुलाकात होगी और कब तक काम हो जाने की उम्मीद है।'

"इस चीठी को पढ़ कर हम दोनों ने सलाह की कि इस आ

में बहुत साफ दिखाई दे रहा था और मालूम होता था कि व हम दोनों को देख कर मुस्कुरा रहा है।

भूतनाथ की सूरत देखते ही हम दोनों चौंक पड़े और मे मुंह से निकल पड़ा "भूतनाथ !" उसी समय मेरी निगाह उ आदमी पर जा पड़ी जिसके पीछे पीछे हम लोग वहां त पहुँचे थे। देखा कि दो आदमी खड़े खड़े उससे बातें कर रहे ह और हाथ के इशारे से मेरी तरफ कुछ बता रहे हैं।

मेरे मुंह से निकली हुई आवाज सुन कर भूतनाथ हंसा औ बोला, "जी हां, वास्तव में मैं भूतनाथ हूं, और आप लोग !"

मैं०। हम दोनों गरीब मुसाफिर हैं।

भूत०। (हंस कर) यद्यपि आप लोगों की तरह भूतनाथ अपनी सूरत नहीं बदला करता मगर आप लोगों को पहिचानने में किसी तरह की भूल भी नहीं कर सकता।

मैं०। अगर ऐसा है तो आप ही बताइये हम लोग कौन हैं?

भूत०। आप लोग दलीपशाह और अर्जुनसिंह हैं, जिन्हें मैं कई दिनों से खोज रहा हूं।

मैं०। (ताज्जुब के साथ) ठीक है, जब आपने पहिचान ही लिया तो मैं अपने को क्यों छिपाऊं मगर यह तो बताइये कि आप मुझे क्यों खोज रहे थे?

भूत०। इसीलिये कि मैं आपसे अपने कसूरों की माफी मांगू, आरजू मिन्नत और खुशामद के साथ अपने को आपके पैरों पर डाल दूं, और कहूं कि अगर जी में आवे तो अपने हाथ से मेरा सर काट लीजिये मगर एक दफे कह दीजिये कि मैंने तेरा कसूर माफ किया!

मैं०। बड़े ताज्जुब की बात है कि तुम्हारे दिल में यह बात पैदा हुई! क्या तुम्हारी आंखें खुल गईं और मालूम हो गया

कि तुम वहुत बुरे रास्ते पर चल रहे हौ ?

भूत० । जी हां, मुझे मालूम हो गया और मैं समझ गया कि अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मार रहा हूं ।

मैं० । वड़ी खुशी की वात है अगर यह तुम सच्चे दिल से कह रहे हौ ।

भूत० । वेशक मैं सच्चे दिल से कह रहा हूं और अपने किये पर मुझे वड़ा अफसोस है ।

मैं० । भला कह तो जाओ कि तुम्हें किन किन वातों का अफसोस है ?

भूत० । सो न पूछिये, सिर से पैर तक मैं कसूरवार हो रहा हूं, एक दो हों तो कहा जाय, कहां तक गिनाऊं ?

मैं० । खैर न सही, अच्छा यह वताओ कि मुझसे किस किस कसूर की माफी चाहते हो ? मेरा तो तुमने कुछ भी नहीं विगाड़ा ।

भूत० । यह आपका वड़प्पन है जो आप ऐसा कहते हैं, मगर वास्तव में मैंने आपका वहुत वड़ा कसूर किया है । और वातों के अतिरिक्त मैंने आपके सामने आपके लड़के को मार डाला है यह कहां का......

मैं० । (वात काट कर) नहीं नहीं भूतनाथ ! तुम भूलते हौ, अथवा तुम्हें मालूम नहीं है कि तुमने मेरे लड़के का खून नहीं किया वल्कि अपने लड़के का खून किया है ।

भूत० । (चौंक कर वेचैनी के साथ) यह आप क्या कह रहे हैं ?

मैं० । वेशक मैं सच कह रहा हूं । इस काम में तुमने धोखा खाया और अपने लड़के को अपने हाथ से मार डाला । उन दिनों तुम्हारी स्त्री वीमार होकर मेरे यहां आई हुई थी और

अपनी आंखों से तुम्हारी इस कार्रवाई को देख रही थी।

भूत०। (घबराहट के साथ) तो क्या अब भी मेरी स्त्री आप ही के मकान में है !!

मैं०। नहीं, वह मर गई क्योंकि बीमारी में वह इस दुःख को बर्दाश्त न कर सकी।

भूत०। (कुछ देर तक चुप रहने और सोचने के बाद) नहीं नहीं, यह बात नहीं है। मालूम होता है कि तुमने खुद मेरे लड़के को मार कर अपने लड़के का बदला चुकाया !!

अर्जुन०। नहीं नहीं भूतनाथ ! वास्तव में तुमने खुद अपने लड़के को मारा है और इस बात को मैं खूब जानता हूं।

भूत०। (भारी आवाज से) खैर अगर मैंने अपने लड़के का खून किया है तब भी दलीपशाह का कसूरवार हूं। इसके अतिरिक्त और भी कई कसूर मुझसे हुए हैं, अच्छा हुआ कि मेरी स्त्री मर गई नहीं तो उसके सामने......

मैं०। मगर हरनामसिंह और कमला को ईश्वर कुशल पूर्वक रक्खे।

भूत०। (लम्बी सांस लेकर) बेशक भूतनाथ बड़ा ही बदनसीब है !!

मैं०। अब भी सम्हल जाओ तो कोई चिन्ता नहीं।

भूत०। बेशक मैं अपने को सम्हालूंगा और जो कुछ आप कहेंगे, वही करूंगा। अच्छा मुझे थोड़ी देर के लिये आज्ञा दीजिये तो मैं उस आदमी से दो दो बातें कर आऊं जिसके पीछे पीछे आप यहां तक आये हैं।

"इतना कह कर भूतनाथ उस आदमी के पास चला गया मगर उसके साथी लोग हमें घेरे खड़े ही रहे। इस समय मेरे दिल का विचित्र हाल था। मैं निश्चय नहीं कर सकता था कि भूत-

नाथ की बातें किस ढंग पर जा रही हैं और इसका नतीजा क्या होगा, तथापि मैं इस बात के लिये तैयार था कि जिस तरह हो सकेगा मेहनत करके भूतनाथ को अच्छे ढर्रे पर ले आऊंगा। मगर वास्तव में मैं ठगा गया और जो कुछ मैं सोचता था वह मेरी नादानी थी।

"उस आदमी से बातचीत करने में भूतनाथ ने बहुत देर नहीं लगाई और उसे झटपट विदा करके वह पुनः मेरे पास आकर बोला, "कम्बख्त दारोगा मुझसे चालबाजी करता है और मेरे ही हाथों से मेरे दोस्तों को गिरफ्तार कराना चाहता है।

मैं०। दारोगा बड़ा ही शैतान है और उसके फेर में पड़ कर तुम बर्बाद हो जाओगे। अच्छा अब हम लोग भी विदा होना चाहते हैं, यह बताओ कि तुमसे किस तरह की उम्मीद अपने साथ लेते जायं ?

भूत०। मुझसे आप हर तरह की उम्मीद कर सकते हैं, जो कुछ आप कहेंगे मैं वही करूंगा बल्कि आपके साथ ही साथ आपके घर चलूंगा।

मैं०। अगर ऐसा करो तो मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहे।

भूत०। बेशक मैं ऐसा ही करूंगा मगर पहिले आप यह बता दें कि आपने मेरा कसूर माफ किया।

मैं०। हां मैंने माफ किया।

भूत०। अच्छा तो अब आप मेरे डेरे पर चलियं।

मैं०। तुम्हारा डेरा कहां पर है ?

भूत०। यहां से थोड़ी ही दूर पर।

मैं०। खैर चलो मैं तैयार हूं, मगर इस बात का वादा कर दो कि लौटती समय तुम मेरे साथ चलोगे।

भूत०। जरूर चलूंगा।

"इतना कह कर भूतनाथ चल पड़ा और हम दोनों भी उसके पीछे पीछे रवाना हुए।

"आप लोग खयाल करते होंगे कि भूतनाथ ने हम दोनों को उसी जगह क्यों नहीं गिरफ्तार कर लिया मगर यह बात भूतनाथ के किये नहीं हो सकती थी। यद्यपि उसके साथ कई सिपाही या नौकर भी मौजूद थे मगर फिर भी वह इस बात को खूब समझता था कि इस खुले मैदान में दलीपशाह और अर्जुनसिंह को एक साथ गिरफ्तार कर लेना उसकी सामर्थ से बाहर है। साथ ही इसके यह भी कह देना जरूरी है कि उस समय तक भूतनाथ को इस बात की खबर न थी कि उसके बटुए को चुरा लेने वाला यही अर्जुनसिंह है। उस समय तक क्या बल्कि अब तक भूतनाथ को इस बात की खबर न थी। उस दिन जब स्वयम् अर्जुनसिंह ने अपनी जुबान से कहा तब मालूम हुआ।

"कोस भर से ज्यादे हम लोग भूतनाथ के पीछे पीछे चले गये और इसके बाद एक भयानक सुनसान और उजाड़ घाटी में पहुँचे जो दो पहाड़ियों के बीच में थी। वहां से कुछ दूर तक घूमघुमौवे रास्ते पर चल कर भूतनाथ के डेरे पर पहुँचे। वह एक ऐसा स्थान था जहां किसी मुसाफिर का पहुंचना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव था। जिस खोह में भूतनाथ का डेरा था वह बहुत बड़ी और बीस पचीस आदमियों के रहने लायक थी और वास्तव में इतने ही आदमियों के साथ वह वहां रहता भी था।

"वहां भूतनाथ ने हम दोनों की बड़ी खातिर की और बार बार आजिजी करता और माफी मांगता रहा। खाने पीने का सब सामान वहां मौजूद था अस्तु इशारा पा कर भूतनाथ के

आदमियों ने तरह तरह का खाना बनाना आरम्भ कर दिया और कई आदमी नहाने धोने का सामान दुरुस्त करने लगे।

"हम दोनों बहुत प्रसन्न थे और समझते थे कि अब भूतनाथ ठीक रास्ते पर आ जायगा, अस्तु हम लोग जब तक स्नान सन्ध्या पूजन से निश्चिन्त हुए तब तक भोजन भी तैयार हुआ और बेफिक्री के साथ हम तीनों आदमियों ने एक साथ भोजन किया। इसके बाद निश्चिन्ती से बैठ कर बातचीत करने लगे।

भूत०। दलीपशाह! मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि मेरी स्त्री का देहान्त हो गया और मेरे हाथ से एक बहुत ही बुरा काम हो गया।

मैं०। बेशक अफसोस की जगह है, मगर खैर जो कुछ होना था हो गया, अब तुम घर पर चलो और नेकनीयती के साथ दुनिया में काम करो।

भूत०। ठीक है, मगर मैं यह सोचता हूं कि अब घर जाने से फायदा ही क्या है? मेरी स्त्री मर गई और अब दूसरी शादी मैं कर ही नहीं सकता, फिर किस सुख के लिये शहर चल कर बसूं?

मैं०। हरनामसिंह और कमला का भी तो कुछ खयाल करना चाहिये, इसके अतिरिक्त क्या रण्डे लोग शहर में रह कर नेकनीयती के साथ रोजगार नहीं करते?

भूत०। कमला और हरनामसिंह होशियार हैं और एक अच्छे रईस के यहां परवरिश पा रहे हैं, इसके अतिरिक्त किशोरी उन दोनों की सहायक है, अतएव उनके लिये मुझे किसी तरह की चिन्ता नहीं है। बाकी रही आपकी दूसरी बात, उसका जवाब यह हो सकता है कि शहर में नेकनीयती के साथ अब मैं कर ही क्या सकता हूं क्योंकि मैं तो किसी को मुंह दिखलाने

लायक ही नहीं रहा। एक तो दयाराम वाली वारदात ने मुझे बेकाम कर ही दिया था, दूसरे इस लड़के के खून ने मुझे और भी बर्बाद कर दिया, अब मैं कौन सा मुंह लेकर भले आदमियों में बैठूंगा ?

मैं०। ठीक है, मगर इन दोनों मामलों की खबर हम लोग दो तीन खास खास आदमियों के सिवाय और किसी को नहीं है और हम लोग तुम्हारे साथ कदापि बुराई नहीं कर सकते।

भूत०। तुम्हारी इन बातों पर मुझे विश्वास नहीं हो सकता क्योंकि मैं इस बात को खूब जानता हूं कि आज कल तुम मेरे साथ दुश्मनी का वर्ताव कर रहे हो और मुझे दारोगा के हाथ में फंसाया चाहते हो, ऐसी अवस्था में तुमने मेरा भेद जरूर कई आदमियों को कह दिया होगा।

मैं०। नहीं भूतनाथ ! यह तुम्हारी भूल है कि तुम ऐसा सोच रहे हो ! मैंने तुम्हारा भेद किसी को नहीं कहा और न मैं तुम्हें दारोगा के हवाले ही किया चाहता हूं। बेशक दारोगा ने मुझे इस काम के लिये लिखा था मगर मैंने उसे इस बारे में धोखा दिया। दारोगा के हाथ की लिखी चीठियां मेरे पास मौजूद हैं, घर चल कर मैं तुम्हें दिखाऊंगा और उनसे तुम्हें मेरी बातों का पूरा पूरा सबूत मिल जायगा।

इस समय बात करते करते मुझे कुछ नशा सा मालूम हुआ और मेरे दिल में एक प्रकार का खुटका हो गया। मैंने घूम कर अर्जुनसिंह की तरफ देखा तो उसकी भी आंखें लाल अंगारे की तरह दिखाई पड़ीं। उसी समय भूतनाथ मेरे पास से उठ कर दूर जा बैठा और बोला :—

भूत०। जब मैं तुम्हारे घर जाऊंगा तब मुझे इस बात का सबूत मिलेगा मगर मैं इसी समय तुम्हें इस बात का सबूत दे

कता हूं कि तुम मेरे साथ दुश्मनी कर रहे हो।

"इतना कह के भूतनाथ ने अपने जेब से निकाल कर मेरे हाथ की लिखी वे चीठियां मेरे सामने फेंक दीं जो मैंने दारोगा को लिखी थीं और जिसमें भूतनाथ के गिरफ्तार करा देने का वादा किया था।

"मैं सरकार में बयान कर चुका हूं कि उस समय दारोगा से इस ढंग का पत्र व्यवहार करने से मेरा मतलब क्या था और मैंने भूतनाथ को दिखाने के लिये दारोगा के हाथ की चीठियां बटोर कर किस तरह दारोगा से साफ इन्कार कर दिया था, मगर उस मौके पर मेरे पास वे चीठियां मौजूद न थीं कि मैं भूतनाथ को दिखाता और भूतनाथ के पास वे चीठियां मौजूद थीं जो दारोगा ने उसे दी थीं और जिनके सबब से दारोगा का मन्त्र चल गया था। अस्तु उन चीठियों को देख कर मैंने भूतनाथ से कहा :—

मैं०। हां हां, इन चीठियों को मैं जानता हूं, बेशक ये मेरे हाथ की लिखी हुई हैं, मगर मेरे इस लिखने का मतलब क्या था और इन चीठियों से मैंने क्या काम निकाला सो तुम्हें नहीं मालूम हो सकता जब तक कि दारोगा के हाथ की लिखी चीठियां न पढ़ लो जो मेरे घर पर मौजूद हैं।

भूत०। (मुस्कुरा कर) बस बस बस! ये सब धोखेबाजी के ढर्रे रहने दीजिये!! भूतनाथ से यह चालाकी न चलेगी, सच तो यों है कि मैं खुद कई दिनों से तुम्हारी खोज में हूं। इत्तिफाक से तुम स्वयम् मेरे पंजे में आकर फंस गये और अब किसी तरह नहीं निकल सकते। उस जंगल में मैं तुम दोनों को काबू में नहीं कर सकता था इस लिये सब्ज बाग दिखलाता हुआ यहां तक आया और भोजन में बेहोशी की दवा खिला कर बेकाम ।

दिया। अब तुम लोग मेरा कुछ भी नहीं कर सकते, समझ ले कि अब तुम दोनों जहन्नुम में भेजे जाओगे जहां से लौट क आना मुश्किल है।

"भूतनाथ की ऐसी बातें सुन कर हम दोनों को क्रोध चा आया मगर उठने की कोशिश करने पर भी कुछ कर न सके क्योंकि नशे का पूरा पूरा असर हो गया था और तमाम बदन में कमजोरी आ गई थी।

"थोड़ी देर के बाद हम लोग बेहोश हो गये और फिर तनो बदन की सुध न रही। जब आंखें खुलीं तो अपने को दारोगा के मकान में कैद पाया और सामने दारोगा जैपाल हरहनामसिंह और बिहारीसिंह को बैठे हुए देखा। रात का समय था और मेरे हाथ एक खम्भे के साथ बंधे हुए थे। अर्जुनसिंह न मालूम कहां थे और उन पर क्या बीत रही थी।

दारोगा ने मुझसे कहा, "कहो दलीपशाह! तुमने तो मुझ पर बड़ा जाल फैलाया था मगर नतीजा कुछ नहीं निकला!"

मैं०। मैंने क्या जाल फैलाया था?

दारोगा०। क्या इसके कहने की भी जरूरत है? नहीं बस इस समय हम इतना ही कहेंगे कि तुम्हारा शागिर्द हमारी कैद में है और तुमने मेरे लिये जो कुछ किया है उसका हाल हम उसकी जुबानी सुन चुके हैं। अब अगर वह चीठी मुझे दे दो जो गोपालसिंह के बारे में मनोरमा का नाम ले कर जबरदस्ती मुझसे लिखवाई गई थी तो मैं तुम्हारा सब कसूर माफ कर दूं।

मैं०। मेरी समझ में नहीं आता कि आप किस चीठी के बारे में मुझसे कह रहे हैं?

दारोगा०। (चिढ़ कर) ठीक है, यह तो मैं पहिले ही समझे हुए था कि तुम बिना लात खाये नाक पर मक्खी नहीं

बैठने दोगे, खैर देखो मैं तुम्हारी क्या दुर्दशा करता हूं !!

"इतना कह कर दारोगा ने मुझे सताना शुरू किया। मैं नहीं कह सकता कि इसने मुझे किस किस तरह की तकलीफें दीं और सो भी एक दो दिन तक नहीं बल्कि महीने भर तक, इसके बाद बेहोश करके मुझे तिलिस्म के अन्दर पहुँचा दिया। जब मैं होश में आया तो अपने सामने अर्जुनसिंह और गिरजाकुमार को बैठे हुए पाया। बस यही तो मेरा किस्सा है और यही मेरा बयान!"

दलीपशाह का हाल सुन कर सभों को बड़ा ही दुःख हुआ और सभी कोई लाल लाल आंखें करके दारोगा तथा जयपाल वगैरह की तरफ देखने लगे। दर्बार वरखास्त करने का इशारा करके महाराज उठ खड़े हुए। कैदी जेलखाने और बाकी के सब लोग अपने अपने डेरों की तरफ रवाना हुए।

चौथा बयान

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है। महाराज सुरेन्द्रसिंह के कमरे में राजा वीरेन्द्रसिंह, राजा गोपालसिंह, कुंअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह, तारासिंह, भैरोसिंह, भूतनाथ और इन्द्रदेव बैठे आपुस में धीरे धीरे बातें कर रहे हैं। वृद्ध महाराज सुरेन्द्रसिंह मसहरी पर लेटे हुए हैं।

सुरेन्द्र०। दलीपशाह की जीवनी ने दारोगा की शैतानी और भी अच्छी तरह झलका दी।

जीत०। बेशक ऐसा ही है, सच तो यों है कि ईश्वर ने पांचों कैदियों की रक्षा की, नहीं तो दारोगा ने कोई बात उठा नहीं रक्खी थी।

भूत०। साथ ही इसके यह भी है कि सब से ज्यादे दलीप-

शाह के किस्से ने दर्बार में मुझे शरमिन्दा किया, मगर क्या करूं, लाचार था कि चालबाज दारोगा ने दलीपशाह की चीठियों का मुझे ऐसा मतलब समझाया कि मैं अपने आपे से बाहर हो गया, बल्कि यों कहना चाहिये कि अन्धा हो गया।

तेज०। वह जमाना ही चालबाजियों का था और चारो तरफ ऐसी ही बातें हो रही थीं। भूतनाथ, तुम अब उन बातों को एक दम से भूल जाओ और जिस नेक रास्ते पर चल रहे हो उसी का ध्यान रक्खो।

जीत०। अच्छा तो अब कैदियों के बारे में जो कुछ हो फैसला कर ही देना चाहिये जिससे अगले दर्बार में उन्हें हुक्म सुना दिया जाय।

सुरेन्द्र०। (गोपालसिंह से) कहो साहब तुम्हारी क्या राय है? किस किस कैदी को क्या क्या सजा देनी चाहिये?

गोपाल०। जो दादाजी (महाराज) की इच्छा हो हुक्म दें, मेरी प्रार्थना केवल इतनी ही है कि कम्बख्त दारोगा मेरे हवाले किया जाय और मुझे हुक्म हो कि जो मैं चाहूं उसे सजा दूं।

सुरेन्द्र०। केवल दारोगा ही नहीं बल्कि तुम्हारे और कैदी भी तुम्हारे हवाले किये जायंगे।

गोपाल०। और दलीपशाह अर्जुनसिंह भरतसिंह हरदीन और गिरजाकुमार भी मुझे दे दिये जायं क्योंकि ये लोग मेरे सहायक हैं और इनके साथ रह कर मेरा दिन बड़ी खुशी के साथ बीतेगा।

सुरेन्द्र०। (जीतसिंह से) ऐसा ही किया जाय।

जीत०। बहुत अच्छा, मैं नम्बरदार कैदियों के बारे में जो कुछ हुक्म होता है लिखता जाता हूं।

इतना कह कर जीतसिंह ने कलम दावात और कागज ले

और महाराज की आज्ञानुसार इस तरह लिखने लगे :—

(१) कम्बख्त दारोगा सजा पाने के लिए राजा गोपाल- के हवाले किया जाय. राजा साहब जो मुनासिब समझें सजा दें।

(२) शिखण्डी (दारोगा का चचेरा भाई), मायाप्रसाद, ...राल, हरनामसिंह, बिहारीसिंह, हरनामसिंह की लड़की, लीला, ...नोरमा, नागर, बेगम, नौरतन, और जमालो वगैरह भी जिन्हें ...मानियां से घना सम्बन्ध है राजा गोपालसिंह के हवाले कर दिये जायं।

(३) बेगम के घर से निकली हुई दौलत जो काशीराज ने यहां भेजवा दी है, बलभद्रसिंह को दे दी जाय।

(४) गौहर और गिल्लन शेरअली खां के पास भेज दी जायं।

(५) किशोरी से पूछ कर भीमसेन छोड़ दिया जाय और ...से पुनः शिवदत्तगढ़ की गद्दी पर बैठाया जाय।

(६) कुबेरसिंह, बाकरअली, अजायबसिंह, खुदाबक्श, ...ारअली, धरमसिंह, गोविन्दसिंह, भगवनियां, ललिता और ...न्नूसिंह तथा वे कैदी जो कमलिनी के तालाब वाले मकान ...से आये थे सब जन्म भर के लिए कैदखाने में भेज दिये जायं ...इनके अतिरिक्त और भी जो कोई कैदी हो, (नानक इत्यादि) कै...खाने में भेज दिये जायं।

(८) दलीपशाह, अर्जुनसिंह, हरदीन, भरथसिंह ... ...राजकुमार को राजा गोपालसिंह ले जायं और इन सभों ...ड़ी खातिर और आराम के साथ रक्खें।

कैदियों के विषय में इस तरह का हुक्म दे कर महा... ...चुप हो गये और फिर आपुस में दूसरे ढंग की बातें होने ल...

थोड़ी देर बाद दरबार बरखास्त हुआ और सब कोई अप
अपने ठिकाने चले गये।

पांचवाँ बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह इस छोटे से दर्बार से उठ कर महल
गये और किशोरी के कमरे में पहुँचे। इस समय कमलिनी भ
उसी कमरे में मौजूद किशोरी से हंसी खुशी की बातें कर रह
थी। कुमार को देख कर दोनों उठ खड़ी हुईं और जब हंसते हु
कुमार बैठ गये तो किशोरी भी उनके सामने बैठ गई मगर कम
लिनी कमरे के बाहर की तरफ चल पड़ी। उस समय कुमार
उसे रोका और कहा, "तुम कहां चलीं? बैठो बैठो, इतनी जल्द
क्या पड़ी है?"

कमलिनी०। (बैठती हुई) बहुत अच्छा बैठती हूं, मग
क्या आज रात को सोना नहीं है?

कुमार०। यह बात मेरे आने के पहिले नहीं सूझी थी?

किशोरी०। आपको देख के सोना याद आ गया।

किशोरी की बात ने दोनों को हंसा दिया और फिर कम
लिनी ने कहा—

कमलिनी०। दलीपशाह के किस्से ने मेरे दिल पर ऐस
असर किया है कि मैं कह नहीं सकती। देखा चाहिये दुष्टों क
महाराज क्या सजा देते हैं। सच तो यों है कि उनके लिये को
सजा है ही नहीं।

कुमार०। तुम ठीक कहती हो, इस समय मैं महाराज के
पास ही से चला आता हूं, वहां एक छोटा सा निज का दरबा
लगा हुआ था और कैदियों ही के विषय में बातचीत हो रही
थी, बल्कि यों कहना चाहिये कि उन बदमाशों का फैसला

। जा रहा था।

कमलिनी०। (उत्कण्ठा से) हां! अच्छा अच्छा बताइये ज्होंने दारोगा और जयपाल के लिये क्या सजा तजवीज की ?

कुमार०। उन्हें क्या सजा दी जायगी इसका निश्चय गोपाल-ई करेंगे क्योंकि महाराज ने इस समय यही हुक्म लिखाया कि दारोगा जयपाल शिखण्डी हरनाम बिहारी मनोरमा और ांगर वगैरह जितने जमानिया और गोपाल भाई से सम्बन्ध खने वाले कैदी हैं सब उनके हवाले किये जायं और वे जो छ मुनासिब समझें उन्हें सजा दें।

कमलिनी०। चलिये यह भी अच्छा ही हुआ क्योंकि मुझे स बात का बहुत बड़ा खयाल बना हुआ था कि हमारे रहम-दिल महाराज इन कैदियों के लिये कोई अच्छी सजा नहीं तज-वीज कर सकेंगे, अब अगर वे लोग जीजाजी के सुपुर्द किये गये तो उन्हें सजा भी वाजिब ही मिल जायगी।

कुमार०। (हंस कर) अच्छा तुम ही बताओ कि अगर सजा ने के लिये सब कैदी तुम्हारे सपुर्द किये जाते तो तुम उन्हें या सजा देती ?

कमलिनी०। मैं ? (कुछ सोच कर) मैं पहिले तो इन सभों हाथ पैर कटवा डालती, फिर इनके जख्म आराम करवा कर ड़े बड़े लोहे के पिंजड़ों में इन्हें बन्द करती और सदर चौमु-ानी पर लटकवा कर हुक्म देती कि जितने आदमी इस राह आवें जावें वे सब इनके मुंह पर थूक कर तब आगे बढ़ें।

कुमार०। (मुस्कुरा कर) सजा तो बहुत अच्छी सोची है, ो बस अपने जीजा साहब को समझा देना कि उन्हें ऐसी ही जा दें।

कमलिनी० । कहूंगी बल्कि इस बात पर जोर दूंगी, यह बताइये कि नानक के लिये क्या हुक्म हुआ है ?

कुमार० । केवल इतना ही कि जन्म भर के लिये कै में भेज दिया जाये । बाकी के और कैदियों के लिये भ हुक्म हुआ है ।

किशोरी० । भीमसेन के लिये भी यही हुक्म हुआ होग

कुमार० । नहीं, उसके लिये दूसरा ही हुक्म हुआ है ।

किशोरी० । वह क्या ?

कुमार० । वह तुम्हारा भाई है इसलिये हुक्म हुआ तुमसे पूछ कर वह एक दम छोड़ दिया जाय बल्कि शिवद की गद्दी पर बैठा दिया जाय ।

किशोरी० । जब छोड़ देने ही का हुक्म हुआ है तो पूछना कैसा ?

कुमार० । यही कि शायद तुम उसे छोड़ना न चाहो त ही में रक्खा जाय ।

किशोरी० । भला मैं इस बात को कब पसन्द करूं मेरा भाई जन्म भर के लिये कैद रहे ? मगर हां इतना ख जरूर है कि कहीं वह छूटने के बाद पुनः आपसे दुश्मनी न

कुमार० । खैर अगर पुनः बदमाशी करेगा तो देखा जाय

कमलिनी० । (मुस्कुराती हुई) उसके विषय में तो च चाची से पूछना चाहिये क्योंकि वह असल में उन्हीं कैदी है । जब सूअर के शिकार में उन्होंने उसे गिरफ किया था * तो तरह तरह की कसमें खिला कर छोड़ा था भविष्य में पुनः दुश्मनी पर कमर न बांधे ।

कुमार० । बात तो ऐसी ही थी मगर नहीं अब वह दुश

* हिस्सा पहिला बयान आठवां देखिये ।

ा बर्ताव न करेगा। (किशोरी से) अगर कहो तो तुम्हारे पास
उसे बुलवाऊं ? जो कुछ तुम्हें कहना सुनना हो कह सुन लो।

किशोरी०। नहीं नहीं नहीं, मैं बाज आई, मैं स्वप्न में भी
उससे मिलना नहीं चाहती, जो कुछ उसकी किस्मत में बदा होगा
भोगेगा।

कुमार०। आखिर उसे छोड़ने के विषय में तुमसे पूछा
यगा तो क्या जवाब दोगी ?

किशोरी०। (कमलिनी की तरफ देख कर और मुस्कुरा कर)
स कह दूंगी कि मेरे बदले में चपला चाची से पूछ लिया
जाय क्योंकि वह उन्हीं का कैदी है।

कुमार०। खैर इन बातों को जाने दो। (कमलिनी से)
जमानिया तिलिस्म के अन्दर मायारानी और माधवी मरने का
सबब मुझे अभी तक मालूम न हुआ। इसका पता न लगा कि
दोनों खुद मर गईं या गोपाल भाई ने उन्हें मार डाला !
ौर अगर भाई साहब ही ने उन्हें मार डाला तो क्यों ऐसा किया ?

कमलिनी०। इसका असल हाल तो मुझे भी मालूम नहीं
है, मैंने दो दफे जीजाजी से इस विषय में पूछा था मगर वह
बात टाल कर बतोला दे गये।

कुमार०। मैंने भी एक दफे उनसे पूछा था तो यह कह कर
ह गये कि फिर कभी बता देंगे।

किशोरी०। बहिन लक्ष्मीदेवी को इसका हाल जरूर मालूम
होगा।

कमलिनी०। हां उन्हें बेशक मालूम होगा, उन्होंने बुलाकर
देकर जरूर पूछ लिया होगा। इस समय तो वे अपने रंगमहल
में होंगी नहीं तो मैं जरूर बुला लाती।

कुमार०। नहीं आज तो अकेली ही अपने कमरे में बैठी

होगीं क्योंकि इस समय गोपाल भाई इन्द्रदेव को साथ लेकर कहीं बाहर गये हैं, मुझसे कह गये हैं कि कल पहर दिन चढ़ते तक आवेंगे।

कमलिनी०। तब तो कहिये मैं जाकर बुला लाऊं?

कुमार०। अच्छा जाओ।

कमलिनी उठ कर चली गई और थोड़ी ही देर में लक्ष्मीदेवी को साथ लिये हुए आ पहुँची।

लक्ष्मी०। (मुस्कुराती हुई) कहिये क्या है जो इतनी रात गये मेरी याद हुई है?

कुमार०। मैंने सोचा कि आज आप अकेली उदास बैठी होंगी अतएव मैं ही बुला कर आपका दिल खुश करूं!

लक्ष्मी०। (हंस कर) क्या बात है! बेशक आपकी मेहरबानी मुझ पर बहुत ही ज्यादे रहती है! (बैठ कर) यह बताइये कि आप लोगों में किसी तरह की हुज्जत तकरार तो नहीं हुई है जो मुझे फैसला करने के लिये बुलाया हो।

कुमार०। ईश्वर न करे ऐसा हो, हां इतना जरूर है कि माधवी और मायारानी की मौत के विषय में तरह तरह की बातें हो रही हैं क्योंकि उन दोनों के मरने का असल हाल तो किसी को मालूम नहीं है और न भाई साहब ने पूछने पर किसी को बताया ही है इसीलिये तुम्हें तकलीफ दी है क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि तुमने किसी न किसी तरह यह हाल उनसे जरूर ही पूछ लिया होगा।

लक्ष्मी०। (मुस्कुरा कर) बेशक बात तो ऐसी ही है। मैंने जिद्द करके किसी न किसी तरह उनसे पूछ तो लिया मगर सुनने से घृणा हो गई। इसी लिये वे भी यह हाल किसी से खुल कर नहीं कहते और समझते हैं कि जो कोई सुनेगा उसी को घृणा होगी।

इसी खयाल से आपको भी उन्होंने टाल दिया।

कुमार०। आखिर उसमें बात क्या है, कुछ भी तो बताओ!

लक्ष्मी०। माधवी को तो उन्होंने नहीं मारा मगर मायारानी को जरूर मारा और इस बेइज्जती और तकलीफ से मारा कि सुनने से रोंगटे खड़े होते हैं। यद्यपि माधवी को उन्होंने कुछ भी नहीं कहा मगर मायारानी के मौत की कार्रवाई वह देख न सकी जो उसके सामने की जाती थी और उसी डर से वह बेहोश हो कर मर गई। इसमें कोई ऐसी अनूठी बात नहीं है जो सुनने लायक हो। मुझे वह हाल बयान करते लज्जा और घृणा मालूम होती है अस्तु......

कुमार०। बस बस, मैं समझ गया, इससे ज्यादे सुनने की मुझे कोई जरूरत नहीं है, केवल इतना ही जानना था कि उनकी मौत के विषय में कोई अनूठी बात तो नहीं हुई है।

लक्ष्मी०। जी नहीं। अच्छा यह तो बताइये कि कल कैदी लोगों के विषय में क्या किया जायगा? दलीपशाह का किस्सा तो समाप्त हो गया और अब कोई ऐसी बात मालूम करने लायक भी नहीं रह गई है।

कुमार०। कैदियों का मामला तो कब का साफ हो गया, इस समय तो महाराज ने उनके विषय में हुक्म भी लिखा दिया है जो कल परसों के दरबार में सभों को सुना दिया जायगा।

लक्ष्मी०। किस किस के लिये क्या क्या हुक्म हुआ है?

इसके जवाब में कुमार ने फैसले का सब हाल बयान किया जो थोड़ी देर पहिले किशोरी और कमलिनी को सुना चुके थे।

लक्ष्मी०। बहुत अच्छा फैसला हुआ है।

किशोरी०। (हंस कर) क्यों न कहोगी! तुम्हारे दुश्मन तुम्हारे कब्जे में दे दिये गये, अब तो दिल खोल कर बदला

लोगी !!

लक्ष्मी०। बेशक ! (कुमार से) हां यह तो बताइये कि भूतनाथ ने अपनी जीवनी लिख कर दे दी या नहीं ?

कुमार०। नहीं, आज देने वाला है।

लक्ष्मी०। और हम लोगों को उस तिलिस्मी मकान का तमाशा कब दिखाया जायगा जिसमें लोग हंसते हंसते कूद पड़ते हैं ?

कुमार०। परसों या कल उसका भेद भी सभों पर खुल जायगा।

लक्ष्मी०। अच्छा यह तो बताइये कि आपके भाई साहब कहां गये हैं ?

किशोरी०। (हंस कर, ताने के ढंग पर) आखिर रहा न गया ! पूछे बिना जी न माना !

इतने ही में बाहर की तरफ से आवाज आई, "इसमें भी क्या किसी का इजारा है ? अपनी चीज की खबरदारी करती हैं किसी दूसरे की जमा नहीं छीनतीं ! बहुत दिनों के बाद जो खोई चीज मिलती है उसके लिए अकारण भी पुनः खो जाने का खटका बना ही रहता है, इसलिये अगर इन्होंने पूछा तो बुरा ही क्या किया !!"

इस आवाज के साथ ही साथ कमला पर सभों की निगाह पड़ी जो मुस्कुराती हुई कमरे के अन्दर आ रही थी।

किशोरी०। (हंसती हुई) यह आई लक्खो बहिन की तरफदार बीबी नक्को, तुमको यहां किसने बुलाया था ?

कमला०। (मुस्कराती हुई) बुलावेगा कौन ? क्या मेरा रास्ता देखा हुआ नहीं है ? यह तो बताओ कि तुम लोग इस आधी रात के समय इतना गुलशोर क्यों मचा रही हो !

कमलिनी० । (मसखरेपन के साथ हाथ जोड़ कर) जी हम लोगों को इस बात की खबर न थी कि इस शोर गुल से आपकी नींद उचट जायगी और फिर सादी चारपाई पर पड़े रहना मुश्किल होगा ।

कुमार० । यह क्यों नहीं कहतीं कि अकेले जी नहीं लगता, लोगों को खोजती फिरती हूं ।

कमला० । जी हां, आप ही को तो खोज रही थी !

कुमार० । अच्छा तो फिर आओ बैठ जाओ और समझ लो कि मैं मिल गया ।

कमला० । (बैठ कर किशोरी से) आज तुम्हें कोई आराम न करने देगा ! (कुमार से) कहिये दलीपशाह का किस्सा तो खतम हो गया, अब कैदियों को कब सजा दी जायगी ?

कुमार० । कैदियों का फैसला हो गया, उसमें किसी को ऐसा सजा नहीं दी गई जो तुम्हारे पसन्द हो ।

इतना कह कर कुमार ने पुनः सब हाल बयान किया ।

कमला० । तो मैं बहिन लक्ष्मीदेवी के साथ जरूर जमानिया जाऊंगी और दारोगा वगैरह की दुर्दशा अपनी आंखों से देखूंगी ।

थोड़ी देर तक इसी तरह की हंसी दिल्लगी होती रही, इसके बाद लक्ष्मीदेवी कमलिनी और कमला अपने अपने ठिकाने चली गईं ।

छठवां बयान

सुबह की सुपेदी आसमान पर फैला ही चाहती है और [illegible] समय की दक्षिणी हवा जंगली पेड़ों और पौधों लताओं [illegible] पत्तों से हाथा पाई करती हुई मैदान की तरफ दौड़ी जाती

भूतनाथ और देवीसिंह हाथ में हाथ दिये जंगल के किनारे किनारे मैदान में टहल रहे हैं और धीरे धीरे हंसी दिल्लगी की बातें करते जाते हैं।

देवी०। भूतनाथ! लो इस समय तुम्हें एक नई और मजेदार बात सुनाते हैं!

भूत०। वह क्या?

देवी०। फायदे की बात है, अगर तुम कोशिश करोगे तो लाख दो लाख रुपया मिल जायगा।

भूत०। ऐसा कौन सा उद्योग है जिसके करने से आज ही इतनी बड़ी रकम हाथ लग जायगी? और अगर इस बात को तुम जानते ही हो तो खुद क्यों नहीं उद्योग करते?

देवी०। मैं भी उद्योग करूंगा मगर यह कोई जरूरी बात नहीं है कि जिसका जो चाहे उद्योग करके लाख दो लाख पा जाय, हां जिसका जेहन लड़ जायगा और जिसकी अक्ल काम कर जायगी वह वेशक अमीर हो जायगा। मैं जानता हूं कि हम लोगों में तुम्हारी तबीयत बड़ी तेज है और तुम्हें बहुत दूर की सूझा करती है इस लिये कहता हूं कि अगर तुम उद्योग करोगे तो लाख दो लाख रुपया पा जाओगे। यद्यपि हम लोग सदा ही अमीर बने रहते हैं और रुपये पैसे की कुछ परवाह नहीं करते, मगर फिर भी यह रकम थोड़ी नहीं है और तिस पर बाजी के ग पर जीतना ठहरा, इस लिये ऐसी रकम के पाने से खुशी होती ही है।

भूत०। आखिर वह बात क्या है कुछ कहो भी तो सही?

देवी०। बात यही है कि वह जो तिलिस्मी मकान बनाया गया है जिसके अन्दर लोग हंसते हंसते कूद पड़ते हैं, उसके विषय में महाराज ने रात को हुक्म दिया है कि तिलिस्मी मकान

के ऊपर सर्वसाधारण लोग तो चढ़ चुके और किसी को कामयाबी नहीं हुई, अब कल हमारे ऐयार लोग उस पर चढ़ कर अपनी अक्ल का नमूना दिखावें और इनके लिये इनाम भी दूना कर दिया जाय। मगर इस काम में चार आदमी शरीक न किये जायं, एक जीतसिंहजी दूसरे तेजसिंह, तीसरे भैरो, चौथे तारा।

भूत०। बात तो बहुत अच्छी हुई, कई दिनों से मेरे दिल में गुदगुदी हो रही थी कि किसी तरह इस मकान के ऊपर चढ़ना चाहिये मगर महाराज की आज्ञा बिना ऐसा कब कर सकता था। मगर यह तो कहो कि उन चारों के लिये मनाही क्यों कर दी गई?

देवी०। इसलिये कि उन्हें इसका भेद मालूम है।

भूत०। यों तो तुमको भी कुछ न कुछ भेद मालूम ही होगा क्योंकि एक दफे तुम भी ऐसे ही मकान के अन्दर जा चुके हो जब शेरसिंह भी तुम्हारे साथ थे।

देवी०। ठीक है मगर इससे क्या असल भेद का पता लग सकता है? अगर ऐसा ही हो तो इस जलसे में हजारों आदमी उस मकान के अन्दर गये होंगे, किसी को दोहरा के जाने की मनाही तो थी नहीं, कोई न कोई पुनः जाकर जरूर बाजी जीत ही लेता।

भूत०। आखिर उसमें है क्या।

देवी०। सो मुझे नहीं मालूम, हां दो दिन के बाद वह भी मालूम हो जायगा।

भूत०। पहिली दफे जब तुम ऐसे ही मकान के अन्दर कूदे थे तो उसमें क्या देखा था और हंसने की क्या जरूरत पड़ी थी?

देवी०। अच्छा उस समय जो कुछ हुआ था सो मैं तुमसे बयान करता हूं क्योंकि अब उसका हाल कहने में कोई हर्ज नहीं

है। जब मैं कमन्द लगा कर दीवार के ऊपर चढ़ गया तो ऊपर से दीवार बहुत चौड़ी मालूम हुई और इस सबब से बिना दीवार पर गये भीतर की कोई चीज दिखाई नहीं देती थी, अस्तु मैं लाचार हो कर दीवार पर चढ़ गया और अन्दर झांकने लगा। अन्दर की जमीन पांच या चार हाथ नीची थी जो कि मकान की छत मालूम होती थी, मगर इस समय मैं अन्दाज से कह सकता हूं कि वह वास्तव में छत न थी बल्कि कपड़े का चन्दवा तना हुआ था या किसी शामियाने की छत थी, मगर उसमें से एक प्रकार की ऐसी भाफ (वाष्प) निकल रही थी कि जिससे दिमाग में नशे की सी हालत पैदा होती थी और खूब हंसने का जी चाहता था मगर पैरों में कमजोरी मालूम होती थी और वह बढ़ती ही जाती थी........

भूत०। (बात काट कर) अच्छा यह तो बताओ कि अन्दर झांकने से पहिले ही कुछ नशा सा चढ़ आया था या नहीं?

देवी०। कब ? दीवार पर चढ़ने के बाद ?

भूत०। हां दीवार पर चढ़ने के बाद और अन्दर झांकने के पहिले।

देवी०। (कुछ सोच कर) नशा तो नहीं मगर कुछ शिथिलता जरूर मालूम हुई थी।

भूत०। खैर, अच्छा तब ?

देवी०। अन्दर की तरफ जो छत थी उस पर मैंने देखा कि किशोरी हाथ में एक चाबुक लिये खड़ी है और उसके सामने की तरफ कुछ दूर हट कर कई मोटे ताजे आदमी खड़े हैं जो किशोरी को पकड़ कर बांधना चाहते हैं मगर वह किसी के काबू में नहीं आती। ताल ठोंक ठोंक कर लोग उसकी तरफ बढ़ते हैं मगर वह कोडे मार मार कर हटा देती है। ऐसी अवस्था में उन आद-

मियों की मुद्रा (जो किशोरी को पकड़ना चाहते थे) ऐसी खराब होती थी कि हंसी रोके नहीं रुकती थी तथा उस भाफ की बदौलत आया हुआ नशा हंसी को और भी बढ़ा देता था। पर में पीछे हटने की ताकत न थी मगर भीतर की तरफ कूद पड़ने में किसी तरह का हर्ज भी नहीं मालूम पड़ता था क्योंकि जमीन ज्यादे नीची न थी और इसके अतिरिक्त किशोरी को बचाना भी बहुत ही जरूरी था, अस्तु मैं अन्दर की तरफ कूद पड़ा बल्कि यों कहो कि ढुलक पड़ा और इसके बाद तनोबदन की सुध न रहा। मैं नहीं जानता था कि उसके बाद क्या हुआ और क्यों कर हुआ हां जब मैं होश में आया तो अपने को कैदखाने में पाया।

भूत०। अच्छा तो इससे तुमने क्या नतीजा निकाला?

देवी०। कुछ भी नहीं, मैंने केवल इतना ही खयाल किया कि किसी दवा के नशे से दिमाग खराब हो जाता है।

भूत०। केवल इतना ही नहीं है, मैंने इससे कुछ ज्यादे खयाल किया है, खैर कोई चिन्ता नहीं कल देखा जायगा, सौ में नब्बे दर्जे तो मैं जरूर बाहरी रास्ते ही से लौट आऊंगा। यहां उस तिलिस्मी मकान के अन्दर लोगों ने जो कुछ देखा है वह भी करीब करीब वैसा ही है जैसा तुमने देखा था, तुमने किशोरी को देखा और इन लोगों ने किसी दूसरी औरत को देखा, बात एक ही है।

इसी तरह की बातें करते हुए दोनों ऐयार कुछ देर तक सुबह की हवा खाते रहे और इसके बाद मकान की तरफ लौटे। जब महाराज के पास गये तो पुनः सुनने में आया कि ऐयारों को तिलिस्मी मकान पर चढ़ने की आज्ञा हुई है।

सातवाँ बयान

दिन अनुमान दो घण्टे के चढ़ चुका है। महाराज सुरे सिंह, राजा बीरेन्द्रसिंह, गोपालसिंह, इन्द्रजीतसिंह और आन सिंह वगैरह खिड़कियों में बैठे उस तिलिस्मी मकान की त देख रहे हैं जिसके अन्दर लोग हंसते हंसते कूद पड़ते हैं। मकान के नीचे बहुत सी कुर्सियां रक्खी हुई हैं जिनपर ह ऐयार तथा और भी कई प्रतिष्ठित आदमी बैठे हुए हैं और लोग इस बात का इन्तजार कर रहे हैं कि इस मकान पर बारी से ऐयार लोग चढ़ें और अपनी अक्ल का नमूना दिखा

और ऐयारों की पौशाक तो मामूली ढंग की है मगर भू नाथ इस समय कुछ अजब ढंग की पौशाक पहिरे हुए है। सिव चेहरे के उसका कोई अंग खुला हुआ नहीं है। ढीला ढाला मो पायजामा और गंवारू रूईदार चपकन के अतिरिक्त बहुत ब काला मुड़ासा बांधे हुए है जिसका पिछला सिरा पीठ पर होता हुआ जमीन तक लटक रहा है। हाथ दोनों बल्कि नाख तक चपकन की आस्तीन में घुसा हुआ है और पैर के जूते भी विचित्र सूरत हो रही है। भूतनाथ का मतलब चाहे भी क्यों न हो मगर लोग इसे केवल मसखरापन ही समझ हैं।

सब के पहिले पन्नालाल इस मकान की दीवार पर चढ़ ग और अन्दर की तरफ झांक कर देखने लगे, मगर पांच सा पल से ज्यादे अपने को न बचा सके और हंसते हुए अन्दर तरफ कूद पड़े।

इसके बाद पण्डित बद्रीनाथ रामनारायण और चुन्नीलाल कोशिश की मगर ये तीनों भी लौट कर न आ सके और पन

लाल की तरह हंसते हुए अन्दर कूद पड़े।

इसके बाद और ऐयारों ने भी उद्योग किया मगर कोई सफलमनोरथ न हुआ। यहां तक कि जीतसिंह तेजसिंह भैरोसिंह और तारासिंह को छोड़ कर सभी ऐयार बारी बारी से जा कर मकान के अन्दर कूद पड़े केवल भूतनाथ रह गया जिसने सब के आखीर में चढ़ने का इरादा कर लिया था।

भूतनाथ मस्तानी चाल से चलता हुआ सीढ़ी के पास गया और धीरे धीरे ऊपर चढ़ने लगा। देखते ही देखते वह दीवार के ऊपर जा पहुँचा। उस पर खड़ा होकर उसने एक दफे चारो ओर मैदान की तरफ देखा और इसके बाद मकान के अन्दर की तरफ झांका। यहां जो कुछ था उसे देखने बाद उसने अपना चेहरा उस तरफ किया जिधर खिड़कियों में बैठे हुए महाराज और राजा वीरेन्द्रसिंह वगैरह बड़े शौक से इसकी कैफियत देख रहे थे। भूतनाथ ने हाथ उठा कर तीन दफे महाराज को सलाम किया और जोर से पुकार कर कहा, "मैं इसके अन्दर झांक कर देख चुका और बड़ी देर तक दीवार पर खड़ा भी रहा, अब हुक्म हो तो नीचे उतर आऊं?"

महाराज ने नीचे उतर आने का इशारा किया और भूतनाथ मुस्कुराता हुआ मकान के नीचे उतर आया। इस बीच में और ऐयार लोग भी जो भूतनाथ के पहिले मकान के अन्दर कूद चुके थे घूमते हुए बड़े तिलिस्मी मकान के अन्दर से आ पहुँचे और भूतनाथ की कैफियत देख सुन कर ताज्जुब करने लगे।

भूतनाथ के उतर आने बाद सब ऐयार मिल जुल कर महाराज के पास गये और महाराज ने प्रसन्न हो कर भूतनाथ को बारह रुपये इनाम देने का हुक्म दिया। सभी ऐयारों को इस बात का ताज्जुब था कि इस तिलिस्म का असर भूतनाथ पर

क्यों नहीं हुआ और वह कैसे सभों को बेवकूफ बना कर आप बुद्धिमान बन बैठा और दो लाख का इनाम भी पा गया।

जीतसिंह०। भूतनाथ! यह तुमने क्या किया? कौन सी तर्कीब निकाली जिससे इस तिलिस्मी हवा का तुम पर कुछ भी असर न हुआ?

भूत०। बात मामूली है, जब तक मैं नहीं कहता तभी तक आश्चर्य मालूम पड़ता है।

तेज०। आखिर कुछ कहो भी तो सही!

भूत०। मेरे दिल को इस बात का निश्चय हो गया था कि इस मकान के अन्दर से किसी तरह की हवा भाफ या धूआं ऊपर की तरफ जरूर उठता है जो झांक कर देखने वाले के दिमाग में सांस के रास्ते से चढ़ कर उसे बदहोश या पागल बना देता है और दीवार के ऊपरी हिस्से पर भी कुछ न कुछ बिजली का असर जरूर है जो उस पर पैर रखने वाले के शरीर को शिथिल कर देता है या और भी किसी तरह का असर कर जाता है। मैं इस बात को खूब जानता हूं कि लकड़ी पर बिजली का असर कुछ भी नहीं होता अर्थात् जिस तरह धातु मिट्टी जल चमड़ा और और शरीर में बिजली घुस कर पार निकल जाती है उस तरह लकड़ी को छेद कर बिजली पार नहीं हो सकती अतएव मैंने अपने पैर में लकड़ी के बुरादे का थैला चढ़ा लिया बल्कि जूते के अन्दर भी लकड़ी की तख्ती रख दी जिसमें दीवार से पैदा होने वाली बिजली का मुझ पर असर न हो, इसके बाद बेहोशी का असर न होने के लिए दवा भी खा ली, इतना करने पर भी जब तक मैं मकान के अन्दर झांकता रहा तब तक अपनी सांस को रोके रहा। मैंने अन्दर की तरफ चलने फिरने और नाच कर के हंसाने वाली पुतलियों को देखा और

उस पीतल की चादर पर भी ध्यान दिया जो दीवार के ऊपर जड़ी हुई थी और जिसके साथ कई तारें भी लगी हुई थीं। यद्यपि उसका असल भेद मुझे मालूम न हुआ मगर मैंने अपने बचाव की सूरत निकाल ली।

इतना कह कर भूतनाथ ने खजर की नोक से अपने पायजामे में से एक छेद कर दिया और उसमें से लकड़ी का बुरादा निकाल कर सभों को दिखाया। भूतनाथ की बातें सुन कर महाराज बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने भूतनाथ तथा और ऐयारों की तरफ देख कर कहा, "वास्तव में भूतनाथ ने बहुत ठीक तर्कीब सोची। उस तिलिस्म के अन्दर जो कुछ भेद है हम बता देते हैं, इसके बाद तुम लोग उसके अन्दर जाकर देख लेना। जमानिया तिलिस्म के अन्दर से इन्द्रजीतसिंह एक कुत्ता लाये हैं जो देखने में बहुत छोटा और संगमर्मर का बना हुआ मालूम होता है और बहुत सी पीतल की बारीक तारें उस पर लिपटी हुई हैं। असल में वह कुत्ता कई तरह के मसालों और दवाइयों से बना हुआ है। वह कुत्ता जब पानी में छोड़ दिया जाता है तो उसमें से मस्त और बदहोश कर देने वाली भाफ निकलती है और उसके साथ जो तारें लिपटी हुई हैं उनमें बिजली पैदा हो जाती है। दीवार के ऊपर जो पीतल की चादर बिछाई गई है उन्हीं के साथ वे तारें लगा दी गई हैं और उससे कुछ नीचे हट कर एक अच्छे तनाव का शामियाना तान दिया है जिसमें कूदने वाले को चोट न लगे। इसके अतिरिक्त (भूतनाथ से) जिन्हें तुम पुतलियां कहते हो वे वास्तव में पुतलियां नहीं हैं बल्कि जीते जागते आदमी हैं जो भेष बदल कर काम करते हैं और एक खास किस्म की पोशाक पहिरने और दवा सूंघने के सबब उन सब पर उस बिजली

और बेहोशी का असर नहीं होता। इस खेल के दिखाने की तरकीब भी एक ताम्रपत्र पर लिखी हुई है जो उसी कुत्ते के साथ पाई गई थी। इन्द्रजीत का बयान है कि जमानिया तिलिस्म में इस तरह के और भी कई कुत्ते मौजूद हैं।"

महाराज की बातें सुन कर सभों को बड़ा ताज्जुब हुआ; इसी तरह हमारे पाठक महाशय भी ताज्जुब करते और सोचते होंगे कि यह तमाशा सम्भव है या असम्भव मगर उन्हें समझ रखना चाहिये कि दुनिया में कोई बात असम्भव नहीं है, जो अब सम्भव है वह पहिले जमाने में असम्भव थी और जो पहिले जमाने में असम्भव थी वह आज संभव हो रही है। 'दीवार कहकहा' वाली बात आप लोगों ने जरूर सुनी होगी। उसके विषय में भी यही कहा जाता है कि उस दीवार पर चढ़ कर दूसरी तरफ झांकने वाला हंसता हंसता दूसरी तरफ कूद पड़ता है और फिर उस आदमी का पता नहीं लगता कि क्या हुआ और कहां गया। इस मशहूर और ऐतिहासिक बात को कई आदमी झूठ समझते हैं मगर वास्तव में ऐसा नहीं है। इसके विषय में हम नीचे एक लेख की नकल करते हैं जो तारीख १४ मार्च सन् १९०५ ई० के अवध अखबार में छपा था—

"अगले जमाने में फिलासफर (वैज्ञानिक) लोग अपनी बुद्धि से जो जो चीजें बना गए हैं अब तक यादगार हैं। उनकी छोटी सी तारीफ यह है कि इस समय के लोग उनके कामों का समझ भी नहीं सकते। उनके ऊंचे हौसले और ऊंचे खयाल की निशानी चीन के हाते की दीवार है और हिन्दुस्तान में भी ऐसी बहुत सी चीजें हैं जिनको मैं आगे चल कर लिखूंगा, इस समय 'दीवार कहकहा' पर कुछ लिखना चाहता हूं।

"मैंने सन् १८९९ ई० में 'अखबार आलम' मेरठ में कु

लिखा था जिसकी मालिक अखबार ने बड़ी प्रशंसा की थी, अब इसके और विशेष सबब खयाल में आये हैं जो बयान करना चाहता हूं।

"मुसलमानों के प्रथम राज्य में उस समय के हाकिम ने इस दीवार की अवस्था जानने के लिये एक कमीशन भेजा था जिसके सफर का हाल दुनिया के अखबारों से प्रगट हुआ है।

"संक्षेप में यह कि कई आदमी मरे परन्तु ठीक तौर पर नहीं मालूम हो सका कि उस दीवार के उस तरफ का क्या हाल चाल है।

"उसकी तारीफ इस तरह पर है कि उस दीवार की ऊंचाई पर कोई आदमी जा नहीं सकता और जो जाता है वह हंसते हंसते दूसरी तरफ गिर जाता है, यदि गिरने से किसी तरह रोक लिया जाय तो जोर से हंसते हंसते मर जाता है।

"यह एक तिलिस्म कहा जाता है या कोई और बात है, पर यदि सोचा जाय तो यही कहा जायगा कि अवश्य किसी बुद्धिमान आदमी ने हकीमी कायदे से इस विचित्र दीवार को बनाया है।

"यह दीवार अवश्य कीमियाई विद्या से मदद ले कर बनाई गई होगी। यह बात जो प्रसिद्ध है कि दीवार के उस तरफ जिन्न और परी रहते हैं जिसको देख कर मनुष्य पागल हो जाता है और उसी तरफ को दिल दे देता है, यह बात ठीक हो सकती है परन्तु हंसता क्यों है यह सोचने की बात है।

"काश्मीर में केशर के खेत की भी यही तारीफ है। तो क्या उसकी सुगंध यहां जाकर एकत्र होती है, या वहां भी केसर के खेत हैं जिससे हंसी आती है? परन्तु ऐसा नहीं है क्योंकि ऐसा होता तो यह भी मशहूर होता कि केसर की महक आती

है। नहीं नहीं, कुछ और ही हिकमत है जैसा कि हिन्दुस्तान में किसी शहर के मसजिद की मीनारों में यह तारीफ थी कि ऊपर खड़े हो कर पानी का भरा गिलास हाथ में लो तो वह आप ही आप छलकने लगता था। इसकी जाच के लिये एक इंजीनियर साहेब ने उसे गिरवा दिया और फिर उसी तरह पर बनवाया परन्तु वह बात न रही। या आगरा में ताज बीबी के रौजे के फौवारों के नल जो मिट्टी के खरनैचे की तरह थे जैसे खपरैल या बगीचे के नल होते हैं। संयोग से फौवारों का एक नल टूट गया, उसकी मरम्मत की गई, दूसरी जगह से फट गया यहां तक कि तीस चालीस वर्ष से बड़े बड़े कारीगरों ने अपनी अपनी कारीगरी दिखाई परन्तु सब व्यर्थ हुआ। अब तक तलाश है कि कोई उसे बना कर अपना नाम करे, मतलब यह कि 'दिवार कहकहा' भी ऐसी ही कारीगरी से बनी है जिसकी कीमियाई बनावट मेरी समझ से यों आती है कि सतह-जहां ज़मीन से आसमान तक कई हिस्सों में अलग की गई है, लम्बाई का हिस्सा कई हवाओं से मिला है जैसे आक्सिजन नाइट्रोजन, हाईड्रोजन, कार्बोनिक ऐसिड ग्यास, क्लोराइन इत्यादि। फिर इन हवाओं में से और भी कई चीजें बनती हैं जैसा कि नाइट्रोजिन का एक मरक्कब पार्ट ओक्साइड आफ मेट्रोजिन है (जिसको लाफिंग ग्यास भी कहते हैं)। बस दुनिया के उस सतह पर जहां लाफिंग ग्यास जिसको हिन्दी में हंसाने वाली हवा कहते हैं पाई गई है उस जगह पर यह दीवार सतह जमीन से इस ऊंचाई तक बनाई गई है। इस जगह पर बड़ी दलील यह होगी कि फिर वह बनाने वाले आदमी कैसे इस जगह अपने होश में रहे होंगे, वह क्यों न हंसते हंसते मर गये? और यही हल करना पहिले मुझसे रह गया था जिसे अब उस नजीर से जो अमेरिका में कायम हुई है

हल करता हूं, याने जिस तरह एक मकान कल के सहारे एक जगह से उठा कर दूसरी जगह रख दिया जाता है उसी तरह यह दीवार भी किसी नीची जगह में इतनी ऊंची बना कर कल से उठा कर इस जगह रख दी गई है जहां अब है। लाफिंग ग्यास में यह असर है कि मनुष्य उसके सूंघने से हंसते हंसते दम घुट कर मर जाता है।

"अब यह बात रही कि आदमी उस तरफ क्यों गिर पड़ता है? इस खिंचाव को भी हम समझे हुए हैं परन्तु उसकी केमिस्ट्री (कीमियाई) अभी हम न बतावेंगे, इसको फिर किसी समय पर कहेंगे।

"दृष्टान्त के लिये यह नजीर लिखते हैं कि ग्वालियर के जमीन की यह तासीर है कि जो मनुष्य वहां जाता है वहीं का हो जाता है, जैसे यह कहावत है कि एक कांवर वाला जिसके कांवर में उसके माता पिता थे वहां पहुँचा और कांवर उतार के बोला कि तुम्हारा जहां जी चाहे जाओ, मुझसे तुमसे कुछ वास्ता नहीं। उस तपस्वी के माता पिता बुद्धिमान थे, उन्होंने अपने प्यारे लड़के की आरजू मिन्नत करके कहा कि हमको चम्बल दरिया के पार उतार दो फिर हम चले जायंगे। लाचार हो कर बड़ी हुज्जत से लड़का उनको दरिया के पार लेगया, ज्योंही उस पार हुआ त्योंही चाहा कि अपनी नादानी से लज्जित हो कर माता पिता के चरण पकड़ गिर माफी चाहे परन्तु उसके माता पिता ने कहा कि ऐ बेटा, तेरा कुछ कसूर नहीं, यह तारीफ उस जमीन की थी।

"दीवार-कहकहा के उस तरफ भी ऐसा ही खिंचाव है जिसको हम ग्वालियर की मिस्टरी तैयार हो जाने पर यदि जीते रहे तो किसी समय परमेश्वर की कृपा से आप लोगों पर जाहिर करेंगे, अभी तो हमको यह विश्वास है कि इतिहास ग्वालियर के

है। नहीं नहीं, कुछ और ही हिकमत है जैसा कि हिन्दुस्तान में किसी शहर के मसजिद की मीनारों में यह तारीफ थी कि ऊपर खड़े हो कर पानी का भरा गिलास हाथ में लो तो वह आप ही आप छलकने लगता था। इसकी जाच के लिये एक इंजीनियर साहेब ने उसे गिरवा दिया और फिर उसी तरह पर बनवाया परन्तु वह बात न रही। या आगरा में ताज बीबी के रौजे के फौवारों के नल जो मिट्टी के खरनैचे की तरह थे जैसे खपरैल या बगीचे के नल होते हैं। संयोग से फौवारों का एक नल टूट गया, उसकी मरम्मत की गई, दूसरी जगह से फट गया यहां तक कि तीस चालीस वर्ष से बड़े बड़े कारीगरों ने अपनी अपनी कारीगरी दिखाई परन्तु सब व्यर्थ हुआ। अब तक तलाश है कि कोई उसे बना कर अपना नाम करे, मतलब यह कि 'दिवार कहकहा' भी ऐसी ही कारीगरी से बनी है जिसकी कीमियाई बनावट मेरी समझ से यों आती है कि सतह-जहां जमीन से आसमान तक कई हिस्सों में अलग की गई है, लम्बाई का हिस्सा कई हवाओं से मिला है जैसे आक्सिजन नाइट्रोजन, हाईड्रोजन, कार्बोनिक ऐसिड ग्यास, क्लोराइन इत्यादि। फिर इन हवाओं में से और भी कई चीजें बनती हैं जैसा कि नाइट्रोजिन का एक मरक्कब पार्ट ओक्साइड आफ नेट्रोजिन है (जिसकी लाफिंग ग्यास भी कहते हैं)। बस दुनिया के उस सतह पर जहां लाफिंग ग्यास जिसको हिन्दी में हंसाने वाली हवा कहते हैं पाई गई है उस जगह पर यह दीवार सतह जमीन से इस ऊंचाई तक बनाई गई है। इस जगह पर बड़ी दलील यह होगी कि फिर वह बनाने वाले आदमी कैसे इस जगह अपने होश में रहे होंगे, वह क्यों न हंसते हंसते मर गये ? और यही हल करना पहिले मुझसे रह गया था जिसे अब उस नजीर से जो अमेरिका में कायम हुई है

हल करता हूं, याने जिस तरह एक मकान कल के सहारे एक जगह से उठा कर दूसरी जगह रख दिया जाता है उसी तरह यह दीवार भी किसी नीची जगह में इतनी ऊंची बना कर कल से उठा कर इस जगह रख दी गई है जहां अब है। लाफिंग ग्यास में यह असर है कि मनुष्य उसके सूंघने से हंसते हंसते दम घुट कर मर जाता है।

"अब यह बात रही कि आदमी उस तरफ क्यों गिर पड़ता है? इस खिंचाव को भी हम समझे हुए हैं परन्तु उसकी केमिस्ट्री (कीमियाई) अभी हम न बतावेंगे, इसको फिर किसी समय पर कहेंगे।

"दृष्टान्त के लिये यह नजीर लिखते हैं कि ग्वालियर के जमीन की यह तासीर है कि जो मनुष्य वहां जाता है वहीं का हो जाता है, जैसे यह कहावत है कि एक कांवर वाला जिसके कांवर में उसके माता पिता थे वहां पहुँचा और कांवर उतार के बोला कि तुम्हारा जहां जी चाहे जाओ, मुझसे तुमसे कुछ वास्ता नहीं। उस तपस्वी के माता पिता बुद्धिमान थे, उन्होंने अपने प्यारे लड़के की आरजू मिन्नत करके कहा कि हमको चम्बल दरिया के पार उतार दो फिर हम चले जायंगे। लाचार हो कर बड़ी हुज्जत से लड़का उनको दरिया के पार लेगया, ज्योंही उस पार हुआ त्योंही चाहा कि अपनी नादानी से लज्जित हो कर माता पिता के चरण पर गिर माफी चाहे परन्तु उसके माता पिता ने कहा कि ऐ बेटा, तेरा कुछ कसूर नहीं, यह तारीफ उस जमीन की थी।

"दीवार-क़हक़हा के उस तरफ भी ऐसा ही खिंचाव है जिसको हम ग्वालियर की मिस्टरी तैयार हो जाने पर यदि जीते रहे तो किसी समय परमेश्वर की कृपा से आप लोगों पर जाहिर करेंगे, अभी तो हमको यह विश्वास है कि इतिहास ग्वालियर के

बनाने वाले ग्रेटर साहब ही इस खिंचाव के बारे में कुछ बयान करेंगे। इतिहास लेखक महाशय को चाहिये कि ग्वालियर की तारीफ में इस किस्से की हकीकत जरूर बयान करें कि कांवरवाले ने कांवर क्यों रख दी थी और इसकी तारीख लिखेंगे या इस किस्से को झूठ साबित करेंगे क्योंकि जो बात मशहूर होती है ग्रन्थकर्ता को उसके झूठ सच के बारे में जरूर कुछ लिखना चाहिये। तो भी हम इतिहास ग्वालियर तैयार हो जाने पर उस खिंचाव के बारे में जो दीवार के इस तरफ है पूरा पूरा हाल लिखेंगे।

"ग्वालियर की जमीन में तरह तरह की खासियत है जिसको हम उस हिस्टरी की समालोचना में (यदि वह बातें हिस्टरी से बच रहीं) जाहिर करेंगे। दीवार कहकहा के सम्बन्ध में जहां तक अपना खयाल था आप लोगों पर प्रगट किया याने दुनिया के उस हिस्से की सतह पर दीवार नहीं बनाई गई है जहां आक्साइड आफ नाइट्रोजिन है बल्कि पहिले दूसरी जगह बना कर फिर कल के जरिये से वहां उठा कर रख दी गई है। यदि यह कहा जाय कि ग्यास सिर्फ उसी जगह थी और जगह क्यों नहीं है तो उसका सहज जवाब यह है कि जमीन से आस्मान तक तलाश करो किसी न किसी ऊंचाई पर तुमको मिल ही जायगी। दूसरे यह कि कोई हवा सिर्फ खास जगह पर मिलती है जैसा कि बन्द जगह की हलाक करने वाली बन्द हवा, जैसा कि अकसर कुएं में आदमी उतरते हैं और घबड़ा कर मर जाते हैं। यदि यह कहा जाय कि वहां हवा नहीं है तो यह नहीं हो सकता।

"पिछले जमाने के आदमी अपनी कारीगरी का अच्छा अच्छा नमूना छोड़ गये हैं जैसा कि मिस्र की मीनार, या नौशेरवानी बाग, या जवाहिरात के पेड़ों पर चिड़ियों का गाना, या

आगरे का ताज, जिसकी तारीफ में तारीख तुराब के बुद्धिमान लेखक ने किसी लेखक का एक फिकरा लिखा है जिसका संक्षेप यह है कि इसमें कुछ बुराई नहीं, यदि है तो यही है कि कोई बुराई नहीं ! देखिये आगरा में बहुत सी बादशाही समय की टूटी फूटी इमारतें हैं जिनमें पानी दौड़ने के नल (पाइप) वैसे ही मिट्टी के हैं जैसे कि आज कल मिट्टी के गोल परनाले होते हैं, उन्हीं नलों से दूर दूर से पानी आता और फिर नीचे से ऊपर कई मरातिब तक जाता था, इसी तरह के ताजगंज के फौवारों के नल भी थे, और भी इसी तरह के हैं जिनमें से एक के टूटने पर लोहे के लगाये, जब उनसे काम न चला तो बड़े बड़े भारी पत्थरों में छेद करके लगाये, परन्तु बेफायदा हुआ।

"उन फौवारों की यह तारीफ है कि जो जितना ऊंचा जा रहा है उतने ही ऊंचाई पर से यहां से वहां तक बराबर धार गिरती है। अब जो कहीं बनते हैं तो धार बराबर करने को ऊंची नीची तरह सतह पर फौव्वारे लगाने पड़ते हैं।

इसी तरह का एक तिलिस्म के विषय का भी लेख तारीख ३० मार्च सन् १९०५ के अवध अखबार में छपा था, उसका अनुवाद भी हम नीचे लिखते हैं—

"गुजरे हुए जमाने के काबिल कदर यादगारों !! तुमको याद कर कर के हम कहां तक रोयें और कहां तक विलाप करें ? जमाने के नाकदर हाथों की बदौलत तुम सब मिट गये और मिटते चले जाते हो, जमीन तुमको खा गई और उनको भी खा गई जो तुम्हारे जानने वाले थे, यहां तक कि तुम्हारा निशान तो निशान तुम्हारा नाम तक भी तो मिट गया !

"खलीफा बनी उम्मीयां के जमाने में जिन दिनों अब्दुल-मलिक बिनमर्दों की तरफ से उसका भाई अब्दुलअजीज बिन-

मर्दो मिश्रदेश का गवर्नर था, एक दिन उसके सामने दफी(जमीन के नीचे छिपा हुआ खजाने) का हाल बतलाने वा कोई शख्स हाजिर हुआ। अब्दुलअजीज ने बात ही बात उससे कहा, "किसी दफीना का हाल तो बतलाइये!" जिस जवाब में उसने एक टीले का नाम लेकर कहा कि उसमें खजा है और इसकी परख इस तौर से हो सकती है कि वहां की थो जमीन खोदने पर संगमर्मर और स्याह पत्थर का फर्श मिले जिसके नीचे फिर खोदते खोदते एक खाली दर्वाजा दिखाई दे उस दर्वाजे के उखेड़ने के बाद सोने का एक खंभा नजर आवे जिसके ऊपरी हिस्से पर एक मुर्ग बैठा होगा, उसकी आंखों जो सुर्ख मानिक जड़े हैं वह इस कदर कीमती हैं कि सारी नियां उसके बदले और दाम में काफी हो तो हो, उसके दो बाजू मानिक और पन्ने से सजे हुए हैं और सोने वाले खंभे सोने के पत्तरों का कुछ हिस्सा निकल कर उस मुर्ग के सिर प छाया किये हुए है।

"यह ताज्जुब की बातें सुन कर उस गवर्नर का कुछ ऐस शौक बढ़ा कि आम तौर पर हुक्म दे दिया कि वह जगह खो जाय और जो लोग उसको खोदेंगे और उसमें काम करें उनको हजारों रुपये दिये जायंगे। यह जगह एक ऊंचे टीले प थी, इस वजह से बहुत घेरा देकर खुदाई का काम शुरू हुआ पता देने वाले ने जो संगमर्मर और स्याह पत्थर के फ वगैरह बताये थे वे मिलते जाते थे और बताने वाले कौल की तसदीक होती जाती थी और इसी वजह से अब्दुल अजीज का शौक बढ़ता जाता था कि यकायक मुर्ग का सर जाहि हुआ। सर के जाहिर होते ही एक बारगी आंखों को चकाचौं करने वाली तेज रोशनी उस खोदी हुई जगह से निकल कर फै

गई, मालूम हुआ कि बिजली तड़प गई।

"यह गैर मामूली रोशनी उस मुर्ग की आंखों से निकल रही थी। उसकी दोनों आंखों में बड़े बड़े मानिक जड़े हुए थे जिनकी यह बिजली थी। ज्यादे खोदे जाने पर उसके दोनों जड़ाऊ बाजू भी नजर आये और फिर उसके पांव भी दिखाई दिये।

"उस मुर्ग वाले सोने के खम्भे के अलावा एक और खम्भा भी नजर आया जो एक इमारत की तरह पर था। यह इमारती खम्भा रंग बिरंगे पत्थरों से बना हुआ था जिसमें कई कमरे थे और उनकी छतें बिल्कुल छज्जेदार थीं। उसके दर्वाजों पर बड़े और खूबसूरत आलों (ताकों) की एक कतार थी जिनमें तरह तरह की रक्खी हुई मूरतें और बनी हुई सूरत बड़ी खूबी के साथ अपनी शोभा दिखा रही थीं, सोने और जवाहिरात के जगह जगह पर ढेर थे जो छिपे हुए थे, ऊपर से चांदी के पत्तर लगे थे और पत्तरों पर सोने की कीलें जड़ी थीं। अब्दुलअजीज बिन-मर्दां यह खबर पाते ही बड़े चाह से उस मौके पर पहुँचा, और जो आश्चर्यजनक तिलिस्म यहां जाहिर था उसको बहुत दिल-चस्पी के साथ देर तक देखता रहा और तमाम खिलकत की भीड़ भाड़ थी और तमाशबीन अपने बढ़े हुए शौक से एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे। एक जगह ढले हुए तांबे की सीढ़ी ऊपर तक लगी हुई थी, उसको देख कर एक शख्स ऊपर जल्दी जल्दी चढ़ने लगा, हर एक तमाशबीन ताज्जुब के साथ वहां की हर चीजों को देख रहा था।

"उस जीने की चौथी सीढ़ी पर जब चढ़ने वाले ने कदम रक्खा तो जीना के दाहिनी और बाईं तरफ से दो नंगी तलवारें अपना काट और तड़प दिखाती हुई निकलीं। यद्यपि इस चढ़ने वाले ने बचने के लिये हर तरह की कोशिश की मगर दोनों निक-

लने वाली तलवारें प्राणघातक शत्रु थीं जिन्होंने देखते ही देखते इस चढ़ने वाले आदमी का काम तमाम कर दिया और फिर यह देखा गया कि इस शख्स के टुकड़े नीचे कट कट कर गिरे। उनके गिरते ही वह खम्भा झोंके ले ले कर आप से आप हिलने लगा और उस पर से वह बैठा हुआ मुर्ग कुछ अजब शान से उड़ा कि देखने वाले अचम्भे में हो कर देखते ही रह गये।

"जिस वक्त उसने उड़ने के लिये अपने बाजू (डैने) फट-फटाये तो अद्भुत सुरीली और दिल लुभाने वाली आवाजें उससे निकलीं कि लोग सुन कर दंग रह गये और यह आवाजें हवा में गूंज कर दूर दूर तक फैल गईं।

"उस मुर्ग के उड़ते ही एक किस्म की गर्म हवा चली जिसकी वजह से जिस कदर तमाशबीन आस पास में खड़े थे सब के सब उसी तिलिस्मी गार (खोह) में गिर पड़े। उस गड़हे के अन्दर उस वक्त खोदनेवाले, बेलदार, मिट्टी को बाहर फेंकने वाले, मजदूर और मेट वगैरह जिनकी तायदाद १००० कही जाती है मौजूद थे जो सब के सब बेचारे फौरन मर गये। अब्दुलअजीज ने यह हाल देख कर एक चीख मारी और कहा, "यह भी अजीब दुखदाई बात हुई! इससे क्या उम्मीद रखना चाहिये!"

"इसके बाद और मजदूर उसमें लगा दिये गये, जिस कदर मिट्टी वगैरह निकली थी वह सब की सब अन्दर डाल दी गई, वह मर जाने वाले तमाशबीन सब भी उसी के अन्दर तोप दिये गये और आखिर में वह तिलिस्म की जगह अच्छा खासा एक 'कबरिस्तान' बन गया। गये थे दफीना निकालने के लिये और इतनी जानें दफन कर आये, और खर्च घाटे में रहा!"

आठवां बयान

तीसरे दिन पुनः दर्बार हुआ और कैदी लोग ला कर हाजिर किये गये। महाराज सुरेन्द्रसिंह का लिखाया हुआ फैसला सभों के सामने तेजसिंह ने पढ़ कर सुनाया। सुनते ही कम्बख्त दारोगा जयपाल और हरनामसिंह वगैरह रोने कलपने चिल्लाने और हाथ जोड़ जोड़ कर महाराज से कहने लगे कि इसी जगह हम लोगों का सर काट लिया जाय या जो चाहें महाराज सजा दें मगर हम लोगों को राजा गोपालसिंह के हवाले न करें !!

कैदियों ने बहुत सर पीटा मगर उनकी कुछ न सुनी गई, जो कुछ महाराज ने फैसला लिखाया था उसी मुताबिक कार्रवाई की गई और इस फैसले को सभों ने पसन्द किया।

इन सब कामों से छुट्टी पाने बाद एक बहुत बड़ा जलसा किया गया और कई दिनों तक खुशी मनाने के बाद सब कोई विदा कर दिये गये। राजा गोपालसिंह कैदियों को साथ लेकर जमानिया चले गये, लक्ष्मीदेवी उनके साथ गईं, और तेजसिंह तथा और भी बहुत से आदमी महाराज की तरफ से उनके साथ पहुँचाने के लिये गये। जब वे लौट आये तब औरतों को साथ ले कर राजा वीरेन्द्रसिंह इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह वगैरह पुनः तिलिस्म में गये और उन्हें तिलिस्म की खूब सैर कराई। कुछ दिन बाद रोहतासगढ़ के तहखाने की भी उन लोगों को सैर कराईऔर फिरसब कोई हंसी खुशी से दिन बिताने लगे।

   

प्रेमी पाठक महाशय ! अब इस उपन्यास में मुझे सिवाय इसके और कुछ कहना नहीं है कि भूतनाथ ने प्रतिज्ञानुसार

अपनी जीवनी लिख कर दर्बार में पेश की और महाराज ने पढ़ सुन कर उसे खजाने में रखवा दिया। इस उपन्यास को भूतनाथ की खास जीवनी से कोई सम्बन्ध न था इस लिये इसमें वह जीवनी नत्थी न की गई, हां खास खास भेद जो भूतनाथ से सम्बन्ध रखते थे खोल दिये गये, तथापि भूतनाथ की जीवनी जिसे चन्द्रकान्ता सन्तति का उपसंहार भाग भी कह सकेंगे स्वतन्त्र रूप से लिख कर अपने प्रेमी पाठकों की नजर करूंगा, मगर इसके बदले में अपने प्रेमी पाठकों से इतना जरूर कहूंगा कि इस उपन्यास में जो कुछ भूल चूक रह गई हो और जो भेद रह गये हों वह मुझे अवश्य बतावें जिसमें 'भूतनाथ की जीवनी' लिखते समय उन पर ध्यान रहे क्योंकि इतने बड़े उपन्यास में मेरे ऐसे अनजान आदमी से किसी तरह की त्रुटि का रह जाना कोई आश्चर्य नहीं है।

प्रिय पाठक महाशय! अब चन्द्रकान्ता सन्तति की लेख प्रणाली के विषय में भी कुछ कहने की इच्छा होती है।

जिस समय मैंने चन्द्रकान्ता लिखनी आरम्भ की थी उस समय से इस समय में बड़ा अन्तर है। हिन्दी के साहित्य में उस समय कविवर प्रतापनारायण मिश्र और पण्डितवर अम्बिकादत्त व्यास जैसे धुरन्धर किन्तु अनुद्धृत सुकवि और सुलेखक विद्यमान थे तथा राजा शिवप्रसाद, राजा लक्ष्मणसिंह जैसे सुप्रतिष्ठित पुरुष हिन्दी की सेवा करने में अपना गौरव समझते थे, परन्तु न अब वैसे मार्मिक कवि हैं और न वैसे सुलेखक। उस समय हिन्दी के लेखक थे परन्तु ग्राहक न थे, इस समय ग्राहक हैं पर वैसे लेखक नहीं हैं। मेरे इस कथन का यह मतलब नहीं है कि वर्तमान समय के साहित्य-सेवी प्रतिष्ठा के योग्य नहीं हैं, बल्कि यह मतलब है कि जो स्वर्गीय सज्जन अपनी लेखनी से हिन्दी के

आदि युग में हमें ज्ञान दे गये हैं वे हमारी अपेक्षा बहुत चढ़ बढ़ कर थे। उनकी लेख प्रणाली में चाहे भेद रहा हो परन्तु उन सब का लक्ष्य यही था कि इस भारत भूमि में किसी तरह मातृभाषा का एकाधिपत्य हो. लेकिन यह कोई नियम की बात नहीं है कि वैसे लोगों से कुछ भूल हो ही नहीं। उनसे भूल हुई तो यही कि प्रचलित शब्दों पर उन्होंने अधिक ध्यान नहीं दिया। राजा शिवप्रसादजी के राजनीति के विचार चाहे कैसे ही रहे हों पर सामाजिक विचार उनके बहुत ही प्राञ्जल थे और वे समयानुकूल काम करना खूब जानते थे, विशेषतः जिस ढंग की हिन्दी वे लिख गये हैं उसी से वर्तमान समय में हिंदी का रास्ता कुछ साफ हुआ है।

चाहे कोई हिन्दू हो या जैन, वा बौध हो या आर्य्य समाजी, अथवा धर्म समाजी ही क्यों न हो, परन्तु जिन सज्जनों के माननीय अवतारों और पूर्वजनों ने इस पुण्यभूमि का अपने आविर्भाव से गौरव बढ़ाया है उनमें ऐसा अभागा कौन होगा जो पुण्यता और मधुरता युक्त संस्कृत भाषा के शब्दों का प्रचुर प्रचार न चाहेगा? मेरे विचार में किसी विवेकी भारत सन्तान के विषय में केवल यह देख कर कि वह विदेशी भाषा के शब्दों का प्रचार कर रहा है यह गढ़न्त कर लेना कि वह देववाणी के पवित्र शब्दों का विरोधी है भ्रम ही नहीं किन्तु अन्याय भी है। देखना यह चाहिये कि ऐसा करने से उसका मतलब क्या है। भारतवर्ष में आठ सौ वर्ष तक विदेशी यवनों का राज्य रहा है इसलिये फारसी और अरबी के शब्द हिन्दू समाज में 'न पठेत् यावनी भाषां' की दीवार लांघ कर उसी प्रकार आ घुसे जिस प्रकार हिमालय के उन्नत मस्तक को लांघ कर वे यवन स्वयं यहां आ गये थे, यहां तक कि महात्मा तुलसीदासजी जैसे भगवद्-

भक्त कवियों को भी 'गरीबनिवाज' आदि शब्दों का बर्ताव दिल खोल के करना पड़ा ।

आठ सौ वर्षों के कुसंस्कार को जो गिनती के दिनों से दूर करना चाहते हैं उनके उत्साह और साहस की प्रशंसा करने पर भी हम यह कहने के लिये मजबूर हैं कि वे अपने बहुमूल्य समय का सदुपयोग नहीं करते बल्कि जो कुछ वे कर सकते थे उससे भी दूर हटते हैं। यदि ईश्वरचन्द्र विद्यासागर सीधे सादे शब्दों से बंगला में काम न लेते तो उत्तर काल के लेखकों को संस्कृत शब्दों के बाहुल्य प्रचार का अवसर न मिलता और यदि 'राजा शिवप्रसादी हिन्दी' प्रगट न होती तो सरकारी पाठशाला-ओं में हिंदी के चद्रमा की चांदनी मुश्किल से पहुँचती। मेरे बहुत से मित्र हिन्दुओं की अकृतज्ञता का यों वर्णन करते हैं कि उन्होंने हरिश्चन्द्रजी जैसे देश हितैषी पुरुष की उत्तम उत्तम पुस्तकें नहीं खरीदीं, पर मैं कहता हूं कि यदि बाबू हरिश्चन्द्र अपनी भाषा को थोड़ा सरल करते तो हमारे भाइयों को अपने समाज पर कलंक लगाने की आवश्यकता न पड़ती और स्वाभाविक शब्दों के मेल से हिंदी की पैसिंजर भी मेल बन जाती। प्रवाह के विरुद्ध चल कर यदि कोई कृतकार्य हो तो निःसन्देह उसको बहादुरी है परंतु बड़े बड़े दार्शनिक पण्डितों ने इसको ही असम्भव ठहराया है। सारसुधानिधि और कविवचन सुधा की भाषा यद्यपि भावुक जनों के लिये आदर की वस्तु थी परन्तु समय के उपयोगी न थी। हमारे 'सुदर्शन' की लेख प्रणाली को हिंदी के धुरंधर लेखकों और विद्वानों ने प्रशंसा के योग्य ठहराया है परन्तु साधारण जन उससे कितना लाभ उठा सकते हैं यह सोचने की बात है। यदि महाकवि भवभूति के समान किसी भविष्य पुरुष की आशा ही पर ग्रन्थकारों और लेखकों को यत्न करना चाहिये तब तो मैं

सुदर्शन सम्पादक पण्डित माधोप्रसाद मिश्र को भी भविष्य की आशा पर बधाई देता हूं पर यदि ग्रन्थकारों का भविष्य की अपेक्षा वर्तमान से अधिक सम्बन्ध है तो निःसन्देह इस विषय में मुझे आपत्ति है।

किसी दार्शनिक ग्रन्थ वा पत्र की भाषा के लिये यदि किसी बड़े कोष को टटोलना पड़े तो कुछ परवाह नहीं परन्तु साधारण विषयों की भाषा के लिये भी कोष की खोज करनी पड़े तो निःसन्देह दोष की बात है। मेरी हिन्दी किस श्रेणी की हिन्दी है, इसका निर्द्धारण मैं नहीं करता परन्तु मैं यह जानता हूं कि इसके पढ़ने के लिये कोष की तलाश करनी नहीं पड़ती। चन्द्रकान्ता के आरम्भ के समय मुझे यह विश्वास न था कि उसका इतना अधिक प्रचार होगा, यह मनोविनोद के लिये लिखी गई थी पर पीछे लोगों का अनुराग देख कर मेरा भी अनुराग हो गया और मैंने अपने उन विचारों को जिनको मैं अभी तक प्रकाश नहीं कर सका था फैलाने के लिये इस पुस्तक को द्वार बनाया और सरल भाषा में उन्हीं मामूली बातों को लिखा जिसमें मैं उस होनहार मंडली का प्रियपात्र बन जाऊं जिसके हाथ में भारत का भविष्य सौंप कर हमें इस असार संसार से बिदा होना है। मुझे इस बात से बड़ा हर्ष है कि मैं इस विषय में सफल हुआ और मुझे ग्राहकों की अच्छी श्रेणी मिल गई। यह बात बहुत से सज्जनों पर प्रगट है कि चन्द्रकान्ता पढ़ने के लिये बहुत पुरुष नागरी की वर्णमाला सीखते हैं और जिनको कभी हिन्दी सीखना न था उन लोगों ने भी इसके लिये हिन्दी सीखी।

हिन्दी के हितैषियों में दो प्रकार के सज्जन हैं। एक तो वे जिनका विचार यह है कि चाहे अक्षर फारसी क्यों न हों पर भाषा विशुद्ध संस्कृत मिश्रित होनी चाहिये, और दूसरे वे जो

यह चाहते हैं कि चाहे भाषा में फारसी के शब्द ही मिले हों पर अक्षर नागरी होने चाहियें। पहिले पक्ष में मैं पञ्जाब के आर्य्य समाजियों और धर्म सभा वालों को मान लेता हूं जिनके लेखों में वर्णमाला के सिवाय फारसी अरबी को कुछ भी सहारा नहीं है सब कुछ संस्कृत का है, और दूसरे पक्ष में मैं अपने को ठहरा लेता हूं जो इसके विपरीत हैं। मैं इस बात को भी स्वीकार करता हूं कि जिस प्रकार फारसी वर्णमाला उर्दू का शरीर और अरबी फारसी के उपयुक्त शब्द उसके जीवन हैं ठीक उसी प्रकार नागरी वर्णमाला हिन्दी का शरीर और संस्कृत के उपयुक्त शब्द उसके प्राण कहे जा सकते है। यदि यह देश यवनों के अधिकार में न हुआ होता, और यदि कायस्थादि हिन्दू जातियों का उर्दू भाषा का प्रेम अस्थिमज्जागत न हो गया होता तो हिंदी का शरीर और जीवन पृथक पृथक दिखलाई न देता, उसी प्रकार हमारे ग्रन्थों की सजीव उत्पत्ति होती जिस प्रकार द्विज बालकों की होती है। शरीर में यदि आत्मा न हो तो वह बेकार है और यदि आतमा को मनुष्यादि उपयुक्त शरीर न मिलकर पशु पक्षी आदि शरीर मिल जांय तो भी वह निष्फल ही है, इसलिये पहिले शरीर बना कर फिर उसमें आत्मदेव की स्थापना करना ही न्याययुक्त और फलप्रद है। 'चन्द्रकान्ता और सन्तति' में यद्यपि इस बात का पता नहीं लगेगा कि कब और कहां भाषा का परिवर्तन हो गया परन्तु उसके आरम्भ और अन्त में आप ठीक वैसा ही परिवर्तन पावेंगे जैसा बालक और वृद्ध में। एक दम से बहुत से शब्दों का प्रचार करते तो कभी सम्भव न था कि उतने संस्कृत शब्द हम उन कुपढ़ ग्रामीण लोगों को याद करा देते जिनके निकट काला अक्षर भैंस के बराबर था। मेरे इस कर्तव्य का आश्चर्यमय फल देख कर वे लोग भी बोधगम्य

उर्दू के शब्दों को अपनी विशुद्ध हिन्दी में लाने लगे हैं जो आरम्भ में इसी लिये मुझ पर कटाक्षपात करते थे। इस प्रकार प्राकृतिक प्रभाव के साथ साथ साहित्य सेवियों की सरस्वती का प्रभाव बदलता देख कर समय के बदलने का अनुमान करना कुछ अनुचित नहीं है। जो हो, भाषा के विषय में हमारा वक्तव्य यही है कि वह सरल हो और नागरी वर्णों में हो, क्योंकि जिस भाषा के अक्षर होते हैं, उनका खिंचाव उन्हीं मूल भाषाओं की ओर होता है जिससे उनकी उत्पत्ति हुई है।

भाषा के सिवाय दूसरी बात मुझे भाव के विषय में कहनी है। मेरे कई मित्र आक्षेप करते हैं कि मुझे देश-हित-पूर्ण और धर्मभावमय कोई ग्रन्थ लिखना उचित था, जिससे मेरी प्रसरणशील पुस्तकों के कारण समाज का बहुत कुछ उपकार व सुधार हो जाता। बात बहुत ठीक है परन्तु एक अप्रसिद्ध ग्रन्थकार की पुस्तक को कौन पढ़ता? यदि मैं चन्द्रकान्ता और सन्तति को न लिख कर अपने मित्रों से भी दो चार बातें हिन्दी के विषय में कहना चाहता तो कदाचित् वे भी सुनना पसन्द नहीं करते। गम्भीर विषय के लिये जैसे एक विशेष [illegible] प्रयोजन होना है वैसे ही विशेष पुरुष का भी। भारतवर्ष में विशेषता की अधिकता न देख कर मैंने साधारण भाषा में साधारण बातें लिखनी ही आवश्यक समझीं। संसार में ऐसे भी लोग हुए होंगे जिन्होंने सरल और भावमयी एक ही पुस्तक लिखकर लोगों का चित्त अपनी ओर खैंच लिया हो पर वैसा कठिन काम मेरे ऐसों के करने योग्य न था। तथापि पात्रों की चालचलन दिखलाने में जहां तक हो सका ध्यान रक्खा गया है। सब पात्र यथा समय सन्ध्या तर्पण करते हैं और अवसर पड़ने पर पूजा प्रकार भी वीरेन्द्रसिंह आदि के वर्णन में जगह जगह दिखलाई देता है।